त्यःस्ट्रितापिड्नेशाञ्चानायहैमन्द्रस्त्रतांम्ह्नितिवत्रज्ञतिन्। १सम्यग्रहात क्रितादातापाणाष्ठ्रसात्राद्याच्यासानांस्य द्रिमच्द्रता विसिधिकपिविद्याद्रवानील साम्यादेवसाधितस्वात्रस्याः। राष्ट्राञ्च अत्रियोतनसंग्रहार्यम्यमारसः

STUDIES IN DESYA PRAKRIT

H. C. BHAYANI



શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ચ

दिश्रयंदिश्यदिश्यग्रापर्दस्यांकग्रहाजणियाणाश्यास्तासपरिप्रिणांवाणा।।१णाभंसदिगंवर्माः कदादसीसद्दर्भगात्रावेणकमस्त्रस्था।याङ्कर्कणाणिसिद्योणकायस्वास्त्रस्थातस्यात्रस्थाणस्थात्रस्यात्रस्थाणस्यात्रस् इतिवद्या।त्रद्धसंविसेसविपद्यावस्त्रमाणांश्यात्रयाङ्गितातस्यात्रणाद्रयादश्यवयहस्यादिसस्य

The Book

The study of the stock of Prakrit words known as Desya is recognized by the students of Middle and New Indo-Aryan as a greatly difficult and challenging area. After the pioneering work, textual and lexicographical, of Pischel and a few others in his wake, on Hemacandra's Deśināmamālā, the interest in the Desya studies dwindled and it remained mostly confined to data-collection from individual texts. In the present collection of diverse writings, which originally appeared separately over a number of years, several issues and problems connected with the Desināmamālā in particular and the Desya words in general are closely examined for the first time, thereby laying bare numerous intricacies relating to the character, formation, role and history of the Desya words. Rich and varied data are collected from a few texts which would necessitate a basic alteration in the current coception of what is to be properly designated as Deśya. A few typical word-studies also are presented. The book, by breaking some fresh ground, opens up new directions for the Desya studies.

STUDIES IN DESYA PRAKRIT

STUDIES IN DESYA PRAKIT

H. C. BHAYANI



MALIKĀLA SARVAJNA SRĪ HEMACANDRĀCĀRYA NAVAM JANMA ŚATĀBDÌ SMŖŢI ŚIKṢAŅ SAMSKĀR NIDHI Ahmedabad

@ H. C. BHAYANI

FIRST EDITION: 1988

PRICE: Rs. 150-00

PUBLISHER: Kalikāla Sarvajna Srī Hemacandrācārya

Navam Janma Śatābdī Smṛti

Śiksan Samskar Nidhi

Lalbhai Dalpatbhai-vando, Pankor Naka,

Ahmedabad-380 001

DISTRIBUTOR: SARASVATI PUSTAK BHANDAR

Hathikhana, Ratanpol, Ahmedabad-380 001

Can be also had from:

Acharya Shri Vijayanemisüri Jnana-shālā, Panjara-Pol Ahmedabad-380 001

PRINTER: KRISHNA PRINTERY

Harjibhai N. Patel

966, Naranpura Old Village, Ahmadabad-380 013

DEDICATED TO THE LATE GREAT PRAKRIT PANDIF BECHARDAS DOSHI

प्रकाशकीय निवेदन

किलकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यनी नवमी जन्मशतान्दीना उपलक्ष्यमां, तेंओना जीवन अने कवनने समुचित स्मरणांजलि आपी शकाय तेवा आशयथी, पूज्य आचार्यश्री विजयसूर्योदयसूरीश्वरजी महाराजनी प्रेरणाथी आ ट्रस्टनी स्थापना थया पछी, त्रणं विद्वष्डजनोने 'श्री हेमचन्द्राचार्य—चन्द्रक' अर्पण करवा उपरांत,

१. हेमसमीक्षा

ले. श्री मधुसूदन मोदी

२. प्रमाणमीमांमा

संपा. पं. श्री सुखलालजी

३. हैम स्वाध्यायपाथी

संपा. पं. शीलचन्द्रविजयजी

४. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित भाग १-२ (१थी ४ पर्व)

आटली कृतिओनुं प्रकाशन करवा अमें भाग्यशाळी थया छीए हजी पण 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित'नो बाकीनो अंश यथासमंत्र प्रसिद्ध करवानी अमारी भावना छे.

अमारा ट्रस्टनां प्रकाशनोनी शृंखलामां, हवे, श्री हेमचन्द्राचाये रचेला 'देशीनाममालां नामना अद्भुत ग्रंथने अने तेना विषयने केन्द्रमां राखीने, आपणा विश्वख्यात भाषाशास्त्री अने प्राकृत, अपभ्र श, देशी, पाठी इत्यादि भाषासाहित्यना मूर्धन्य मान्य विद्वान हो. हरिवछम भायाणीए आलेखेला संशोधनात्मक लेखे। तथा व्याख्यानोना संम्रहल्य प्रस्तुत 'स्टडीज इन देश्य प्राकृत' ग्रंथनुं प्रकाशन करवानो अवसर अमने प्राप्त थाय छे ते अभारा माटे घणा ज हर्षनी वात छे. आवुं उत्तम प्रकाशन करवानी प्रेरणा आपवा बदल पूज्य पं. श्री शीलचन्द्रजीविजयजी गणीना तेम ज पोतानी कृतिनुं प्रकाशन करवा देवा बदल श्रीयुत हरिवल्लम भायाणीना अमे खूब खूब ऋणी छीए. आ ग्रंथनुं मुद्रणकार्य सुंदर रीते करी आपवा बदल श्री किष्मा प्रिन्टरीना श्री हरजीमाई पटेलना पण अमे घणा आभारी छीए.

विद्वानोना सहयोगथी आवां प्रकाशनो करवानी अने ते रीते श्री हेमचन्द्राचाय ने समरणांजलि आ^पवोनी वधु ने वधु तक आ ट्रस्टने मळती रहो तेवी प्राय ना साथे

अपदावाद ता. १४-१-१९९० ट्रस्टीगणः कः सः श्री हेमचन्द्राचायं नवम जन्मशताब्दी स्मृति शिक्षण संस्कार निषि

गुस्ताखी

खबर निह, केम, पण मारे 'ह' थी शरु थतां नामवाळी व्यक्तिओ जोडे बधु अनुबंध छे ए नर्झा. ए विना हेमचन्द्राचाय जेवी विभ्तिना साहित्य साथे गाद संपर्क अने वळी तेमनी ज कृति उपरना श्री हरिवल्लभभाईना प्रस्तुत स्वाध्याय साथेना संबंध शे संभवे ?

श्री हेमाचाय नुं नाम आवे ने हैये एक अनेरा अहोभाव प्रगटे छे. एमना विशे कांईक करवानुं आवे अथवा तो अन्य केाई एमना विशे कांई करतुं होय ने ते जाणवा मळे—तो हैयुं अनायासे ज हर्षान्वित बनी जाय छे. अनुबंध विना आम केम बने ?

श्री हरिवल्लभभाई भायाणीनो परोक्ष परिचय घणां वर्षी अगाउ 'कुमार'ना माध्यमथी थयेला. चौदेक वर्ष'नी वये, महुवा(सौराष्ट्र)ना रोकाण दरिमयान, त्यांनी लायबेरीमांथी 'कुमार'नी ज्ती फाईला मेळवी वांचता, त्यारे तेमां हो. भायाणीनी 'शब्दकथा' अचूक अने रसपूर्व'क वांचवानुं गमतु शब्दीनां कुळ अने मूळ जाणवानो ते उंगरे कोई ओर विस्मय हता. वर्षी पळी ह्यारे जाण्यु के हा. भायाणी मूळे तो महुवाना ज छे त्यारे तेमना माटेनो विस्मयभर्यी आंदर एकदम ज आनंद अने गौरवनी लागणीमां परिणमेला. महुवा तो अमारा वडा गुरुवरनुं गाम, ने त्यांना आवा विद्वान, आ तो केन्नुं गौरवमयुं गणाय!

परंतु ए हरिवल्लभभाईना साक्षात् संपक तो आ हैम शताब्दी-वर्षे, वर्षो पछी, थयो, ते पण हेमचन्द्राचाय नी अतिहासिक रचना 'देशीनाममाला'ना निमिचे ज अने एथी ज हवे में धारणा बांधी छे के मारे हकारादि नाम धरावती विद्वान विभ्तिओ साथे वधु अनुबंध छे ज

एक ज केाषमां राग्दाे अने तेनां लिंगाेना समावेश करीं 'नाम-लिङ्गानुशासन'नी रचना जेम विरल छे, तेम एक ज व्यक्ति, शम्दकाेषनी साथे संबंध धरावतां तमाम पासांओने वणी लेती केाषरचनाओ—एकले हाथे करीं आपे ते पण अद्भुतै छे.

जो अमरिस हिनो 'अमरकोष' कोषसाहित्यमा शिरामणि गणाय, तो कोषप्रणेताओमां शिरामणि श्रीहेमाचाय ने ज गणवा रहे, एटछं विशिष्ट अने मूल्यबंतु तेमनुं कोष-साहित्य छे. तेमनी मौलिकता तो ए छे के तेमणे फक्त संस्कृत कोषो ज नथी रच्या, पण प्राकृत/देशी भाषाना शब्दोनो पण कोष—'देशीनाममाला'— रच्यो छे.

'देसीसहसंगहीं' तेम ज 'रयणावली' जेवां नामाथी पण ओळखाती आ कृति श्रीहेमाचायं नी अति विशिष्ट अने प्राकृत भाषाओना अभ्यासीओ माटे अति मूल्यवान कृति छे. वस्तुतः आपणे त्यां व्यापक रूपमां अने खास करीने जैन समाजमां, प्राकृत भाषा-साहित्यनुं अध्ययन तेम ज संशोधन ल्याभग नामशेष बन्युं छे, बक्के प्राकृत साहित्य प्रत्येनी रुचि पण ओसरी रही छे, तेवी स्थितिमां, आ ग्रंथनुं योग्य मूल्यांकन कर्र्चुं अशक्य छे. अने मूळ ग्रंथनी ज उपेक्षा थती होय त्यारे, ते ग्रंथ उपर थता आवां मूल्यवान संशोधनानी तो शी वले थाय ए न कस्पी शकाय तेवुं नथी.

परंतु साचा अने अधिकारी विद्युजननी विद्याप्रवृत्ति मुख्यत्वे 'स्वान्त:-मुखाय'ना दृष्टिविंदुने ज बरेली होय छे. विद्या ज तेमनुं ध्येय होय छे, अने विद्या ज तेमनुं जीवन. अने तथी ज तेमना स्वाध्याय/संशोधननुं मूल्यांकन थवा विशे तेमने लेश पण फिकर नथी होती, अने ए साथे ज आ प्रकारना कार्यनी साथिता अने उपयोगिता विशे अदेशो पण नथी होतो. तेमने मन निरवधि काल अने विपुछ पृथ्वीतलने विशे क्यारेक ने क्यांक अवश्य आवां कार्योने उपयोग अने महिमा समुचित रीते थशे ज, तेवी निर्मेल ध्रद्धानी ज्योत अखंड प्रज्वत्वती ज रहे छे. क्याच, आ श्रद्धा ज तेमनुं प्रेरक बल बनी जती हशे.

हों. हरिवल्लभ भायाणी, गुजरातना विश्वक्यात भाषाविद अने संशोधक विद्वजन, आवा ज साचा अने अधिकारी विद्वान छे. तेमना विषयमां, तेमनी हरोळमां मूकी शकाय तेवा विद्वान, गुजरातमां तो नहि ज, ५ण भारतमां ५ण, कदाच ज हमें. प्राकृत अने देश्य भाषासाहित्यना संशोधनक्षेत्रे तेमनुं प्रदान जेटलुं मौलिक तेटलुं ज वैज्ञानिक पण छे.

आवा विद्वज्जने श्री हेसाचार्यनी 'देशीनाममाला' परत्वे, अर्थात् देश्य शब्दोनां अर्थ घटन, व्युत्पत्ति, प्रयोग, स्वरूप वर्गरेने लगती विविध समस्याओ अने तेना उकेलनी दिलामां जे ऊंड अने किंमती संशोधन कर्युं छे, ते तेमना अनेक लेख— निवंधामां तथा संशोधन—व्याख्यानीमां क्यूट छवायुं पथरायेछ छे. आ बधुं साहित्य एक स्थळे एकव करीने तेने प्रथाकारे प्रस्तुत करवामां आवे ते। जिहासुओ माटे घणा लाभ थाय, एवा विचार डा. बनुभाई शेठ द्वारा मारा जाणवामां आव्या. मने थयुं के श्री हेमचन्द्राचार्यनी स्मृतिमां स्थपायेला ट्रस्टना उपक्रमे, श्री हेमचन्द्राचार्यना ज प्रथमा संदर्भमां रवायेला आ शोधपत्रोंना संवय मुद्दण पामे ते। केवुं रूड !

बस, पछी ते। दूस्टना कार्य कर भाईक्षाने वात करतां तेमनी स्वीकृति मळी; हरिबल्लभभाईने वात जणावतां तेमनी संमति ते। मळी ज, पण साथे साथे संचयने आ मुद्रित स्वरूपे गोठवी आपवानी जवाबदारी पण तेओओ ज ट्रस्टीगणनी विनंतिश्री स्वीकारी, आ बधानुं परिणाम ते प्रस्तुत ग्रंथ.

श्री हेमचन्द्राचाय ने तेमनी कृतिओना विधार्थी ओ अने व्याख्याकारो प्रत्येक सैंके मळचे ज गया छे. अने छेल्ला देाड सैंकामां ते। तेमना साहित्यने वैज्ञानिक संशोधन—पध्धितथी मूलवनारा प्रेंग. पीशल, प्रेंग. मुरलीधर बेनरजी, प्रेंग. रामानुज स्वामी, पं. बेचरदास देशी जेवा अनेक संशोधका सांपड्या छे, जे झळहळती विद्वत्शृंखलामां हैं। हरिवल्लम मायाणीनुं स्थान निश्चित्रपणे विशिष्ट छे. मने विश्वास छे के बराबर आ ज रीते, विद्वद्भोग्य गणी शकाय तेवा प्रस्तुत ग्रंथने पण, तेना धारणने अनुरूप विद्यार्थी ओ अने विद्वान रसिक वाचका मळी ज रहेशे.

अने छेल्ले, हैं। भायाणी भाषाशास्त्रना अधिकारी पंडितजन छे, अने हुं ए विषयना हुजी विद्यार्थी पण नथी. आ स्थितिमां भाषाशास्त्रीय समस्याओनी चर्चा करता आ प्रथमा आमुख लेखे मारे लखवानुं होय, ए स्थिति मारा माटे मूंझवण भरेली ज नहि, पण क्षोभजनक पण छे. परंतु, श्री हरिवल्लभभाईना आग्रह आगळ मारो इन्कार लाचार ठयीं, अने हुं आ गुरुताख़ी करी बेठों! विद्या अमारे साधर्म्य छे, ए मादुं आश्वासन छे.

श्री हरिवल्लभमाई पासेशी आवां वधु ने वधु संशोधनो आपणने मळतां रहो,. एवी शुभकामना व्यक्त करवामां मारे। स्वार्थ पण छे, अने विद्वज्जगतनो लाभ पण.

गोधरा पोष **वदि** ६, २०४६ ता. १७–१–१९० —शीलचन्द्रविजय

PREFACE

The present collection of diverse writings including lectures. papers, glossaries and notes easily lays itself open to the charge of being a conglomeration of materials divergent in their aims and scopes. An additional oddity is that it is multilingual: a few papers fone of them actually an introduction reproduced from a book). introduction etc. are in Gujarati and one paper is in Hindi. Tomake the collection, therefore, tolerable at all to the readers, I can apprehensively point at one fact only, viz., all the writings pertain to exploring and clarifying character and range of Desya Prakrit words and forms in their multifarious aspects. The traditional connotation of the term 'Desya' or 'Dest' is considerably extended here to include later Sanskritizations and back-formations based on Prakrit, Apabhramsa and regional-dialect expressions. and occasionally even Late Sanskrit words. This can be considerably controversial, but in my studies of this brand of lexical material. I have found it increasingly difficult to confine myself to any rigid definition, and I feel confident that Hemacandracarya. with the admirable liberalism evidenced in the unique combination of scientific and practical approaches in his Desva lexicon. would have quite appreciated it.

It is earnestly hoped that the several issues raised and discussed here may help rekindle interest in Desya studies.

I cannot express adequately my great indebtedness to the trustees of the Kalikāla-sarvajña Śrī Hemacandrācārya Navam Janma Śatābdī Smṛti Śikṣaṇa Samskār Nidhi, and especially its

guiding spirit, Muni Sri Shilchandravijayji, who generously undertook to publish this collection. I consider it a great privilege to be joined with Munisri in the Jnana-yajna he has been performing, with his great love for and untiring devotion to learning and literature, to celebrate the Nine Hundredth Birth Anniversary of the Kalikala-sarvajna. Thanks are due to the P. V. Research Institute, Varanasi for kindly granting permission to include in the present collection the 'Studies in Hemacandra's Desinamamala', and to Dr. Kanubhai Sheth, whose friendly concern spurred me to preparatory action for arranging this collection. Dr. Vinod Mehta is to thanked for helping me in the proof correction and the Krishna Printery is to be thanked for completing the difficult printing work promptly and with few errors.

Caitra Pūrnimā, 2046 V.S. April 10, 1990 25/2, Vimanagar, Satellite Road, Ahmedabad—380 015. H. C. Bhayani

CONTENTS

		Page
	भूमिका	90
1.	Studies in the Desināmamālā	1
2.	Some Variant Readings in Hemacandra's Desināmamālā	96
3.	Origins of Multiple Meanings of Desya Words	104
4.	The Bhāṣālakṣana Chapter of the Gitālankāra	114
5.	Importance of Jain Literature for the Study of Desya Prakrit	155
€.	Notes on Some Desya Words	177
7.	तीन अर्घभागधी शब्द	192
8.	Some Stray Words: Uvviţţha, Usurusumbhia, Thudumkia, Dviraţikā	201
9.	Linguistic Peculiarities of Lilavatisara of Jinaratna	219
10.	'प्रयन्थप'क्शती'नी भाषा-सामग्री	241
	Word Index	265

Hemacandra's Prefatory Observations in the Desinamamala

देशी दुःसंदर्भा प्रायः संदर्भिताऽपि दुर्जोधा । आचार्य-हेमचन्द्रस्तत् तां संदर्भति विभजति य ।।

समग्र-राज्यसमानुशासने चिकीर्षिते संस्कृतादि-भाषाणां षण्णां राज्यातुशासने सिद्धहेम-नाम्नि सिद्धिरपनिवद्धा । इदानीं लोप-आगम-वर्णविकारादिना क्रमेण पूर्वेर-साधित-पूर्वी देश्याः राज्या अवशिष्यन्ते । तत्संग्रहार्थमयमारम्भः ।।

*

निःशेष—देशी—शास्त्राणां परिशीलनेन प्रादुभू तं क्वांचदर्थासमपंकरवेन क्वचिद्रणानु-पूर्वी निश्चयाभावेन क्वचित् पूर्व-देशी-विसंवादेन क्वचिद्गतानुगतिकता—निबद्ध-शब्दार्थतया यत् कुत्हलं तेन आकुलत्वं आ कथमयमपभ्रष्ट-शब्द-पङ्क-मग्नो जनः समुद्धरण।यइति परोपचिकीर्षा—रभसस्तेन हेतुना देशीरूपाणां शब्दानां अस्माभिः संप्रहो विरच्यते ।।

*

जे लक्खणे न सिद्धा न पिसद्धा सक्कयाहिहाणेसु । न-य गडण लक्खणा-सत्ति-संभवाते इह णिबद्धा ॥

*

देस-बिसेस-पिसद्धीइ भण्णमाणा अणंतया हु ति । तम्हा अणाइ-पाइय-पयष्टं भासा-विसेसओ देशी ॥

भूमिका

'देशीनाममाला'ः तेनुं क्षेत्र. स्वरूप अने महत्त्व

१. 'देशीनाममाला'नुं महत्त्व

हेमचंद्राचार्ये रचेलां शास्त्रो अनं कान्यामां न्याकरण अने शन्दकोशने लगता प्रंथोने भाषणे तेमना वाङ्मयप्रासादनों कळश कही शकीए. तेमां पण तेमणे करेलो देश्य शब्दोनों संग्रह, जे 'देशीनाममाला' तरीके जाणीतो थयो छे तथा जेने हेमचंद्रे 'रचणावला' एटले के 'रत्नावला' एवं नाम आपेलुं छे, तेनुं महत्त्व अनन्य छे. ए एक ग्रंथनी ज तेमणे रचना करी होत तो पण तमना पांडित्यनो व्वज लहेरातो रखी होत.

आ मात्र उपासनाप्राप्त देवनी प्रशस्ति नथी—ए सहेजे वतावी शकाय. शिष्टोना सामान्य व्यवहारमां अने साहित्यमां जे भाषाप्रयोगो थया होय, थता होंग अने करणीय होय ते प्रयोगोनुं—ते पदी, वाक्यो, शब्दो, वंधो अने प्रबंधोनुं प्रमाणीकरण हेमचंद्रे 'सिद्धहेम–शब्दानुशासन', 'अभिधान–चिंतामणि' वगेरे कोशो, 'काव्यानुशासन' अने 'छंदोनुशासन' द्वारा कर्यु. व्याकरण अने संस्कृत कोशनो जैमने आधार नथी तेना, प्राकृत साहित्यमां परंपराथी प्रचलित शब्दोना—एटले के देश्य शब्दोना प्रमाणीकरण माटे तेमणे 'देशीनाममाला' रची। आ माटे तेमणे पूर्ववर्ती देश्य शब्दकोशोनुं संकलन करीने तेमां आवश्यक शुद्धिवृद्धि करी, अने सामग्रीने एवा सुव्यवस्थित रूपे रज् करी के तेमना देशीकोशे आगळना बधा कोशोने सुलाजीन प्रचारखप्त करी दीधा। धनपालकृत 'पाइअलच्छीनाममाला'ना एक भात्र अपवादे (तेनो पण मात्र पा भाग ज देश्य शब्दोए रोक्यो छे, वाकीनामां तो संस्कृतभय शब्दो छे) हेमचंद्रपूर्वना बधा देशीकोशो घणा समयथी नामशेष वनी गया छे.

भ केटलांक '-य' प्रत्ययवाळां साधित संस्कृत अंगो पाछळना समयमां, लोकिक उच्चारणना प्रभावे, ईकारान्त स्वरूपे, लिंगपरिवर्तन पामीने (नपुंसकिलंगीने वदले स्त्रीलिगी बनीने), मूळ स्वरूपवाळां अंगोनी साथोसाथ, विकल्पे वपरातां थयां हतां. जेम के, माधुर्थ/माधुरी, चातुर्थ/चातुरी, चौर्य/चोरी, 'साक्ष्य' अने गुजराती 'सास्त्री'ना मूळमां रहेल 'साक्षी' (एटले के 'साख'). ते ज प्रमाण वट्य/देशी. पत्री 'देशी' मंद्रा देशीकोशना संक्षेप तरीके कोशवाचक पण वनी.

२. देश्य प्रकारना प्राकृत शब्दोनुं स्वरूप

हेमचंद्राचार्ये 'रयणावली' (जेनां बीजां नाम 'देसी-सह-संगहो' अने 'देशीनाम-माला' छे.)नी रचना ई. स. १०४५-१०५० नी वच्चे करी हती. जे प्राकृत शब्दो परंपरागत परिभाषा प्रमाणे 'देश्य', 'देशी' अथवा 'देशज' तरीके जाणीता हता, तेवा शब्दोना प्राचीन भारतीय कोशोमां आ अंतिम अने संभवतः सौथी मोटो केश हता. 'देशीनग्ममाला' (संक्षिप्त देना.) एक स्वनिर्भर, स्वयत्त केश नथी. भाषाना शब्दोने लगता जे परंपरागत सिद्धांत प्रचलित हता तेना उपर आधारित व्याकरण अने शब्दकोशोनी रचनामां ते एक घटक के अंगभूत हता.

प्राचीन भारतमां भाषानं वर्णन अने विश्लेषण माटे भागे ता जे साहित्य अने शिष्ट व्यवहार उच्च वर्ण पूरता मर्यादित हता, तेना माध्यम तरीके रहेळी भाषानुं ज थतुं रखं छे. व्याकरणीय परंपर। तेना प्राचीनतम तबकाथी भाषानी शुद्धि जाळवत्रा, शिष्ठ प्रथागीलं धारण जाळववा सतत जामत रहेती. हेमचंद्राचार्य पूर्वे अगियार साथी पण वधु वर्षीथी संस्कृतनी साथासाथ प्राकृत भाषाओ पण साहित्यभाषाओं तरीके वपराती यई हती. हेम बंदाचार्य सुधीना तथा तेमनी पछीना व्याकरणकारा माटे साहित्यमां शब्द मंडीळने प्रमाणित करवानुं सतत कार्य रहेतुं, केम के एवा शब्द मंडीळमां परिवर्तन थवं स्वाभाविक अने अनिवार्य हतुं. साहित्यिक प्राकृता अतिराय रूट वनी गयेछं स्वरूप अने शैली धरावती भाषाओं हती. पुस्तिकया कही शकाय एवी ए भाषाओं मां संस्कृतमांथी अविरत आदान थतुं रहेतुं. संस्कृत व्याकरणा रचवा पाछळना एक हेतु लेखका अने पाठका माटे एक सहायक साधननु निर्माण करवाना हता. ए कारण संस्कृत व्याकरणामां प्राकृतनं ध्वनिस्वरूप अने व्याकरण संस्कृतमांथी सिद्ध करवाना नियमे। जाडवानी प्रथा पडी. साहित्यिक प्राकृतीना शब्दोने तत्सम, तद्भव अने देश्य एवा त्रण प्रकारमां वहेंचीने तेमनुं निरूपण करवामां आवतुं . जे धातुआं अने अंगा देमना मळभूत धात रूपे। अने शब्दोथी अभिनन हता, ते संस्कृतसम के तत्सम. आवा प्रकृत शब्दोनी संस्कृत शब्दोधी अभिननतानुं तात्पर्य ए छे के ए धातुओं अने शब्दोना ध्वनिओ अने अर्थोमां कशुं देखीतुं के ध्यानपात्र परिवर्तन नथी थयं. जे धातुओं अने अंगी मळभूत संस्कृतमांथी ध्वनिपरिवर्ीन द्वारा —विकार, लेाप के आगमनी प्रक्रियाओं द्वारा — निष्पनन थयेला होय ते संस्कृतभव के तद्भव. वाकी रहेला जे शब्दों (एटले के व्यक्ति अने

२. आ त्रिविध वर्गी करण उपरांत चतुर्विध वर्गी करणनी पण एक परंपरा हती. तत्सम, तद्भव, देश्य अने सामान्य. जुओ मारा हरिख्द उपरनी लेख ('िखा', यं. १४, अं. १, १९७३, पृ. १-६) पण प्रम्तुत चर्ची मारे ते उपयोगी नथी.

अर्थना नेयाजनवाळा एकमा) ध्वान अने अर्थना स्वीकृत नियमा ळागु पाडीने साधी शकाता न है।य ते देश्य आमांना त्रीजा प्रकारना शब्दोनुं—एटले के देश्य शब्दोनुं—प्रमाणीकरण मान्य देशिकाशोनी रचना हारा थतुं. हेम देहे 'सिद्धहेम-शब्दानुशासन'मा तत्सम अने तद्भव पदो सिद्ध करवानुं कार्य ते माटेनां सूत्रों रचीने पार पाडयुं. वाकी रहेला देश शब्दोंना प्रकारनी तेमणे देना.मां संभाळ ळीधी. देना. उपरनी स्वीपश्च हित्तमी तेमणे स्पष्ट कर्यु छे के लेप, आगम अने विकार ए प्रक्रियाओं उपर आधारित, व्याकरणगत नियमोंने आधारे जे शब्दों संस्कृतमांथी सिद्ध थई शकता नथी तेमने। देना मां संग्रह करेले। छे.

निरूप्य विषयनी मर्यादाओं दर्शावता हैमचंद्राचार्य जणाव्युं छे के तेमना समयमां जे शब्दो जुदाजुदा प्रदेशोना छोकव्यवहारमां प्रचिछत हता — एटले के प्रादेशिक बोलीओमां राजवराज वपराता शब्दों —ते वधाना संग्रह करवाना तेमना प्रयास नथीं. तेमना नम तो परापूर्वथी जे शब्दा प्राकृत साहित्यमां वपराता रह्या छे अने जेमनी व्युत्पत्ति थई शक्ती नथीं तेवा शब्दों संग्रहीत करवानी छे.

३ हेमचंद्रनी रचनापद्धति अने सिद्धि

यहेलां जणाव्युं तेम प्राकृत व्याकरणा अनं काशी रचवा पाछळतुं प्रयोजन हमें ए रह्युं छे के तेमना द्वारा, जेओं संस्कृतना जाणकार हता तेमने प्राकृत साहित्य रचवा अने समजवा माटे आधारभूत, सगवडभयां अने अवतन सहायक साधन पूरा पाडवां. हमचंद्र देशीकेश कारोनी दीर्घ परंपराने छेडे आवे छे. देना.मां बार पुरागमी देशीकारामांथी कां ता उद्धरणा आपेलां छे, अथवा ता तेमना प्रमाण तरीके निर्देश करेला छे. घणा पूर्ववर्ती देशीकाशो होवा छतां पेति शा माटे नवा देशीकाश रची रह्या छे एवा प्रथना उत्तरहपे हम बंदे त्रण कारणा आप्यां छे: (१) पाछळना समुयना केटलाक देशीकाशो मृत्रभरेला, प्रमादवाळा अने हकीकतनी चाकसाई करती समीक्षाहिए विनाना छे. ए केश कारोष आपळना प्रमाणभूत देशीकाशोना तेमना अञ्चनने लीचे, अथवा ता तेमनुं खोदुं अर्थघटन करवाने लीचे अनेक देशी शब्दोना साचा स्वरूप अने अर्थ वावत गूंचवाडा ऊमे क्यों छे. (२) हस्तप्रवलेखकानी वेदरकारी खाने मृत्रभरेली रीतरसमोन लीचे ए गूंचवाडामां मोटा उमेरा थया छे. (३) आगळना किशोभां शब्दो वर्णानुकम प्रमाण अने शब्दोनी लंबाई प्रमाणे गे।ठवीने न आप्या होवाकी शब्दोना स्वरूपमां गरवड थती राकी शकाती नथी.

हेमचंद्रे देना.मां शब्दोने वर्णानुक्रमे अने तेमनी छंबाई प्रमाण गाठव्या छे. जे गावतमां एमने शंका पडी के मतभेद जणाया त्यां तेमणे योग्यायाग्यताना निर्णय करीने पोतानी पसंदगी करी छे. ज्यां तेमने पुरावा अनिर्णायक लाग्या छे के ब बता तुल्यबळ लाग्या छे, त्यां तेमणे बंने विकल्प नेंध्या छे. अनेक स्थले संग्रहीत ग्रब्दो परत्वे पूर्ववर्ती साधनामांथी उद्धरणा आध्या छे, चर्चा करी छे अने अयोग्य मतानी प्रतिवाद कर्या छे, आ हकीकत, तेम ज तेमणे अनेक शब्दोनी बाबतमां स्वीकारेली विकल्पिक जोडणी अने विकल्पिक अर्था तथा पिशेले नेंधेलां पाठांतरेशनुं अडाबीट जंगल—ए बचा उपरथी आपणने कांईक ख्याल आवे छे के देश्य शब्दोना स्वस्थ अने अर्थनी बाबतमां हेमचंद्रना समय सुधीमां केटला पूंचवाडा अने अव्यवस्था ऊभां थयां इतां, अने केवी विकट समस्याओना तेमने सामनी करवा पड्यो हशे. देश्य शब्दोना विस्ता जिल्ला करवा पत्रवी या छेते देश्य शब्दोना विस्ता आपणने प्रतीत थाय छेते देना.ने हेमचंद्राचार्यनी एक बच्च भगीरय सिद्धि तरीके आपणी समक्ष स्थापे छे. तेमणे देशी शब्दोनुं क्षेत्र जे रीते सिमित कर्यु छे, तेमां मण आपणने उपर्युक्त गुणे। जीवा मळे छे, केम के जे सिद्धांता अने संदर्भमाळखं ते वेळा परंपराथी स्वीकार्य हतां, तेमनी मर्यादामां रहीने देशी शब्दप्रकारनी, चुरत व्याख्या तो दूर रही पण कामचलाउ व्याख्या आपवानुं पण महेल व हनुं. शब्दने देशी गणवा माटे हेमचंद्र तण धोरण आप्यां छे:

- (१) स्वरूपगत असाध्यता : शब्दसिद्धिना स्वीकृत नियमने आधार जे शब्दो संस्कृतमांथी सिद्ध न थई शके के जेमने। प्रकृति—प्रत्यय-विभाग न थई शके ते देश्य शब्द.
- (२) अर्थगत असाध्यता : जे शब्दा स्वरूपथी संस्कृतमांथी सिद्ध थई शक्ता होय एम जेमनी अर्थ जुदो होय (पठी भलेने ते मृठना अर्थगांथी साभी शकातो होय) त देश्य शब्दो .
- (३) पूर्वपरंपरा : कंटलाक एवा शब्दा, जेमने देखीतां संस्कृत साथे थाजापणा प्रयत्ने आपणे सांकळी शकीए तेम हाय, ता पण जेमने आगळना आदरणीय अने प्रमाणभूत काशकाराए देशी गण्या हाय तेमने पण देशी गण्या.

हेमचंद्रे संस्कृत धातुआं मांथी निष्पन्न न करी शकाता प्राकृत धातुओं ना संद्रांतिक रीते देना मां सीधा समावेश नथी कर्यो ते माटे तेमणे एवं कारण आप्युं छे के ए शब्दोने संस्कृतमांथी साधित प्रत्यचे। लगाडी शकाता हता पहेलांना देशीकारानी पद्धति छोडी दईने हेमचंद्रे धात्वादेशोंने 'सिद्धहेम' व्याकरणना प्राकृत विभागमां स्थान आप्युं छे अने तेम छतां पूर्वप्रचलित प्रथाने मान आपीने, तेम ज उपयोगितानी दृष्टिए तेमणे बधा महत्त्वना धातुओंने देना उपरनी पीतानी टीकामां पण नें। था है. अर बावतमां तेम ज बीजी वणी वावतामां सामान्य रीते वधाये प्राकृत व्याकरणकाराने। अभिगम मात्र सेद्वांतिक करतां व्यवहार वधु रह्यो छे. जो आ मुद्दानुं मूल्य आपणा मानमां वसे तो संस्कृत मूळना अने संस्कृतमांथी व्युत्पन्न नहीं थई शकता शब्दोने जुदा पाडवानी वावतमां प्राकृत व्याकरणकारे। जोईए तेवा चुस्त अने ससंगत नथी ए प्रकारना आधुनिक अभ्यासीओना वांधा वज्द वगारना लागे, अने केटलीक बार ते। तेमां आपणने वांकदेखापणाना दोष देखाय.

देश्य शब्दोना अविचिन समयमां थयेलां अध्ययनाए ए शब्दोना मूळ स्रोत कया हता ते विषय पर केटलांक प्रकाश पाड्यों छे. केटलांक देश्य शब्दोंनु मूळ संस्कृत होवानुं वतावी शकाय छे. ए शब्दों देश्य गणाया ते ए कारणे के जे ध्वनिपरिवर्तन के अर्थपरिवर्तनने परिणामे ते निष्पन्न थया छे, ते परिवर्तनों संकुल अने तरत न एकडाय तेवां छे. बीजा केटलांक देश्य शब्दोनां मूळहूप प्राचीन भारतीय—आर्य शब्दों एवा छे, जेमना जळवायेला के जाणीता साहित्यमांथी प्रयोग टांकी शकाता नथी, अथवा जेमना मूळ शब्द मात्र वेदिक भाषामां ज प्रयोजायों छे, अथवा ते। भारतीय—आर्यनी पूर्ववर्ती भूमिकामांथी तेमना सगड मळे छे. बीजा केटलांक शब्दोना मूळहूप शब्द द्वाविडी परिवारनी भाषाओमांथी के क्वचित फारसी—अरवीमांथी वतावी शकाय हे. परंतु आ रीते ज्नी भूमिकाओमां अथवा ते। अन्य भाषाओमां जेमनुं मूळहूप होवानुं आपणे वतावी शकीए छीए तेवा शब्दोन वाजु पर राखीए, ते। जेमनी व्युत्पत्ति अस्पष्ट के अज्ञात छे, तेवा बाकी रहेता शब्दोनुं प्रमाण घणुं मोरुं छे.

थ. देश्य शब्दसामग्रीनी समस्याओ

देना. उपरतुं हवं पछीतुं संशोधनकार्य वे संलग्न दिशामां चलाववातुं छे ते ते देश्य शब्दतुं चेाक्कस स्वरूप अने अर्थ निश्चित करवां तथा तगतुं प्रचलन अने व्युत्पत्ति निश्चित करवां. आमांथी पहेली समस्यानां वे पासा छे: प्रथम तो हेमचन्द्रे ते स्वरूपे अमुक देश्य शब्द नांध्या हता ते स्वरूप नक्की करवुं. आपणी पासे देना नी जे हस्तप्रता छे, तमां देश्य शब्दोना लिखित स्वरूपने लगता अपर्पार अने ग्रंचवाडावाळां पाठांतर मळे छे. पिशेले देना ना तेमना संपादनमां पाठनिर्णयने लगती समस्याओना समुचित एयाल आप्या छे. तेमणे सात हस्तप्रतामांथी (अने सुधारेली आप्रत्तिमां रामातुजस्वामीए वधारानी त्रण प्रतामांथी) वधां पाठांतरा नोंध्यां छे अने मोटे भागे पाठ निश्चित करी आप्या छे. पर तु तेमणे ए पण जणाव्युं छे के अनेक शब्दोनी वावतमां काई आधारभूत धारणने अभाव, विविध जोडणीभेदोमांथी काई एकनी पसंदगी करवी घणी मुश्केल छे. क्वचित तेमणे आमां अर्थाचीन भारतीय न

आर्थ नामग्रीमांथी सहाय मेळववांना प्रयत्न कर्या छे खरा, पण पिशेले ए आधारकोतंना नाममात्र स्पर्श करेलो. हरगोविददास शेटे अने वधु तो बेघरतास दंशीए तेना धणी सारी रीते उपयोग कर्यो छे अने हवे तो आपणे (१) टर्नरनो नेपाली कोश, (२) तेमने भारतीय-आर्य भाषाओंना तुलनात्मक केशा, (३) माय्होंफरनो प्राचीन भारतीय-आर्यनो संक्षिप्त व्युत्पत्तिकेश अने (४) बरेग तथा एमेनोनो द्राविडी भाषाओंना व्युत्पत्ति-केशा-ए साधनाने लीधे-अने (५) ई.स. १९०० पछीथी भारतीय-आर्थ परत्वे ऐतिहासिक अने तुलनात्मक दृष्टिए थयेला वधु संशोधनकार्यने लीधे, ए आधारनो घणी वधु सारी रीते उपयोग करी शकीए छीए एवा बीजो अगत्यनो आधार आपणने पिशेलना देना ना संपादन पछी प्रकाशित थयेल विशाल प्राकृत साहित्य अने समय अपभ्रंश साहित्य पूरे। पाडे छे. देशी शब्देशना स्वरूपनिर्णय माटे ए साहित्यमांथी वहु थे। इ उपयोगमां लेवायुं छे.

देश्य शब्दाना स्वह्मिन्णिय अने अर्थनिर्णयने लगती समस्यानुं वीलं पासुं हे, हेमचंद्रे पर पराने अम्बारे नोंधेला शब्दाना स्वह्म्पनी अने अर्थनी चकासणी. देशी शब्दोनो चोक्स स्वह्म्पनिण्य करवानुं काम ज्यारे हेमचंद्रे हाथमां लीखं त्यारे ज ते भारे गूंचवायेलुं हतुं. हेमचंद्रे पेतानी विवेकशील, समीक्षक दृष्टिए समस्या उकेल्वाना जे प्रयास कर्या हे, तेमांथी आपणने तेमनी अंची वैज्ञानिकता, व्यवस्थापकता अने समतील दृष्टि प्रतीत थाय हो. अनेक शब्दोनी बावतमां हेमचंद्रे वेकित्यक शब्दह्म आप्यां हो तो पण होवटे तो तेओ अमुक पायानी स्वीकृतिओंने वश्वतीन ज पुरस्कार-तिरस्कारनुं काम करी शके तेम हतुं. वळी परंपरा प्रत्येना आदर तेमने माटे अनिवार्य हतो आपणा समयना कोई कोशकारनी सरखामणीमां हेमचंद्रने दृष्टिनी तेम ज संदर्भशामग्रीनी मेाटी मर्यादाओं नीचे काम करवानुं हतुं. अर्वाचीन अभिगम, तपासपद्धति अने सहायक साथनाना प्रकाशमां आपणे हेमचंद्रे जेमने अलग, जुदा देश्य शब्द लेखे नांध्या हो, तेमने अन्यत्र नोंधेला केाईक शब्दना मात्र स्वह्म्पांतर तरीक घटावी शकीए, वळी देश्य शब्दोनां मळेतां विविध स्वह्म्पांतरानी पाछळ रहेलुं लेखनमूलक के उच्चारणमूलक कोईक व्यापक वळण तारवीने ते द्वारा भारतीय-आर्थना इतिहास माटे पण केटलीक महत्त्वनी हकीकता प्राप्त करी शकीए छीए.

देश्य शब्दोनी वीजी समस्या त तमना साहित्यगत प्रयोगा अने व्युत्पत्तिने लगर्ता छे. ए समस्याने उन्नेलवा माटे पण आणणे उपर्युक्त आधाराना आश्रय टेबाना छे. आ माटे प्राचीन प्रांकृत अने अपभ्रंश कृतिओनुं तेमां वपरायेला देश्य खब्दोनी इष्टिए अध्ययन करवुं पण जरूरी छे.

५. समस्याउकेलने। प्रारंभ

दुर्माग्ये एकवे अपवाद उकेलनी दिशामां कशा व्यवस्थित प्रयासी नथी थया. १९२९मां प्रकाशित हरगाविंददास शेठना प्राकृत केश 'पाइअसहमहण्णवा' द्वारा देना.ना अनेक देश्य शब्दोना साहित्यिक प्रयोगोनी निर्देश मळे छे खेरा श्रीमती रत्ना श्रीयने मारा मार्गदर्शन नीचे पुष्पदंतना अपभ्रंश पौराणिक महाकाव्य 'महापुराण'मां तेम ज तनी बीजी अपभ्रंश कृतिओमां वपरायेला चौद सा जेटला देश्य के विरल शब्दोनुं व्यवस्थित अध्ययन तेमना पीएच.डी. माटना शोधप्रंथमां १९६२मां कर्यु छे (पुस्तकरूपे प्रकाशित १९६९मां), अने ते पर्छा तेमण शान्तिस्रिकृत प्राकृत 'पुहवीचंदचरिय'मां प्रयुक्त नव सा जेटला देश्य शब्दोनुं अध्ययन कर्युं (१९७२मां प्रकाशित थयेला ए ग्रंथने अंत आपेला शब्दकेशामां). देखीनुं छे के आ प्रकारनां संख्यापंच तुलनातमक अने समीक्षात्मक अध्ययनोने परिणामे ज आपणे देना. तेम ज तेना पूर्व वर्ती इतर केशिनी देश्य सामग्रीना चेकिस स्वरूप अने अर्थ ना निर्णय करवानुं काम आगळ चलावी शकीए.

आ प्रकारना आगळ करवाना कार्यनी दिशामां पहेलां थोडांक करम लेखे में १९६३मां आपेलां त्रण व्याख्याने।मां (प्रथम १९६६मां प्रकाशित) आशरे छ से। देश्य अने विरल प्राकृत शब्दोनी चर्चा करी हती तेमांना पहेला व्याख्यानमां देना.मां संग्रहीत देश्य शब्दोमां, ते शब्द एक ज हाय पण विविध स्वरूपे आपेला हाय, तेवा शब्दोनी चर्चा करी छे. एवा शब्दोना वे प्रकार छे: जेमना स्वरूपमेदना मूळमां लेखनदाप के लिपिगत वर्णना भ्रम हाय, अने जेमना स्वरूपमेदना मूळमां वास्तविक ध्वनिपरिवर्तन हाय. पहेला प्रकारने सात वर्गमां अने बीजाने वर्त्राश व मां वहेंचीने वर्णपरिवर्तनानुं विश्लेषण कर्यु छे. बीजा व्याख्यानमां रामानुजस्वामीना देना.ना संपादनमां पोणा वसी जेटला शब्दोना करेला खोटा अर्थ सुधार्या छे. अत्रीजा व्याख्यानमां स्वयंभूना अपश्रंश पौराणिक काव्य परमचरिय'मां मळता देश्य शब्दोनी चर्चा करी छे.

ए पर्छा १९६७मा प्रकाशित एक लेखमां में देना ना केटलाक अनेकार्थ शब्दोना अर्थ मेदना मृळमां खरेखर जुदाजुदा वे अर्थ रहेला नथी, पण अर्थ वाचक शब्दना लेखनअमने कारणे वे देशीकारामां जाणे के ते शब्द जुदाजुदा अर्थ मां नींघाया छे एवा अम थ्या छे ए हकीकत, बार शब्दोनी विगते चर्चा करीने दर्शावी छे. सेंकडी देदय शब्दो

३. वेचरदास देशिना 'देशीशब्दसंग्रह'मा पण, जे शब्दाना रामानुजस्वामीए बेटो अर्थ कर्यो छे, ते शब्दाना साचा अर्थ करेला छे.

अने प्राकृत धात्वादेशोनी आ दृष्टिए चकासणी करवानी जरूर हेाईने आ ते। ए दिशामां करेली एक नानकडी शरूआत ज हे.

प्राकृत-अपश्रंश साहित्यमां प्रयुक्त देश्य शब्दोनुं स्वरूप अने अर्थ निश्चित करवा अने तेमना देना.मां नींधेला शब्द साथे मेळ बेसारवा प्रत्येक शब्दने लगतां पाठांतरा, संदमीं वगेरनी झीणवटथी चर्चा करवी घणी वार जहरी वने छे. ए पद्धितए में जैन आगमसाहित्यमां वपरायेला शब्दोनी तथा 'विड्डिरिस्ट', 'उब्विट्ट', 'शुडुंकिय' अने 'ऊसुहमुंभिय' जेवा शब्दोनी केटलाक टेखी हारा चर्चा करी छे.

मुनि दुलहराज संपादित 'दंशी शब्दकोश' (१९८८)मां जैन आगमप्रधा, तमना परनी व्याख्याओ तथा हेमचंद्रनी देना.मांथी देश्य शब्दी स्थानिर्देश अने पाठांशनां उद्धरण साथे आप्यां हे, ते उपरांत 'पाइअसइमहण्णवी'मांथी तथा प्रकाशित प्राकृत-अपभ्रंश साहित्कृतिओने अंते तमना संपादकेए तार्वीने मूकेला शब्दकोशमांथी देश्य शब्दी संगृहीत कर्या हे. आ रीते जैन आगमसाहित्यमा प्रयुक्त प्राचीन देश्य शब्दो तथा अन्य प्रथेशनी देश्यसामग्री जेमां संगृहीत करी हे, तेवा देशीशब्दकेश तथार करावी प्रकाशित करवानुं जैन विश्व भारतीनुं प्रश्नस्य कार्य ए शब्दोना अध्ययन माटे एक घणुं ज उपयोगी साधन पूरं पांडे हो.

६. देना.नुं सामान्य स्वरूप अने निरूपणपद्धति

हमचंद्रे देना.मां संग्रहीत देर्य शब्दांने तमना आद्य वर्णना कम अनुसार आठ वर्गोमां बर्डेचेला छे. ए रीते कुछ ७८३ गाथामां ३९७८ शब्दांनी समावेश करेले। छे. ते—ते वर्णथी शरू थता शब्दोंने तमनी अक्षरसंख्याना कमे गेउब्या छे अने पहेल। एकार्ष अने पछी अनेकार्थ शब्दां नेक्ष्या छे. देना. उपर पोतानी संस्कृत बृत्तिमां हेम बंद्रे घणाखरा प्राकृत घात्वादेशोना पण समावेश कर्यो छे अने नेक्षिला शब्दांना स्वरूप अने अर्थ विशेनां मतांतरा पण आक्ष्यां छे. ए वधाने जो गणतरीमां लईए ते। इपर नोंधेली शब्दसंख्या वमणीत्रमणी थहा संभव छे.

ते—तं गाधामां नोंधेला ५२व शब्दोना प्रयोगना उदाहरण लेखे (अनेकार्ध शब्दोने बाद करतां) हेम बंद ६२२ काब्यारमक दृशंतगाधाओं रचीने मूकी छे. आदा वर्णनी अने अक्षरसंख्यानी समानताने आधारे एक ज गाधामां गूंथायेला शब्दो वच्चे अर्थ दृष्टिए वर्णु कर्त ता वादरायण-संबंध ज होय (एक ज ब्याकरणस्त्रमां साधानाथ गूंथायेला 'अन्', 'युवन्', 'मघवन्' वन्चे होई शके तेवा) • एवा शब्दोना अर्थोने सांकली सुर्यंगत अर्थाकर्त, काब्यात्मक रचना करणा माहे केटल रचनाकीशल जोईए ए यमनी शकाय

तम हैं आ कारणे ए द्रष्टांतगाथाओमां केटलीक क्लिप्टता के आयाससाध्यतानी अनुभव आपणने थाय ते अनिवार्य है अने ए कारणे पिशेल वगेरेए ए गाथाओनी कठीर टीका पण करी हो. पर तु बेनरजीए आ वग्वतमां हेमच द्रनो योग्य वचाव करीने कही के ए गाथाओ प्राकृत कवितामां हेमच द्रनुं मूल्यवान प्रदान हो. बेचरदास दोशीए ए बधी दृष्टांतगाथाओनुं अर्थ घटन करीने गुजरातीमां अनुवाद आपवाना सभर्य प्रयास कर्यों हो. परंतु ए दृष्टांतगाथाओ निरूपित देश्य शब्दोना विवरणनुं एक अनिवार्य अंग होवानुं पिशेल जोई नहोता शक्या. अमुक देश्य शब्दोना जे पर्यायशब्द प्राकृतभाँ (मूळ नाथामां) के स स्कृतमां (टीकामां) आपेला हो ते घणी वार अनेकार्य होय हो अने त्यारे तेनो कथो अर्थ केशकारने अभिप्रेत हो तेनुं स्पष्टीकरण शब्दना वस्तुतः प्रयोग करीने, ते स दभ ने आधारे ज वतावी शकाय. नहीं तो घणी स दिग्धता रहे.

बेनरजीए गणतरी करी छे के देना.नी ६३४ हच्टांतगाथाओमांथी ४१० हा गारिक छ: १९९ प्रकीण विषयनी छे अने १०५मां कुभारपाल के जयसिंहनी प्रशस्ति छे—ए चाइनाव्यों छे.

७, देश्य शब्दानां मूळ

हेमचंद्रे व्याकरणशास्त्रनी स्थापित पर परा अनुसार जे शब्दोन देश्य गण्या छे, तेमांथी घणा शब्दो आपणी अवांचीन भाषाविज्ञाननी दिष्टिए संस्कृत मूळना के तद्भव होवानुं आपणे वतावी शकीए छीए. मेरिस, पिशेल, रामानुजस्वामी वगेरेए आ दिशामां केटलंक कार्य कर्युं छे. संस्कृत शब्दोनी व्युत्पत्ति परत्वेनी एक परंपरा बधा नामने धातुज गणीने जे शब्दोनो प्रकृतिप्रत्यय वगेरे रूपे विभाग न करी शकाय तेवा रूढ शब्दोनी पण व्युत्पत्ति आपवानी प्रधा यास्कृती पण पूर्वेना समयश्री प्रचलित हती. व्याकरणकारा, केशकारो वगेरे (१) पाणिनिनां 'उणादया बहुलम्' अने 'प्रकादरायः' ए स्त्रना आधार लई, (२) धातुपाठाना अल्पपरिचित धातुओंनो आधार लई, (३) 'धातुओं अनेकार्य होय छे', 'शब्दो अनेकार्य होय छे' एवा मतीना

र. द्र्याश्रय तथा द्विस धान वगेरे प्रकारनां काव्यानी रचना माटे पण आवी ज आवडन जरुरी होत्र हो.

प. एमना प्रवास पछी पण केटलीक गायाओंना अर्थ वरावर खेसाडवामां मुद्देकेतीओं रहे छे अने त नवा प्रयस्न मांगे छे.

^{ः &#}x27;संस्कृत-प्राकृत जैन व्याकरण और काश की परंपरा' (१९७७)मां प्रकाशित ्क छेखमां में उदाहरण छेखे देना.ना २५० जेटला देश्य शब्दीनां संस्कृत नुरु आप्युं हो. (जुओ आ संग्रहमां पू. १६५-१७३)

आधार ठई, अनं (४) एकाध्रर केशोनी आधार ठई, मारीति। इन शब्दानी व्युत्पत्ति परापूर्वथी आपता आव्या छे. वेचरदास देशीए आ पर पराने अनुसरीने तेमना दिशीशब्दसं प्रह'मां २५० जेटला पृष्ठमां देना.ना घणाखरा देश्य शब्दीने व्युत्पन्न करी वताव्या छे. आ एक घणा ज समर्थ प्रयत्न छे अने तेमांथी सं कड़ी देश्य शब्दीना मूळना विचार करवा माटेनी मूल्यवान सामग्री के सं केती आपणने मळे छे. परंतु अतिहासिक भाषाविज्ञान अने भारतीय-आर्थना परिवर्तना झतहासनी हिष्टिए देशीनी घणी व्युत्पत्तिओं केवळ अटकळों के गमे तम करीने शब्द व्युत्पन्न करवाना आग्रहनां परिणामा होवानुं जोई शकाय छे अने ते कारणे ते निराधार के अप्रतितिकर ठरे छे.

रामानुजस्वामीए तेमना संपादनने अंते आपेठा शब्दकाशमां घणा देश्य शब्दानां मूळ सूचव्यां छे. पूर्वे थयेठा आ विषयने ठगता कामने आधार बेनरजीए एवा अंदाज काढ्यों छे के देना.ना देश्य शब्दोमां १०० तत्सम छे, १८५० 'छूपा' तद्भव छे, ५२८ शंकास्पद तद्भव छे अने १५०० चेविक्ता देश्य एटले के संस्कृतमांशी व्युत्पन्न न करी शकाता शब्दों छे. ए १५००मांथी ८०० अर्वाचीन भारतीय-आर्य भाषाओंमां प्रचिठत छे; बाकी रहेठा आये तर भाषामांथी आव्या होवाना संभव छे. बेनरजीना १९३१ना अंदाजमां ते पछी उपछब्ध थयेठा प्राकृत सहित्यना अने संशोधनना प्रकाशमां ठीक-ठीक फेरफार करवा पढशे. जे केटलाक शब्दोनुं मूळ द्राविडी भाषाओंमां अने थाडाकनुं मूळ फारसी के अरबी भाषामां होवानुं अभ्यासीओ ए चींध्युं छे, तेमां पण पुनर्विचारणाने माटे घणा अवकाश छे. द्रंकमां आवां बधां तारणोने चुस्त धारणे चकासीने चेविस निर्णाया करवानुं हर्जा धणा शब्दोनी बावतमां शकी छे.

केटलीक चर्चा पछी अमे देश्य शब्दोनुं कामचलाल, व्यवहार वर्गीकरण नदाः कर्युं हतुं, ते रत्नां श्रीयने तेमना देशी शब्दोना अध्ययनमां अपनाव्युं छे. उपर नेषिला बेनरलीना वर्गीकरणथी तेमां वधु झीणवट छे. ते वर्गीकरण आ प्रमाण छे:

- (१) संस्कृतमांथी सीधा ज निष्पनन करी शकाता शब्दी.
- (२) संस्कृतमांथी निष्पन्न पण विशिष्ट के परिवर्तित अर्थ वाळा शब्दो.
- (३) संस्कृतमांथी अंशतः व्युत्पन्न शब्दो.
- (४) जे शब्दोने मळता शब्दो उत्तरकाळीन संस्कृत काशो अने एवा बीजा सोतामां मळे छे तेवा शब्दो.
- ं (५) रवानुकारी शब्दो.
 - (६) विदेशी शब्दा

(७) वाकीना अब्युत्पाद्य - 'शुद्ध' देशी शब्दां.

रत्ना श्रीयने जे रीते साहित्यिक तथा अर्वाचीन भारतीय भाषाओंना आधारे। प्राचीन टीकाकारोए आपेटा अथो^र, अर्वाचीन शास्त्रीय केशो अने व्युत्पत्तिचर्चाओं —ए वधाना आवस्यक आधार टईन प्रत्येक देश्य शब्दना मूळनो चर्चा करी छे, ए पद्धतिए कार्य आगळ चलाबीने ज आ विषयमां निश्चित परिणामे। टावी शकाशे.

८. पेतिहासिक महस्व

देना.नुं विविध दृष्टिए महत्त्व छे. भारतीय-आर्य ना इतिहासनी दृष्टिए जोईए तो तेमां संगृहीत शब्दसामग्रीमां मध्यम भारतीय -आर्य अने अर्वाचीन भारतीय-आर्य भूमिकाओने सांधती केटलीक कडीओ आपणने जावा मले छे. अहीं तो मात्र एक-बे मुहानें। निर्देश करी शकाशे. ब्युत्पत्तिविदोनुं संस्कृत गण्ड 'गाल'ने अने उत्तरकालीन संस्कृत गण्ड एकबीजा साथे सांकलवानु वलण छे: गण्डमांथी गल्ल शब्द-स्वरूप निष्पन्त थयानुं मनायुं छे. हवे आ ब्युत्पत्तिमां ण्ड > ल्ल एवं ध्वनिपरिवर्तन गृहीत बने छे. आनुं थोडुंक समर्थन आपणने देना.ना एकाद शब्दमांथी मली आवे छे, अमे ले त्रणचार शब्दोमां आ ध्यनिपरिवर्तन प्रवर्तनुं आपणने लागनुं हनुं, ते कांईक वधु निश्चित बने छे:

सं. गण्ड- : प्रा. गल्ळ-

नं. गण्डकी : उत्तरकाठीन गल्ठकी

तं. मण्डक : देश्य मल्लय- (देमा. ६. १४५)

नं. कुष्माण्ड- : प्रा. केाहल्ल^७-

आवी ज रीते मध्यम भारतीय-आर्यना साधित आख्यातिक तथा नामिक अंगा परत्ये पण देना ना शब्दो मांथी केटलीक नवी माहिती आपणे प्राप्त करी शकीए छीए. पण आ एक अलग तपासना विषय हे.

देना.ना घणा शब्दा अर्वाचीन भारतीय-आर्य भाषाओमां, तेमनी ज्नी तेम ब अर्वाचीन भूभिकाओमां, प्रचारमां रहेला आपणे जोई शकीए छीए. आ दृष्टिए केटलुंक छूटकबूटक लखायुं छे, पण न्यवस्थित काम करवानुं वाकी छे. देना.ना

जा उपरांत छिद्रमांथी निष्पन्न देश्य छिडी अने छिहा-ना (देना २.३५) निर्देश करी शकाय, पण एक तरफ सं छद्>प्रा. छंड् बगेरे अने बीजी तरफ सं भद्र>प्रा. भहा बगेरने ध्यानमां ठेतां छिंड अने छिहाने छिद्रना वैकित्पक ध्वनिपरिवर्त नथी सधायेळ पण मानी शकाय, छिंडनुं छिहा बन्युं होवानुं मानवुं अनिवार्य न बने

केटला शब्दो हिंदी, राजस्थानी, मराठी वगेरेनी साथ समानपण गुजरातीमी पण मळे छे, अने केटला शब्दो एवा छे जे मात्र गुजरातीमां ज जळवाया छे एनी लपास घणी उपयोगी नीवडे.

वीजी बाजु देना.मां संगृहीत शब्दो द्वारा तत्काळीन सांस्कृतिक, अने समाजिक परिस्थिति विशे—रीतिरिवाजो, उत्सवी, प्रथाओ, रमतगमतो, संप्रदाया वगेणे विशे—आपणने जे महत्त्वनी माहिती मळे छे ते विशे कंटळाक अभ्यासीओए आपणुं ध्यान दोयुं छे. अहीं हुं आ वंने बायतनां उदाहरणरूपे पांचसात शब्दोना विशेश करीश.

भयवग्गामो (६.१०२) शब्द उत्तर गुजरातना, सूर्य मंदिरना अवशेषथी जाणीता गामना एक नाम तरीके आपेला छे. तेर्नु संस्कृत मृळ रूप भगवद्यामः सुचले छे के ते नाम त्यांना सूर्य मंदिरने कारणे तेन माटे रूड अयुं हशे. केम के भगवत् शब्द सूर्य वाचक पण हतो.

एककल्लपुडिंग(१.१४७) शब्द 'ह्यटां ह्यटां पडतां बरसादनां फारां' एवा अर्थसां आप्या हो. सौराष्ट्रनी बीलीमां आवा वरसादने माटे एकल्लपणगी शब्द आजे पण प्रचलित हो, अने 'माटे पणगे मे' एवी, लेकिकथामां मलती दुहानी पंक्तिमां पण ए प्रयोग मले हो.

एककणडो (१.१४४) शब्दना 'कथक' एवा अर्थ आप्या छे. भोजने अनुत्तरीने हेमचंद्रे आपेळी आख्यान नामना साहित्यप्रकारनी व्याख्या अनुसार जे पंराणिक उपाख्यान कथन, गायन अने अभिनय साथे श्रीताओं समक्ष रज् कराय ते अस्ट्यान कहेवाय. आ दृष्टिए आख्यानना कहेनारने 'एकनट' (जे काम नाटकमां अनेक नटे। करता ते एकछे हाथे करता है।वाथी) सहेजे अही शकाय.

वायण(०.५०) शब्द 'भोज्य पदार्थ नी भेट'ना अर्थ मां नांच्या हे. गुजराती केशामां वायणु शब्द (१) 'नवां परणी आवेळां वरवधूने अथवा सीम तिनीन सगाजा तरफथी अपातुं होंशनुं जमण', तथा (२) 'स्पडीमां क कुनी टावळी, कांसकी वर्णेरे मूकी सधवाओंने अपाती भेट' — एवा अर्थोमां आपेले छे. वळी आखियाणुं/अन्याणुं 'मंगळ प्रसंगे गोर, वसवाया वगेरेने अपाती चोखा, घडं, नाळियेर वगेरेनी भेट' ए शब्दना मूळ तरीके जो आपणे अक्षतदानने बदले अक्षतवायनने वधु याग्य गंगीए, तो तेमां पण आ वायण (मूळ सं. उपायन) जळवाया होवानुं कही शकाय

अोर्लुकी(१.१५३) शब्द बाळका नासीने संताई जवानी जे रमत रमे छ तिने माटे—एटले के 'संताक्कडी' के 'संताकणा दाव'ना अर्थमां नाध्या छे. 'अर्थिक्टी-

पोटिलिया' ए वाळरमत माटे—'चक्षुःस्थमन-क्रीडा' माटे ते रूढ होवानु मतांतर पण नोध्युं छे. ए बीजी रमत माटे नुदे। सब्द िङ्कटरमण (२.३०) पण आपेटे। छे. या. नुक्क के नुक् (७.२४) 'छुपावुं'ना अर्थमां जाणीता छे (हिंदी वगेरेमां नुकना).

अभिणणपुडो(१.४४) एटले के 'छोकराओ गम्मत खातर, सरखी रीते बांबीने ज एक खाळी (अथवा तो अंदर कचरे। भरीने) पडो वजारना रस्ता चडचे मूकें छ, जेथी आवताजता काई माणस लेग्नाईने ते ऊंचकी ठई खोळीने जुए अने ते भांठा पडे एटले छोकराओ खीखी करीने हमे – ए प्रकारनी रमूजभरी रमत'. मंस्कृत मृळशब्द अभिन्नपुट 'न खोलेलों, यांधेलों पडों'. हेमचंद्रना विवरणना मूळ शब्दों आ प्रमाणे छे: 'शिश्रुभिः कांड्या जनप्रलेगनार्थं विपणिमांगे स्थिता पृटिका या क्षिप्यते सैनमुच्यतं'. आवी गम्मत अत्यारे पण मौराष्ट्र वमेंने मृजरातना प्रदेशोमां छोकराओं करना होय छे.

हिंचिअ(के हिंचिअ) (८.६८) शब्द 'एक पर्ग चालवानी वाळरमत एटलें आजनी 'लंगडी'ना अर्थ मां नोंघेलों हो. गुजराती हींचेनो 'पुरुषो अते खीओं साथें मळीने पर्गनो ठेको आपतां अने गातां गोळाकार समूह नृत्य करे हे ते' एवे। अर्थ 'बृहद् गुजराती केश्वा'मां आपेला हे. एसुं अने हिंचिअनुं मूळ एक ज होबानां क्यों संभव हो. अने ता हिंचिअ ए शब्दरूप लिपिश्रमनुं परिणाम होत्य.

देना.ना अनेक महत्त्वनां पासां छे, अने तेमांथी घणा विशे ओछ के नहिवत् संशोधन थयुं छे, एटले तेमनी सविस्तर चर्चा करवानां घणो अवकाश छे. अहीं ता तेमांथी विचार पासांना ज स्पर्श कथा छे, अने तेमां पण घणे अशे ते। आ पहेलां थयेला, बीजाना तथा मारा पोलाना कार्यना आधार लीधो छे. विधयनी आकर्षकता अने संशोधन माटेना मोटा अवकाशने कारणे नवा नवा संशोधकोने ते नेतिरशे एवी आशा आपणे हेमचंद्राचार्यनी नवमी जनमशताब्दीना आ वर्षे ते। जनर राखी शकीए.

द्रंकी संदर्भस्चि

|आमां निर्दिष्ट आ लेखकना लेखादिनों प्रस्तुत संप्रहमां समावेश करेलों हि.]

देशीनाममाला

विशेष्ठ अने रामानुजस्वामी (१८८०, १८३०),

वेनर्जा (१९३१), अने वेचरदास दोशी (१९७४)

वंड संपादित आवृत्तिओ.

मध्सदन मोदीकृत, १९४२.

पाइअसद्महण्णवा

हेमसगीक्षा

हरगोविंददास शेठकृत, १९२८, १९३३.

For Private & Personal Use Only

'स्टडीतं इन हेमचंद्रज देशीनाममाला' 'अपन्नंश उव्वह' स्टडीत इन हेमचंद्रज देशीनाममाला 'ओरिजिन्ज आव मिल्टिपल मिनिंग्ज आव देश्य वर्ड् ज' ए क्रिटिकल स्टडी आव महापुराण आव पुष्पदन्त पुहईचंदचरिय

'मिटल इन्डा-एरिअन विद्वरिल' 'त्रण देक्य आगमिक शब्दो' 'तीन अर्थमागघी शब्दोंकी कथा'

'सम फर्धर लाय्ट जान हरिख्छ अन्ड हिल नावेल कलासिफि-केय्ड्सन आव लिटररी प्राकृत एन्ड अपभंश 'प्रा. उसुरुसुंभिअ' 'प्रा. उसुरुसुंभिअ' संस्कृत-पाकृत जैन न्याकरण और कोश की परम्परा देशीझब्दकोश ह. भायाणीकृत 'बिद्या', २२, १९६२. ह. भायाणीकृत, 'जर्नल ओव घी ओरिएन्टल इन्स्टिट्यूट, वराडा', १३, १९६३. ह. भायाणीकृत, १९६६. ह. भायाणीकृत, 'विद्या', १९६७. रत्ना श्रीयनकृत, १९६९.

शान्तिसूरिकृत, रमणीकविजय-संपादित; रत्ना श्रीयनकृत शब्दकेशा, १९७२. ह. भायाणीकृत, भारतीय विद्या, २३, १९६३. ह. भायाणीकृत, मोहनलालजी स्मारक श्रंथ, १९६४. ह. भायाणीकृत, मुनिश्री हजारीमल स्मृत श्रंथ, १९६५. ह. भायाणीकृत, 'विद्या, १६, १९७३.

ह. भायाणीकृत, 'विद्या', १७, १९७४. ह. भायाणीकृत, 'जर्न.ओरि.बराडा', १९७४. मुनि दुळहराज तथा अन्य संपादित, १९७७.

मुनि दुलहराज संपादित, १९८८.

F 26 -

STUDIES IN DESYA PRAKRIT

STUDIES IN THE DESINAMAMALA

ABBREVIATIONS

Ap. Apabhramsa

C. Hemacandra's Commentary on the DN.

CMC. Caupannamahāpurisacariyam (ed. A. M. Bhojak, Prakrit Text Series Vol. III, 1961)

Com. Commentary (in general or on the DN.)

DED. Dravidian Etymological Dictionary (Burrow and Emeneau, 1961)

DMP. A Critical Study of Mahāpurāna of Puspadenta. A Critical Study of the Desya and Rare words from Puspadanta's Mahāpurāna and his other Apabhramsā works), 1965

DN. The Deśināmamālā of Hemacandra (ed. R. Pischel, Second Edition revised by P. Ramanujaswamī BSS., 17, 1938)

Doshi. Desī Sabda Sangrah (ed. by B. J. Doshi with Gujarati translation and Notes), 1974.

EWA. Kurzgefasstes etymologisches Wörterbuch des Altindischen (M. Mayrhofer, 1953 onwards).

GS. Hāla's Gāthāsaptasatī (Kāvyamālā)

Guj. Gujarati

H. Hindi

Hem. Hemacandra

IAL. A Comparative Dictionary of Indo-Aryan Languages (R. L. Turner, 1966)

Ka. Kannada

lex. lexical (i. e. a word noted in modern Sk. dictionaries as attested only from indigenous Sk. lexicons)

JC. Puspadanta's Jasaharacariu (ed, P. L. Vaidya, 1931)

M. Marathi

Ma. Malayalam

MP. Puspadanta's Mahāpurāņa (ed. P. L. Vaidya, 1937-1941)

NC. Puspadanta's Nāyakumāracariu (ed. H. L. Jain. 1933)

ND. Nepali Dictionary (R. L. Turner, 1931)

PC. Svayambhū's Paumacariu (ed. H. C. Bhayani, 1952–1960)

Pischel Grammatik der Prakrit-Sprachen (R. Pischel, 1900; English translation, 'Comparative Grammar of the Prākrit Languages', by S. Jhā, 1957)

Pk. Prakrit

PL. Dhanapāla's Pāialacchīnāmamālā (ed. B. J. Doshi, 1960)

PSM. Pāiasaddamahannavo (H. T. Sheth, Prakrit Text Series, reprint, 1963)

R. P. Ramanujaswami (see DN.)

Rc. Svayambhū's Ritthaņemicariu, Part I (ed. D. K. Jain, 1985)

SC. Svayambhū's Svayambhūcchandas (ed. H. D. Velankar, Rājasthān Purātan Granthmālā, No. 37, 1962)

SH. Hemacandra's Siddhahemasabdanusasana

Sk. Sanskrit

s. v. sub verbo

Ta. Tamil

Te. Telugu

Tr. Trivikrama's Prakrita Grammar (ed. P. L. Vaidya, Jivarāja Jama Granthamālā No. 4, 1954)

w. r. wrong reading



- 1. Introduction
- 2. Formal Variation in the Desya Items of the DN.
 - A. Graphic Variation
 - B. Phonological Variation
- 3. Correction of Erroneous Interpretations
- 4. Some Desya Items from Svayambhū's Paumacariya I-XX
 - (1) Items Common with the DN.
 - (2) Items not Recorded in the DN.

1. INTRODUCTION

Hemacandra's Rayaṇāvalī (also called Desisaddasaṅngaho and Desināmamālā), written sometime in 1045-1050 AD., was the latest and probably the largest of ancient Indian lexicons of a certain class of Prakrit words, which have been known as desya, desi or desaja after the traditional terminology. The Desināmamālā (further abbreviated as DN.) is not a quite self-subsisting, independent work. It is one integral part or unit within a larger grammatical and lexical network that was based on a traditionally developed theory of words.

In ancient India language was subjected to analysis and description mostly as a medium of literature and cultivated discourse, confined to a privileged class. Grammatical tradition since its earliest stages was ever deeply concerned about guarding the 'purity' of the language, about the standard usage of the cultured—the sistas. Since more than eleven hundred years before Hemacandra, Prakrits too along with Sanskrit had been in use as literary media. It was the constant task of the long line of grammarians reaching up to and beyond Hemacandra to authenticate the stock of words in literary usage, as it was naturally and inevitably subject to unceasing renewal.

Literary Prakrits were highly conventionalized and stylized languages, more or less bookish and receiving ceaseless reinforcement from Sanskrit. As one of the aims of Sanskrit grammars was to aid writers and critics, they came to devote sections to rules deriving Prakrit phonology and grammar from Sanskrit. Accordingly the word-stock of literary Prakrit received treatment under a threefold classification: (i) Roots and word-stems which were practically identical with their Sanskrit originals, because their sounds and meaning did not undergo any apparent or noteworthy phonological and semantic modification (tatsama-s). (ii)

Roots and word-stems which had resulted from obvious phonological modification of their Sanskrit correspondents (tadbhava-s). (iii) The rest of words, which as wholes of form-and-meaning could not be derived from Sanskrit by applying the usual and accepted rules of phonological and semantic change ((deśya-s)). The last of these categories was authenticated through compilations of standard Deśi lexicons. In his Siddhahema grammur, Hemacandra accomplished the task of providing codified rules for deriving the tatsama and the tadbhava classes of words. His DN. covered the remaining deśya class. His commentary on the DN. opens with the observation that those words which could not be derived from Sanskrit through the admissible rules based on the phonological processes of omission, addition and alteration were collected in the DN.

While defining the scope of his subject, Hemacandra has made it quite clear that he was not out to compile a dictionary of all such words which were during his times colloquially current in various regions i.e. the words of regional dialects currently used in day-to-day intercourse. His task was to deal with only that class of underivable words of literary Prakrit which was handed down over an immemorably long and hoary tradition.

As previously stated, the purpose underlying the composition of Prakrit grammars and lexcions was always to provide to those well-versed in Sanskrit dependable, convinent and up-to-date aids for composing and understanding Prakrit literature. Hemecandra came at the end of a long line of Deśikāras. Some ten are actually cited or referred to in the DN. Hemacandra justifies his adding a new Deśi lexicon to the several previously existing ones broadly on three grounds: (1) Some of these works, comparatively of a recent date, Hemacandra found to be erroneous, careless and uncritical. The ignorance or misinterpretations, on the part of their authors, of earlier authoritative works had created

a great confusion as to the correct form and meaning of many a Desi expression. (2) This confusion was further confounded by the carelessness and erratic practices of the scribes. (3) Moreover because the earlier lexicons did not adopt the alphabetical order and word-length principles of item-arrangement, there were no internal checks to guard against the spelling confusion.

Hemacandra adopted the alphabetical and word-length-wise arrangement for his work. In matters of doubt or difference, he made his choice after critical weighing, and where he felt the evidence to be fairly divided or undecisive, he accommodated alternative view points. At numerous places in the commentary in the DN., Hemacandra has cited and discussed authorities and controverted views concerning the form and meaning of the listed items. This fact combined with the numerous optional spellings and meanings accepted in his lexicon and the wild profusion of variant readings recorded by Pischel in his edition of the DN. give us some measure of the bafflingly difficult problems that Hemacandra was required to face. And it highly redounds to his credit that his overall treatment of the Desis reveal a high degree of balance, clarity and scientific caution.

The same qualities are also evident from the manner he has delimited the scope of Deśi, whose working definition, let alone a rigorous one, was not so easy to state within the bounds of the then accepted general principles and frame of reference. He sets up three criteria for characterizing Deśi words: (i) Formal non-derivability: Those lexical items which were not derivable from Sanskrit in accordance with the recognized rules of derivation were Deśis. (ii) Semantic non-derivability: Those expressions which, though formally derivable from Sanskrit elements, had a meaning different (though conceptually derivable) from that of the latter were Deśis. (iii) Tradition: Some items which, though obviously more or less marginal,

were considered Desi by a respectable and authoritativetradition, and hence they were accepted as Desis. Because the verbal bases that were not derivable from Sanskrit could take Sanskrit-derived verbal terminations and they were technically excluded by Hemacandra from the DN. against the earlier practice, and were listed as Verbal Substitutes in the Prakrit section of his Siddhahema grammar. But as a concession to the established practice (and also for convenience of reference), he has recorded most important of them by way of notes in his DN. commentary. Here everywhere, the approach of the Prakrit grammarians general is found to be more pragmatic than theoretical. we properly appreciate this point, our modern objections to their lack of rigour and consistency in distinguishing items of Sanskritic and non-Sanskritic origin would loose much of their force and some of them would appear rather like cavil.

Modern studies have succeeded in settling some of the sources of the Desya strand of the Prakrit vocabulary. Some of these words have evolved from Sanskrit words through complex or less easily discoverable phonological or semantic alteration. Others derive from Old Indo-Aryan material not at all attested in preserved or known literature or attested only in the earliest stage (Vedic) or even further beyond (Pre-Indo-Aryan). Still others are identifiable as Dravidian loans. But even after we set apart all such items that we can now derive or identify from other languages, there remains a very large stock of words as obscure as ever.

Actually the further research work on the DN. has to proceed in two closely related directions: ascertainment of the correct form and meaning of a listed item, and ascertainment of its currency and derivation. The first problem has two aspects. Firstly the correct forms of the items as they were recorded by Hemacandra are to be settled. The text of the DN. as handed down to us bristles with profuse

and confusing orthographic variants. The textual problems and editorial difficulties have been well outlined by Pischel, who has accomplished the task of faithfully presenting all the textual variants from some seven MSS, of the DN.1 and settling the text by and large. But as he has observed, in several cases he felt considerably handicapped due to the absence of any dependable criteria for selecting from among the multiple spelling variants, and in rare cases he tried to seek some help from the New Indo-Aryan materials. This latter source of information, left practically untouched by Pischel, but considerably availed of by Sheth and Doshi, can be exploited much more fully now, firstly because of the lexicographical works like Turner's Nepali Dictionary and A Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages, Maythofer's Kurzgefasstes etymologisches Worterbuch des Altindischen Burrow and Emeneau's Dravidian Etymological Dictionary, and secondly because of the further historical and comparative work in Indo-Aryan carried out after 1900 A.D. A second source of paramount importance now available to us is the considerable amount of Prakrit literature and almost the whole of Apabhramsa literature come to light since Pischel. Much of it remains yet to be explored for settling the forms of the words in DN.

There are, however, indications that the problem of settling the correct form of the Desi words was already considerably tangled when it was taken up and tackled (fairly reasonably, we should say) by Hemacandra. Though in a number of cases Hemacandra did take notice of alternative forms, he could after all work under certain basic assumptions. Further he was bound by respect to tradition and laboured under considerable limitations of outlook and reference facilities as compared to a lexicographer of our

^{1.} Ramanujaswami has collated three more MSS. for his revised edition of the Pischel's work.

age. With our modern approach, technique and means, we are likely to regard or identify several separately listed items of the DN. as only variants of some other items listed elsewhere in the same work. It may be also possible for us to discern some general orthographic or phonological traits underlying the formal variation, which would have a wider significance for the history of Indo-Aryan.

The second aspect of the first problem is the ascertainment of the correct meanings of the listed items as given by Hemacandra. In the text af the DN. Hemacandra has given Prakrit meaning-equivalents or synonyms of the Desya items. In his commentary we find Sanskrit equivalents for the same. In many a case these one-word renderings and paraphrases are bound to be ambiguous: words can have several meanings - they can be homonymous, and one cannot tell which of these is meant in a particular case, if there are no restrictive indications. To guard against this circumstance, Hemacandra has provided illustrative stanzas. devised actual-language context demonstrated the use the recorded items, and made it clear which of the several meanings of the paraphrase-word was relevant. Unfortunately Ramanujaswami seems to have ignored these illustrative stanzas. As a consequence he has been forced to make arbitrary choice in ambiguous cases and, inevitably, on a number of occasions it turns out to be the wrong choice. So his English renderings in the alphabetical glossary given at the end of the DN. text contain numerous errors. Sheth and, to a greater extent, Doshi have properly consulted the illustrative stanzas and hence their interpretations are free from errors on this account. Doshi has regularly given Gujarati translation of the illustrative stanzas, some of which are considerably tough or obscure and must have proved fairly taxing. Pischel, even while condemning (rather unfairly) these illustrative verses as 'either void sense, or of an incredible stupidity', was quite conscious of their exegetical value. Apart from wrong interpretations of ambiguous Sanskrit glosses, Ramanujaswami's English renderings are also in numerous places vague, imprecise or casual. For the wider problem of the authentication of the meanings we have of course to fall back upon the same two means as mentioned before, viz, the Prakrit and Apabhramsa literatures and the New Indo-Aryan languages.

And again for tackling the second problem of settling the source and derivation of the Desya words, the same two sources are to be utilized, besides the important work done in the field of historical and comparative Indo-Aryan and Dravidian lexicography, which has been already mentioned. Studies of early Prakrit and Apabhramsa texts from the exclusive point of view of the Desya material contained in them would help us much in this direction, but unfortunately hardly any systematic attempts have been made so far. One important contribution in this subject is Mrs. R. Shriyan's 'A critical study of the Desya and rare words from Puspadanta's Mahāpurāna and his other Apabhramsa works' (1962, unpublished as yet)2. This Bombay University Ph.D. thesis, prepared under my guidance, deals with more than fourteen hundred items, collecting information from various sources and discussing meaning and origin in numreous cases. Obviously many such comparative and critical studies are required for checking up the DN. and the lost compilations it drew upon. In the present effort, my immediats aim being to give some idea as to how the problem is to be tackled, I have drawn upon only a few Apabhramsa texts in an illustrative manner.

^{2.} This statement was made in 1965. Since then the book is published. For a revised statement of this point vide Introduction.

2. FORMAL VARIATION IN THE DES'YA ITEMS OF THE DN.

The formal variation among the items in the DN. falls under two distinct categories: variations of purely graphic origin and variations of phonological origin.

A. Graphic Variation

In the case of variations of graphic or scribal origin, out of the two (or more) variant forms (whether specified in the DN. as alternates or not so specified, whether all of them noted by Hemacandra or only one noted), one only is genuine, the other being really a wrong reading resulting from carelessly or ignorantly confusing some two written characters in the manuscript. These scribal errors have no basis in phonology, and if and when fully confirmed, such items can be rejected as 'ghost' words.

Prakrit MSS. frequently confound (1) च and च (or च), 2) च्छ and त्य, (3) ट, ठ, ड and ढ, (4) ह and ढ, (5) ड and ढ, (6) घ and घ, 17) म and स. At times (8) द and र, or (9) घ and च are misread for one another. Several itmes of the DN. seem to have derived from such confusions.

1. च्/व्(or च्/व्) Variation Initial and non-initial

- बालवासो (3, 8) 'sort of head ornament' (शिरोम्लणभेदः) वालवासो (7, 59) 'a head ornament' (शिरआभरणम्). cf. Sk. वालपादः 'hair-band (of precious metal)'; lex. वालपाद्या 'a string of pearls or other ornament for the hair'. So चालवासो may have a scribal origin.
- 2. चिद्दविआ (3, 13) 'destroyed' (निर्णाशितः). cf. विद्दाविय (from विद्दाव् 'to destroy' etc., Sk. वि +

द्रावय 'to put to flight', 'to defeat') (PSM.)'. For चिमिणो and विसिणा see further.

3. निरिचिरा and चिरिचिरा (3, 13) 'stream (of water)' (धारा).

चिरिका (3, 21) 'small stream' (तनुघारा). cf. विरिचिरा (7, 93 com.) 'stream' (धारा) according to some.

विरओ (7, 93) 'small stream of water' (उद्युजलप्रवाहः). विरिका 'drop' (PSM.).

चिरिचरा (चिरिचरा) may be of an onomatopoetic origin. cf. चिलचिलिआ 'stream, downpour' (PSM.), Old Guj. ज्ञिरिमिरि, Mod. Guj. ज्ञरमर, फरफर 'drizzle'. चिरिका can be connected with Dravidian ciru 'small' (DED. 1326). cf. चिक्रा (3, 21) 'small thing', 'small stream' from Dravidian cikka 'small' etc. (DED. 2057). Besides विरक्षो, there is विअरय (PSM.) 'a small pit dug in the river bed for water' which is supported by Guj. वीरडो.

ছিলিটিৰল', বিলিটিৰল' (v. 1. বিলিটিৰল', বিলিটিৰল' etc.)
 (3, 12) 'wet' (आई'ম্).

PSM. also notes variants चिलचिल and चिलिचिलिय. The word occurs in the form चिलिचित्रल in PC. (39, 6.2 and 54, 11, 1) and MP. (20, 10, 11). The sense there is 'damp and sticky and hence loathsome or disgusting'. It occurs in CMC. in the form चिलिचिल (179, 15) and चीलीचिल (226, 28). Possibly there has been some confusion with चिलिच्चिली (7, 70) 'one having a tender and weak body' (कोमलिन:स्थामतनुः) which is to be compared with

M. विळविळणे' 'to wriggle or slide over the body—a snake, worm or similar and soft creature', विळविळीत 'soft and flabby or oozy; flaccid, mashy, not elastic, firm, stiff, tense'.

PSM. records चिलीण or चिलिण 'inpure, a dirty thing, dirt' and विलीण 'loathsome, disgusting' (जुगुण्सित).

- 5. चोरली, चोरिक्जा (3, 19) glossed as णहसिइ (v. 1. सिआ) चोहसिआ, but as श्रावणकृष्णचतुर्देशी in com. बोरली (7, 61) glossed as णहसिअचोहसिछण and explained in com. as श्रावणग्रुक्ठचतुदंशीभव उत्सविशेषः or that particular day, according to some Variants are बोरलया, बोत्तिकया, बोरली, बेरेला, बोरला and बोरिल.
- 6. ठचयं (7, 17) 'a kind of grass'. cf. ठबइय (PSM.). 'sprouted'.
- 7. হিলিঅ (8, 68), হিলিঅ (ibid.) 'the children's game of hopping on one foot'.
 cf. Guj. হাঁঘ 'a particular movement in a folk-dance.'
- 8. जुको (3, 14) 'the fist.' जुका (6, 94) 'the fist' (or 'a fistful of rice', according to some—com.).
 - Cf. Guj. ब्रुको, ब्रुक्डो ' a fistful of any eatable for filling the mouth with ' (which also supports the view noted in com.).
- 9. चुक्कुडो (3, 96) and बोकडो (6, 96) 'a goat'. cf. Guj, बोकडो 'a goat' and Pk. चुक्क 'to babble'. So चुक्कुड, बोक्कुड seems to be the real word.
- 10. डिव्विडिमो (1, 134) 'big in size' (अधिकप्रमाण:), 'immodest' (विमुक्तभर्याद:). cf. डिच्चिडिमो (PL.) 'immodest' (मुक्तमर्याद:).

11. कब्बाल (2, 52) 'a place of work or business, a house'.

One of the variants is कच्चाल. कच्चां (2, 2) 'work' (कार्यम्) derives from Sk. कृत्यम्, So कच्चाल i.e. कच्चालयं derives from कृत्यालयम् (i. e. कृत्य + आलयम्) cf. H. कच्चिरी etc. from Sk. *कृत्यचरिका (IAL. 3429), and Mod. Guj. H. कायालय.

Loss of final य of कृत्यालय is paralleled by किसल for किसलय and हिं for हिं अय (SH. 8, 1, 269).

- 12. कुडुच्चिंभ (2, 41) and कुडु वोअं (PSM). See further.
- 13. For इहोच (1, 98) 'canopy', चिच्च (3, 9) and चिच्चर (3, 9) 'flat nosed', विच्चाअशे (7, 68) 'pillow' accepted in the text, there are variants having च for च. That the latter are genuine is seen from उहांच occurring in Pk. and Ap. literatures, from Guj. चीचु 'flat-nosed' (M. चीचा 'compressed'), from Ap. छिज्बर 'flat-nosed' (PC. 1) and from चिंचांचणय' (6, 98) बिड्बोअ and विड्बोअण (PSM.). So too पिच्च (6, 46 'water' against the accepted पिच्च is supported by CMC. 226,28; NC. 5, 10, 28. विरमाद (7, 72; SH. 4, 193)' to wait' is preferable to चिरमाल 'to wait' (PSM.). So also छिड्बोले (3, 28) 'pursing the mouth in contempt' (निन्दार्थ मुखिवकूणनम्) for छिड्चोलओ (PL.) कुरुबिछ (2, 41) 'crab' against कुरुबिछ (PL.) is supby ported Guj. करचलो.
- 1. चिरबी (or चिरिडी) (GS. 1,91) (noted also by PSM. but erroneously as 'दे १,९१' for 'गा. १९१' 'alphabet', should be विरडी (or विरिडी) as shown by Guj. वरडी or वरड 'the post-consonantal vowel sign for a short or long. u'.

14. In the case of विष्पं (7, 57) the tail (पुच्छम्) [cf. छिष्पं (3, 36) and छिष्पाञ्चमं (3, 29), छेष्प (PSM.) and Sk. श्रेनः in the same sense (ND. s. v. छेपारें। and सेप्टि] and विष्पयं (7, 89) alms given in the thrashing floor (खलिमक्षा), charitable gift (दानम्) [cf. छिष्पं (3, 36) alms (मिक्षा) and छिष्पालो (3, 28) an ox fond of corn (सल्याक्तो गोः)] we feel that च stands for च, which can explain variation with च.

2. হন্ত / ন্থ variation

15. कोत्यर (2, 13) 'skill' (विज्ञानम्).

In the com. Hemacandra notes कृत्यर' as a variant form. Many MSS. read काच्छर' and कुच्छर' for the accepted form. The forms with च्छ are supported by actual occurrences at MP. 4, 18, 1; 9, 18, 6, 28, 27, 14; 48, 4, 7; 84, 3, 16; 86, 8, 2 At some of these places the word is glossed with दक्ष, मनाइ, मनाइर or कोन्नकात्पादक. But in all these contexts दक्ष i. e. 'skilful, competent' fits well. See DMP. s. v. काच्छर, कुच्छर R. incorrectly renders विज्ञानम् as 'knowledge.'

3. ट/ड/इ/ढ variation

- 16. वंदा (7, 83). 1. 'unmarried,' 2. 'deviod of affection, unkind' (नि:स्नेह:); 3. 'piece' (खण्ड:); 4. 'cheek' (गण्ड:); 5. 'servant' (भृत्य:).
 - 1. Guj. वांडो 'unmarried' presupposes a form वंडओ. So in this sense we should have वंडो for वंडो.
 - 3 Sk. वण्टः 'share, portion', Pk. वटग, H. वाँट, Guj. बाँट; Sk. वण्टति 'divides, shares, allots,' Pk. वेटह etc. show that the form should be वेटा and

not कैटा. See ND. s. v. बाँड्नु, बाँड़ो, बाँड़ cf. Sk. (lex.) बण्डु 'to share'.

If खण्डः means खण्डित 'broken, maimed', we have to compare Sk. बण्ड (also spelt वण्डः वण्टः, वण्ड), Guj. बाँहें। 'tailless, maimed'. See ND. s. v. बाँहों।

- 5. DN. 6. 88 notes बंघो 'servant', though Sk. (lex.) has व र and व र in the meanings 'tailless or crippled, unmarried, servant, dwarf'. SH. 8, 4, 447 has व है। 'dwarf' (PSM.). Guj. बांडियो 'dwarf', बांड' 'dwarfish', presupposes a form बंडो.
- 17. कुडुन्चिअ' (v. l. कुडु°, कडु°, कुडु°, कुडुन्बिअ') (2, 41) 'sexual intercourse' (सुरतम्).

 Cf. कोट्रुम् = रम् (2, 50: SH. 8, 4, 168); कोड्डिमिय = रितकीडाविशेष (PSM.), कोट्टिमिड (v. l. कोडिमिड) = सुरतम् (PC. 14, 11, 8), कोट्टिमिअ (v. l. कु°) 'ibid.' (PC. 79, 11, 4). PSM. notes also कुडुंबीअ'. cf. PSM. वहमगं and वडुमग' = बहमंक.
- 18. झंडिलेंआ (3, 55) 'moving about ' (चड्कमणम्). झंडिलें (3, 61) 'sport, play' (कींडा). झोंडिलेंआ (3, 60) 'Rāsa-like play ' (रासकसहस्री कींडा). But there is also झंद (SH. 8, 4, 161) = भ्रम्.
- 19. पडुआ (6, 8) 'kick ' (चरणचातः).
 Other synonymous words given are पत्थरा and पड्डरा (for पददुला ?). One of the variants is पददुआ (or पददुवा) Guj. पाद (f.) 'kick ' presupposes पददुआ.
- 20. मदद्विञ (v. l. मइ°, मइड्उ°, सद्दु°, etc.) (6, 146) 'turbid' (कछषम्) The meaning 'the anger of a married woman' (परिणीतायाः केषः) is obviously metaphorical. So also the third meaning 'impure' (अग्रुचि). R.'s. meaning-

- 'tear' (अश्रु is incorrect. It is based on a misunder-standing of the Pk. symonym असुइ. PL. 158 has पद्दृद्धिओं = कछणं जलम्. The two appear to be the same. The latter is connected with प्रमुद्ध, डोह to make turbid'; cf. पह्ड्रह=श्रुम् SH. 8, 4, 154; DN. 6. 29; डोह 'to muddle' PC. 2, 13, 4; 26, 11, 3; SH. 8, 4, 439 (3); आडोह PC. 4, 10, 3; 26, 7, 1; 76, 9, 5, Moreover we have उड्डिक '(1, 137), and com. says, 'according to some उड्डिक ', in the sense of 'the anger of a married woman' (उट्डाया: कुप्तिम्). This also fixes up पह्ड्रिक. Cf. इम 'to shake violently, to agitate (mass of water)'—इ'भिय PC. 23, 13, 5; आड़ म 'ibid.'—आड भण PC. 17, 10, 4.
- 21. ओवड्ढी (1, 151) 'knot of the lower garment' (नीवी) Among the variants there are ओवडरी and उन्वही. PL. has उअ्ती. Guj. M. ओटी 'part of the lower garment crossed to form a knot on the waist' supports the spelling with ह. From the mode of forming this knot (viz., by first crossing the borderparts twisted to form cords, and then tucking them up on the sides), we can suggest derivation from Sk. अपवत Pk. ओवटर, ओअटर.
- 22. जरडो (3, 40, com.) 'old'.

 Hem. notes this as given by others for जरडो. Sk.
 तरण्ड, भरण्ड, वरण्ड (from तरण, भरण, वरण) show that
 जरण्ड (Sk. lex.) derives from जू through जरण, जरडो
 was possibly misread for Pk. जरढो, Sk. जरठः.
- 23. लेडुको (7, 29), लेडुको, लेडुओ (7, 24) 'a cold' (लोह:). 4. ह/द variation
- 24. वत्तद्धों, (7, 85) 'handsome' (मुन्दर:), 'learned, well-trained' (बहुकिक्षित:).

Many a MS. reads बनहो. This seems to be the correct reading in the light of Pk. पत्तहो 'learned, well-grounded' occurring in Jain canonical texts. It derives from Sk. प्राप्तार्थ.

5. ਵ/ਵ variation

25. पिडच्छा (6, 49) 'a female friend' (सखी). PSM. notes पिउच्छा in the same sense. (It is also used at Sc. 1, 176, 1d). In view of the scribal tendency to confuse इ and 3 and in view of the parallelisms

> माइ, माडआ = मा**ता,** मातृका; सखी मामि = मातुलानि, **सबी** माडच्चा, माडच्छा = मातृश्वसा, सखी पिडच्छा = पितृश्वसा, स**खी**

it is likely that really विडच्छा was nothing but a w. r. for पिउन्छा.

6. খ/ঘ/ৰ variation

26. थसलो (also थसो) (5. 25) 'broad, extensive ' (बिस्तीर्णः). cf धसलो (5, 58) 'ibid'. Besides there is also बसल (7, 33)=दीघम.

cf. also थूरी (5, 51), पूरी (6, 56) 'a weaver's implement' (तन्तुवायोपकरणम्).

7. द/र vairation

27. दोसाणिष (5, 51) 'purified, cleaned' (निर्मलीकृतम्). cf. रोसाण् (SH. 8, 4, 105; DN. 7, 12) = मृज् 'to purify' and रोसाणिओ=मृष्ट (PSM.).

8 म / स variation

28. चिमिणा (3, 11) 'hairy' (रोमश:). cf. चिमिणा (7, 64) 'ibid.' and the confusion between च and च.

- 29. महजोक्क' (6, 118) 'fresh' (प्रत्यम्). cf. सज्जोक्क' (8, 3) 'ibid'.
- 30. मज्झभो (6, 115) 'barber' (नापितः). cf. सज्जिओ (8, 47; v. l. सज्झिओ, सज्जओ) 'ibid.'.
- 31. मूर् (6, 137 com., SH. 8, 4, 106) and सूर् (8, 52 com, SH 8, 4, 161) 'to break' (भक्ज).
- 32. दुम, दुस्, (4, 12, com., SH 8, 4, 161) 'to turn round, wander' (अम्).
- 33. फुम्, फुस् (4, 161 com., SH. 8, 4, 161) = भ्रम्.
- 34. थिरणामो (5,27) 'fickle-minded' (चलचित्तः; यः क्वचिद्धि भृतिं न बध्नाति).
 - cf. थिरणासो (Tr.) which, deriving from Sk. स्थिर' न आस्ते, confirms the sense given above.

B. Phonological Variation

Besides the graphic variants produced through the carelessness or ignorance of the scribes, we have in DN. variant forms which derive from some phonological development in MIA. As Des'ya words had heterogeneous sources, differing among themselves chronologically as well as regionally, it is natural to find in Des'ya lexicons items that exhibit different stages of phonological development or varying dialectal treatment. Comparison and analysis havereve aled the following types of variation:

- (1) varying treatment of उ/ओ/ई / ए before a cluster;
- (2) variation between cluster with an initial nasal and one without it;

- (3) variation between two contiguous vowels and their contraction;
- (4) variation between initial কু, বু, ব or ৰ and their loss;
- (5) variation between an aspirate stop and ह;
- (6) variation between an unvoiced stop and its voiced form:

```
'(7) प / a
 ं(8) ब्/बू;
 (9) मृ/व्(व);
(10) n / its loss,
(11) इ / छ;
(12) द / छ;
(13) = / \epsilon;
(14) र / छ
(15) स्/ ह;
(16) 辛頓 / 专致;
(17) मप् / म / म;
(18) dental / cerebral;
(19) palatal / dental;
(20) स / च ;
(21) nonaspirate / aspirate;
(22) single consonant / its geminate;
(23) nasal i its loss;
(24) initial vowel / its loss;
(25) initial syllable / its loss;
(26) medial vowel / its loss;
(27) cases involving assimilated forms;
(28) র / अ;
```

(30) cases involving metathesis;

(29) ओ / अ;

- (31) cases involving haplology;
- (32) unclassified cases.

(1) उ / ओ and इ / ए variations

As Prakrit had always a short vowel before a cluster, and q in such a Position were always short. There being no special character or device to represent short and short q, they were written loosely either as and q or as q, q. Moreover, in some dialects, and, q, q and q in close syllables seem to have undergone some change in quality also, as is shown by MIA. and NIA. evidence, alhough its exact character and conditions are as yet more or less undefined. Hemacandra has noted in his grammar these variations (SH. 8, 1, 85; 116) and has also made remarks under DN. 2, 101. At several places in the DN. com. too he has noted such variants. See Pischel §§84, 119, 122, 125, 127

- (i). An end (or v) variant (as the case may be) for the following has been noted by Hemacandra in the commentary (or elsewhere):
- 35-49. डक्खडिअं (1, 112), टांक्सणं (1, 130), उच्चेंहरं 1, 136), उच्छट्टो (1, 101), उज्झमणं (1, 103), उज्झरिअं (1, 133) उत्तलहभो (1, 119), उत्थलपत्यहा (1, 122), उज्भारणं (1, 103), कुइं (2, 33), जुज्जं (3, 14), छिडं (3, 35; 3, 39), भुत्तूणो (6, 106), रिक्खणं (7, 14), छुँको (7, 23).
- 50-52. For कोत्थर (2, 13), छोडभन्थं (3, 33) an उ-variant is noted in the com.
 णोळ (4, 44 com; SH. 8, 4, 143) and पुल्ल (SH. 8, 4, 143) 'to throw' (क्षिप्).

- (ii). There are other cases of doublets, which though given by Hemacandra as independent items, come under this category:
- 53 उद्दाल (SH 8, 4, 125), ओदाल (1, 163) 'to snatch.'
- 54 कुल्हो (2 34), कोल्हुओ, (2, 65) 'jackal'.
- 55. कोक्क (2, 50), कुक्क (SH 8, 4, 76 com.) 'call' (ब्या + ह).
- 56 कुंडिओ (2, 37) 'village headman.' কাঁডিओ (2, 48) 'one who creates dissensions among the village people and becomes deceitfully the master of the village.'
- 57. मुझ्मो (6, 133) the beam of a house.' मोझ्मो (8 4). 'ibid.'
- 58. बुक्कण (6, 94), उञ्चुक (1, 128) and बुक्कासार (6 95) on the one hand and बोक्कड (6, 96) and बोक्किलो (7, 80) on the other.
- 59. ই কিঐ (7, 14) 'thrown or blamed' (সাজিম), 'concealed' (তীন), 'put to shame' (নীভিন), cf. তিকিঅ (7, 28) 'thrown or blamed' (আজিম), 'concealed' (তীন).
- 59a. रोंच् (7, 12 com.; SH 8 4, 185) 'grind' (पिष्), रुंचणी (7, 8) 'grind-stone' (घरडी).
- 60 सिंबाडी 8, 29) 'snoring sound (नासिकानादः) ct. सेंबाडओं (8 43) 'snapping sound produced by the thumb and the middle finger' (चप्युटिकानादः)
- (iii) In other cases we have a corresponding ओ or इ variant (or ए or इ variant) as the case may be, occurring in Pk or Ap. literature and mostly recorded in PSM:
- 61. ओड्डणं (1, 155), 'upper garment' ओड्डिगा (PSM.) 'ibid.'

- उड्डिया (PSM.), उड्डण (PC.) 'ibid.'
- 62. ओत्थरिओ (1, 169) 'attacked' (आक्रान्त:). उत्थरिओ (PSM; PC.; MP.) 'ibid'.
- 63. चिहलो (3. 10) 'child'. cf. चेल्ल, चेल्लय (PSM.) 'pupil'.
- 64. चुप्पालओ (3, 17) 'window'. cf, चोप्पाल (PSM.) 'ibid'.
- 65. छिंछओ (3, 36) 'adulterer'. cf. छेंछई (PSM; PC.) 'adulteress'.
- 66. छंडी (3, 31) 'small lane' (लघुरध्या). cf. छिडिआ, छिडी (PSM.) 'an opening in the fence serving as a passage'-
- 67. छेत्तरं (3, 32) 'worn out household utensils like winnowing fan etc.' (जीर्ण' शूर्पायुपकरणम्). छित्तर' (PSM.) 'ibid.'
- 68. डुंबो (4, 11; 2, 73) 'man of an untouchable caste' (श्रपचः). डोंबो (PSM.) 'ibid. ' cf. Sk. डोम्ब, डुम्ब, डेाम.
- 69. ढिक (4, 15 com.; SH 8, 4, 99) 'roar' (गर्ज़्), ढेक्क (MP. 55, 5, 1) 'ibid'
- 70. तेड्डो (5, 23) 'locust' (शलभ). तिड्डो, तिड्डी (PSM.) 'ibid.'
- 71. दुग्धुद्दो (5, 44) 'elephant.' दुग्धोद्द (PSM.; Ap. literature) 'ibid.'
- 72. पेंडारो (6, 58) 'a cowherd, a buffalo herd.' भिंडारो (PSM.) 'ibid.'
- 73. मुकलं (6, 147) 'wilful, unrestrained' (स्वेरम्;) मुक्कलिओ। (1, 156 com.).
 मोक्कल (SH. 1. 4, 366; PC.) 'unrestrained, free, unbound' (मुक्त).

- 74. हुइ। (8, 70) 'stake'(पणः). होइओ (PSM.) 'ibid.'
- (iv). In other cases we have a variant in NIA. derivatives.
- 75. नहों (1, 85) 'well-digger.' cf. Guj. भोद 'ibid.' (From Kannada भोइ).
- 76 खुल (2, 74) 'cottage, room' (इटी). cf. Guj. M. बोली 'room, single room used as a tenament' (IAL. 3946).
- 77. फोंफा (6, 86) 'noise to scare away '(भीषयितुं शब्द:). cf. Guj फूंफाटा, फूंफाडा, फूंफवाटा, फूंफवाडो 'hissing of an enraged snake, etc'; H फुफकाना 'hiss'.

Besides we have ओढणु' (Guj.), ओढन (H.), etc.

(IAL. 2547); चेला (Guj.), चेला (H.) etc. (ND. चेका); छीड़, छींडी (Guj., etc.) (ND. छिड़); डाम (H.), etc. (ND. इम); तीड (Guj.), टिडी (H.) etc. पिंडारो (Guj.); मेक्छ (Guj.); होड (Guj., H. M. etc.) (ND. होड) ——these support one of the variants in the pairs given just above.

(2) Variation between a cluster with an initial nasal and one without it.

Prakrit grammarians have taken note of sporadic nasalization in clusters. They have collected the instances under বকাৰি or অধাৰি group. See Pischel § 74. Conversely a nasal cluster has become a long consonant or the nasal is lost.

78. अइरि'पा (1, 26) (कथाबन्ध:).

Hemacandra rejects (in com.) अइरिप्पो which, he says was erroneously read by some. Tr. has अइरिप्पा.

- 79. अयतिकां, अवअध्विम' (according to some.) (1, 47)
 'Plump, fleshy' (उपचितम्, मांसलम्).
 The forms derive from *अतितिष्चितम् (Doshi), *अवतष्चितम्, cf तब्च् 'to contract,' आतब्च् 'to cause coagulation.' तक 'butter-milk.'
- अच्छित्र (1, 14) आकृष्टम्.
 अच्छित्रअच्छी (1, 41) परस्पराकर्षणम्.
- 81. खंडयं (2, 71) 'stumbling' (स्खलितम्). This is probably the same as *खड्डयं, deriving from खुइ. cf. उक्खुइ, पक्खाइ etc.
- 82. गुलुच्छ (7, 92) 'turning round' (अभितम्) has a variant गुलुच्छ. cf. Sk. गुलुच्छ: and गुलुच्छ: 'bunch'.
- 83. चुप्पालओ (3, 17) 'a window' (गवाक्षः). cf. चु'पालओ (PSM.) 'ibid'.
- 84. चु'छो (3, 15) परिकोषितः. तुच्छ' (5, 14) अवशुष्कम्.
- 85. ण'दिअ' (4, 19) 'the roar of a lion' (सिंहरतम्). cf. Pk. णहिअ' from Sk. निर्देतम्.
- 86. फसुलें।, फ'सलें। (6, 82) 'released', 'left' (मुक्तः).
- 87. फुक्की (6, 84), 'washerwoman' (रजकी). चण्फु'किआ (1, 114) 'ibid.' cf. हिक्का (8, 66) 'washerwoman'.
- 88. विवायणय' (6, 98) 'pillow.'
 cf. विब्वाअण' and विब्वाअ' (PSM.) 'ibid.'
- 89. पष्फुल (6, 64), पंपुक्ष (6, 12) दीर्घम्.
- 90. रिक्क' (7, 6) 'little' and लिंको (7, 22) 'child' (बाल:).
- 91. सिंबीर' (8, 28) 'straw' (पलालम्). cf. सिप्पीर' 'straw' PC. 47, 6, 1 (gl. शुब्कतृण); 62, 11, 4 etc; DMP. 779, PSM.; also सिप्पिर.

- सिष्य' (8, 28); छीप्पीर' (3, 28) 'ibid.'
- 92. सिंप (8, 32 com.: 8, 4, 96). सिंप् (PSM.) 'to sprinkle' (सिंचू).
- 93. हिंडोडण' (8, 76), हिंडोडणय' (8, 76) when compared with हिंडोडण' (i. e. metathesis of हिंछोडण' 8, 69) show ण्ड for इंड or simplification of a conjunct.

(3) Vowel contraction

There are several cases wherein items having contiguous vowels are found with their vowels contracted. For vowel contraction in Pk. see Pischel §§ 165–168.

The cases involving य and य also are included here. We have contractions of (i) आअ > आ, (ii) अइ > ए. (iii) अय > ए, (iv) अउ > ओ, (v) अव > ओ, (vi) उअ > ऊ (उ), (vi) एअ > ए, (viii) ओअ > ओ.

(i) आअ (आय) > आ

- 94. करबायले। (2, 22), कम्बाडे। (2, 53) 'coagulated milk (किलाटः).
- 95. ৰাজন (4, 9) 'the eye'; বালিস (> বাজনিস) (5, 38) 'ibid'.
- 96. पाडवण' (6, 18) 'falling at the feet'. From पावडण' > पायवडण', Sk. पादपत्तन्म.
- 97. पामहा (6, 40) ' crushing grain with feet,' From पायमहा, Sk. पाद + *मर्दा.
- 98. राअला, राला रला (7, 1) 'the पियङ्गु creeper.'
- 99. वायडत्तो, वाडत्ती (7, 88) 'an adulterer, a profligate' (बिट:, जार:).

(ii) अइ>ए

- 100. अइराणी (1, 58), एराणी (1, 147) 'Indra's consort' (इन्द्राणी).
- 101. महहरो (6, 121), मेहरे। (ibid., com.) 'the village headman' (प्रामप्रवर:). cf. PSM. मगहरो.

(iii) अय>ए

- 102. वेणिअं (7, 75) 'censure '(From *क्यणिअ, Sk. वचनीयम्). For the shortening cf. Pk. पाणिअ', Sk. पानीयम्.
- 103. वयली, वेली (7, 34) 'sort of creeper' (निद्राकरी लता).
- 104. मेडंभा (6, 139), 'a deer snare' (मृगतन्तुः).
 This derives from मयडंभा > Sk. मृग-दंभ: 'a deception for deer'. cf. Pk. दंभा डंभो. With मृग-तन्तुः cf. lexical मृगजालिका in the same sense.

(iv) अड > ओ

- 105. तडबट्टिआ, तोवहो (5, 23) 'sort of ear-ornament called नपुपिक in Sk.'
- 106. बडहारी, बेाहारी (6, 97) 'broom' derive from बहुआरी i.e. बहुकारी 'the multiplier, the bringer of abundance,' the euphemistic coinage for the tabooed word संमजाणी or its equivalents.
- 107. मड़डी (6, 117), माडा (6, 117) जूट:.

(v) अव > ओ (s)

- 108, दवत्त (Ap. literature) 'quickly, suddenly'. द्वित (from देक्ति) (5, 41) 'quickly' (शिव्र.).
- 109, दबरे। (5, 35) 'thread' (तन्तुः) (cf. Guj. दे।रे।,
 H. दोरा).

दोरा (5, 38) 'a girdle' (कटिस्त्रम्). cf. Guj. दोरा in Old Guj. कणयदोरा, Mod. Guj. कंदोरा in the same sense.

110. বুপার্ক (SH. 8, 1, 119) 'fine cloth ' (cf. Pk. বুয়ুক্ত Sk. বুকুন্ডদ্).

दुह (5, 41) 'cloth' (वस्रम्).

111. (वेअडिअं (7, 77; SH. 8, 4, 89) 'inlaid' (प्रत्युप्तम्). वेडिओ (7, 77) 'jeweller' (मणिकारः).

112. पे। आइया, पोइया (6, 63) 'sort of creeper' (निद्राकरी रुता) (cf Sk. पे। तकी).

(4) Loss of the initial stop.

In a number of cases we have alternate forms with the difference of the initial stop. The general trend in Prakrit was to preserve the initial stop, but at the beginning of the second number of a compound, the stop was liable to be treated as in the word-interior and elided, depending upon the cohesiveness within the compound (Pischel § 184). The words collected below present a mechanical list. No attempt is made to discuss their derivation. Only some of them may have a phonological origin, the others deriving from divergent sources. It will be noted that in the list, words beginning with ϵ predominate. In the case of initial aspirated stop, only the aspiration (ϵ) is preserved.

```
113. अंके छी (1, 7)
                                 'the Asoka tree.'
       कंके ही (2, 12)
114. अम्बाडो (1, 8)
                                 ' the अवामार्ग tree.'
      कग्घाडे। (2, 53)
115. अविअं (1, 10)
                                               ्र told, said,' (कथितम्).
      चिवें (from चव् 3, 4; SH. 8, 4, 2)
116. अरवि'दर' (1, 45)
                              े 'long' ( दीर्घम् )•
      दरविंदर' (5, 52)
117. इरिआ (1, 80)
                              } ' cottage ' ( क्रटी ).
      चिरिया (3, 11)
      cf. मिरिया (6, 132) 'ibid'.
118. उक्कु'डा (1,91)
                                 ' intoxicated, arrogant'(मत्तः).
      कु≆कुडे। (2, 37)
119. उक्कुरुडा ( उक्कुरुडी ) ( 1,110) )
                                 'heap, heap of
      कुक्कुरुडें। (2, 13)
                                 refuse or dirt,
     besides मुक्कुहडे। ( 6, 136 )
                                 ( राशि: डत्करः, निकरः
     मुग्घरुडा (,
                       ,, )
                                  अवकरराशिः ).
     घु घरडे। (2, 109)
      With उन्कुरुहे। and मु of. उन्बहर and मु (SH. 8, 2, 174);
      इरिआ (1, 80) and मिरिआ (6, 132).
120. ਰਵਿਹਵਰ (1, 95) 'hole, opening'.
      कुच्छिल्लं (2, 24) 'hole or opening in the fence'.
121. डररी (1, 88)
                                  ' animal ' ( ৭য়: ).
      कुररी (2, 40)
122 ਤਕਰੀ (1, 87) 'fireplace' ( ਭੂਕਰੀ).
     Pk ਤੁਲਰੀ, Sk ਤੁਲਰੀ 'fireplace'.
123. अआ ( 1, 139 ) 'louse' (यूका ).
      ज्ञा ( PSM. ) 'ibid'.
```

- 124. कसारे। (1, 140) } 'sort of pit' कसारे। (2, 44) } 'nतिविशेष:).
- 125. अहल (1, 5) 'day.'
 cf. বহল ' to-morrow, yesterday, dawn,' কহলকলিল
 everyday': अणुअहल (1, 19) 'dawn'.
- 126. इ'ঘন (1, 80) 'smelled'. রি'ঘন 'smelled' (PSM.). cf. PSM. রিঘ 'to smell'; রিঘ্য 'smelling'.
- 127. धन्वा (5, 57) 'speed' (वेगः).

 cf. हन्त्र = शीप्रम् 'speedily, quickly' and हात्रि (धाविर)

 and हात्र (8, 75) 'a fast rumner, courier' (from Sk. धात्र 'to run').

(5) Loss of occlusion from initial aspirated stop

- 128. फिइडो (6, 84) 'a dwarf' (वामन:). हिड्डो (8, 67) 'ibid.'
- 129. In the light of these, it is not outright speculative to suggest that धिरिडी (6, 47) 'kite' stands for फिरिडी, which is the same as हिरडी (8, 68).
- 130. फूओ (6, 85) 'blacksmith'. (cf. PSM. फुन्, फून् 'to blow'). हमें (8, 71) 'blacksmith'.
- 131. Compare भिमोरा and हिमार: at SH. 8, 2. 174.

(6) Variation between a non-initial aspirated stop and ϵ

- 132, मड़क्से।, मडहरे। (6, 121) 'pride' (गर्वः)
- 133. अच्छिषरहो, जच्छिहरहले, अच्छिहरिल्लो (1, 41) 'enemy, dress' (Sk. द्वेष्यः and वेषः=Pk. वेसा).

If "বহল" and "ব্ৰুল" are taken as stem-enlarging pleonastic (or diminutive) suffixes, the base can be derived from Sk. अक्षिगृह or अक्षिहर.

134. चिरिड्डिहिल्लं (v. 1 चिरि'डी° चिर'डि°) (3, 14) 'curds' ভিहिडिभिल्लं (v. 1 ভিहिडि°) (3, 30) 'ibid.'

PC. 37, 1, 4 has चिरिड्डिहिल and 34, 11, 3 has चिरिडिहिल cf. छिहैंडओ (3, 29) ' cream of curds' (दिधसर:)

(7) Initial voicing

There are only two cases, both of obscure origin and so equally plausibly explicable as instances of devoicing or of some other, not necessarily phonogical, process.

135. गाल्हा (2, 95) 'the Bimba creeper, Momordica monadelpha'.

के।ळ्हाहलं (2, 39) 'the Bimba fruit'(°हलं > Sk.फलम्). Guj. घोल्ज' presuposes गोल्हअं.

136. भुम्, फुम् (6, 106 com., SH. 8, 4, 161) 'to wander' (श्रम्).

(8) Post-nasal voicing

Against the general Prakrit trend to preserve unchanged post-nasal unvoiced stop, Sauraseni exhibits a tendency to voice it, if the cluster is -nt- (Pischel, § 275). This type of voicing is known to be a characteristic development in the dialects of the Sindh-Panjab area,

137. वंगच्छा (7, 39) 'Siva's attendants' (प्रमथाः).
This appears to be the same as वंकच्छा i. e. वकाक्षाः
'cross-eyed ones'.

138. वंगेवडु (7, 42) 'hag' (स्करः).

This appears to be the same as *पंकेपडु i.e. पङ्के पातुक: 'fond of falling in mud.' cf. Guj. मळे पडु 'a false claimer, a pretender', lit. 'One who is in the habit of falling upon another's throat.'

- 139. किलिंच (2, 11) 'a small piece of wood ' (लघुदाह) किलिंच 2. 11) 'ibid.'
 - cf কিলিখি (G. 80) 'a piece of stick (such as can be used to cleanse the teeth crevices)';, কিল্ডন (PSM.) 'sort of grass'; 'bamboo trough.'
- 140. कार्यचुलो and कार्दिजुलो (2, 29) 'an aquatic bird'.
- 141. कुँ मुसयं (3, 31) 'longing and painful uneasiness due to love' (रणरणकः)

cf. झुं झुमुसय (झुमुझुमुसय, according to some) (3, 58) 'mental distress' (मनोदुः खम्) i. e. due to separation as is clear from Hemacandra's illustration. cf. also मुसहं (6, 134) 'mental agitation' मनस आकुलता, i.e. due to separation as is clear from the illustration.

- 142. मेंठी, मेंढी (6, 138) 'elephant-keeper's wife.'
- 143. डक्कंती (1, 87 com.), डक्कंदो (1, 87) 'a device consisting of a weighted pole working as a lever for drawing water from a well' (कूपतुला).

cf. उक्का (1.87) in the same sense.

- 144. नासरी (7, 55) 'the flower-plant Kunda.'
 This derives from Sk. नासन्ती. cf. Pk नासंती, नासंतिआ.
 Connected with नसन्त 'spring,' not with नास 'to render fragrant', 'to perfume.'
- I45. विहुंडओ (7, 65) ' Rahu.'From विहुंदुओ ८ विधंतुदः (Pischel, § 9).

146. डिंफ् (4, 9) 'to fall in water' (जले पत्).

This is the same as डिंग् (4, 9 com., SH. 8, 4, 197) to slip down, fall ' (इंस्). PSM. has noted one occurrence डिगत from KP. (7, 42).

(9) Volcing of a medial stop cluster.

Voicing of an assimilated, but originally voiceless consonant cluster is known from some instances involving— স্ল —. Pischel has noted instances of স্ল্, > ত্র (§ 326). খিল — from শ্বিনে— (probably isolated from occurence with prepositions, e g. পখিল) provides an instance of স্ল > স্ল — (— স্ —).

Further intervocalic $-\pi$ - had a strong tendency to become voiced (Pischel, § 200), and this would explain the one instance of $-\pi\pi$ - > $-\pi\pi$ -.

147. अवयच्छ् (1, 59; SH 8, 4, 181) 'see' (इस्). अवयज्ञ् (1, 48; SH 8, 4, 181) 'ibid.'

These derive from Sk. अवचक्ष (Pischel, § 326).

148. विष्फाडिअ' (7. 70) 'destroyed' (नाशितम्')

The synonyms noted are विद्धां and विष्धिडिअ'

cf. विङ्माडिय॰=विनाशित PC. 14. 1, 4; 79, 10, 6;

विङ्माडण=विनाश 77, 3, 3; = विनाशक 77. 10, 5. Bh.

9, 13, 3. It derives from Sk. विभस्फाटित. NC. 3, 11,

13 has विङ्माडिय in the sense 'insulted' (gl, अपमानित,
ताडित). SDP. 1368.

(10) The initial प्/ब Variation

In a number of instances, an initial q— seems to receive the non-initial treatment i. e. changes to q—. The explanation may be the same as one that serves

- for the elision of initial stops (p. 29), or it may be sought in scribal confusion between q and \overline{q} .
- 149, परगेज्जो (6, 15) 'collection, mass' (निकरः). वरगेज्जो (7, 38) 'abundant, plenty of' (प्रचुरः).
- 150. पडाली (6, 9) 'row' (प'कि:) बढाली (7, 8) 'ibid.' For पत्तहों वित्तहों see under बत्तहों.
- 151. पम्हले। (6, 13) ' filament of lotus, etc.' (किञ्जलक:). वम्हल (7, 13) ' ibid' (केसरम्) (Hem. has illustrated these with the same expression: णीमपम्हल, णीमवम्हल).
- 152. पलही (7, 4) 'cotton' (कर्षासः) बल्ही (7, 32) 'ibid'. cf. पलस' (6, 70) 'cotton fruit' and फलही (6, 82) 'cotton', PSM. फडही.
- 153. पलनाय' (6, 26) 'a field' (क्षेत्रम्).

 Also बल्लनाय' according to Gopāla as noted by Hemacandra in the com.
- 154. पाऊ, पाउअ' (6, 75) 'sugar-cane'. वाऊ (7, 53) 'ibid.'
- 155. वडलिअं (7, 44) 'piece of flesh roasted on a spit.' (श्लाप्रोत' मांसम्).

 cf. पडलिअं from पडल (6, 29; SH. 8, 4, 90) 'to cook'. At PC. 77, 13, 1 पओलिय is used with वल्ल्रर 'dried flesh' (cf. DMP. 216, 378, 379).
- 156. वत्तदो (7, 85) well-versed ' बहुशिक्षितः and PSM. पत्तत्थो, पत्तहो ' ibid. ' (= प्राप्तार्थः)
- 157. विडसर (7, 78) 'base of the fire-place' (चुड़लीमूलम्) ा. पिडसरो (6, 17) 'ibid.'

- 158. cf. also बंगो (7, 30) and Pk. पंको, बंगेबह (7, 42) from पंके and पह (< पत्).
- 159. पप्पीओ (6, 12) 'the cātaka bird.' बप्पीओ (7, 33) 'ibid.' cf बप्पीहो, बप्पीहो (6, 90) and H. प्पीहा, Guj, बपैयो.
- 160. पेंडा (6, 50), वेंडसुरा (7, 78) 'muddy liquor' कछवा सुरा.)
- 161. पेडइओ (6, 59) 'a grain merchant, a bania grocer' (कणादिविकेता वणिक्).

वेडइओ (7, 76) 'a merchant' (वाणिजक:).

162. ৰীন্তণ (7, 73) 'slimy, slippery ' (থিভিন্তলম্) cf. থিলগ (6, 49, 6, 86) 'slippery ground ' থিভিন্তলা ব্যঃ).

(11) ब्/द् variation

This is found in many Sk. words also. MSS. show considrable amount of uncertainty on this point. Most Ap. MSS. have only \(\frac{1}{3}\). Several NIA. languages (e. g. Bengali, Hindi) have favoured \(\frac{1}{3}\) at the cost of \(\frac{1}{3}\). Thus there is an orthographic as well as phonological basis for this variation.

र्/ ब् variation (initially)

163. The following words are said in the commentary to have an initial a according to some authorities:

बणीह, बमाल, बोल, (6, 20) बरूअ, बलवडी (6, 91) बण्पाउल बाउहली (6, 92) बीलय, बीअजमण (6, 93) बेड (6, 95)

164. Some authorities, according to the commentary read वहवासो (7, 47) as बहवासो, वेसण (7, 75) as बेसण;

- वेसिक्खिज (7, 79) as वेसिक्खिज ; वोद्रहो (7, 80) as बोद्रहो; बुण्णो (7, 94) as बुण्णो.
- 165. विसी (7, 61) 'elephant's trappings' (करिशारिः).

 This is obviously the same as विसी (1, 83;-6, 105),

 बुसि (PSM.) 'as ascetic's seat' and मिसी, मिसिआ
 (6, 105), Sk. वृषी.
- 166. With बोकिछो (6, 80) 'pseudo-brave' (अलीकस्र:)
 Compare बुक्क (6, 94; SH. 8, 4, 98) 'prattle',
 boast' and its derivatives.

Evidence from NIA. indicates initial च for चंप्पीह (Guj. चंप्पेंग, बोल (Guj), बहुअ (Guj, बहु,) वप्फाडल, (Guj. बाफ), बाडहली (Guj, बावली, बोअजमण (Guj. बी, बेड (Guj. बेडो), बोजझओ (Guj. बोझो).

$(12) \, \mu > q / q$

For this development in Prakrit (especially in Arabhrams'a) see Pischel, § 251 (SH 8, 4, 397) where dropping of π is also instanced. Many NIA, languages (Gujarati is a limited exception) have changed medial π to π (π).

167. णमसिअ (4, 22) 'present promised to a deity for fulfilment of a desire, and generally to propitiate' (उपयाचितकम्).

Hem. notes that according to some, the form was णवसिअं.

- cf. Sk. नमस्या 'worship, adoration', नमस्यित 'worshipped, adored'; M. नवस = उपयाचितकम्.
- 168. वलमय (7, 48) 'rapidly, hurriedly, soon '(भीघ्रम्)... cf बकविष' (7, 48) 'ibid.'

- 169. विब्सवण', विभमण (v. l. विब्समण) (7. 68) 'pillow'. cf. विबोवणय (6, 98), विब्बोवण (PSM.) 'ibid'
- 170. हरिमिश्गो anb हिरिवंगो (8, 63) 'a stick' (लगुड:). The variants are हरिमश्ग, हरिवंग, हिरवंग.

The latter half of the word seems to be derived from "मार्ग", which has alternative developments "मार्ग" and "बार्ग" (or "बग"). cf. आव'गो (1, 62) from अपा-मार्ग through अवाव'ग and haplologic dropping of "ब्".

171. मकडवंघ (6. 127) 'a chain ornament for the neck, worn across like the sacred thread, over the left and under the right shoulder'.

Most likely this word and वक्रडमंघ' (7, 51) 'an ear-ornament' are of the same origin (मक्रेंटमंघ'?).

172. मयडो or मडभा (6, 115) आरामः cf. वयडा (7, 35) वाटिका.

173. मुद्दा (6, 133) 'a kiss'.

- बुरी (6, 98) 'ibid,'
 cf. Ka. Te. muddidu 'to kiss', muddu 'a kiss'.
 Ta. muttu, mutti 'to kiss', Ma. muttu, mutti
 'a kiss' (DED. 4063).
- 174. वीसालड् (7, 73; SH, 4, 28) 'mixes' (मिश्रयति).

 It derives from मीसालड्. मीसाल्ड मीस् (Sk. मिश्र्) +

 causal suffix आल् -, attested in Pk. तिकखाल्, देक्खाल्
 etc.

(13) Loss of q.

175. विलमा (7, 34) 'bow string.' विलक्ष' (7, 92) 'strong (as a bow)' derives from विलविश = विलमिभ' i.e विलमा + - इअ'.

- 176. द्वओ (6, 85) 'blacksmith'.
 दूम्, फुम् (PSM.) 'to blow'; हुमे। (8, 71) 'blacksmith'.
- 177. फुंफ़ आ (6,84) 'the fire of dry lumps of cowdung' (करोषाप्ति:).
 (पोउआ 6,61) also has the same meaning
 cf. फुंफ़्मा (PSM.) in the same sense.

(14) ছ > জ

See Pischel § 240; SH 8, 1, 102.

- 178. कुरुडो, कुरुलो (2, 63) 'merciless, unkind' (निर्देश:).
- 179. कोलो (2, 45) the neck '(प्रीवा). cf. Sk. कोड 'chest, bosom, lap, the interior of anything, cavity, hollow '.
- 180. बहुठाडी (v. 1. बहुढाली) ' pathway through conflagration' (दवमार्गः)

Tri. and others have दडढाली.

Pischel (§ 222) derives. আছা. from ৰাছা. But it is the same as Sk. আছি. See IAL. 1102.

- cf. Pk. दड्ढ and डडड burnt.' दुद्दोली (v. l. दुद्दोली (5, 43) 'row of trees, avenue' seems to have Sk. द or दुम as its first constituent.
- 181. वेल'बो (7, 75) besides Sk. विडम्ब्, Pk. विडंब् and Sk. बिडंब्क, Pk. विडंब्ग, वेडंब्ग, वेलंबग.
- 182. हल्ल्पो (8, 61) 'talkative person, person indulging in empty talk' (बहुभाषी).

 cf. Guj हडफो 'person given to much senseless talk.
 - cf. Pk हडप्प, हडाफ 'sort of vessel or container'.

183. देखका (8, 72) 'hiccough' (हिका).

Guj. हेडकी 'hiccough' presupposes हेडका, हेडकिया.

cf. फलही 'cotton' with its variant फइही.

(15) द् > त्र्.

See Pischel, § 244.

- 184. वेद्णा (or विद्णा) besides वेळ्णा (or वेळ'णय') (7, 65) 'shame, bashfulness ' (ळज्जा).
- 185. कार्लिबो (2, 59) 'cloud'. cf. Sk. काद'विणी, Pk. काल'विणी.

(16) 夏/호 variation

See Pischel, § 241

- 186. कडसी (2, 6), and करसी (SH. 8, 2, 174) crematorium (स्मशानम्). cf. Sk. कटसी (lex) 'ibid.'
- 187. বুবুলা (3, 15) 'fire-brand, torch' (বলকা).

 PSM notes its two occurrences from Pk. literature, as also three variants বুবিলা, বুবিলা, and মহুন্তিমা.

 MP. has three occurrences, but the forms is মহন্তি, glossed as ব্যালা. See DMP. s. v. মহন্তি, where M. মূহ, Ka, মূহি 'torch of twig or branches' are cited for comparison and on the basis of Ka.

 Te curukku' excessive heat or fire 'and curukoui' burning fire brand' a Dravidian origin is suggested, See also DED. 2236 and 2237.
- 188. करयरी (2, 16) alternatively करवडी (com.) 'coarse cloth' (स्थूलवस्रम्).

(17) 전 / 정 variation.

See Pischel, § 257.

189. অধিনত্তী (1; 24) 'a tiger.'
অভিনত্তী (1, 56) ibid.'
cf. PC. অভিযন্ত, এভিয়ভিড (glossed as বিলক, ক্ষায়) and
MP. অভিযভিড, See DMP. s. v. অভিযভিড, Tri. has অভিক.

190. करिय'दी (2, 18) मल्लिका. कणय'दी or कणय'दी (2, 58) पाटला.

- 191. रिक्क' (7, 6), 'little, small' (स्तेकम्). िलंको (7, 22) boy 'child' (बालः). cf. M. केका 'boy'.
- 192. रॅकिअं (7, 14) माक्षिप्तम्, लीनम्. लिकिअं (7, 28) भाक्षिप्तम् सीनम्.
- 293. वेडिलिअ (7, 77) वैहर्यम् cf. वेडिरिअ and वेश्लिअ (PSM.)

(18) स्> इ

See Pischel, § 264

Turner, 'Some Problems of Sound change in Indo-Aryan,' 1960 p. 29.

Bhayani, 'Some Problems of Apabhrmas'a grammar reconsidered.' Indian Linguistics, 25, 1964, 71-76.

- 194. दसलो, दहलो (5, 43), ' unfortunate' (दुर्भ'गः).
- 195. পিন্তুতা (6, 47), 'sort of wind instrument made of straw'.
- 196. रेसिअ (7, 9) 'cut' (छिन्नम्). रेहिअ (7, 10) 'with tail cut off' (छिन्नपुष्छम्).

197. पलही (6, 4) 'cotton' (कर्पासः) (noted also at SH. 8, 2, 174).

cf. पलस' (6, 70) 'cotton fruit' (कर्पासफलम्). फलही (6, 82) 'ibid.'

बलही (7, 32) 'ibid.'

PSM has noted occurrences of both पलही and फलही from literature. For the latter there occurs also a variant फहिरी (GS. 549).

(19) ব্ৰু / হন্ত Variation.

This derives from alternative treatments of an original g. See Pischel, § 317-322.

- 198. अवश्रक्तिस्त्र , अवश्रक्तिस्त (1, 40) 'shaven face ' (निवापित' मुखंम्). the forms presuppose an original containing 'क्ष्. it is not clear whether the forms derive from Sk. अपतक्ष, अवतक्ष 'to chip off; to chop off'.
- 199. अवशक्ख, ओअक्ख, अवयक्ख, अवक्ख अवयच्छ, अवयज्झ अवयज्झ, 'to see' (1, 48; 1, 59 com; SH. 8, 4, 181). From अवच्च, Pischel, § 326, 499.
- 200. बुरहीरो (3, 38) 'child, moon'.
 - MP. 50, 12, 12 has this in the sense 'moon'. The gloss on the world is वालचन्द्र: At MP. 17, 4, 5 we have कुरहीर (v. 1. बुर्हीर) in the same sense. Obviously it should be खरहीर, खर and खर both deriving from Sk. क्षद्र. A child or moon is metaphorically क्षद्रहीर: 'gemlet'.
- 201, रिक्सो, रिक्सो (7, 6) 'old man' (खू) Possibly a derisive slang expression, deriving from ऋक्षः 'bear'.

 $(20) \ q > q$

cf. Pischel, § 261.

202. समुन्छणी (8, 17) 'broom' (संमार्जनी). cf. Pk. पुंछण, पुंछणी 'a Jain monk's broom'. (from Sk. प्रोञ्च 'wipe out'), The word, therefore, derives from Pk. संपुंछणी, from Sk. सम् + प्रोञ्छ.

(21) Cerebralization of dentals

See Pischel, § 218.

- 203. तही, (5, 1) 'hedge. fence ' वृति: (Guj. टाइ' ताइ').
 टहइआ (4, 1) 'curtain' (तिरस्कारिणी).
 (cf. H. टही, Guj. टही, ताटी).
- 204. डिअली (4, 9) 'post, pillar' (स्थुणा). PL. (360) has दिअली.

Hemacandra's meaning egun is misunaderstood by R. who renders it as 'an image', and by Doshi who takes it to be synonymous with দুলভিদ্যা. বিসভিস্থা (5, 39) 'a fool '(মূৰ্জ:) is a metaphorical extension of the above meaning.

- 205. दंबी (5, 33) इंड, डिंबी, डिंबी (4, 7) ' cloth made from stiched pieces' (स्च्या संघटितानि वसं डानि, स्चीसंघटितवस- युगलम्) cf. Guj. दांडियुं, डांडियुं in the same sense.
- 206. दालिअं (5, 38) 'eye'. हायल' (4, 9) 'ibid.' Besides there is पामल' (6, 38) 'eye'.
- 207. कुरीर' (2, 39) 'the fruit of the Bimba plant, Momordica monadelpha' (विस्व्याः फलम्).

cf तुंदीर (5, 14) 'the fruit of sweet the variety of the Bimba plant, Momordica monadelpha' (मन्द- विम्बम्).

R. incorrectly renders मध्य here as 'charming.' It is in contrast with the तिक्त or कर variety (as in कर्तु वर्षी or तिक्त तुण्डों).

Cf. Ta. tontai, Ma. tonti, Ka. tonde, tondi, konde (DED. 2880); Sk. तृष्डिका, तुष्डिकेरी, तुष्डिकेशी; M. तोंडली, तेंडली.

Guj. दीडोर् and M. तेंडली differ from the rest in having a front vowel in the first syllable, against the back vowel of other forms. For the variation between the dental and cerebral cf. तेंडल below.

- 208. तेंडुअं (5, 17) 'Diospyros embryopteris' (तुंडुक). cf. Sk. तिन्दु, तिन्दुक, Pk. तिंदु, तिंदुय, तेंडु, तेंडुअ; H. तेंडु and Pk. तिंदुसय, H. टींडसी.
- 209. द्वंबुर, (4, 3) 'Diospyros embryopteris' (cf. Sk. दुम्बर, दुम्बर).

टिंबर (4, 3) ibid.

cf. Guj. टीमर, H. टिंबर which presuppose टिंबरअ-, टिंग्बरक- or तिम्बुरक.

cf. Sk. तुन्दम् 'belly ', lex. तुण्डिका 'navel ', H. द'डो, Guj. इ'टी (ND. s. v. तेर्द).

210. बुंदिरो (v. l. बुचीरो बुदिरो.) (6, 98) 'buffalow.' Tr. has बुद्धिरो. This seems to be the original form, to be explained as an agentive in 'इर' from बुद्ध 'to inmerse, to be submerged in water.' This points to the characteristic habit of the buffalow. cf. also बुची (6, 98) and बुचीरो (6, 106) 'pig.'

211. विहु'डुओ (7, 65) 'Rāhu' from विहु'डुओ < विद्यु'तुहःः (Pischel, § 9).

(22) Palatal/dental variation

cf. Pischel, § 215, 216.

- 212. चुंछो (3, 15) 'completely dried up, emaciated' (परिशोषित:).
 तुन्छ' (5, 14) 'withered, dried (अवशुष्कम्).
- 213 ঘন্ত (3 4 com.; SH. 8, 4, 194 chop' (বাছা). বন্ধু (SH. 8, 4, 194, PSM.) ibid.' But ঘন্ত can be also derived from Sk. বেল্.
- 214. बोत्त (3, 19 'goad' need not be connected with Sk. तोत्र as it can be derived from Sk. नुर to impel'.
- 215. तुष्पो (5, 22) (ह्निग्धः Sk तृप्तः) and जुष्पो (3, 15) सस्नेहः may be of different origins, cf M. त्प 'ghee' and Old G. चोपढ 'fatty substance' etc.
- 216. सिक्तुर' (8, 30) 'kingdom' (राज्यम्) cf सिद्रर' (8, 30) 'ibid'. सि'दुरय (8, 54) 'ibid'.
- 217. म'जीर' (6, 116) 'chain, fetter' शृङ्खलकम्). म'दीर' (6, 141) 'ibid'.
- 218. cf. also छिण्णोब्भवा (3, 29) the Durva grass'... जिण्णोब्भवा (3, 46) ibid.

(23) स्/छ variation.

cf. Pischel, § 211.

219. पुंस (also पुस्) पुछ् (6 53; SH. 8, 4, 105) 'to wipe' (मृज्).

- 220. छिप्पीर' (3, 26) 'straw' (पलालम्). सिप्पीर, सिप्पिर (PSM) 'ibid.'
- 221. छिहंडओ (3, 29) cream of curds (दिषसर:).
 छिहंडिभिल्ल (3, 30) (v. 1. छिहंडि) 'curds ' (दिष).
 cf. सिहंडइल्ल (8, 54) 'ibid '.
 cf. Pk छिहंडो, छिहंडि and सिहंडो, सिहंडि.
- 222. छिप्प (6, 36). छेप्प (PSM) 'tail' cf. Vedic शेप, शेय्या 'tail'
- 223. खिप्पाली (3, 28) 'ox fond of corn' (सस्यासको गी:) cf. सिप्प' (8, 28) 'straw' (पलालम्).
- 224. पिछोली (6, 50), पिछली (6, 47) a wind instrument made of straw'.
 - (24) Non-aspirate / aspirate variation cf. Pischel, § 206-209.
- 225. अन् (1, 20; SH 4, 187) = कृष्. अंछिअं (1, 14) आकृष्टम्. cf. अयं छ (1, 37; SH. 4, 187), आइंछ् (1, 71; SH. 4, 187)=कृष्, and अच्छिविअच्छी (1, 41) = परस्पराकर्षणम्.
- 226. जाडी (3 45) 'cluster of trees, thicket,' (गुरुमम्) झाड' (3, 57) 'cluster of creepers' (लतागहनम्). R misunderstands लतागहन and renders it as 'a bower of creepers'. That it means 'cluster of intertwining creepers' is clear from the illustrtion under 3, 57.
- 227. जोडिओ (3 49) a hunter '(व्याधः). क्षोडिओ (3, 60) 'ibid.'
- 228. पलही (6, 4), पलसं (6, 70) and फलही (6, 82).

- 229. ਖੂਬ, (6, 53 com; SH. 8, 4, 105) to wipe ' (ਸ਼ੁਕ੍ਰ). ਬੁਚ (6, 87 com.; SH. 8, 4, 105) 'ibid.'
- 230. अन्मायत्तो (1, 31) 'returned' (प्रत्यागतः).

 According to Gopāla the form is जन्मायत्था and the meaning followed' (पश्चाइगतः).
- 231. उप्प छ् (1, 117; SH. 8, 2, 174, = कथ् उप्पाळ (SH. 8, 4 2) = कथ्.
- 232. पष्पूज' (6, 64) 'long' (दीघ'म्). प'पुञ' (6, 12) 'ibid.'
- 233. चप्पअ' (3, 20) 'falsehood' (असत्यम्).

 SH 8, 3, 38 has चप्पलय in the sense 'liar.' PSM notes also चप्पलअ in the same sense. cf. Tri. चप्पलओ = मिध्याबहुमाणी and चप्पल' = भिध्यावचः; MP. चप्पल and चप्पलच (DMP.); DN. (3, 4) चंचप्पर' = असत्यम् (Tri. has चंचप्पर' = मिध्या)
- 234. रप्, रफ् (7, 3 com; SH. 8, 4, 194) 'to chop' (तक्ष).
- 235. बु'दी (6, 98), मु'डीरो, मु'डी (6, 106) 'pig' and बु'दीरो (6, 98) 'buffalo.'
 - (25) Single / geminate variation.
 - cf. Pischel, § 62-65, 87-89, 304 etc.
- 236. अइण्णो and अइणो (1, 15) आकुरुः cf. आदण्ण = आत (SH.).
- 237. ओरल्की (1, 154) 'long and sweet sound' दीर्घ मधुर-ध्वनिः)
 - cf. ओराठी ' rumbling roar' PC; PSM. etc.

- 238 कोलो (2,45) 'neck' (ग्रीवा). कुल्हो (2,61) 'ibid.'
- 239. जुरुमिल्ल' (3. 47) 'deep' (गहनम्).
 According to Gopāla it is जुरुमिहलय'). (v. l. जुरुमिल्लय').
- 240. भमड़, भम्मड़ (6, 102 com; SH. 8 4, 161) = भ्रम्.
 - 241. णिल'को, णिल्लंको (4, 31) 'spitoon' पतद्महः).
 - 242. तल, तल्ल (5, 19) 'bed ' (शस्या).
 - 243. दु: दुहत्व ढ'ढोल (4, 15, com.; 17 com.; SH. 8, 4, 189) 'to search' ((गवेष्).
 - 244. हिला, हिल्ला (8, 66) 'sand' (बालुका).
 - 245. तड्, तइड (5, 5 com. SH 8, 4, 137) 'to stretch' (तन्).
 - 246. णंडुली and णइडुली (4, 20) 'tortoise' ((कब्छपः).
 - 247. जेडाली (4, 43.), णिड्डाली (PC. 8, 2, 1) ' a headornament.'
 - 248. संपंपा संपंपा (8, 8) 'wheat flour for preparing the sweetmeat धृतपूर '
- 249. वेद्णा (also वेळूणा), बेहुणा (7, 65) 'shame' (ठजा).
- 250. खवा and खब्वा (2, 77) 'the left hand.' 'a donkey.' cf. Sk. खब : 'mutilated, crippled, imperfect, dwar-fish.' (EWA 1. 304; 1AL. 3832).
- 251. बोबिल्लो (7, 80) 'falsely brave, a preudo brave person. ((बोबिल्लो stands for बाबिल्लो or बुबिल्लो, 'इल्ल' being a possessive suffix. (अलीकश्रूर:). बुक्क means 'to thunder, to bark, to shout, to make an emply boast'.
 - cf. बुक्कासारा (6, 95) 'a coward'. This parallels Sk. गेहेनदी and गाण्टेनदी.

(26) Lost of a nasal

- 252. अवेसी, अ वेसी (1, 8) 'a panel of the entrance door'. PL. (791, has अवेसि in the same sense (फलिंह is फलक ' plank' according to PSM and Doshi in PL. but 9989 'door-bolt' according to Doshi in DN. p. 16).
- 253. अवसमिआ, अंवसमी (1, 37) 'stale (or 'wet' hardened dough' (स्तीमितपर्यं षितकणिकका).

(27) Lost of initial vowel

cf. Pischel, § 162.

- 254. रजण, रजणो (7, 3) = घटः, कुण्डम्. cf. Pk. अर जर (PSM), Sk. अलबर:, अलिजर: 'a small earthen water-jar'. At MP. 5, 19, 11 and 93, 2, 4 it is glossed differently with अलब्जर, अलिब्जर जलभाजण and अलब्जल. Tr. and PL. also record the word.
 - cf. M. रांजण 'a large earthern water jar '. (DPM. 195).
- 255 अहोरण' (1, 25) ' upper garment.' (उत्तरीयम्). होरण' (8, 72) 'a cloth'. (वस्रम्).
- 256. अत्थुवड' (1, 23), थः इ' (5, 26) = भल्लातकम्.
- 257. वायण' (7, 57) 'present of food ' (भोज्योपायनम्). This obviously derives from Sk. डपायनम् Pk. डवायण

with apherisis of ड°. cf. Sk lex. वायन, Guj वायणु present of sweetmeats during a religious or festive occasion'.

In ओल्ड्ज (1, 162) and ल्ड्अ (7, 18) ओलिती (1, 157), िलती (7, 12) and ओजेहडो (1, 172) = अन्यासक:, तृष्णापर; and लेहिडो (7,25) = लम्पट:, tha difference is possibly due to the prefix ओं (< अप-, अब-, उद्-).

(28) Loss of an initial syllable.

cf. Pischel, § 150

- 258. बन्बाढ' (accroding to some विदन्बाढ') (1, 129) 'extensive, free from misery' (विस्तीर्णम्, गतदुःखम्).
- 259. मलहरो (6 120) 'tumult' (तुमुल:).
 विमलहरो (7, 72) 'confused noise' (कलकल:).

 It is not clear whether विमल्जिंभ (7, 92) संशब्दम् 'noisy' is connected with this.

In Ap. literature मलहर alone is found (see PC. 36, 12, 1; 40, 13. 4; 72 1, 4; 87, 12, 3; differently glossed as शब्द, गर्जि, शोक).

- 260. बाह्मणो or बाह्मणको (7, 61) 'an astroleger who fixes the auspicious day for the marriage '(मंत्री). विवाह्मणको (6, 111) 'ibid', DN. 6, 111 gives म'ती in the sense of विवाह्मणकः.
 - But when it is given as the meaning of बाह्यणों at 7, 61 R. misunderstands it and hence he renders it as 'a minister'.
- 261. णडुली, णइडली (4, 20) 'tortoise' (कव्छपः) दुली (5, 42) 'tortoise'.
 - cf. डुलि, (Amarakośa), दुलि, दौलेय (Hemacandra's Abhidhānacintāmani) and दुणी in the same sense, as noted by Doshi (p. 385).
 - (29) Loss of a medial vowel.
 - cf. pischel § 148.
- 262. कम्घायलो (2, 22) besides कम्घाडो (< कम्घायडो) (2, 53) 'coagulated or inspissated milk' (किलाटः),

 DN. 2, 22 also gives कम्घायलो.

263. बुन्धुरी (2, 109) 'frog'. बुह्धुरी (2, 109) 'ibid'. Both go back to *बुर्चुरी (onomatopoetic). cf. Sk. बुह्धुरा, बुह्युरा, बुर्घुरक, बुर्घुरक.

(30) Assimilation.

264. छंडुई (3, 24) 'The plant forget-me-not. (किपिक च्हः). This has resulted from छंडुई (DN 3, 24) through assimilation of क् to the preceding च्. Pk. छुद 'to touch' might have aided the change under the influence of popular etymologying. cf. मिमल from विवसल, विभल, Sk. विहवल.

(31) Vocalic dissimilation

When two syllables containing ₹ occur in a word the first is changed to अ.

For a similar dissimilation of \exists , see Pischel, § 123. In view of the tendency of the pre-nasal \exists to develop as \exists No. 265, 268, 269, 271 can be perhaps better interpreted as cases of that change and placed under a separate head.

- 265. अंगालिश (1, 28) 'piece of sugarcane' (इश्चशकलम्). इंगाली (1, 79) 'ibid'. cf. Sk. अङ्गारिका 'stalk of sugar-cane'. cf. also Pk. अंगारो. अंगालो and इंगारो, इंगाली, all meaning 'charcoal'.
- 266. खভিजञ (2, 78) 'censured, blamed; rebuked' (ভণালভ্ডথম্).
 ভিত্তিজ্ঞ (2, 74) 'censure, blame, rebuke' (ভণাল্ডম:).
- 267. कविंड' (2, 9) 'backyard of the house' (गृहश्चिमाङ्गणम्). किविडी (2, 60) 'ibid'.

- 268. कलिंज and किलिंच (2, 11) 'small opiece of wood ' (लघुदाह). Cf. Pk. किल'ज.
- 269. ड'ड (according to some ड'डी) and हिंडी (4, 7) ' pieces of cloth stitched together' (स्च्या संविध्तानि वस्रखण्डा नि).

Of these e's' (s'st) is supported by Guj. siles 'dhoti or sari whose damaged middle portion is cut off and the remaining two pieces are stitched together'.

270. किंद्रों (2, 5) 'chameleon' (कृकलासः). खिकिंख ड (2, 74) ' ibid '. Cf. कि कि कि (2, 32) 'snake' (Sk. कक'ट, Pk. ककड ' crab' and Sk. ककोटक, Pk. कक्कोडय ' name of a sna-

ke-king'). Guj. काकीडो काचंडा काचींडो 'chameleon.' M. खेकहा, Gui. खेकडो, खेकडो, 'a crab'.

- 271. पसंडि (6, 10) 'gold' (कनकम्). Cf. पसिंडी (PL.) and Tel. pasidi.
- 272. पिरिडि (6, 47), हिरदी (8, 68) 'kite' (शकुनिका).
- 273. खार फिडी (2, 73), गीर फिडी (2, 98), रम्फिडिआ (7, 4) all meaning गाघा.
- 274. विल्लरी, वहलरी (7, 32) ' hair '.

(32) = /37 variation.

- 275. खापरो (2, 69), खप्परो (2, 69 com.) 'rough' (६६:). Cf. Pk. खडर 'sticky substance', 'to besmear'; also DN. 2, 72; SH. 8, 4, 154
- 276. खिलती (2, 70) 'sign' (संकेत:). बुह्लि (2, 70) 'ibid'.
- 277 गुलगुल (2, 93; SH. 8, 4, 36, 144) 'to throw up'

(उत् + क्षिप् , उत् + नम्) has the alternative form गुं छगुङ् PSM.).

Cf also गुलगु'ल and गुलगु र (PSM.).

- 278. गुंजुल्ब्स् (गुंजोल्ब्स्) (2, 93; SH. 8, 4, 202) 'to surge up, to rise up, to be in high spirits' (उत् + उस्) गंजोल्स्लिं (2, 100) 'horripilated' (रोआन्वितम्); itittilated' (हास्यस्थाने ऽङ्गस्पद्यो यत गिलिंगलाविश्व' इति लोके रूढम्).
- 279, झंडली (3, 54). झंडुली (3, 61) 'unchaste woman' (असती).
- 280. ढ कुणो (4, 14) 'bedbug' मत्कुण:), दिक्णो, ढिकुणो (PSM.) 'bug'. दे कुणो (4, 14) 'bedbug'.
- 281. इंडल्ल्ड (4, 15 com.; SH. 8, 4, 161) 'to wander' (भ्रम्).

(33) ओ /अ variation.

- 282. झंडुली (3, 61) 'sport, play' (क्रीडा). झोंडलिआ (3, 60) · Rāsalike play.'
- 283a. णब्बो, णोब्बो (4, 17) 'agent, deputy' (आयुक्त:) cf. णब्बाडक्तो (4, 22) ईश्वरः, नियोगिपुत्र:.
- 283b. त'तडी (5, 4) 'flour mixed with curds' (करम्बः). तीतड' (5, 4) 'ibid'.
- 284. ਫ ਫਰਰ (4, 15; SH. 8, 4, 161) and ਫ ਫोल्ल (PSM.) 'to wander' (স্মৃ).

(34) Metathesis.

Cf. Pischal, § 354.

285. अइहारा (1, 34) ' lightning '. (विद्युत्). From अइराहा, Sk. अचिरामा.

- 286. अ'वमसी (1, 37) 'hardened state dough'
 The alternative form is अ'वसभी from Sk. अम्लसमा।
 'acid-like', 'sour and fermented.'
- 287. जसल (1, 141; SH; 8, 4, 202) and डल्लस = उद + लस्.
- 288. छ कुई (3.24) 'the plant forget-me-not' (किपकच्कूः). PSM. notes कच्छ also in the same sense (cf. DN. कच्छुरी 2, 11 also in that very sense). Its pleonastically extended form कच्छुई would give * छक्कुई by metathesis. The tendency to alternate a cluster of stops with a nasal plus stop would give छ कुई
- 289 पाडवण (6, 18) 'falling at the feet; 'from पावडण' (Sk. पाद्यतनम्)
- 290 बउहारी 6, 97) 'broom,; from बहुआरी, SK बहुकारी.
- 291. मडओ, मयडो (6, 115) 'garden ' (आरामः).
- 292. महअरो (6, 123) 'lord of a forest hideout' (गहरपति:).

 Cf. मयहरो (PSM.) 'a village headman'. (cf यहहरो 6, 121).
- 293a. वेद्यलिअ' (7, 77). cf. वेस्कृरिअ' and वेरुलिअ' (Sk. वेह्य'म्.)
- 293b, हिलोडण (8, 69) 'noise to scare away animals from the field '. (क्षेत्रा मृगिनिषेधरवः).

 Metathesis would give हिड्डालण with which compare हिंडालण (8, 76) = क्षेत्ररक्षणनादः; हिंडालण (8, 76) 'ibid;' हिंडालय (8, 69) = क्षेत्रे मृगरविषधः (or क्षेत्ररक्षणयन्त्रम्, according to some).

(35) Haplology.

294. णहरी (4, 20) 'knife' (ध्रुरिका).
This has resulted from णहरूगी (Sk. नख-हरिका) thro-

ugh haplology. Cf. Pk. णहहरणी, णहरणी ' a nail-cutter'; Guj. नरेणी, नरणी, नराणी.

295. आव'ग (1, 62) deriving from Sk. अपामार्ग through अअवाव ग.

(36) Miscellaneous

Under this head are collected pairs of obscure or undetermined relationship. The variations too are sporadic.

- 296. अयंछ (1, 37; SH. 8 4, 187) and आइंक् (1, 71; SH 8, 4, 187).
- 297. कलवू (2, 12) 'gourd vessel' and अलाऊ, अलाब् (PSM.) 'gourd'.
- 298. कलेरो (2, 53), 'skeleton' (कड्डाल:), 'dreadful' (कराल:); कलेवर' (PSM.). 'skeleton' (Sk कडेवरम् कलेवरम्).
- 299. चिहिरि (3, 11), झिहिरिशा (3, 62) महाकः.
- 300. झर'को (3, 55), झर'तो (3, 55) तृणमयः पुरुषः
- 301. णिवाओ (4, 34), णिहाओ (4, 49) स्वेदः.
- 302. णिविद्धो (4, 38), णिवित्तो (4, 32) सुप्तोत्थितः
- 303. णिव्वढो (4, 28), णिव्वेढो (4, 28) नग्न:
- 304. णिसुद्ध (4, 36) णिसुद्ध (SH, 8, 4, 259) पातितम्.
- 305. णिरको (4, 49) णिरव्यो (4, 49) हुन्डम् •
- 306. चुक्कुडा, चुछपो (3, 16) छागः
- 307. वक्कड (7, 35), वडण (7, 84) निरन्तरवृष्टि.
- 308. णिहुअं (4, 50), णिहुअं (4, 26) मुरतम्
- 309. णिर'मी (4, 31), णीर'मी (4, 31) शिरोऽवगुण्डन;
- 310. णिह्नदे। (4, 33), णिब्तूदे। (4, 33) स्तब्धः

- 311. णाउड्डो (4, 47) णेउड्डो (4, 44) सदभाव.
- 312. णिवच्छणं, णेवच्छणं (4, 40) अवतारणम्.
- 313 खोलो (2, 80), थोलो (5, 30) 'part of a garment' (वस्नेकदेश:).
- 314. दुक्ख' and दुत्थ' (5, 42) जघनम्.
 There is also दुम्म' (5, 53) in the same sense.
- 315. दूणो (5. 44), धूणो (5, 60) 'elephant.' cf. थूणो (5, 29) 'horse',
- 316. परुढ', परुढ' (6, 4) परुह्थ' (6, 66) 'house' (गृहम्).
- 317. िंडी (4, 7) 'pieces of cloth stiched togather'. रिंडी (7, 5) 'patched garment' (कन्याप्राया).
- 318. पडुवइअ' (6, 14). 'sharp' (तीक्ष्ण'). महुवइअ' (6, 146) 'ibid'.
- 319. पुलासिओ (6, 55) अग्निकण. मुलासिओ (6, 135) स्फुलिङ्गः.
- 320. पुआइणि (6, 54) पिशाचगृहीता, उन्मत्ता, दुःशीला. मुआइणि (6, 135) दुःबी. cf. पुआई (6, 80) पिशाच...
- 321. पुरुपुरिक्षा (6, 55) उत्कण्डा. सुरुमुरिक्ष' (6' 136) रणरणक: cf. रुअरुड्का (7, 8), रुहुओ (PSM.) उत्कण्डा.
- 322. ਬਿਲ' (7, 88) 'clear, pure' (ਅਵਲਸ੍). ਬਿਲਫ' (7, 61) 'white' (ਖ਼ਬਲਸ੍).
- 323. वेप्पुअ' (7, 76) (also वेप्पे। 7, 74) भूतादिगृहीतम् .. सिंपुअ' (8, 30) भूतगृहीतम् .
- 324, पंथुच्थुहणी (6, 35) श्रञ्जरकुलात् प्रथममानीता वधूः. हत्थच्छुहणी (8, 65) नववश्रूः.
- 325. अचिछहरुहो (1, 41) द्वेष्य:, वेष:. हिथहरिहो (8, 64) वेष:.

3. CORRECTION OF ERRONEOUS INTERPRETA-TIONS

In the word list that follows, under each entry first we have reproduced the relevant Desya item with its place of occurrence in DN. and its Sanskrit meaning (after the DN. Com.). It is followed by English meaning as given by Ramanujaswami, but which we hold to be incorrect. This item is given here under the lable 'l, (R)'. Next follows the correct interpretation under the label '2. (C.)', along with discussion where necessary. Etymological suggestion is rarely, if ever, thrown out.

- 326. अचलं (1, 53) गृहपश्चिमाङ्गणम्, गृहपश्चिमप्रदेशः.
 - 1. (R.) 'the western part of a house'.
 - 2. (C.) 'the backyard or back part of a house.'
- 327. अच्छिविच्छी (1, 41) परस्पराकष्णम्.
 - 1. (R.). 'mutual attraction'.
 - 2. (C) 'mutual pulling'. cf. অ'ভ্রিয'ভ' K. 38, 7; অ'ভ (PSM.) 'to pull'; অভিজ' (1, 14) = আকুছ্ম (R. 'drawn near' but correctly 'pulled').
- 328. अजराडर (1, 45) उष्णम्.
 - 1. (R.) 'heat'.
 - 2. (C.) 'hot'.
- 329. অভ্জী (1, 5) जिनः.
 - 1. (R.) 'Mahavira'.
 - 2. (C.) 'a Tirthankara'.
- * See p. 10; 11.

- 330. अज्झेालिआ (1, 33) कोडाभरणे मौक्तिकरचना.
 - 1. (R.) pearls in a chest ornament'.
 - 2. (C.) 'a design of pearls in a chest ornament;
- 331. अडखिमअं (1, 41) प्रतिजागरितम.
 - 1. (R.) 'watchfulness'.
 - 2. (C.) 'attended upon; taken care of'.
- 332. अणरामभो (1, 45) अरति:.
 - 1. (R.) 'dissatisfaction'.
 - 2. (C.) 'restlessness caused by love's longing'.
- 333. अणहारओ (1, 38) खळूळ निम्नमध्यमित्यर्थः.
 - 1. (R.) 'a pit'.
 - 2. (C.) खन्न is a sort of cup made from leaves, paper etc. Hence the secondary meaning is 'that which has a cavity or depression in the middle. The illustrative stanza in DN. has अणहारगंड 'having cheeks with cavities'.

PSM. gives 'empty' (रिक्त) as one of the meanings of खहल and cites the following passage in support: जाया खबल क्वाला परिसासियम संसोणिया घणिय. Here too the meaning 'a thing depressed in the middle' fits well. The cheeks are here said to have become cup-like due to deep cavities resulting from emaciation.

- 334. अणुविज्ञअं (1, 41) प्रतिजागरितम्
 - 1. (R.) 'watchfulness'.
 - 2. (C.) see under अडखिम्मअ.
- 335. अण्णाणं (1, 7) विवाहव धूदानम् । विवाहकाल वध्वे यद् शीयते यद् वा विवाहार्थं वध्वा एवम वराय यद् दानम्.

- 1. (R.) 'dowry or a pressent from the bride to bridegroom for marriage'
- 2. (C.) 'dowry, or the ceremony of offering the bride to the bridegroom at the time of marriage.'
- 336. अंबसमी, अंबससी, अंबसिआ (1, 37) स्तीमितपर्युषितकणिका.
 - 1. (R.) 'cooked grain wet with being kept over a night'.
 - 2. (C.) 'dough wet or hardened because of staleness'. For किणका 'dough' see IAL 2665 (There under the materials given from Guj. it should be correctly noted that कणक, कणिक (कणेक) means 'dough,' while कणको means 'broken grains of rice').
- 337. अ बेटी (1, 7) मुष्टियूतम्.
 - 1. (R.) 'a kind of game'.
 - 2. (C_•) 'a kind of gambling game in which cowries or similar pieces are concealed in the closed palm and there is a stake on guessing correctly whether the number is odd or even'.
- 338 अत्थुड (1, 9) रुघु.
 - 1. (R.) 'light'.
 - 2. (C) 'small'.
- 339. अ'बेसि अबेसी (1, 8) गहदारफलहकः.
 - 1. (R.) 'a plank attached to the doorway'.
 - 2. (C.) 'a door panel'.
- 340. अम्माइआ (1, 22) अनुगा अनुमार्गगामिनी.
 - 1. (R.) 'going along the way'.
 - 2. (C.) 'a woman who follows'.

- 341. अल्सं (1, 52) कुसुम्भरक्तमृ.
 - 1. (R.) 'saffron-coloured'.
 - 2. (C.) 'dyed in Indian madder'.
- 342. अह्नत्थ (1, 54) जलाई।
 - 1 (R) 'a fan wetted with water'.
 - 2. (C) 'a wet cloth
- 343. अव'गो (1, 15) कटाक्षः.
 - 1. (R.) 'a glance.'
 - 2. (C) 'a side glance'. (अपाङ्गः).
- 344. अवज्झसं (1, 56) कटि.
 - 1. (R.) 'the buttocks'.
 - 2. (C_•) ' the waist '.
- 345. अवडओ (1, 2) तृणपुरुषः.
 - 1. (R.) 'the form of a man made of grass'.
 - 2. (C.) 'a scare-crow or dummy made of grass, etc.'.
- 346. अवडिकओ (1, 47) प्रपातनिहत; कूपादी निरत:.
 - 1. (R.) 'killed in a well'.
 - 2. (C.) 'one who has died an unnatural death by falling from a height or throwing himself in a well, etc.'
- 347. अवडिअ' (1, 21) खिन्नम्
 - 1. (R.) 'distressed',
 - 2. (C.) 'spiritless, depressed'.
- 348. अबणो (1, 55) वहः, परिवाहः, गृहफलहकः.
 - 1. (R.) 'overflow'; 'the plank of a house'.

2. (C.) 'flow' or 'a canal, or passage for water'; 'a door-panel'.

For अंबेसि (1, 8) and अवणो the meaning is given as घरफलह. But in the com. on 1, 8 it is clarified as गृहद्वारफलहक:.

- 349. भवत्तं (1, 34) विसंस्थुलम्.
 - 1. (R.) 'unsteady'.
 - 2. (C.) agitated, disturbed from its proper place or setting ruffled.
- 350. अवयाणं (1, 24) आकर्षणरज्ञः.
 - 1. (R.) 'a cord to draw anything near'.
 - 2. (C.) 'a tether'.
- 351. अवयारो (1, 32) माध्याभुत्सविशेषो यस्मिन्निक्षुदंतधावनाद्याचारः कियते.
 - 1 (R) 'a festival in the month of Magha'.
 - 2. (C.) 'particular festival celebrated on the Magha fullmoon day, with observances like using a sugarcane piece for a tooth-pick, etc.
- **352.** अवयासिणी (1, 46) नासारज्जु:.
 - 1. (R.) 'nose-thread'.
 - 2. (C.) 'nose-rope of animals '. (Sk. अपर्षणी.)
- 353. अवराहो, अवरोहो (1, 28) कटी
 - 1. (R) 'the buttocks'.
 - 2. (C.) 'the waist'.
- 354. आअली (1, 61) झाटभेद:.
 - 1. (R.) 'a kind of bower'.
 - 2. (C.) 'a sort of thicket'.
 - cf. झाड and जाडी.

- 355. आइप्पणं (1, 78) पिष्टम्, उत्सवे गृहमण्डनार्थं सुधाछटा, तन्दुलपिष्ट- क्षीरं गृहमण्डनाथभित्यन्थे.
 - 1. (R) 'a ground substance'; 'whitewash'.
 - 2. (C.) 'flour; lime-plaster used for decorating houses on festive occasions'; 'a paste of rice flour used for drawing decorative designs in the house (entrance, courtyard, etc.'), according to some.

cf. Beng. अल्पना.

PSM. wrongly separates तन्दुलिष्टक्षीर and गृहमण्डनार्थं म् and takes them as two differnt meanings, आरीपन म आरीपना can give us आइप्पणं — आलिप्पणा, the latter giving अलपना.

- 356. आउसं (1, 65) कूर्चम्,
 - 1. (R.) 'a brush'.
 - 2. (C.) 'beard'. cf. its another meaning ध्रुकम' noted in PSM. Doshi wrongly takes क्व to mean hair between the eyebrows'.
- .357. आडुआली (1, 69) নিপ্সীমাৰ:.
 - 1. (R.) 'the state of being mixed'.
 - 2. (C.) 'a mixture (prepared by mixing powdery or similar substance with a liquid). cf. Hem.'s illustration and Guj. अडवाळ हु' 'to mix (in the above number)'. Doshi understands the word in the sense of 'adulteration' PSM. in the sense of 'admixture'.
- 358. आणाई (1, 64) शकुनिकाख्य: पक्षी.
 - 1. (R.) 'a kind of bird',
 - 2. (C.) see under घारी.

- 359. आमलयं (1, 67) नू पुरगृहम्.
 - 1. (R.) 'dressing room'.
 - 2. (C.) 'a casket for the anklet'.
 - cf. Guj. घर 'a case for keeping spectacles etc.' from गृहक्ष्म.
- 360. आयासलवो (1, 72) नीडम्, पक्षिगृहम्
 - 1. (R) 'a nest', 'a cage'.
 - 2. (C.) 'a nest'

Hem. has given पक्षिगृहम् as a rendering of नीड in the text.

- 361. आरंदर (1, 78) अविविक्तम् i. e. अनेकान्तम् ; संकटम्.
 - 1. (R.) 'not alone'; 'difficulty.'
 - 2. (C.) 'not lonely, inhabited, populated'; 'narrow, closely packed'.

PSM. interpreted सकट as 'pervaded'.

- **362.** आलील (1, 65 निकट भयम्
 - 1. (R) 'a danger at hand'.
 - 2. (C.) 'an impending danger'.
- 363. आलीवण (1,71) प्रदीसम्, प्रदीपनकम्.
 - 1. (R) 'illumination'.
 - 2 (C.) 'ā burning fire, confiagration.' With प्रदीपनकम् cf. Pk. प्रछोवण and Guj. प्रछेवण fire, conflagration'.'
- 364. आहुंदुरो (1, 66) बाल:.
 - 1. (R.) 'a tail'.
 - 2. (C) 'a child'.

- 365. इ'द्इढलओ (1, 82) इन्द्रोत्थापनम्
 - 1. (R.) 'awakening Indra'.
 - 2. (C.) cermonial removal of the Indra's Banner (Indradhvaja) as the concluding rite of the Indramaha festival.

Refer to the illustrative stanza.

- 366. इली (1, 83) वृष्टिनिवारणम्, वर्षत्राम्.
 - 1. (R.) 'a shelter from rain'.
 - 2. (C) an umbrella'.
 - cf. इह्रीरं (1, 83) वृष्टिरक्षणम्, वृष्टिवारणम्.
- 367. इल्लो (1, 83) कृत्णः, कृत्णवर्णः.
 - 1. (R) 'black colour'.
 - 2. C.) 'black, dark-coloured'.
- 368. ईसं (1. (R.) कील. कीलक:.,
 - 1. (R.) 'a wedge'.
 - 2. (C.) 'a nail, a stake'.
- 369. ईसओ (1, 84) रोच्झाच्यो मृग:.
 - 1. (R.) 'a kind of animal'.
 - 2. (C.) 'a kind of antelope'.
 - cf. Guj रोझ.
- 370. डअहारी (1, 108) दोहनकारी, दोग्ध्री.
 - 1. (R.) 'a milch cow'.
 - 2. (C) 'a milkmaid, a milking woman'.
- 371. उक्कोलो, उन्बरो, उन्बा, उन्बाहा (1, 87) धर्मः.
 - 1. (R.) 'warmth'.
 - 2. (C.) 'heat'.

- 372. उक्खंडिअं, ओक्खंडिअं (1, 112) आक्रान्तम्.
 - 1. (R.) 'seized'.
 - 2. (C.) 'attacked by, overpowered by '.
- 373. डक्खंडो, उग्चाओ, उद्दामो, उद्धाओ, उप्पीलो, उन्बरो (1, 126) स्थपुट:, विषयोन्नतप्रदेश:.
 - 1. (R.) 'unevenly raised'.
 - 2 (C.) 'an uneven raised place.'
- 374. उग्गुलुंखिआ (1, 118) हदयरसोच्छलनम्.
 - 1. (R) 'disturbance or upsetting of the heart'.
 - 2. (C.) 'upsetting of the stomach accompanied by a strong vomitting sensation '.

उग्वाओं (1. 126) See उक्खडो

- 376. उच्छिअं (1, 111) छिन्नत्वक्.
 - 1. (R.) 'skin torn off'.
 - 2 (C.) 'with the bark peeled off'.
 cf. the illustration and Pk. ভাল 'back, skin'.
- 377. उश्रोलो (1, 131), उच्छुलो (1, 131) श्रम:, खेद:.
 - 1. (R.) 'sorrow'.
 - 2. (C.) 'fatigue'.
- 378. उज्जड (1.96) उद्भसम
 - 1. (R.) 'banished, desolate'.
 - 2. (C) 'deserted',
 - cf. Guj उज्जड
- 379. उत्तिरिविडी (1, 122) ऊर्ध्विध्व भाण्डादे: स्थापनम्. 1' (R.) 'one above the other'.

- 2. (C.) stacking of pilling arrangemet of utensils like pots, etc., one above the other in the descending order of their size.
 - cf. Gui. डतरइ, M. उत्तरंड.
- 380. उद्यो (1, 126). See उक्खडो.
- 381. डदेही (1, 93) डपदेहिका.
 - 1. (R.) 'a minor body (which grows on the diseased parts of the body).'
 - 2. (C.) 'a termite', 'a white-ant'. See the illustration (उद्दीतियखतुंड 'with a mouth as piercing as that of ā white-ant'), and Guj उधई.
- 382. उद्घाओं (1, 126). See उभ्खंडो.
- 383. उप्पीलां (1, 126)
- 384. उरपेहर्ड, उम्मच्छविअ, उरुहिसअं (1, 116) उद्भटम्.
 - 1. (R.) 'excellent'
 - 2 (C.) 'intense, fierce'.
- 385 उडबूरो (1, 126). See उक्खंडो.
- 386 अम्मच्छिविञ (1, 116). See उप्पेहर्ड.
- 387 डम्मड (1, 124) हठ:.
 - 1 (R.) · violence '.
 - 2 (C.) 'stubornness, obstinacy'.
- 383, डलिअं (1, 81) निकृणिताक्ष्म.
 - 1. (R) 'closed eye'.
 - 2. (C.) 'with eyes glancing sideways'.
- 389 डहहसिअ (1, 116) See डप्पेहर्ड.
- 390. उच्चरो (1, 87). See उक्कोले.

- 391. उच्चा (1, 87). See उक्कोलो.
- 392. उच्चाहुछ (1, 136) रणरणया, औत्सुक्यम्.
 - 1. (R.) 'eagerness'.
 - 2. (C.) 'yearning due to lovelorn condition'. see इसण'.
- 393, बब्बाहो (1, 87). See व्यक्तोलं.
- 394. डब्युण (1, 123) उद्भटम्.
 - 1. (R.) 'excellent'.
 - 2. (C.) 'intense, fierce'.
- 395. इसुओ (1, 89) दूषणम्.
 - 1. (R.) 'censure'.
 - 2. (C.) ' fault '.
- 396. डसण (1, 139) रणरणकः.

बुबु'मुसय' (3, 31) 'ibid.'

- 1. (R.) 'Cupid, the god of love'.
- 2. (C.) 'yearning and restlessness in the lovelorn condition'
- cf. रणरणया (1, 136) given as a meaning of उज्वाहुल and rendered in com. with औत्युक्यम.
- 397. एक्कसिंबली (1, 146) शाल्मलीपुष्पैर्नवफलिका.
 - 1. (R.) 'the form of a woman made of silk cotton flowers'.
 - 2. (C.) 'fresh pod of the silk cotton tree with its flowers'.
- 398. ओच्छत (1, 152) दन्तभावनकम.
 - 1 (R) 'cleaning the teeth'.

- 2. (C.) 'a tooth-pick'.
- 399. ओच्छिअं (1, 150) केशविवरणम्
 - 1. (R.) 'displaying the hair'.
 - 2. (C.) 'spreading out the hair'.
- 400. ओज्झाय' (1, 159) अन्य' प्रेर्य यत्करेण गृहीतम्
 - 1. (R.) 'anything first offered to another and then grasped with the hand'.
 - 2. (C.) 'snatched after pushing away another person'.
- 401. ओत्थओ (1, 151) अवसन्नः.
 - 1. (R.) ' ended '.
 - 2. (C.) 'dejected'.
- 402. ओत्थरिओ (1, 169) आकान्तः, आकममाणः
 - 1. (R.) 'seized', 'seizing'.
 - 2. C.) 'attacked', 'attacking'. cf. डत्थर in PC., MP. etc.
- 403. ओइ विशे (1, 171) आकान्तम्
 - 1. (R.) 'seized'.
 - 2. (C.) 'attacked'.
- 404. ओर पिअं (1, 171) see ओइ पिअं
- 405. ओरिल्लो (1, 155) अचिरकाल:.
 - 1. (R.) 'a short period'.
 - 2. (C.) 'recent time, time that is not long past'.
- 406. ओरुंज' (1, 156) नास्तीतिभणितगर्मा कीडा.
 - 1. (R.) 'a gesture expressive of negation'.
 - 2. (C.) 'a game involving saying 'no' 'no'.'

- -407. ओलिंमा (1. 153) उद्देही, उपदेहिका.
 - 1. (R.) 'a minor body (which grows on the diseased parts of the body)'.
 - 2. (C.) 'white-ant, termite'. See बहेदी.
- 408. ओल पओ (1, 163) तापिकाहस्तः.
 - 1. (R.) 'a go-between'.
 - 2 (C.) 'a spatula-shaped turn-spit used to turn chapatis under baking'.

तापिकाहस्त: is a Sanskritization, cf. the Guj. derivative तावेथो, तवेथो in the same sense.

- 409 ओहडिओ (1, 159) see आज्ज्ञाय'.
- 410. कज्जवो (2, 11) तृणाद्युतकर:
 - 1. (R) 'a stack of grass, etc'.
 - 2 (C.) 'sweepings or litter, containing grass, etc'.
- 411. कडइओ (2, 22) स्थपति:.
 - 1. (R.) 'a chief, king'.
 - 2. (C.) ' a mason'.
- 412. कडतला (2, 19) वकमेकधार लोहायुधम्
 - 1. (R.) ' a sickle'.
 - 2. (C) 'a one-edged, crooked iron weapon.'
- 413. कणिआरिअं, कण्णस्सरिअं, कण्णास्सरिअं, काणच्छी (2, 24) काणाक्षिदृष्ट्म.
 - 1. (R.) 'looked askance'.
 - 2. (C) 'amorous side glance'.
- 414. कण्णसिरेअं (2, 24) See कणिआरिअं

- 415. कण्णोच्छडिआ, कण्णोढत्ती (2. 22) दत्तकर्णा, या भाषणीर्थं परवाक्यं गृहणाति.
 - 1. (R.) 'ovehearing.'
 - 2. (C.) 'a womn listening intently with a view to retort'.
- 416. कण्णोहत्ती (2, 22). See कण्णोच्छडिआ.
- 417. कण्णोस्सरिअं (2, 24) See कणिआरिअं.
- 418. कतवारो (2, 11) See कज्जवो.
- 419. कंबरो, कोत्थरं (2, 13) विज्ञानम्.
 - 1. (R.) 'wisdom'.
 - 2. (C.) 'skill'.
- 420a. कयारी (2, 11) see कज्जवी.
- 420b. कवासो, कविसा (2, 5) अर्धजङ्घा, मोचकमित्यर्थः.
 - 1. (R.) 'an armour for the legs'.
 - 2. (C.) 'a sort of shoe'. See अद्वर्जघा (1, 33), मोचं (6, 139).
- 421. कविडं (2, 9), किविडी (2, 60) गृहपश्चिमाङ्गणम्.
 - 1. (R.) 'the western courtyard of a house'.
 - 2. (C.) 'the backyard'.
- 422 कविसा (2, 5). See कवासो
- 423. काणव्छी (2, 24). See कणिआरिअं
- 424. काणत्थेवो (2, 29) विरलाम्बुकणवृष्टिः.
 - 1. (R.) 'a shower of rain'.
 - 2, (C.) 'a drizzle.'
- 425. काबी (2, 26) नीला, नीलवर्णा.

- 1. (R.) 'blue'.
- 2. (C.) 'indigo'. cf. Sk. lexicons नीला, नीलवर्णा 'the indigo plant'. But H. काई means 'moss'. cf. Sk. नीली, जलनीली moss'. With नीली, cf. Guj लील 'moss'.
- 426. कासारं (2, 27) सीसकपत्रकम्.
 - 1. (R.) 'lead'.
 - 2. (C) 'a lead-sheet'.
- .427. किंपओ (2, 31) कृषण:.
 - 1. (R.) 'poor, pitiable'.
 - 2. (C.) 'a miser'.
- 427. कि पओ (2, 31) क्रथणः.
 - 1. (R.) 'poor, pitiable'.
 - 2. (C.) 'a miser '.
- 428. किविडी (2, 60) See कविडं.
- 429. कुक्कुरुडो (2, 13) See उक्कुरुडो.
- 430. कुट्यरी, कुट्टा, कुमारी, कोसइट्टिश (2, 33) चणडी.
 - 1. (R) 'an angry woman'.
 - 2. (C.) 'Pārvati, S'iva's spouse'. See the illustrative stanza.
- 431. कुढो, कूबो (2, 62) हतत्याजवः
 - 1 (R) 'one who abandons the stolen property'.
 - 2. (C.) 'one who forces others to abandon the stolen things'.
- 432. कुंडिअपेसण' (2, 43) ब्राह्मणविष्टिः.
 - 1. (R.) 'sending a brahman.'
 - 2. (C.) 'forced service rendered to a brahman' विध्य means forced labour', (cf. DN. कुंडिओ, and पेसण' 'service').
- 433. कुमारी (2, 35) See कुद्रव्यरी.

- 434. इरकुरिअ (2, 42) रणरणक . See ऊसण .
- 435, कुरलो (2, 63) कुटिलकेश:.
 - 1. (R.) 'curly hair'.
 - 2. (C₁) 'having curly hair'.
- 436. कुहिणी (2, 62) कूर्पर:.

As the Sk. rendering was erroneously read by R. as कर्र., he has wrongly given 'camphor' as its meaning instead of 'elbow'.

- 437. कृवो (2, 62). See कुढो.
- 438. को टिंबो (2, 47) द्रोणी.
 - 1 (R.) 'a wooden tub'.
 - 2. (C.) 'a boat'.
- 439, कोत्थरं (2, 13) विज्ञानम्.
 - I. (R.) 'knowledge'.
 - 2 (C.) 'skill'.
- 440. कोसट्टइरिआ (2, 35). See कुद्रयरी.
- 441. कोह्छी (2, 46) तापिका.
 - 1. (R.) 'a go-between'.
 - 2. (C.) 'a baking pen'.
- 442. खडहडी (2, 72) तरुमर्कट:.
 - 1. (R.) 'a monkey'.
 - 2. (C.) 'a squirrel'. cf. Pk. खाडिहला, Guj. खलूडी ' क squirrels'.
- 443. खोडपज्जाली (2, 70) स्थूलेन्धनाप्तिः.
 - 1. (R.) 'conflagration'.

- 2. (C.) 'fire from burning big logs of wood '. cf. Pk. खोडी 'log of wood '. G. खोड, खोडमु 'ibid.'.
- 444. गंजोल्लिसं (2, 100) हास्यस्थानेऽड्गस्पर्शो, यत् गिलिगिलाविभं इति लोके रहम्.
 - 1. (R.) 'touching the body in a place where a cry of joy is produced'.
 - 2. (C.) 'touching the body in sensitive places to excite laughter', i. e. tickling or titillating.

The colloquialism गिलगिलाविश cited in com. is preserved in Guj. गलगिलयां 'tickling, titillation'.

- 445. गणणाइआ (2, 87) चण्डी.
 - 1. (R.) 'an angry woman'.
 - 2. (C) 'S'iva's consort, Pārvati'.

The word obviously derives from Sk. गणनायिका lex. 'Durgā'. cf. lex. गणनाथ and गणपति meaning 'Siva', besides the usual 'Ganes'a'.

- 446. गत्ताडी (2, 82) गवादनी.
 - 1. (R.) 'a pasture'.
 - 2. (C.) 'a trough (or a particular place) in the cattle yard holding cattle feed'.

गवादनी has this meaning in lexicons. cf. also its Guj. derivative गमाण (f.) with the same meaning.

- 447. गाणी (2, 82). See गत्ताडी.
- 448. गोअंटा (2, 98) गोचरणा:.
 - 1. (R.) 'tenders of cows'.
- 2. (C.) 'cow's feet'.

The illustrative stanza makes this clear.

- 449. घरोली (2, 105) गृहगोलिका (v. 1. गृहगोधिका).
 - 1. (R.) 'a small ball'.
 - 2. (C.) 'a house lizard'.

Sk. lex. गृहगालक, गृहगालिका, the variant गृहगाधिका, Guj. परोळी, गराळी 'a small house lizard' and the illustrative stanza make our meaning clear.

460. घारी (2, 107) शकुनिकाख्यः पक्षी.

चिल्ला (3, 9) 'ibid.'.

पिरिडी (6, 47) शक्तिका.

सडली (8, 8) ' ibid '.

हिरडी (8, 68) 'ibid'.

R. renders meanings of the first two words with 'a hensparrow', of the third with 'a bird', of the fourth with 'a kind of bird' and of the fifth with 'a vulture'. cf. also आणाई (4, 64) शकुनिकाख्यः पक्षी 'a kind of bird' (R.) 'But actually all mean the same thing, viz., 'a kite (bird)'. H. बोल from बिल्ला and Guj. समळी, समडी cognate with सक्ली and perhaps with Sk. शकुनिका, Pk. सउणि, सउणिआ) have this meaning. For बिल्ला, cf. H. बिल्लाना 'to scream', Pk. बिल्लिस (DN. 3, 11) 'a cricket, a mosquito'. They derive from a root meaning 'to send sharp notes', 'to scream'.

- 451. बुसिरसारं (2, 109) अवस्नानम्, मस्रादिनां पिष्टम्.
 - 1. (R.) 'the flour of a certain pulse'.
 - 2. (C.) 'unguents (like the flour of lentil, etc.) rubbed before bathing'.

- cf. अवण्हाण noted by PSM. from Naya. 1, 13 and Vivaga. 1, 1 in the sense of 'bathing with soap etc.' cf. Guj. पीठी in the sense given above.
- 452. चक्खुइणं (3, 4) पेक्खणअं, पेक्षणीयम्.
 - 1. (R.) 'beautiful to look at '.
 - 2. (C.) 'show or dramatic performance.'

See the illustrative stanza.

- 453. चडुला (3, 8 com.) रत्नतिलकम् .
- 454. चडुलातिलयम् (3, 8) काञ्चनशृङ्खलालभ्बितरत्नतिलकम्.
 - 1, (R.) 'a jewel' for the first and 'a jewel hanging from a gold chain' for the second.
 - 2. (C.) It is not just any jewel, but the jewel which serves as (or occupies the place of) the tilaka on the forehead. This refers to a head-ornament consisisting of a gold chain with a jewel for pendant that would occupy the place of the tilaka mark on the forehead—resembling the present day दामणी (or probably earlier राखडी) or its modified from चांदलो worn in Gujarat.
 - 455. दव या (3, 7) अर्धप्रावृतदेहा.
 - 1. (R.) ' half covered body'.
 - 2. (C.) 'a lady with partly covered body'.
- 456. चिच्च (3, 10) रमणम्.
 - 1. (R.) ' charming '.

Doshi. 'attractive'; also 'play'.

PSM. 'sexual enjoyment'.

2. (C.) As the phrase चिच्चिठयचिक्रा in the illustrative stanza under (3, 10) shows, रमण means here

ज्ञचन or मध्य 'waist'. Hearing that her boy has climbed up a tamarind tree, the mother taking her baby on the waist rushes to call the boy.
—this baba is the purpose of the illustrative stanza. So also रमणम्, given as one of the meanings of चुंचिंग्जा (3, 23) may have the meaning of ज्ञचन, मध्य 'waist'.

Looking to the meaning मध्य, one is tempted to suggest विच्चे ('the middle') as the correct form for चिच्चे.

- 457. चिमिणो (3, 11) रोमश:
 - 1. (R.) 'a ram', 'hog'.

Doshi also takes it in the sense of a ram. PSM. understands रामश as रामाञ्चित, पुलकित, गद्गद.

- 2. (C.) रामश primarily means 'hairy', 'shaggy' and the illustrative stanza (under 3, 11) shows that this is the intended meaning. There the enemies, defeated and driven to the wilderness are described as चिमिणा' shaggy' i.e. 'with long, unshaven growth of hair'.
- 458 चुण्णइओ (3, 17) चूर्णाहतः.
 - 1. (R.) 'powdered'.
 - 2. (C.) The com. on 3, 17 makes it explicit that the sense here is to be distinguisaed from 'besmeared with powder' (रेण्डिच्छ्रित:). So 'struck with the powder' is the proper sense, as is shown by the illustrative stanza.
- 459. छारो (3, 26) रिच्छओ, अच्छभह:.
 - 1. (R.) 'a kind of plant'.

- 1. (C.) 'a bear'.
- 2. (R.) has understood अच्छभव्ल correctly under खच्चलो (2, 69).
- -460. हु हु मुसय (3, 31) रणरणकः. See under इसण . cf. हु हु मुसय (3, 58) मनोदु: खम् and मुसह (6, 139) मनस आकृळता
- 461. जुरुमिल्ल' or जुरुम्मिल्लय' (3, 47) गहनम्
 1 (R.) 'difficult', 'grave'.
 2. (C.) 'deep', 'intense'.
- 462. जोणणालआ (3, 50) जोयारी धान्यम.
- 463. जोवारी (3, 50).
 - 1. (R.) 'corn'.
 - 2. (C.) 'jowari; a sort of millet.' cf. H. जोम्हरी, M. जोम्बळ.
 - Guj. जुवार, H. जुआरि.
- 464. झरको, झरतो (3, 55) तृणमयः पुरुषः.
 - 1. (R.) 'grass shaped like a man'.
 - 2. (C.) 'a strawman ', 'a scarecrow'. It is the same as Sk. चच्चा.
 - cf. also अबडओ.
- 465. झोदटी (3, 59) अर्धमहिषी.
 - 1. (R.) 'a species of she-buffallo'.
 - 2. (C.) 'a young buffalo yet uncalved'. cf. Guj. झोटी, झोटडी in that sense.
- 466. णिब्बूढो (4, 29), पउढी (6, 4) गृहपश्चिमाङ्गणम् .
 - 1. (R.) 'The western courtyard of a house'.
 - 2. (C.) 'The backyard of a house'.

- 467. डह (4, 7) पिटिका.
 - 1. (R.) 'a boil'.
 - 2. (C.) 'a bamboo basket'.
 - cf. H. डाला, डाली, Guj. डाली, PSM. and the illustrative stanza.
- 468,469. तंबिरा (5, 5), तंबरत्ती (5, 5) गाधूमेषु कुङ्कुमच्छाया.
 - 1. (R.) 'the saffron colour of wheat'.
 - 2. (C.) 'the suffron tinge that develops in wheat (as a short of disease).'

It is called here कुंक्मिआ. In Guj. it is known as गेह which also means 'red ochre' or its colour.

- 470. दीविआ (5, 53) उपदेहिका.
 - 1. (R.) 'a secondary body (which grows on diseased part of the body).
 - 2. (C.) 'white-ant'.
 - cf. H. दीमक; उदेही and उनदेहिआ (1, 94) and G. जधई 'white-ant'.
- ·471. दे।द्विओं (5, 49) चर्मकृषः.
 - 1. (R.) 'a pore of the skin'.
 - 2. (C.) 'a leather bag (used as water-carrier)'. This is clear from the illustrative stanza.
- 472. देाहणहारी (5, 56) पारिहारिणी.
 - 1. (R.) 'a maker of garlands'.
 - 2. (C.) 'a milk-maid carrying a milking vessel'. पारी (6, 37) means दे।हनभाण्डम.
- 473 पडे।हर' (6, 27) गृहपिच्यमाङ्गणम्. See ऊसण', णिव्यूढ'.

474. पइतथी (6, 70).

The second meaning is given in Pk. as पारिहारिणी, in Sk. as देशहनहारिणी.

- 1. (R.) 'a cow which avoids milking'.
- 2. (C.) 'a milkmaid carrying milking vessel'.

This is the same as दे। हणहारी (5, 56) which also is paraphrased as परिहारिणी. It is possible that in Hemacandra's sources पह्नची was rendered by परिहारिणी (6, 31), both applying to a buffalo which has calved a long time back and which gives plenty of milk; but the sources might have confused परिहारिणी with पारिहारिणी and hence the second meaning of पह्नची viz., दोहनहारिणी.

- 475. पत्तणं (6, 64) बाणस्य फलम्.
 - 1. (R.) 'a kind of fruit'.
 - 2. (C.) 'head of an arrow'.
- 476. पब्बइसेल्ल (6,51).

The Pk. meaning is discussed by Doshi (p. 432) along with the variants. His suggestion that the text should read बालमयकदुए, and the meaning 'a ball made of hair 'as supported by the illustrative stanza appears quite sound.

- 477. फरओ (6, 82) फलक:
 - 1. (R.) 'a board', 'a slab'.
 - 2. (C.) 'a shield'.
- 478. बे।हिस्थे। (6, 96) प्रवहणम्.
 - 1. (R.) ' litter, carriage or conveyance'
 - 2. (C.) 'a boat, a raft'.

- cf. PSM, Old Guj. बाहिय, Sanskritised as विश्व 'a raft'.
- 479. भद्दाकरी (6, 102) प्रलम्ब:.
 - 1. (R.) 'hanging down, pendulous'.
 - 2. (C.) 'long'.

See the illustrative stanza.

- 480. मडली (6, 113) हृदयरसाञ्छलनम्.
 - 1. (R.) 'disturbance or upsetting of the heart'.
 - 2. (C.) 'vomitting sensation in the stomach'.
 - cf. Guj. माळ f. 'ibid'.

See under उग्गुलुं छिआ.

- 481. मत्ताल्लंबा (6, 123) मत्तवारण:.
 - 1. (R.) 'a wild elephant'.
 - 2. C) 'varandah'.

See PSM. under मत्तालंब and मत्तवारण.

- 482. भाणंसी (6, 147) चन्द्रवधू:
 - 1. (R.) 'the wife of the moon'.
 - 2. (C.) 'The rainy season insect Indragopa'.

In Hindi it is called बोरबहुटी (Sk. वीरबधुटी), इन्द्रबधु or चन्द्रबधु.

- 483. मायंदी (6, 126) श्बेतपटा प्रविजता.
 - 1. (R.) 'a female mendicant wearing white garments.'
 - 2. (C. 'a Svetambara Jain nun'.
- 484. मुहमुरिअं (6, 136) रणरणकः.
 - 1. (R.) 'Cupid, the god of love'.
 - 2. (C.) 'longing due to love-lorn condition'. See इसण'.

- 485. रेबलिआ (7, 10) वालुकावर्त:
 - 1, (R.) 'a place filled with sand'.
 - 2. (C.) 'a cyclonic sand storm'.
- 486. वज्जा (7, 22) अधिकार:
 - 1. (R.) 'authority'.
 - 2. (C.) 'a topical divison (in an anthology etc.). cf. the divison in बज्जाड in the anthologies like वज्जालग, etc. Sanskritized as जज्या. it a actually is derives from पर्याय
- 487. वामणिओ (7, 37) नष्टप्रत्यादाता.
 - 1. (R.) 'One who receives what is lost'.
 - 2. (C.) 'onc who recovers a lost thing'.
- 488. वाहगणो, वाहगणओ (7, 61) मन्त्री
 - 1. (R) 'a minister'.
 - 2 (C.) 'an astrologer who fixes days for marriages'. मंत्री (6, 111) is actually recorded with the meaning विवाहगणओ, Sk. विवाहगणकः which is the same as our वाहगणओ.
- 489. विलिब्बिली (7, 70) कोमलिनिस्थामतनुः
 - 1. (R.) 'a tender and weak body'.
 - 2. (C.) 'one who has a tender and weak body'.
- 490. बिहय' (7, 74) पिन्जितम
 - 1. (R.) 'dyed or coloured'.
 - 2. (C.) 'dishevelled' (lit. 'carded' as cotton).
 - cf. पिंज (PSM.) 'to card,' Guj. पींजबु', and विहण' (7, 63) पिञ्जनम्.
- 491. वेडिकिटर (7, 78) संकटम्.
 - 1. (R.) 'difficulty'.

- 2. (C.) 'a pressing crowd'.
- 492. बे।सर्ट (7, 81) भृतोल्छिठितम्.
 - 1. (R.) 'supported and rolling'.
 - 2 (C.) 'filled and emptied'.
- 493. सडली see under घारी.
- 494. सत्थइअं and साणइअं (8, 13), Pk. तेअविअं, Sk. उत्तेजितम्
 - 1. (R.) ' excited '.
 - 2. (C.) 'sharpened'.

This is clear from Pk. तेअविअ' and from the derivation of साणइअ' from शाण.

- 495. सब्बला (8, 6) क्रशी.
 - 1. (R.) 'a sort of ladle'.
 - 2. (C.) 'an iron weapon'.

क्यों has also the meaning 'a heavy iron bar used for digging'.

- 496. साणइअ' see सत्थइअं.
- 497. 498. साह जओ, साह जणे। (8, 27) गेक्षिरः.
 - 1. (R.) 'a cow's hoof'.
 - 2. (C.) 'Tribulus lanuginosus'.
- 499. हत्थल्ली (8, 61) हस्तबृसी.
 - 1. (R.) 'an ascetic's tstaff to support his hand'.
 - 2. (C.) 'a seat (of mat etc.) to be carried in hand'.
- 500. हलूरे। (8, 62) सतृष्ण:.
 - 1. (R.) 'thirsty'.
 - 2. (C₁) 'yearning', 'longing'.
- 501. हिरडी see under घारी.

4. SOME DES'YA ITEMS FROM SVAYAMBHU'S PAUMACARIYA I-XX

- (1). ITEMS COMMON WITH THE DN.
- 502. अब्भिड् (1, 37, 78; SH. 8, 4, 174) 'meet' (सम् + गम्) cf. अब्भिड् (PC. 6 12 9, 7 13 9, 8 9 8, 17 1, 11 10 etc.). 'to confront in a battle, fight, fall upon'; अब्भिट्ट (PC. 17 9 3; pp.p. अब्भिट 4 7 10, 4 8 1, 10 9 9 etc.) 'ibid'.
 - अबिमट्ट (VPC. 6, 182; 98, 27; PSM.) is a w. r. for अबिमट्ट.

So also अन्दिह Sad.; PSM. See DMP. No. 5, 6.

- 503. অভিৰ (SH. 4, 39) 'offer, give '(অণ্).
 cf. অভতৰ PC. 13 3 10; 21 5 8, 21 13 3 'ibid '
 (gl. दा); অভিৰ MP. 25 6 7, 31 28 3 (DMP. 75).
- 504. अवछुआ (1, 36) 'anger' कोप:. cf. अवछुय PC. 20 11 4 gl. चित्तखेदः
- 505. अहोरणं (1, 25) (an upper garment' (उत्तरीयम्). होरणं (8, 72) 'a cloth' (वस्रम्). cf. अहोरण 14 7 8, 14 10 5 (the compound can be interpreted as containing अहोरण or होरण) (gl. उपरितनवस्रम्).
- 506. आयामो (1, 65) ' force ' (बलम्); according to others, ' long ' (दीर्घ:).
 - cf. आयाम् (PC. 7 7 9, 17 3 8, 17 79) ''to exert force' (gl. सामध्ये क

- 507. उच्चोलि (1, 131) 'lower garment' (नीवी).

 cf. P.C. उश्चोलि PC. 9 3 1, 20 3 3 'lap' (उत्सङ्गः)

 MP. 22 15 10, 56 7 7 'folds of a garment near
 the lap' (gl. कटीवस्रम्). See DMP. 816.
- 508. डप्पीलो (1, 126) 'a collection' (सङ्घातः). cf. डप्पील PC 13 6 3, 31 2 1, 66 3 1 etc. 'ibid'.
- 509. उत्तल्लक (1, 92; SH. 8, 4, 116) 'break' (ब्रुट). cf उल्लक्क PC. 14 5 4, 15 3 9 'hide'.
 - cf. ন্তৰক, णिल्लक in the senses of 'break' (4, 15; SH. 8, 4, 116) and 'hide' (4, 51; SH. 8, 4, 55).
- 510. डप्फाळ (1, 117; SH 8, 2, 174; PSM). डप्फाळ (SH. 8, 4, 2; PSM.) 'tell, narrate' (कथ्,). cf. डप्फाळ (PC. 3 9 5; 29 8 7—v. 1. डप्फाळ, 55 2 7—v. 1 डप्फाळ, gl. कथ्, वि+आ+ ख्या).
 - 511. ओइडणं (1, 155) 'an upper garment' (उत्तरीयम्). cf उद्दर्शं PC. 14 3 3, 18 5 8 'ibid'
 - 512. ओत्थरिओ (1, 169) 'attacked' (आक्रान्त:).

 cf ओत्थरिय MP. 75 4 12, 78 9 21 etc. 'attacked,
 proceeded to fight'.

उत्थर PC. 12 9 3, 15 7 8 etc.; MP. 61 11 3, 86 9 2 etc. 'attack, proceed to fight' (gl. युद्धाथ उत्था). See DMP. 823.

DMP. 823.

513. बोलुग्गो (1, 164) 'a servant' (सेवकः)

cf. ओलग् PC. 7 6 5, 66 6 3 etc.; MP. 6 5 5, 23 12 4 etc. 'serve' (सेव्) and ओलग PC. 2 9 6, 25 3 10, 68 8 2 'service' (सेवा)
See DMP. 744.

514. कृष्परिअं (2. 20) 'torn, rent' (दारितम्).

cf, कप्पर MP. 52 18 8, 54 5 21, 88 12 11 'tear, cut'; कप्परिअ PC. 15 4 5, 15 5 3, 17 8 8 etc; MP. 11 19 10; 'torn'; कप्परण MP. 2 177 'cutting asunder'.

See DMP. 526, 527

- 515. कोदहुम् (2, 50; SH. 8, 4, 168) 'play, rejoice' (स्म्) cf कोदिमिय (v 1. कोडिमिय) PC. 14 11 8 'sexual intercourse' (gl. सुरतम्); कोट्टिमिय PC. 73 11 4 'ibid.'. cf. PSM. कोड्टम and कोड्टिमिय.
- 516. णिरारिड (PC. 16 3 10, 16 7 6, 57 1 4 etc. MP. 2 18 8, 9 26 3 etc.) 'definitely, excessively, constantly '(gl अतिशयेन, अनिवारितम् केवलम्, अत्यन्तम्) See DMP 1042.
- 517. ढकरि (SH. 8, 4, 422) 'surprising, wonderful' (अवस्तम्).
 - cf. PC डकरिवंत 1 10 1 meaning possibly 'claiming marvels', though gl. interpretes it as 'making dogmatic assertions' (हडोक्तियुक्त).
- 518. छिंछओं (3, 36) 'an adulters' (जार:); छिंछइ SH. 8, 2, 174 'an unchaste woman' (कुलटा).

 cf. छिंछइ PC. 69 2 3, MP. 54 12 6; PC. केंकइ 5 13 9, 5 15 2 'an adulteress' (gl. पुंचली).

519. जगडिओ (3, 44) 'harassed, oppressed' (विद्रावितः) कद्धितः

cf जगड़ (PC. 10 7 5, 10 8 4, 25 18 4, 33 9 9 etc.) 'harass, oppress'. cf. PSM. जगड़, जगडणा etc. See DMP. 1337, 1410.

520. चिच्चरो (3, 9) 'flat-nosed' (चिपिटनास:)

cf. छिन्दर (v. 1. छिन्दिर) PC. 1 2 11: छिन्दर (v. 1. छिन्दर) MP. 76 6 13 'flat or depressed (with respect to nose)' (gl. प्रथु).

See DMP. 972 No. See 13 earlier in this book.

- 521, छिल्लर (3, 28) 'a small pond or puddle ' (पलवलम्). cf. PC. 19 6 5 'ibid.', Guj. छिल्लर, H. झील, झीलर.
- 522. grq MP. 1 16 4, 19 18, 6, 83 2 7, 13 1 8 etc. grq 7 PC. 20 10 5, 23 6 7, 46 4 3, 60 1 2, 72 15 5, 74 16 7; MP. 7 24 10, 70 18 11. etc. 'getting entangled in'.

cf. yeq (SH. 8 4 150), Sk, yq (Dhatupatha 26, 123 'to become perplexed or confused'. See DMP. 909.

523. गहकहलोलो (2, 86) Rahu.
cf. PC. 8 11 4, 20 9 7, 27 10 6, 77 12 2 'ibid.'
(gl. (ब्रह्वेरी राहु:).

cf. कल्लाला (2, 2) 'an enemy' (शत्रुः).

524. गंजाल्लिश (2, 100) 'horripilated'. (रोमाञ्चितम्).
cf. PC. 17 11 10, 20 10 8, 26 1 1, 61 12 8 etc;
MP. 14 14 12, 36 16 7 etc. 'ibid'.

- cf. गुंजुहरू (2, 93, SH. 8, 4, 202); गुंजोल्ल (SH.8, 4, 202) 'shine forth, radiate, sport'. appear See DMP.991.
- 525. खड (2, 67) 'grass' (तृणम्). cf. 'ibid.' PC. 5 7 1, 83 11 3, 83 12 1.
- 526. णिसुढ् (4, 40; SH. 8, 4, 158) 'to bend down with burden' (णिसुढइ = भाराकान्तो नमति).
 - cf. णिमुहिय PC. 13 8 4, 62 1, 62 11 9 'drooping,' 'broken' (gl. शिथिलीकृत, भम).
- 527. तड्डच् (5, 5; SH. 8, 4, 137; PSM.) 'to stretch' (तन्) cf. तंडविय PC. 19 17 6, 63 1 6, 65 2 4 'stretched' (विस्तारित).
- 528. धुअगाओ (5, 57) 'a bee'.
 cf. धुयगाय PC. 5 14 9, 14 4 5. धुवगाय 56 14 2,
 73 14 3 'ibid.' (Sk. ध्रुवगायकः)
- 529. पड्रिक (6, 71) 'extensive' (विशाल).
 cf. PC. 14 13 5; MP. 9 24 12, 66 10 12 etc.
 'extensive, abundant' (gl. प्रचुर, प्रगुण)(= Sk. प्रति + रिक्त; cf. अतिरिक्त).

See DPM. 377.

- 530. पञ्चवर (6, 15) 'a pestle ' (मुसलम्). ef. PC. 15 2 6 'ibid .'.
- 531. पच्चार् 6, 29; SH 8, 4, 156) 'taunt, censure' (उपालभ्).
 - cf. PC 6 1 9, 13 3 8, 15 5 5 etc MP. 7 5 5, 52 20 19 etc. 'jeer, taunt, upbraid'.

 See DMP. 1096.

- 532. पच्चिहिलंड (SH. 8, 4, 420) 'on the contrary' (प्रत्युत). cf. पचेहिलंड, PC. 10 6 3 (v. 1, पचेहिलंड पच्चेहिलंड), 11 8 7 (v. 1, पच्चेहिलंड पच्चिलंड,)16 4 9; 43 3 4 (v.l. पच्चिलंड, पच्चिलंड) 'ibid'. Bh. पच्चोिल्लंड, PC. 71 13 9 'with the facet urned away'(?) विपरीत पराङ्मुख ?); (Sk. प्रत्यनीक).
- 533. पाणाली (6, 40) 'slapping with both hands' (हस्तद्वय प्रहार:

cf. पाणालि PC. 14 6 1 'splash of water' (struck with hand) (gl. जलब्छरा).

534. परिहच्छ (6, 71) 'clever' पर्ट. cf. परिहच्छ PC. 58 8 6, 66 3 3 चपल; PC. 23 13 4,

MP 14 1 20, 17 14 2 etc. वेगवत्.

परिहत्थ PC. 48 5 2; PSM. दक्ष; MP 38 8 10 पह.

पारिहच्छि PC. 12 1 8 वेग.

पडह=छ MP. 85 14 2 शीघ

परिहच्छिय MP. 69 26 4 hastened.

Cf. DMP. 1091, 1104, 1105, 1106.

- 535. पुण्णाली (6, 53) 'an unchaste woman ' पु^{*}ਸ਼ਚਰੀ. cf. PC. 12 9 10, 15 14 2, 37 12 8 etc. MP. 15 6 6, 18 1 7 etc. See DMP. 1115.
- 536. फुलंधुओ (6, 85) 'a bee' (भ्रमर:)
 cf. PC. 7 13 5, 26 2 6 etc. MP. 49 2 3.
 cf. फुलंध्य MP. 73 27 6, 96 7 9 'ibid'
 फुल्छुद्धय MP. 9 10 8.

- See DMP. 156, 157, 158.
- 537. ਸੰਸਲੀ (6, 110) 'a foolish person' (जह:).
 ਸੰਸਲ, (6, 110) 'a disagreeable act' (अप्रियम्).
 cf. PC. 14 2 9 ਸੰਸਲੇ (v l. ਮੁੱਸਲ, ਮੁੱਸਲ) 'artless'
 (in the compound ਮੁੱਸਲਮੀਲੀ 'an artless' naive
 woman' (cf. Guj. ਸਮਾਦਮੀਲੀ 'ibid.'); MP. 71 6 11
 ਮੁੱਸੁਲਮੀਲੀ (v. l. ਮੁੱਸੁਵਮੀਲੀ) 'ibid.'.

See Apabhrams'a and Old Gujarati Studies. II' Bhāratiya Vidyā 18, 1958, p. 69, DMP. 114).

- 538. भिंगारी (6, 105) 'cricket' (चीरी) cf. PC. 19 3 3.
- 539. मडप्परो (620) 'pride' (गर्ब:). cf. PC. 3 8 9, 4 3 8 etc. MP. 15 15 11. See DMP. 1153.
- 540. मत्तवालो (v. 1. मत्तवालो) (6, 122) ' intoxicated ' (मत्तः). cf. PC. 14 2 6 मनवाल ' an elephant ' (cf. H. मतवाला ' intoxicated;' PSM. मयगल = Sk. मदकल, Guj. मेगल ' an elephant '.
- 541. महा (5, 140) 'violence' (बलात्कार:), 'order' (आज्ञा). cf मंडए 'perforce', 'forcibly' with great difficulty' PC. 18 3 2, 38 7 5, 39 19 4 etc.; मंड PC. 13 4 10, 22 5 8 etc. (gl. हडात्); Guj. मांड, मांड, मांड 'perforce' 'with great difficulty'.
 - See DMP. 409, 410, 411, 412, 414.
- 542. मामीसिअ, माभाई (6, 129) 'granting assurance of safety or protection' (अभयप्रदानम्).

मंभीस् 'to comfort (one who is threatened or afficted) and assure protection 'PC. 10 2 1, 11 9 8 etc. मन्भीस् 'ibid.' MP. 78 24 19, 20 25 4 (v. 1. म'मीस्), 32 26 3. See DMP. 417.

म'मीस (f.) 'comfort, consolation' PC. 5 6 7.

- 543. मरहो (6, 120) 'pride' (गर्ब) cf. PC. 398, 1096, 11 7 2 etc. See DMP. 1163.
- 544. मुसुनूर (6, 136; SH. 8, 4, 106) 'break' (भञ्ज्) cf. PC. 4 8 7, 8 6 2, 17 9 4 etc. See DMP. 1181, 1182.
- 545, मेहुणिआ (6, 148) 'wife's sister ', 'maternal uncle's daughter '(स्थाली, मातुलात्मजा); मेहुणओ (6, 148 com.) 'paternal uncle's son '(पितृष्वसमुत:).
 - cf. मेहुणय ' paternal aunt's son ', ' maternal uncle's son ', ' brother-in-law ' (i. e. husband's brother or wife's brother) PC. 6 1 3, 17 10 6.

 See DMP. 778.
- 546. रखोद (7, 4; SH. 8 4 48) 'swing to and fro' (दोल्य्).

cf. PC. 14 3 7, 13 7 4; 13 12 8 etc. See DMP. 1187.

- 547. बुक्क् (6, 94; SH. 8 4 98) 'roar' (गर्ज्). cf. बुक्क 'scream,' 'caw' PC. 19 34, 52 1, 68 11 7 cf. DMP- 696, 697, 698.
- 548. बिट्टिय PC. 10 6 6 'daughter' (पुत्री). बिटी cf. SH. 8 4 330(3): बिट्ट PSM. G. H. बेटी, H. बिटियां.

Company of the second of the second

- 549. विस्त्य (7, 71; SH. 8 4 137) 'stretch' (तन, विस्तास्य) cf. PC. 16 14 7.

 Also विस्त्य PC. 41 2 1 74 9 10.

 cf. PSM. विस्त्र, विस्ति विरेत्त्विक DMp. 1241.
- 550. वेश्वारिशं (7, 95) 'deceived' (प्रतास्तिम्). cf. वेयार् 'deceive' PC. 18 12 6 8 10 4 etc. MP. 14 10 8, 98 7 4, See DMP. 1256.
- 551. वेआली (7, 95) 'blind', 'darkness'.

 cf. वेसाएए PC. 5 2 1, 10 1 8; वेसालही 5 4 6 'at sunset' ('अस्तमनकाले, सन्ध्यासमये').
- 552. बेल्हहरू (7, 96) 'tender', 'pleasure-loving or voluptuous' (श्रोसरू, विलासी). ef. PC. 19 17 9, 30 5 8, 62 11 6; MP. 3 1 11.
- 553. बेहाबिओं (7, 96) 'disrespect, contempt', 'angered'.

 of. बेहाबिद्ध 'angered' (कोपातुर, कोपाबिष्ट) PC. 4 1 10,
 7 5 8, 8 6 1, 20 8 4 etc.

 of. बेहाबिअ DMP. 1262.
- 554. संपास गं (8, 11) 'long ' (वीघंम्). cf. सन्पास गत्तम 'length ' PC. 4 6 7.
- 555. साहुलिया (8, 52) 'a cloth' (वसम्). ef. साहुल (f.) 'a piece of cloth held above the head of a person carried in procession, to serve as a canopy' (शिरोवस्रखण्ड:) PC, 14,2,4.
- 556. सिमिर (8, 31) curds (दिध). ef. PC. 14 9 3, 24 13 5, 34 13 6, 39 8 5, 71 8 9, 90 6 6.

(2). ITEMS NOT RECORDED IN THE DN.

557. असराल PC. 2 16 4, 35 14 3, 42 5 5; MP. 19 2 4, 56 3 14, 70 15 2; 87 4 7, 102 8 9 'abundant, much, plenty of '(gl. बहुल, अपर्याप्त) (DMP. 799).

The second secon

- 558. आरोइ PC. 11 8 6, 15 3 1, 52 2 7 'attack, engage in battle '.

 cf. PSM. रोड्=कथ्.
- 559. आवग्ग PC. 11 2 7, 12 11 5 etc. 'solely and entirely one's own ' (gl. स्वाधीन, समस्त); Guj. आवगुं, आनगुं 'solely and entirely one's own 'See DMP. 807.
- 560. आवह PC. 7 6 6. 17 3 4, 29 9 9, 50 8 10, 66 9 5, 70 3 10, 81 13 5 'go to perdition, be destroyed, disappear' (विलय प्राप, वि + नश्).
- 561. डहुद्ध PC. 7 11 9 21 5 9, 25 20 7, 49 5 7, etc. ओहद्ध 17 17 4, 46 11 10 'subjected, subdued' (नियन्त्रित).
- 562. डइइ PC. 64 14 2; MP. 84 11 14, 89 12 6, 101 16 15 'to offer, hold forth, stretch forth'. Guj भोडवु' 'ibid.', Kan. oddu 'ibid.'.
 - See DMP. 818. cf. समोइ ...
- 563. खबाल PC. 13 4 8, 58 4 9; Bh. 3 24 7, 4 3 1 'a mountain hollow or glen.'
- 564. खडक PC. 31 3 6, 43 17 8, 81 10 6 'rock' (gl. loosely वर्षेत्र). Guj. खडक 'rock'.

- 565. चरि PC. 13 10 9, 40 16 3, 82 2 7, 82 12 5; MP 8 1 11,58 19 8 etc. 'hostile rankling; malice mixed with anger due to enmity '(gl. कल्ला, वेरकोघः). See DMP. 899.
- 566. 國國 PC. 13 4 8; MP. 2 13 9, 15 18 8, 20 5 6 etc. 'hollow, a hollow, chasm, deep cavity'.

 See DMP. 900.
- 567. गणियारि PC. 5 14 7, 7 3 3 etc. MP. 16 23 5, 25 5 2 etc. 'a cow-elephant' (हिस्तिनी).

 See DMP. 902.
- 568. जलक (f.) PC. 4 10 4, 4 10 7, 4 10 9 'splash, MP. 17 13 6, 74 1 22, 74 8 6, 83 3 1, cf. Guj झालकक छालक; H छलक; 'a splash'; Guj. जलकानुं, छलकानुं, H. छलका 'to splash out from a container'; PSM. जल्लाकुर, जुल्लाकुर, जुल्लाकुर, चुल्लाकुर, चुलाकुर, चुल्लाकुर, चुल्लाकुर, चुल्लाकुर, चुल्लाकुर, चुल्लाकुर, चुलाकुर, चुलाक
- 569. बाह् PC. 2 13 4, 26 11 3 'to muddle (water), to make turbid or muddy, to set into commotion or agitation'.
 - cf. होहिअ SH. 8, 4, 439(3) ' muddled disturbed '.
- 570. हार (n.) PC. 2 7 3 'cattle'. Guj. हे।र 'ibid'.
- 571. णिङ्गिय PC. 25 2 6, 25 5 6, etc. MP. 35 1 4 (with respect to eyes under the influence of strong emotion) 'expanding, moving to and fro or bulging'.
 - cf. PSM. विद्वर, विद्विष्टिन्दिन्तिस्तार. See DMP. 1033.

- 572. णिव्बट्ट PC. 4 8 4, 10 10 3, 17 12 10; णिवह PC. 36 6 8 cut off, chop off .
- 573. तंबार PC. 12 3 6, 54 6 1, 62 3 1 'destruction', 'perdition'(gl. विनाश:, मृत्यु:): MP. 18 1 9, 70 15: तंबार 91 3 7 'hell' (gl. नरक:, प्रथम: नरक:) (cf. PSM. तमतमा and तमा 'kinds of hell'.) cf. DMP. 569, 670.
- 574. तियमइ PC. 1 10 5, 39 4 7, 39 4 9, 69 6 । etc. MP. 39 9 5, तियमइया 73 13 6 'a woman '(बी). See DMP. 490.
- 575. तीरिय (f.) PC- 17 6 3, 58 6 5, 75 21 1 2 sort of arrow '. तीर PC- 75 17 3 ' ibid. '.
 - cf. PSM. तीरिया (in the compound तिरियासंग from the Samaraicckaha the interpretation 'quiver' doubtfully put forth by PSM. is incorrect). MW. s. v. तीर, तीरिका, Persian tir.
- 576. दलबर PC. 4 2 9, 4 8 7, 17 9 3, 20 8 6 etc. MP. 16 23 6, 60 11 12 etc. 'crush, pound, destroy' (चूर्णेय्). See DMP. 1077
 - cf. M. dalvațne ' trample ', G. dalovațo ' total destruction '.
- 577. घव (f.) 17 6 2, 17 6 9, 52 10 1 'challange (to fight)' (आह्वानम्).
- 578. घारावर 8 11 1 (w. r. घाराहर), 84 1 3 'a demon prowling at night '(gl. रात्रिचर:, राक्षस:). Sk. अधारावर. cf. Sk. lex. घारा 'night'.

- 579. पाराडह्य PC. 7 6 1, 7 7 4, 15 4 8, 19 17 7 etc. MP, 52 19 14 ' with the face turned away' (पराङ्मुख).
- 580 पामाय PC. 13 9 1, 26 2 2, 32 13 10, 61 10 7 etc. MP. 27 14 16, 38 15 4 etc. 'to praise' (प्रशस्, अलाघ्). See DMP. 1126.
- 581. फम्फाव(य) PC. 3 6 9, 8 12 2, 9 14 6, 24 2 8, 73 3 8 etc, JC. 2 1 8, 2 13 4 'a sort of bard' (बन्दिविद्येष). cf. DMP. 1304.
- 582. मइयवह PC. 15 6 5, 24 10 7, 30 8 4, 31 6 2, 48 13 4, 56 2 2, 58 10 5, 64 6 7 etc. 'destroyer' (विनायक, मर्दक) (mostly at the end of a compound).
- 583. मडक्क PC. 8 9 9; Bh. 'pride' (गर्व). cf. PSM मडप्प, मडप्पर, मडप्पर,
- 584. रसोइ PC. 17 13 10; MP. 85 14 6, 91 21 11; JC. 2 23 11 'cooked food'.

 cf. Sk. रसवती occurring in Hemacandra's Parisista-parvan. G. रसोई See DMP. 599.
- 585. रेल्ड PC. 4 9 7, 17 3 2 etc; MP. 14 5 11, 16 26 12 etc. 'overflow, flood' (derived from Sk. री 'flow'). cf. G. रेल्ड 'to flood', रल (f.) 'a flood'). See DMP. 559.
- 586. रोक्क PC. 4 7 10, 6 1 9, 17 9 3, 25 15 2. 'stop' 'check', cf. H. रोकना, G. रोकबु'.
- 587. 母母 PC. 15 12 3, 18 3 7, 19 8 10, 25 3 7, 70 11 10, 72 14 9 etc. 'to be sure', 'certainly'.
- 588. वाणरमाल PC. 14 2 6' festoon of green leaves etc.' (H. वंदरवाल, वंदनवार).

- 589. बलिबंड PC. 18 8 9, 27 3 9, 29 9 9, 30 9 5, 68 9 1, 84 16 2; बलिमइ MP. 25 18 11, 78 19 33, 80 4 13 etc. 'violence' (बलाल्हार).
 - cf. PSM. बलिमझा. See DMP. 161.
- 590. बिहडण्फड PC. 14 9 8, 15 11 1, 37 8 7, 37 11 3, 58 7 6 etc. 'agitated', 'perturbed' (ब्याकुल). cf. SH. 8 2 174.
- 591. विह्लंबल PC. 8 9 5, 12 8 6, 17 7 3 etc; MP. 28 19 8, 83 4 8 'agitated' 'perturbed' (विह्वल, न्याकुल) See DMP, 1250.
- 592. वेज्य PC. 10 10 2, 11 6 3 'a push'. cf. PSM. विज्य.
- 593. समुद्र, समोइ, समोइइ PC. 4 5 9, 15 11 3, 33 8 6, 45 2 3, 48 1 1, 53. 10 2, 58 9 9, 61 2 2, 80 3 6, 82 2 6, 83 8 6; MP. 7 12 5, 39 5 13, 77 3 14. 'offer', 'keep ready'
 - See DMP. 1270 and उद्दूष्ट to 'offer 'DMP. 818, 819 (Guj. ओडवु' 'to offer').
- 594. साइय (f.) PC. 19 10, 1, 26 1 1, 44 9 4 53 12 9, 60 9 9 etc.; MP. 5 15 9, 81 6 1. (Guj. साँइ 'embrace'). 'embrace' See DMP. 1279.
- 595. सिगिरि PC. 86 3 9; JC. 4 3 8.
 - 'a piece of cloth held above the head of a person taken in procession, to serve as a canopy'. (cf. PSM. सिक्करिआ, Old Guj. सिकिरि, सिगिरि).
 - See DMP. 1370.

- 596. सीरिअ PC. 6 1 10; MP. 29 15 2 'pierced' (Ved. श्री 'to rend').
 - cf. PL. 924 सीरिओ=भिन्न: See DMP. 253.
- 597. ₹ PC. 17 6 5, 58 6 6, 61 1 4. 'a sort of piercing weapon'

cf. हुल MP. 84 6 4; NC. 7 7 10, 'to pierce', हुल् 'to throw' SH. 8 4 145. See DMP. 1311, 1312.

cf. हल MP. 7 5 10, 76 8 6 etc; PC. 52 9 3. 'to fix on a stake, to pierce' हलाहुलि 'acts of mutual piercing' (H. हलना 'to pierce'). See DMP. 1313.

SOME VARIANT READINGS IN HEMACANDRA'S DESĪNĀMAMĀLĀ*

I

We shall start with the discussion of a few textual variants from Hemacandra's Rayanāvali or Deśināmamālā1 (= DN.). The near-chaotic orthographic variations among the DN. MSS. would pose a serious problem for anybody undertaking to edit it. Some idea of the magnitude and character of that problem has been given by Pischel in the introduction to his DN. edition. In a number of cases he had to resort to etymology or NIA. derivatives as the dominant criterion for selecting from the variants, even when this involved disregarding strong MS, evidence. Of course Pischel was quite conscious of the danger inherent in such a mode of selection, and as befitted a true scholar, he frankly admitted the tentative character of some of his accepted readings. Since then numerous Pk. and Ap. texts and a few valuable Pk. lexicons have been published. Important lexicographical works and studies in the sphere of NIA, also have appeared. It is now high time to reconsider (and, if necessary, revise) the text of DN. with respect to the form and meaning of some of the words listed therein. The words ulloca- (DN. 1, 98), similar (8, 29), pivva-(6, 46), ovaddhi-(1, 151), civva- and civvara- (3, 9) are considered below from this point of view.

^{*} Read before the Prakrit and Jainism Section of the twentyfirst session of the All India Oriental Conference held at Srinagar in October 1961.

^{1.} Ed. Pischel, R. (first edition, 1880; revised second edition by Ramanujaswami, P., 1937); by Banerji, M. and Sheth, H. (Part I, 1931); by Doshi, B. J. (with Gujarati translation, notes, etc.: Part I, only entitled *Desisaddasaingaho*, 1947, complite text entitled *Desisaddasaingaha*, 1974).

1. ullova- versus ulloca- (1, 98) 'canopy' (vitāna-).

MS. cyidence and the *Pājalacchīnāmamālā*² (= PL.) of Dhanapāla (c. 970 A.D.) favour *ullova*—. Pischel has selected *ulloca*—because that is the Sanskrit form. One would think of this reason rather as going against *ulloca*—. Preservation of an intervocalic—c—would be something of an anomaly in Pk. Usually it is either lost or alternatively (but rarely) it becomes³—j—or—cc. Further *ullova*(ya) is actually attested from Ap. texts. See for example—

savvattha-vi pasariya-ullovain (Mahāpurāṇa4 3, 9, 18)

With the canopies spread everywhere'.

āvaddha-devainga-ullovayain (Paumasiricariu. 5 2, 233 a).

'With a divine canopy hung over'.

The fact that in the second of the above passages ullovayam rhymes with ujjovayam, guarantees genuineness of the spelling with -v-. ullova- instead of ulloa-, is easily explained by the Ap. tendency of inserting a -v- after -u- or -o-.

^{2.} Edited by B. J. Doshi, 1960.

^{3.} Grammatik, §§ 186, 202.

^{4.} Puspadanta, Mahāpurāņa, ed. by P. L. Vaidya, I, 1937. The word also occurs at 8, 7, 15.

^{5.} Dhāhila, Paumasiricariu, ed. H. C. Bhayani. S.J.S., 24, 1948. The work is prior to 12th century A.D.

^{6.} This form is recorded in PSM; occurs with corrupt spelling at *Paumasiricariu* 2, 198: is also found as a variant for *ullova*- at: PL, 5, 217.

^{7.} For such an intrusive -v- in Ap. see Jacobi, H. Bhavisattakahā Introduction, § 3; Alsdorf L., Harivamsapurāņa (1936), Introduction, § 13; Tagare, G. V., Historical Grammar, of Apabhramsa, 1948, § 30; Bhayani, H. C., Paumacariu, I. 51, § 31; Sande sarāsaka, grammar, § 30.

2. simțā versus simādā (8.29) 'whistling through nose' (nāsikā-nāda-).

From among the variants simdhā, simdā, simtā Pischel has selected the first, "only in consideration of Sindhi simdha (fem.) 'a whistle, whistling'". But we know that sīţī (or a closely similar form) is inherited by many NIA. languages. Consider, for example, Nepali and Bengali siţī, Hindi and Panjabi siţī, Lahanda siţ, Sindhi siţā, Gujarati siţī, Marathi siţī. Most of these words go back to *siţţiā. Its nasalized variant would be simţiā which is but an enlarged form of simţā. These facts would now support simţā against simdhā.

3. picca- versus pivva- (6, 46) 'water' (jala-).

Going against a substantial majority of his MSS., Pischel has preferred pivva- over picca-, because 'the word is apparently derived from pibati'. But now we have some evidence to support in this case too, the MSS. against Pischel. Puspadanta's Nāyakumāra-cariu⁹ has the following passage:

apusiya-nayana-cuyamsua-piccam annāyam niva ghosai niccam (5-10, 20-21)

'O King, without wiping the waters of tears trickling from the eyes, he (i.e. the Śabara) always shouts loudly: "injustice".

Here the gloss equates *picca*- with *jala*-. As the word rhymes with *niccam* in the next line, the spelling with -cc- is quite definite and there is no scope for suspecting any confusion of -cc- and -vv-. Hence *picca*- is to be preferred to *pivva*-.

ovațți versus ovaddhi (1, 151) 'knot of the garment' (nivi).
 All the printed editions have ovaddhi. Some of the MSS. read

^{8.} Vide Nepali Dictionary, s. v. siți.

^{9.} Ed. by H. L. Jain. The work was composed in early midtenth century. The passage was brought to my notice in a different connection by my student Mrs. Ratna Sriyan.

ovațți. PL. has uațți. The case is decided in favour of ovațți by Gujarati, Marathi oți 'part of the lower garment, crossed to form a knot on the waist'. From the mode of forming this knot (viz., by first crossing the cords formed by the twisted border-parts, and then tucking them up on the sides), we can suggest derivation of ovațți, uațți from Sk. ud-vart- or apa-vart-, Pk. oațt-, ovațt-.

5-6 civva- and civvara- versus cicca- and ciccara- (3, 9) 'flat-nosed'.

In the light of G. cibum 'flat-nosed', M. cibā 'flattened'. etc., 10 the real form was in all probability civva- and not cicca-. civvara is an extension of civva-. cf. G. cavad, cavvad, civvad 'tough'; Sk. cipita- 'flattened', etc., 11 G. coppat, captu 'flat'. Moreover an allied form chivvara- (v. 1. chivvira-) 'flat' (quali. nāsa- 'nose') is attested in the following Apabhramsa passage from the Paumacariu of Svayambhū (9th cent. A.D.): chivvara-nāsem paviraladamtem (1, 2, 11 b) 'by him who is flat-nosed and has sparse teeth.' These facts decide in favour of civva- and civvara-.

Next we shall examine a few pairs which can be shown to be doublets. These are: oddampia-(1, 171) and orampia-(1, 171); osaria-(1, 171) and osia-(1, 158); oggāla-(1, 151) and oāla-(1, 151); ohamsa-(1, 168) and oharisa-(1, 169); kummana-(2, 40) and kurumāna-(2, 40).

7-8. oddampia- (1, 171) and orampia- (1, 171) 'destroyed' (naṣṭa-), 'attacked (ākrāntā-).

Both the words derive from Sk. ud-+ *ramp-. Treated as unitary, it became *uddamp- or oddamp-. With ud- treated as a constituent, it became *uramp- or oramp-. For the near-free variation between MIA. u- (Sk. ud-) and o- (Sk. apa-, ava-) of prepositional origin see Schwarzschild's Gleanings from the Vasudevahindi (Bharatiya Vidya, 1958, 22-26). Uncompounded ramp- (variant forms: rampha-, ramh-) means 'to scrape, 'to chisel'. Its derivatives

^{10.} Vide N. D. s. v. cibirce.

^{11.} Vide N. D. s. v. ciurā.

are Pk. rampa- 'shavings', G. rāmpī¹² 'scraper for leather', Pk. rapp-'attack'. Pk. oratta- (=vidārita-) presupposes Sk. ud/ava-/apa-+*rapta-. With the pair oddampa-, oramp- cf. no. 11-12 below.

9-10. osaria- (1-171) and osia- (1, 158) 'with the face downwards', 'with the downcast look' (adhomukha-).

Both the words derive from Sk. apaśrika- 'deprived of beauty', 'lack-lustre', and hence 'losing face'. Anaptyxis produced osaria-, assimilation was responsible for osia-. The first part of G. osiyāļū 'feeling helpless dependence under obligation, need or shame' may be connected with osiya-. For osia- (1, 150) 'weak', alternative derivation from Sk. ayaśa-+suf. -ika- cannot be ruled out.

11-12 oggāla- (1, 151) and oāla- (1, 151) 'rivulet' (alpam srotah).

PL. has $ugg\bar{a}la$. The source-word is SK. ud- $g\bar{a}ra$ -. With the two different treatments of the preposition, ¹³ we get the doublets beginning with ug- and u-, with the respective variations og- and o-, so that we have both $ogg\bar{a}la$ - and $o\bar{a}la$ -.

13-14. ohamsa- ((1, 168) and oharisa- (1, 169) 'stone-slab for preparing sandal-paste by rubbing'.

Both the words derive from Sk. *ava-gharṣa- 'hard rubbing'. The intervocalic cluster -rṣ- had two possible developments: either it developed as anusvāra +-s- 14 or, as a semi-tatsama loan, it underwent an anaptyxis and became -ris-. 15 We have comparable instances in Pk. ghams- (Sk. gharṣ-), nihams- (Sk. -nigharṣ-); gharis- (Sk. gharṣ-). Semantically avagharṣa- developed the shades (1) the result of the action of rubbing sandal-wood (hence the meaning candana recorded for ohamsa- at DN. 1, 168), and (2) the means or implement for the same purpose (candana-gharṣaṇa-śilā). oharisa- is preserved in G. orasiyo 16 'the rubbing-slab to grind anything

^{12.} Vide N. D. s. v. rāmbo.

^{13.} See under No. 7-8 above.

^{14.} Grammatik § 74.

^{15.} ibid, § 135.

^{16.} Also noted by Doshi in his translation of DN. 1, 169.

upon', made up of oras- and -iyo, of which the first constituent derives from oharisa-. while the second is a pleonastic suffix derived from Sk -ika- + -ka-.

15-16. kummana- (2, 40) and kurumāna- (2, 40) 'withered'.

Trivikrama has given kumm- as a verbal substitute for Sk. mlai- 'wither'. We can, therefore, consider kummana- as an agent noun in -ana-, formed from Pk. kumm-. Similarly we can also look upon $kurum\bar{a}na$ - as made up of $kurum\bar{a}$ - + - $\bar{a}na$ - (suffix).

kumma- and kuruma- are derivable from Sk. kūrma-, the former through assimiltion, the latter through anaptyxis. For such a two-fold development of clusters beginning with r-, compare the observations and references under Nos. 13-14. chaüma- from chadma-, paüma- from padma- and suhuma- from sūksma- are other instances of anaptyctic -u- before -m-. suhuma- also parallels kuruma- in shortening the root-vowel. A denominative kūrmāyate would give Pk. *kurumāi and hence the past participle kurumānā-. Alternatively *kummāi would become analogically kummai and hence kummana. The semantic development can be easily figured out as 'behaves like a tortoise', 'contracts', 'withers'. As in the case of the pair oharisa- (G. orasiyo), ohamsa-, Gujarati has inherited the r- preserving form. Compare the cognates like G. karmā- 'wither' (karmānum 'withered'), M. komne, H. kumhalānā, etc. all genetically connected with Sk. kūrma-.

Finally we take up two more Desya words with a view to consider their derivation or meaning. The words are *uluhamta*-(1, 109) and *oluhamta*-(1, 163).

17. uluhamta- (1, 109) 'crow'.

The suggested derivation 18 from Sk. $ul\bar{u}ka$ -hantā the killer of owls' is beset with two difficulties: hantā would be too much

^{17.} Vide N D. s. v. kumlāunu

^{18.} Ramanujaswami, Doshi, op. cit.

of a Sanskritism for a Desya expression, and we are required to assume ulu in the place of ulu(y)a-. Better we take the expression as made up of uluha-+-amta- meaning 'the death or destroyer of th owl'. Besides the usual ulu(y)a- Sk. ulūka-, we have here the analogically formed uluha-, under the influence of Pk. animal names in -ha- (e.g. vasaha-, usaha-, gaddaha-, rāsaha-, tittiha-, dumduha-, karaha-, saraha-, salaha-, etc.) corresponding to similar Sanskrit names in -bha-19 (e.g. vṛṣabha-, ṛṣabha-, gardabha-, rāsabha, tittibha-, dumdubha, karabha-, śarabha-, śalabha-, sairibha- etc.). Another quite similar instance is Pk. suṇaha-, 20 besides suṇaa-The -bha (instead of va-) and -ha- respectively of Pk. kacchabha-, kacchabha- (Sk. kacchapa-) are to be similarly explained. As the owl is kākārī, so the crow is naturally ulūkānta-.

18. olumpaa- (1, 163).

Hemacandra paraphrases this as tāpikā-hasta-. Ramanujaswamis strangely enough translates this as 'go-between'. PSM, also appears to have understood the Sanskrit expression only partly, because its rendering 'tavā-kā hāthā' (= 'handle of the baking pan') does not give the exact sense of tāpikā-hasta-. Really speaking tāpikā-hasta- means 'the spatula-shaped turn-spit used while baking chapatis, etc.' It is (as Doshi has rightly understood) the same word as G. tāvītho- or tavetho-. tāpikā 'frying pan' (or 'baking pan'?) is noted by Monier Williams from the Harşacarita tāpaka-, tāpika (or its variants *tapaka-, *tapikā) lie at the basis of Pk. tāviā-, G. tavo-, H. tavā- 'frying pan', G. tāvdo 'big frying pan', Pk. tavaṇī 'frying pan', G. tavī, 'baking plate', 'frying pan', tāvdī 'earthen baking pan'. 22 hasta- in the sense of 'an implement with

^{19.} Whitney, Sanskrit Grammar, § 1199; Burrow, The Sanskrit Language, 197.

^{20.} Pischel (Grammatik, §§ 206, 598) explains the -ha- by assuming a suffix *-kha- as its reflex.

^{21.} Differently at Grammatik, § 208.

^{22.} Vide N. D. s.v. tāi, tawā.

handle is used by Hemacandra also in the expression $d\bar{a}ru$ -hasta'laddle' (DN. 3, 1, s v. $catt\bar{u}$). hastaka-, in the sense of 'turn-spit'
is noted by MW. from the Harşacarita. Cf. its Gujarati derivative
hātho 'handle'. It is interesting to note that corresponding to Sk- $t\bar{a}pika$ and $t\bar{a}pik\bar{a}$ -hasta- and its Gujarati derivatives tavi and $t\bar{a}vitho$,
Konkani has $k\bar{a}il\bar{a}$ and $k\bar{a}il\bar{a}to$ (wherein $k\bar{a}il\bar{a}$ is the same as $k\bar{a}halli$, noted at DN. 2. 59 in the sense of tavani, further explained
as $ap\bar{u}p\bar{a}di$ -pacana-bhānda-).

ORIGINS OF MULTIPLE MEANINGS OF DES'YA WORDS*

For studying the problems relating to the Desya side of Prakrit lexicology, Hemacandra's Desināmamālā (= DN) is the most obvious basic source. A critical examination of the Desya items it records, leads us to several fresh lines of investigation. I have tried to follow a few of them in my Studies in Hemacandra's Desināmamālā (Banaras, 1965)¹. Here I propose to indicate and illustrate another such line of exploration based on orthographical considerations, and affording us glimpses into the character of Hemacandra's Desya sources.

In my above mentioned studies I have devoted considerable space to examining the orthographic variation among the Deśya items of DN., and have tried to show how in several cases the scribal confusion might have been responsible for producing spurious words. But alongside with it, there was another fertile source of confusion and error, viz., the orthography and the homonymy of the Sanskrit and especially Prakrit words given as meaning-equivalents for the Deśya items. This source of errors is subtler and more complex than the orthography of the recorded Deśya items themselves. Prakrit abounds in homonyms and where illustrative materials were absent or undecisive, ambiguity frequently led lexicographers into wrong tracks.

Hemacandra has actually commented on a few cases of this type in the commentary on DN. 6, 8. For example, he has stated that some authorities, misguided by wrong spelling in their sources, had given बोर-निवह: 'a heap of berries' (instead

^{*} Read before the Prakrit and Jainism Section of the twentythird session of the All India Oriental Conference held at Aligarh on the 27th, 28th and 29th October, 1966.

^{1.} Included in the present collection.

of the correct चोर-निवह: ('a gang of robbers') as the meaning of पड़ीरो, This error had obviously resulted from reading च as ब्.

Again under DN. 8, 12 Hemcandra has reported another such case. Udūkhala's commentary on Abhimānacinha's Deśya lexicon first blundered in taking प्यलाओं as the Deśya item and सराह्यों as the meaning-word (instead of the other way round). It committed a further mistake in understanding सराह्यों as equal to Sk. शराहत: ('struck with an arrow'). This he ultimately took as the meaning of प्यलाओ, which in fact means a 'snake'. Here the cause of the latter mistake is homonymy.

Similarly under DN. 8, 17 Hemacandra has pointed out that one authority mistsook बहुआरिआ (given as the meaning word for বহুणिआ and समुच्छणी) for বহুआरিआ, and accordingly attributted it the wrong meaning 'daughter-in-law' (instead of the correct one, 'a broom', literally, 'a multiplier'.)

These cases sufficiently illustrate the confusing force of orthography and homonymy in the Prakrit (and Sanskrit) words, given as meaning-equivalents for Desya lexical items.

It appears that Hemacandra succeeded in clearing only a few cobwebs—he ruled out some alternatives where his authorities provided him definite guidance. Elsewhere he recorded divergent alternatives supported by different traditions. A little critical probing, however, reveals that the plethora of multiple meanings and formal variation among the recorded items in DN. is to some extent a consequence of orthographic and other confusions and misinterpretations accumulating over centuries. The following few cases are offered in support of this observation.

Remarks	अच्चर्यं read as अच्यक्छं (=अत्यक्छम्) would be the source of the meaning स्वच्छम्.	(1) खिलुअं बत्थं The meaning-expression बिलिए वत्थे if read as खिला हृत्ये would (2) खिलुओ हृत्यो be the source of the alternative meaning. Cf. णिवाओ (4, 34) and णिहाओ (4, 49) both meaning 'sweat'; and हिंदी, इंडें (4, 7) 'cloth made up of parts stiched together' (Guj. डांडियु).	हुन्दुओ and its synonym झेरो (3, 59) have the sense 'the bell put round the neck of a buffalow'. The first is evidenced in Gathāsaptasati 172. The form तुंहुओं seems to be the result of
Prakrit meanings	(I) अच्चत्थं अ (2) अच्छं v	(1) জজিখা ৰংখা T ব ব (2) জজিখা हংখা b n	(1) जरधंटो है (2) जरघडों b ार T
Sanskrit meanings with English translation	(1) अत्वर्थम् 'excessive' (2) स्वच्छम् 'clean, clear'	(1) खिल्किचितं वस्त्रम् 'starched cloth' (2) स्बलितो हस्त: 'slipped hand' (according to some)	(1) জীজ্মহ: 'old bell' (2) জীজ্মহ: 'old pot'
The Desya items	1. झ्सिरिजं (3, 62)	2. ਵਿੱਗਿਲਾਂ (4, 10)	3. डंडुओ (4, 11) तुःडूओ (5, 15)

Remarks	g, g, etc. जरद्घट: can be a mistake for जरद्घट: One manu- script actually reads जरघट for जरघट at 4, 11 (commentary).	गामजन्दा read as गामहन्दा would be the source of the alternative meaning.	If the अनुस्वार of जिस्में the the dead-line at the upper end of the vertical stroke of the first स, and if the midstroke of the latter was blurred in the manuscript, जिस् सो would become जिरासो.
Prakrit meanings		(1) गामजक्खो	(1) जिसंसो (2) जिससो
Sanskrit meanings with English translation		(1) शामश्रक्ष: 'the guardian यक्ष of the village' (2) शामग्रुक्ष: 'the village tree' (according to	(1) नृशंस: 'Cruel' (2) निराज्ञ: 'disappointed'
The Desya items		4. ढंडसिओ (4, 15)	5. णिविद्धो (4, 48)

The D	The Desya items	Sanskrit meanings with English translation	Prakrit meanings	Remarks
6. ਗੁ	6. तंतुक्खोडी (5, 7)	वायकतन्त्रोपकाणम् 'a weaver's implement'	. वसी	Both seem to be one and the same word. The source of the
·ic)	તુંતુમ હ િસ\ (5, 16)		तुराझने	meaning of the second form
				was the misinterpretation of तुरीए as त्वरिते. The components are clearly तृतु 'fibre' and खोडी 'wooden stick'.
7. तत	7. तरुसारिअं (5, 9)	(1) गालितम् 'distilled' (2) नालिकः:²	1. गालिअं	गासिए read as पासिए (or नासिए) would be the source of the
% इ	8. थिपाइ (5, 30)	i.e. सुष्पम् 'foolish' (1) विगळीत 'drips' (2) तृप्यति 'is satisfied'		alternative meaning. As तिण्यइ (Sk. तिप्-), a by·form of थिष्पड् (Sk. स्तिष्-) 'drips',

^{1.} At 5, 22 तुरी is given with the meaning तुलिकानामुषक्रणम्. Here तुलिक=नायक 'weaver' and not 'painter' as it is misunderstood by Ramanujaswami. In the form aft it is recorded at 5, 28 with the meaning बाअयभंडं = तन्तुबायोपकरणम्,

Remarks	was homonymous with तिप्पड् (Sk. तृत्यति) 'is satisfied,' the latter sense was erroneously assigned to थिप्पड्	If बद्धसिरक्के। (=बद्धशिरस्कः is read as धद्धसिरक्के। (=स्तब्बिशस्कः), it would yield the meaning "with unbending head" i.e. "fearless"	वयण can stand for वदन as well as वचन so we would have दश्क- पितवचनस्के।चनम्=मौनम्.	que was frequently misspelt que, and manuscripts confused q and qq. (Cf. que and qque multitude, 'grove'). Thus q'e was read as q'e and misinter-
Prakrit meaning		 बद्धसिरको भयरहिओ 	 दरकुविअवयण- स के।अण मोण 	
Sanskrit meanings with English translation		(1) बद्धशिरस्त्राण: 'helmeted'. (2) निर्मोक: 'fearless'	10. थुडुं किंभ' (5, 31) (1) दरकुभितवदनस के।चनम् 'contraction of face in slight anger' (2) मौनम् 'silence'	(1) षण्ड: 'eunuch' (2) खण्डम् 'piece'
The Desya items		 श्रिस्तीसे (5, 31) 	10. थुडुं किस (5, 31)	11. में बनेत्र (6, 53) पेंड (6, 81)

have been an error रज्जुए copied as रज्ञए would give us राज्ज

instead of জ্বে.

Řemarks	In view of सिंदु (8, 28) = रउजु: and of सिंदी (8, 29) and सिंदीला (8, 29)=सजुरी the first meaning is genuine. The second mean- ing seems to have originated in the confusion of रिज्जू and रज्ञ सिंदुर (8, 30) and सिङ्गुर (8, 30) may be just ortho- graphic variants of सिंदुर and hence their meaning राज्ज्य may
Prakrit meanings	
Prakrit	े. स्राः
Sanskrit meanings with English translation	(1) रज्जुः 'rope' (2) राङ्गम् 'kingdom'
The Desya items	12. सिंदुरमं (8, 54)

In this connection the complicated case of पारिहरी (6, 72) with its synonyms and multiple meanings is of special interest. The original and the only genuine meaning of पारिहरी is चिरप्रस्ता महिषी 'a she-buffalo that has calved long ago.' This is supported by its Mod. Guj. form पारेट.

पारिह ही came to be confused with परिह ही. परिह ही (6, 21) means आकृष्टिः i.e. आकृष्णम् 'drawing, attracting'. परिह ही, आय इंढी and पय इंढणी (=प्रकर्षणी) all mean the same thing, viz., 'drawing, attracting.' Because of the confusion, the meaning पग्र इंडणी was also attributed to पारिह ही. Hemcandra accepts that meaning for पारिह ही. In the citation from Gopāla, given in the commentary, both परिह ही and पारिह ही are given in the meaning of पय इंढणी i.e. आकृष्टि:

Again परिहारिणी (6, 31) too like पारिहरी meant primarily 'a buffalow that has calved long ago.' But it seems to have been confused with पिंडहारी 'a female door-keeper.' The commentary on 6, 31 records an earlier view to this effect. And because पारिहारी and पारिहरी commonly shared one meaning, viz., चिरप्रस्ता महिणी, पारिहरी also was supposed to have the meaning प्रतिहारी. In this way we can account for the three meanings द्वा:स्था, आकृष्टि: and प्रतीहारी given for पारिहरी and प्रयुद्धणी.

There is another word, पृष्ठतथी (6, 70), which has बहुदुग्धा 'yielding plenty of milk' as one of its meanings. This meaning is allied to चिरप्रस्ता. Its another meaning is given as पारिहारिणी = दोहनहारिणी means 'a woman carrying the milking pot.' Under 5, 56 Hemacandra has given this with two meanings: 'a woman carrying the water-pot' (जलहारिणी)3, 'a woman carrying

^{3.} Ramanujaswami has misunderstood पारिहारिणी here as 'a maker of garlands'. पारी is noted by Hemacandra (6, 37) with the meaning दोहनभाण्डम् 'a milking pot'. Similarly दोहनहारिणी occurring in the 6, 70 commentary (as a rendering of पारीहारिणी of the text) is misinterpreted as 'a cow which avoids milking.'

the milking pot' (पारीहारिणी). Here also it seems that the meaning पारीहारिणी is based on a confusion. Really it should be परिहारिणी which is the same as चिरप्रसूता महिषी i.e. बहुदुग्धा.

And the प्रइत्थी itself does not seem to be genetically different from पिंडिन्छिआ (6, 21) with its tell-tale meanings प्रतीहारी and चिरप्रस्ता महिषी. The orthography is responsible for तथ in one form and च्छ in another. Some of the DN. MSS actually read प्रइन्छी for प्रदत्थी.

Further the numerous meanings of पुरो (6, 67) deriving from homonyny provide a good illustration of the multiple confusion in Desya lexicography created over centuries. The recorded meanings of पुरो are—

- 1. वइविवर = (वृतिविवरम्) 'an opening in the hedge'.
- 2. मग्गे (= मार्गे:) 'a passage way'
- 3. दुस्सीलो (= दु:शील:) 'of bad character'
- 4. कंठदीगारो (= कण्ठदीनार:) 'a sort of neck ornament'
- 5. कं ठिच्छिद् (= क्विटि छद्म) 'a hole in the neck'
- 6. दीणणाओ (= दीननाद:) 'a pitiful cry.'

Except दु: शील all the rest seem to be the products of one original word and one original meaning. मार्ग: is the general sense for the particular वृतिनिवरम्. The meaning कृष्टदीनारः signifying 'a particular ornament' seems to be based on misinterpretation. At 2, 24 कं द्वीणारो is recorded with the meaning वृतिनिवरम्, while here पूरो is said to have वृतिनिवरम् and कृष्टदीनारः as two different meanings. The fact seems to be that one of the sources of Hemacandra used the expression बहनिवर (or वृतिनिवरम्) for rendering the meaning of पूरो, while another source used कृष्टदीणारो (कृष्टदीनारः): but somebody understood the latter in its primary sense of 'a dinar worn as neck ornament'4 instead of the idomatic sense 'an

^{4.} Compare Sk. निष्क meaning a gold coin' and the same used as neck ornament. दीनार took the place of निष्क in later times.

opening in the hedge'. This latter seems to have originated as a metaphor. The circular hedge with entrance in the front can be easily looked upon as the ornament around the neck with the pendent in front (or the open ends at the back).

The meaning कं उच्छिद seems to have resulted from a blend of कं उदीणारो and बइच्छिद . छिद् (also छिड़) is equivalent to विवरम्. DN. 3, 35 has recorded the forms छिद्ध and उच्छिद्ध in the sense of छिद्दम्, and कुच्छिद्ध (2, 24) and कुडिच्छ (2, 64) in the sense of बृतिविवरम्, besides छेडी (3, 31; elsewhere छिडी, छिडिआ) in the sense of a small passage way (mostly in a hedge). There seems to be a free exchange between the words for 'an opening' and 'an opening in the hedge'. Besides the above given words compare वावणी (7, 55) = छिद्रम् and वामणिआ (7, 58) = बीच काछवृति: खहां 'empty space' also means वृतिविवरम् (2, 27).

Another notable thing about some Desya words connected with the meaning 'entrance in an hedge' is that they are basically words signifying 'a hut'. कुडिआ (Sk. कुटिका) and कुकीर (Sk. कुटीरम्) have the meaning वृतिविवरम् (2, 24) besides the meaning 'a hut'. Conversely कुडिच्छ meant 'a hut' besides वृतिविवरम्, and वाड तरा deriving from वाड 'a hedge' and अंतर 'an opening', is recorded in the sense of 'a hut' (7, 58).5

The sixth sense of पएरा, viz., दीगणाओं can be suspected to derive from दीणारे। due to some scribal confusion.

A strong element of speculation is quite obvious in the above discussion, but that would be more or less inevitable in any such discussion because of our indirect and quite meagre sources of knowledge of Desya lexicography prior to Hemacandra.

^{5.} There is one more word in the same sense : क्रिया (2, 24).

THE BHASA-LAKSANA CHAPTER OF GITALANKARA

1. Introduction*

The Gitālankāra, traditionally ascribed to Bharata, is a work on music. It has been edited by Daniéou and Bhatt from a single manuscript. The date of the work is not known. The editors are of the opinion that the Gitālankāra is an ancient work, much earlier than the Nātyasāstra of Bharata, but the view considering it as a very late work is well-founded.

The last chapter of the Gitālankāra numbered fifteenth and called Bhāṣālakṣaṇa, gives a long list of Prakrit dialects and devotes one Gāthā to each of them to illustrate a few of their characteristic words. The dialect list is in Sanskrit (like all the earlier chapters), but the illustrative verses are in Prakrit.

ABH.: Hemacandra's Abhidhānacintāmaṇi. edited and translated in Gujarati by Vijayakastūra Sūri, 1957. DB.: The text of the Prakrit portion of the Gitālankāra as given by Danielou and Bhatt. DN.: Hemachandra's Deśināmamālā edited by R. Pischel; second edition by P. V. Ramanujaswami, 1938. GT.: Gitālankāra. Guj.: Gujarati H.: Hindi. IAL.: Turner's Comparative Dictionary of Indo-Aryan Languages MW.: Monier Williams' Sanskrit Dictionary. PL.: Dhanapāla's Pāialacchīnāmamālā edited by Bühler; translated in Hindi by Bechardas Doshi, 1960. PS.: Prākṛta-sar-vāsva of Mārkaṇḍeya, edited by K. C. Āchārya, 1968 PSM.: H. Sheth's Pāiasaddamahaṇṇavo. R.: The reconstructed text of the Prakrit portion of the Gītālankāra. SH.: Hemacandra's Prakrit Grammar (= the eighth chapter of the Sīddhahemaśabdānuśāsana) edited by P. L. Vaidya, 1958. SK.: Sanskrit. SMP.: A critical Study of Mahāpurāna of Puṣpadanta by R. N. Shriyan, 1969.

^{*} Abbreviations used:

It was S. M. Katre who first pointed out in 1939 the importance of this chapter of the *Gitālankāra*.² He presented a list of the names of Prakrits given in the *Gitālankāra* and published the text of the fifteenth chapter. Now we have an edition of the whole work.

The text of the fifteenth chapter of the GT., especially that of its Prakrit portion is very badly preserved in its only available manuscript. It is highly corrupt and full of serious errors. So much so that neither Katre nor Danielou and Bhatt could attempt a translation or even a summary of the contents of the illustrative verses.³ The text as it stands appears mostly chaotic. On the face of it, it does not seem possible to make out any connected sense even from single lines or their portions. Under the circumstances, any attempt to make word-division is also in danger of being considered nothing but futile guesswork.

The present effort of conjecturally reconstructing the text, in so far as it could be done, has a very limited aim of making out something from a nearly hopeless text. Quite obviously such guesswork is always highly risky and subjective, and the results are patently disproportionate to the time and effort involved.

The first six verses of ch. XV of the GT. give the list of Prakrit dialects, said to have a total of fortytwo. Most of the first verse and a part of the second verse are missing. Danielou and Bhatt have tried to restore tentatively the missing portion on the basis of indications found in the subsequent part of the chapter. The text of the first six verses along with that of the seventh verse which introduces the subsequent illustrative section is reproduced below after Danielou and Bhatt. (The obviously incorrect Ms. readings are given in the footnotes).

महाराष्ट्री किराती च [सौराष्ट्री मागधी तथा लाटी गैं.डी च काश्मीरी पौरस्त्या पश्चिमोत्कला ॥ १ पाञ्चाला चापि पैशाची] म्लेच्छी चैव तुरा[नि]का । सेमकी चेलकी काञ्ची मालवी काशिसंभवा ॥ २

च कुशावर्ता तथाऱ्या २शरसेनिका। वेदिकाः च गूर्जरी चैव रोमकी 4मेदसंभवा ॥ ३ भार्जा3 वानमखी देवकी मारवी⁵ पञ्चनस्ता । कौ जिका भदभोजिक। ॥ ४ मेन्धवी भद्रा तथान्या या**व**नी कुकु री कासला⁶ पारा मध्यदेशी च कम्बोजी [मलया चा]न्त्यमा स्मृता ॥ ५ द्राचत्वारि'शतिः प्रोक्ता एता भाषाः प्रसंख्यया । कत[्]य गीत गीतिबचक्षणै: ॥ ६ विमुश्य सर्वेषां कथयिष्ये लक्षणा नि यथाकमम् । त्रिदशैरपि ॥ ७ शक्यं समस्तं सं क्षेपेण न

This is followed by the Prakit verses with the introductory remark अथ देशी. At the end of the chapter the title is given as भाषाल्हाणाध्याय.

In the course of our examination of the illustrative section below we shall see that in their attempted restoration of the names of the dialects, Danielou and Bhatt are on quite uncertain grounds regarding the names छाटी, गाँडी, उत्कला, पेशाची, तुरानिका and मलया. Probably पाञ्चाली is ninth in the order and पाथात्या (or पश्चिमा) is eleventh, but Danielou and Bhatt have assumend the reverse of that order. So the last Pada of the first verse has to be something like प्राच्या (or प्या) पाञ्चालिका.

Further the fourteenth name is in all probability तुषारिका, and not तुरानिका; the Ms. has actually तुxरिका in v. 2, and तुर वारा (i.e. तुक्खारा) in v. 21. The last name is most probably औड़ा (or ओड्रिका) and not मल्या. कानमूखी is very much suspect and possibly it is a corruption of कान्यकुञ्जा.

The number of languages is given as fortytwo (v. 6.). The subsequent verses 8 to 48 present a few lexical characteristics of each of these Prakrits. As there are fortytwo languages, but forty-one characterising verses, we have to assume that either somewhere

^{1.} देविका. 2. स्रसेनिका. 3. वौधी. 4. मोहं. 5. माठवी. 6. कोशला.

two languages are accomodaed tin one verse or, alternatively, one verse is missing. Danielou and Bhatt think that v. 40 illustrates in its two halves भद्रा and भ भौजिता respectively. Further they understand v. 47 also deals in similar fashion with two languages, namey काम्बोजी and मलया. They take the last verse, numbered fortyeight, as topically not forming a part of the भाषान्यस्था, but rather as a conclusion to the work as a whole, disregarding the patent fact that the language of the verse is Prakrit while the whole work excepting the verses illustrating the dialects is in Sanskrit. In fact the whole of v. 47 illustrates the काम्बाजी dialect and the last verse of ch. XV illustrates the बीडा dialect. We think that one verse illustrating भद्रभोजिका is missing after v. 40, eventhough the Ms. does not indicate any gap at that place.

A critical consideration of the text of the Prakrit verses of the GT. as preserved in its single Ms. reveals the following facts about its corruptions and lapses. There are numerous lacunae in vv. 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 28, 36, 39, 40, 41, 44. 45. 46 and 47. The copyist of the Ms. (or of its prototype). besides omitting or adding letters, has misread or confused numerous letters : ल for ण, तथ or थ for ब्व, ह for अ, जा for म, म for त. ह for द. ख for ग, सो for ओ, भ for र, तथ for चछ, घ for गा, ज for छ, र for ड, ड for र, व for च, च for व, र for प् व for त. त for व, य for म, ज for ग, य for प, च for छ, ह for इ. प for य, व for य, ग for झ, द्ध for ह, य for इ, व for उ. ह for व. व for घ. के for क्स, उ for तु, म for न, घ for प, द for इ. 239 for ह, मह for बभ, ल for य, द for ज, स for म, न for म, र for व, क for and so on endlessly. Omission of post-consonantal signs for \$ and 3, addition or transposition of Anusvara, single letter for the double ones, etc. are other frequent errors.

In what follows, the text of each verse and the observations on it are presented in the following order: name of the dialect, text according to Danielou and Bhatt, reconstructed text, notes, the Desya items identified. We have checked the text of Danielou

and Bhatt with the original manuscript and the few places where we differ from them in the reproduced text are indicated by portions enclosed in parantheses. The missing letters are indicated in the original Ms. by the corresponding number of dashes, which are shown as so many crosses in the text reproduced here.

2. The Text and Notes

[१. महाराष्ट्री]

- DB. रल्ली भलवो सीहो कइया तिणतिहिषिणे यथा(षा) । तह हिल्जों(ओ) विदु(हु) वन्धो णाइतथो पढमभासा(स)ए ॥८
 - R. पुल्ली मिणिओ सीहो कइयातिण वतिहयक्यि (?) णायन्वा । तह अलि अलिल हु वन्धो णायन्वो पढम-भासाए ।।
- Notes: 1. DN. 6, 79: वम्ध सीह्या पुल्ली.
 - 2. The latter portion of the first line except the last word is obscure.
 - 3. DN. 1, 56 : अलिअल्ली मिअमए अ वग्धे अ.

Items identified: 1. पुल्ली=सीहो 'lion'.

3. अलिअल्ली = बग्धो 'tiger'.

×

[२. किराई / किराती]

- DB. लिजाइय अन्ने द्वि(दि)ट्ठं मंजिट्ठज्जंजुअं मुलायत्थं । तह गुतिथ(च्छ)ओ पह्टठो सुहियं रीणं किराई(इ)ए ॥९
 - R. णिज्झाइअअं¹ दिट्ठ मंजिठट् मंजुअं² तु णायन्वं ! तह गन्विओ पहट्ठो³ सुढियं⁴ रीणं किराईए !!
- Notes: 1. SH. 8-4-6 has noted णिज्ञा- in the sense of दर्शन.

 According to PSM. णिज्ञाइअ-= दृष्ट-.
 - 2. The Kashmiri word for मञ्जीष्ठा 'the Indian madder' is monzu, derived from Pk. मंजुआ, Sk. मञ्जुका. See IAL. 9717,9720.

- 3. DN. 6, 9: दरिअम्मि पहट्ठो. Pk दरिअ—(=Sk. हप्त-)= Pk. गन्विअ-(Sk. गर्वित-).
- 4. DN. 8, 36 : सुढिओ संते. PK. संत (Sk. श्रान्त-)=Pk. रीण-रीण is frequent in Apabhramsa. See SMP., item No. 1194.

Items identified: 1. णिज्झाइअं=दिट्ठ 'seen'.

- 2. मंजुअं=मंजिट्ट 'bright red'.
- 3. पहट्ठो=गन्विओ 'arrogant'.
- 4. सुद्धियं = रीण 'exhausted'.

*

[३. सोरड्डिया / सौराष्ट्रिका]

- DB. दुस्लखं अजल(अल)जुत्तं गाहुडिगाहो तरो मंडो। सोरट्ठियाए भणिओ तं दोहथीहुओ णासो।।१०
 - R. ¹दुल्लगं अणजुत्तं ³गाहुडि गाहो [तहा] तरी बेडो⁸। सोरट्ठियाए भणिओ थद्धो [त]ह थीणओ⁴ णाओ।।
- Notes: 1. DN. 5, 43: दुल्लगं अघडमाणिम. अणजुत्तं=अयुक्तम्. For the negative prefix अण— see SH. 8-2-190.
 - 2. DN. 2, 89: गाहमि गाहुली. गाहुिं is either a corruption of गाहुिल or is a derivative based on an alternative diminutive suffix -उड़- as in Ap. बपुड़- from क्य-.
 - 3. DN. 6, 95 : बेडो तरीइ. Mod. Guj बेडो 'boat'.
 - 4. DN. 5, 30 : णिण्णेह-दय-दिर्प्यु थिण्णो; PSM has noted थीणas a varient of थिण्ण-. It derives from Sk. स्त्यानand like थद्ध- (<SK. स्तब्ध-) has developed a metaphorical sense. Note PL. 129 : उत्ताणा उत्तणुआ थिन्ना थड्डा य गव्विआ दरिआ.

Items identified : 1. दुल्लगां=अण्जुत्तं 'improper'.

2. गाहुडि=गाहो 'crocodile'.

- 3. बेडो=तरी 'boat'.
- 4. थीणओ=थद्धो 'puffed up'.

[४. मागह-भासा / मागधी]

- DB, अणकं डोअलसमओ मागहे भासाए पट्टमा(ल)रयली । साहाला कंकोली भूवहुं(रूवडुं) तामरं भणियं ।। ११
 - R. अणकडो¹(?) अलसमओ(?) मागहमासाए पट्टला²(?) रयणी । साहालो(?) क केल्ली⁵ रूबडआं तामरं⁴ भणियं ॥
- Notes: 1. The first item is quite obscure.
 - 2. पहला is otherwise unknown in the sense of रयणी 'night'. रयली in the Ms. seems to be a corruption of रयणी.
 - 3. According to DN. 2, 12 क केल्ली means the Asoka tree. साहाला possibly stands for साहालो, which is noted in PSM. in the sense of a tree in general. It corresponds to Sk. शाखाल—(i. c. शाखिन—), but it is not known in the sense of अशोक.
 - 4. DN. 5, 10 : रम्मिम तामरो. Apabhramsa and Old Gujarati रूवडउ' (Mod. Guj. रूडु, Hindi रूडा) means 'beautiful'. It is a considerably late word, derived from SK. रूप— with Ap. suffix -डाअ-

Items identified : तामर = रूवडअं 'beautiful'.

*

[५. सुतथा (?)]

- DB. सुत्था एसा लत्थी विरहं कुसुंभजं वत्थं(थं)।
 दुल्लं धं अणजुत्तं तुंगी रयणी घवो भत्ता।। १२
 - R. सुत्थाए(?) सा¹ लच्छी विरह^{'2} [भणाइ] कुसुंभजं वत्थं। दुल्लग^{'5} अणजुत्तं तुगी⁴ रयणी घवो⁵ भत्ता ॥

- Notes: The first word gives the name of the dialect. It is in the locative singular. Possibly we have to read सुम्हाए. सुझ- (Pk. सुम्ह- under SH. 8-2-74) is wellknown as the name of a country in West-Bengal. But the name of the dialect is definitely not Lati as assumed by Daniélou and Bhatt.
 - 1. For सा=लक्ष्मी see SMP., item no. 1278.
 - 2. DN. 7,91: विरहो रह कों मुं भेसु and 7, 68 को सुं भयम्मि विरहालं. Hemacandra has paraphrased को सुं भं with कुसुम्भरकं वस्त्रंम्, The latter part of the first line is short by four Matras. So भण्णह is supplied conjecturally.
 - 3. For दुरलग see note no. 1 under verse 10 above.
 - 4. DN 5, 14: तुंगी रयणी.
 - 5. भ्रम- is quite an old Sanskrit word, current also in Prakrit.
- Items identified: 1. सा=लच्छी 'wealth', 'Godess of wealth'.
 - 2. विरहं=कुसुंभिञं वत्थं 'bright red cloth (dyed with the Indian madder)'
 - 3. दुल्लगा =अणजुत्त 'improper.'
 - 4. तुंगी=रयणी 'night'.
 - 5. धवो=भत्ता 'husband'.

[६. गोल्ला]

- DB. जाइल्लो जोइडवा पल्ली वग्धो परं सुवो सदो । आलासो विसकीडो तथा(च्छा)रो विरिवोअ गोलाए ॥१३
 - R. छाइल्लो¹ जोइक्लो पुल्ली² वग्धो पडंसुवो⁵ सद्दो । आलासो⁴ विसकीडो थेरो⁵ विरिचो अ गोल्लाए ।।
- Notes: 1. DN. 3, 35: छाइल्लो अ पईवे and 3, 49: जोइन्खो दीविम.
- ं 2. DN. 6, 79: वग्धा सीहया पुल्ली.
- अत्या 3. Cf SH. under 8-1-88, 26, 206 पड सुआ=प्रतिश्रुत्=प्रतिशब्दः, प्रतिश्वनिः 'echo' (PSM).

- 4. DN. 1, 61: विञ्जामिम आलासो, Pk विसकीडो is Sk. विषकीट: 'poisonous worm'. So 'scorpion' seems to be a specialized sense. आल- means 'animal poison' and Abhidhāṇaciniāmṇi gives आलास्य- as a synonym of नक्र- 'crocodile'.
- 5. DN. 5, 29: थेरो के; com. थेरो ब्रह्मा.

 The name of the dialect is गोल्ला and not गौडी as sumrised by Daniélou and Bhatt Golla country, as a part of Maharaştra is wellknown in medieval literature. For example MW. notes the word from Hemacandra's Parisişaparvan and PSM. from Malayagiri's Avasyaka commentary.

Items identified : 1. छाइस्ली=जोइक्खो 'lamp'.

- 2. पुल्ली = बग्धो 'tiger'.
- 3. पड सुवो=सद्दो 'sound' (i e. possibly 'echo').
- 4 आलासो=विसकीडो 'poisonous worm'.
- 5. थेरो=विरिंचो 'God Brahma'.

*

[७. कासीरी / काइमीरी]

- DB. कासीरी अपयदो मोरो केलो नरा हिवो तुगो । विच्छेए तु विलासो तह सूरो पूरणो भणिओ ॥१४
 - R. कासीरीए पहट्ठो मोरो केलो¹ नराहिवो तु गो²। विच्छेओ⁸ हु विलासो तह सुप्पो पूरणो भणिओ ॥

Notes: कासीरीए पइट्डो=काश्मीर्या प्रदिष्टः ('indicated') or प्रदृष्ट: ('seen').

- 1. केलो मोरो 'peacock' is otherwise unknown. Is this possibly a corruption of चोरो थेणो ?
- 2. तुंगो meaning नराहिवो 'prince' is also otherwise unknown. Names of many Rastrakūta kings ended in -तुङ्ग.

- 3. DN. 7, 90 : विलास-जघणेसु विच्छेओ.
- 4. DN 6, 56: पूरण सुप्पे. According to PSM. सुप्प- is also masculine.

Items identified: 3. विच्छेओ=विलासो 'dalliance', 'amorous sport'.
4. पूरणो=सुप्पो 'winnowing basket'.

[८. चुट्या / प्राच्या(१)]

- DB. पजाए तासु पुरिसा दिट्ठं भणिअं(य) महीसज्ञा(ज्झा?) । तह पुर हिल्लं खिच्चं अत्तासा सूहरो हीरो ॥१५
 - R. पुन्वाए तासु ¹(?) पुरिसो दिह²(?) भणियं मही(?) सज्झा ⁵(?)। तह उरुपुल्ल ⁴ खिच्चं अत्ता ⁵ सासू हरो हीरो⁶ ।।

Notes: पजाए is probably a corruption of पुन्वाए.

- 1. The first Desya item cannot be made out.
- 2. सिंह' (≺Sk. शिष्टम्, past passive participle of शास्-'to tell') is quite frequent in Prakrit (SH. 8-4-2: साह्=कथ्-), though according to PSM. दिट्ड- (≺Sk. दिष्ट-) means 'said'.
- The Desya item and its gloss remain unidentified.
 Can these be सही अज्ञा ? cf DN. 1, 50 अज्ञा=असती, शुभा, नववधू, तरुणी and एषा
- 4. DN. 1, 134 : उरुपुल्लो अपूव-खिच्चेसु.
- 5. DN. 1, 51 : माइ-पिउच्छा-सास्-सहीस् अत्ता.
- 6. DN 8, 70 com.: हीरशब्द:...हवारचकस्तु हरशब्दभवः

Items identified: 4. उर्पुल्लं = खिच्च 'a dish of rice and pulse',
'K hichri'

- 5. अत्ता=सासू 'mother-in-law'.
- 6. हीरो=हरो God Siva'.

*

[९. पंचालिया / पाञ्चालिका]

- DB. मेहुणिहं तह भणिए तीरोपवलो अयं जुलो नउलो । अंप चायाय मोरो रीहो ×× ×× × म कारो ॥१६
 - R. मेहुणिआ¹ वहु-भइणी तीरो(?) पवले²(?) अ मंगुसो³ नउले । पंचालियाए मोरो रीहो(?)मंकारो (?) ॥
- Notes: 1. DN. 6, 148 com.: मेह्रणिआ पत्न्या भगिनी मातुलात्मजा च.
 - 2. तीरो पवलो is unclear. It is possibly a corruption of नीडो पयलो. cf. DN. 1, 7: पयलो नीडे.
 - 3. DN. 6, 118: म गुस-मुग्गुसु-मुग्गसा णउले Hindi and Marathi have मांगूस. अंप चायाय is taken as corrupt for पंचालियाए. Daniélou and Bhatt take it to be equivalent to पश्चिमभाषा.

Items identified : 1. मेहुणिआ=बहु-भइणी 'wife's sister'. 3. मंगुसो=नउलो 'mangoose'.

[१º. —]

- DB. गिरिय लिथे विधोस तु × पीवरो तदा भणिओ । सारंगो तह भसलो सारो सय उक्कवला ॥१७
 - R. गिरिपल्लिया वि घोसं 1 तु 2पीवरो तहा भणिओ । सारंगो तह भसलो 5 सारोसय 4 उक्कवला(?) ॥
- Notes: 1. Cf Abhidhānacintāmaņi, 1002: घोषस्त्वाभीरपव्लिका.
 - 2. The Desya item is lost. There is a gap of five Matras after g.
 - 3. भ्रसल- (=Sk. भ्रमर-) is quite common in Prakrit. PSM. has given भ्रमर- as one of the meanings of सारंग.

· "我们是是是一种的。"

4. This last portion is quite obscure and it is also metrically defective. Most likely it contained a Desya item with its gloss and also the name of the dialect. Daniélou and Bhatt assume that the name of the dialect is उत्कला. But it is uncertain. उक्कलाए, उक्कलीए or उक्कलिआए is metrically untenable in the final position. They violate the structure of the Gatha

Itetms identified : 1 घोसं=गिरिपल्लिया 'mountain-village'.

3. भसलो=सारंगो 'bee'.

 \mathcal{X}

[११. पच्छिम-भासा / पाश्रात्या]

- DB. पंचमभासो भणिया मयण × × × × रो तीरं । गीयं गुट्ठाबद्ध×उ जांजालं वत्थं व ॥१८
- R. पश्छिम-भासा-भणिए मयण¹......²रो तीरं । गीय गुट्ठाबद्धं(१)³...उज जालं(१)⁴ वत्थं(१) च ॥
- Notes: 1. The name of the dialect is unclear. There is no support for taking it to be equivalent to पाञ्चाली as is done by Daniélou and Bhatt. पंचय-भासा is possibly a corruption of पच्छिम-भासा.
 - There were possibly two Desya words with their glosses in the latter portion of the first line.
 The last word seems to be the gloss of the preceding Desya word which is lost
 - 3. गुठावद्ध is otherwise unknown in the sense of गीय 'song'.
 - 4. The last Desya item and its gloss are not clear.
 DN. 1, 136 notes उज्जंगल हुडे दीहे i.e. in the senses
 of बलाइकार- and टीघ-

[१२. —]

DB. तह बोलिया सहारो भल्लइ पिसु x x x x सब्वेयं । पिंगल (तं) तं नारी कंटार इत्तेहों ॥१९

Notes: Nothing can be definitely made out of this passage except that भल्लइ is a corruption of भण्णइ. Daniélou and Bhatt have suggested पिसाइअं नेय' as an emendation of पिसु...सब्वेय' in the first line. But there is nothing to support this guess. It is more likely that पिसु... stood for पिसुणो or पिसुणिय'. It can be also suggested that second line began with सब्वेय' (or सब्वेय); the second line as it is, is short by five Matras. There is also nothing to support the word division given by Daniélou and Bhatt with the exception of the word भल्लइ (i.e भण्णइ). The name of the dialect also cannot be made out. It is likely to have been in the lost portion. Or is it given in the beginning?

[१३. मेच्छी / म्लेच्छी]

DB. म्ले(मे)च्छीए पुल भिमओ तिष्पिल चहारा ××××। गुज्जीतेलं आट्ठी जहा पुल्लं ॥२०

Notes: The name of the dialect is मेच्छी i.e. म्लेच्छी. The first portion is to be read मेच्छीए पुण भणिओ. No Desya item or its gloss can be identified from the rest. The second line is also metrically defective and it is short by some eight Matras.

[१४. तुक्खारी / तुषारी]

- DB. तुरंवाराए स सबो सत्थारो महिओ तहा कल्हो। इ × × × रत्त पुष्ककाकोओ आमणिया ॥२१

Notes: तुरंबार is a corruption of तुक्खारी (i.e. the dialect of the तुबार country or Fokharistan). The anusvara signifies gemination of the following consonant, and रवा stands for खा. In verse 2 also the Ms. reads तु×िका which is to be taken as तुबारिका (or तुखारिका) and not as तुरानिका as wrongly guessed by Danielou and Bhatt.

- 1. संथार (Sk. संस्तार-) and सत्थर- (Sk. सस्तर-) are commonly used in Prakrit in the sense of 'bed
- 2. DN 6, 100: भिट्टिओ कण्हे. There भिट्टिओ is noted as a variant reading for भिट्टिओ, and that is the correct form of the word, because we find भिट्टिओ and not भिट्टिओ used to signify Krishna in the Apabhramsa epics of Svayambhū and Puspadanta.
- 3. and 4. Nothing can be definitely made out from the second line. If the fourth item is कोउआ it is recorded at DN. 2 48 in the sense of करीपाग्नि, and फुज़आ (if it is corrupted as पुष्कका in the text) is also noted with the same sense at DN. 6, 84.

Items identified : 1. सत्थारो=सज्जा 'bed'.

2. महिओ=कण्हो 'Krishna'.

[१५. सोमकी]

- DB. इंदवहू ईदो ओदासा छोहरिलो × × । सो]मया हि ओ म × × × ।।२२
 - R. इंदबहू¹ इंदोओ दासाले।²(?) हरिणो... ।मयाहिओ म..... ॥
- Note: 1. In very late Sanskrit इन्द्रवध् is known in the sense of इन्द्रगाप-. See for example the Hindi-Sahda-Sāgar. We have in Prakrit इदंगीय-, स्दीय- (DN. 1, 81) and इंदाअ- (Sandeśarāsaka).
 - 2. The second item is obscure, The gloss is possibly हरिणा. Metrically the latter part is defective and short by several Mātrās.

In the second line one lacuna is at the beginning and another at the end. Danielou and Bhatt assume that the name of the dialect was given in the beginning of the second line and hence they supply the letter सा before मयाहिओ. But मयाहिआ is Sk. मृगाचिप: and as such it seems to be the gloss for the Desya item that possibly followed it in the last portion. म suggests भणाइ or भणाए after which appeared the Desya item. If, as in Maharāṣtri, the Desya word for lion was here also पुल्ली. then the latter part of the second line can be reconstructed as मयाहिओ भणाए पुल्ली. The name of the dialect was contained in the lost portion either at the end of the first line or at the beginning of the second.

Item identified : इ द्वह=इ दोओं 'a kind of rainy insect'.

[१६. चोली / चोलकी]

- DB ए णरणणाहो भल्लइ वहलो सुराहिओ मसलो । वसुआ विद हुसुक सदं पुण पुरी इयत्थं ॥२३
 - R. [चोली]ए णरणाहो भण्णइ ¹वहलो(?) सुराहिओ ⁹मसलो(?)। वसुआइद³ हु सुक्क ⁴सद्(?) पुण पुरी **इयत्थ**ं।।
- Note_S: The first line is short by four Matras and the name of the dialect is also missing. The name and is to be supplied in the beginning before the out of the locative.
 - 1. वहल- is otherwise unknown in the sense of ण्राह-
 - 2. मसल- is otherwise unknown in the sense of सुराहिआ.
 - 3. SH. 8-4-11 : उद्वातेरोरुम्मा वसुआ; वसुआइय=शुष्क (PSM.).
 - 4. सह is otherwise unknown in the sense of पुरी. DN. 6, 1 gives गामहाणे पह.

Items identified वसुआइट = सुक्क 'dried up'.

[१७. कंची /काञ्ची]

- DB. रिल च्छामो असमत्थो क नीए पट्टन्यमणा तुंड । स्वखयणं अरिपल्ली मणए वग्घो ॥२८
- R णित्थामो 1 असमत्थो क चीए पञ्च्यमणे। $(?)^2$ । तुंड 3 सूवर-वयण अरियल्ली 4 भण्णए वय्घो ॥
- Notes: 1 PL. 470: ओलुगो नित्थामो and DN. 1, 164 com.: ओलुगो सेवको निरुद्धायो निःस्थामा चेति व्यर्थः नित्थामो obviously derives from Sk. निःस्थामन्.

- 2. प्रञ्चमणी is obscure and the text here is also metrically defective.
- 3. तुण्ड is quite familiar in Sanskrit (and Prakrit) with the meanings 'a beak, snout (of a hog etc.), trunk (of an elephant), the mouth.'
- 4 DN. 1, 24 : अरिअल्ली सद्**ले**.

Items identified : 1. णित्थामो = अनुमत्थो 'week', 'lacking in strength'.

- 2. तं ड = स्वर-वयणं 'snout of a hog'.
- 3. अरियल्ली=वग्घो 'tiger'

*

[१८, मालवि।मालवी]

- DB. रत्था(च्छा) x x असुलहो कूलग्घोणोअ x x मणिओ । उडअं तणव कुरीरं मालविए मेयलो वि गो ॥२५
- R. रच्छा $^1[$ मओ] अ सुणहो 2 कूलं सेणा अ...भणिओ 1 उद्धअं 5 तणय-कुडीरं मालविए मेयलों 4 विंझो 1
- Notes: 1. DN. 7, 4: रच्छामओ=साणो.
 - 2. For कूल सेन्ना see note no. 1. on verse 30 below.
 - 3. उड्डअ- is a regular tadbhava from Sk. उटज-. तणयकुडीर-=तणकटीर-.
 - 4. मेपल Sk. मेकल is the name of a mountain in the Vindhya range. Sanskrit lexicons give मेकलकन्यक [and मेकलादिजा as synonyms of the river Narmada.
- Items identified : 1. रच्छामओ=सुणहो 'dog'.
 - 2 कूलं = सेणा 'army'.
 - 3. उडअं=तणयकुडीरं 'grass·hut'.
 - 4. मेयलो=विंझो 'the vindhya mountain.'

[१९. कासी / काशीसंभवा]

- DB लिप उच्चा तह वोरी कासीए पिंडरी चोरी वे(चे)ल पट्ट वा(वो)रं नाहणी ××× ××××× ॥२६
 - **R**. लंपिक्खो 1 तह चारो [भणाइ] कासीए पिंडरी 2 चोरी 1 चेलं 3 पट्टं उवोरं (?) नाहणी.....।
- Notes: 1. DN 7, 19: लंपिक्स्नो तह चोरे.

The first line is short by four Matras. So भणाइ is supplied conjecturally.

- 2. पिंडरी is otherwise unknown in the sense चोरी.

 But Sk. पिंग्डार, Pk पिंडार- ((पेंडार- according to DN. 6 58) 'buffalo-herd' has acquired the meaning of 'free-booter', 'marauder' in many NIA.

 languages eg H पिंडारा, G. पींडारो, पींडारो, P. पिंडारा. See IAL, 8172.
- 3. ਚੋਲ- and पट्ट- are commonly used is Sanskrit and Prakrit in the sense of garment. The rest of the verse is obsure and defective.

Items identified: 1. लंपिक्लो=चोरो 'thief'.

- 2. पिंडरी=चोरी 'theft.'
- 3. चेलं=पट्टं 'garment'.

*

[२०. वेदि / वेदिका]

- DB. छुट्टं(द्धं) मोसो भणियं वेदीए कुरमरी तहा वंदी। हेरंबो तह पडहो थेणो चोरो चलं पीलं ॥२७
 - $R.\ ^{1}$ छुट्टं भणियं मोसो वेदीए करमरी 2 तहा बंदी । हेरंबों 3 तह पडहा थेणो 4 चोरा 5 बल पीण 11

- Notes: 1. Sk, ਭਾਣ੍-, ਭਾਣ੍-, Pk. ਭੁਣ੍-, ਭੁਣ- 'to plunder', 'to rob', Pk. ਭੁਣ- 'robbed' Guj Hindi ਕ੍ਰਣ 'booty'. See IAL. 11078.
 - 2. DN. 2, 15 : करमरी बदी (=हठहता स्त्री).
 - 3. DN 8, 76 : हेर बो . . . डि डिमे चेअ.
 - 4. थेण is a regular tadbhava from Sk. स्तेन.
 - 5. cf. DN. 6, 88 : बलिओ=पीणो.
- Items identified : 1. लुट्टं=मोसा 'booty'
 - 2. करमरी=बदी 'woman imprisoned in war'.
 - 3. हेरंबो=पडहो 'drum'.
 - 4. थेणो = चोरो 'thief'.
 - 5. बलं≕पीण 'fat'.

*

[२१. कुसवत्तय-भासा / कुशावती]

- DB. कुसुमउत्तय भासा×तह च्छुरीच्छुरीया मुणेयत्था 1 पिंडवलो × दवग्गो कृहंवाहापि अंजाला ॥२८
 - R. कुसवत्तय-भासिए तह......¹ छुरी(?) छुरिया मुणेयन्वा । पिंडधवो² तह खग्गे। ³कृवं घाहाविअं जाण ॥
- Notes: The text of this verse is marginally added in the the Ms.
 - 1 कुशावर्ता (verse 3) suggests कुसवत्तय as the proper Prakrit form here which also presives the metre. It seems that after तह there is a lacuna of four Matras, otherwise the structure of Gatha is violated. Possibly the Desya word corresponding to छुरी or छुरिया filled that place.

- 2. DN. 6, 59 gives पे डधनो=लगो We assume that the text here is a corruption of पेंडधनो तह लगो. The Mss. often confuse ध with न, and नगो can well be a corruption of लगो.
- 3. क्वार- in the sense of धाहा 'cry for help when in distress is frequently used in Apabhramsa. See SMP. no. 882 (for घाहा see SMP. no. 128). For धाहाविय- see PSM.
- Items identified : 2. पिंडधवो=खग्गो 'sword'.
 - 3. कूब = धाहाविअ 'cry for help in distress'.

×

[२२. स्रसेणी / श्रसेनिका]

- DB. संगा भल्लइ वग्गा सा पंतिक्कं च स्रसेणाए । भाइल ओं(ओ) वर उर ओं(ओ) अरिया असई मुणे अत्थ ॥२९
 - R. संगा¹ भण्णइ वग्गा साय² तिक्खं च सूरसेणीए । भाइलओ⁸ वर-तुरओ अडया⁴ असई मुणेअव्वा ॥
- Notes: 1. DN 8, 2: संगा संडी वग्गा.
 - 2. सायं=Sk. शातम्=तीक्ष्णम्.
 - 3. DN. 6, 104 भायलो = जच्चतुरंगो.
 - 4. DN. 1, 18 अडया=असती.
- Items identified : 1. संगा=वगा 'reins'.
 - 2. साय =तिक्खं 'sharpened'.
 - 3. माइलओ = वर-तुरओ 'a horse of good breed'.
 - 4. अड्या=अलई 'unchaste woman'.

[२३. भोजी]

- DB. कुलं सेणा वच्छ पुंडीए अवियं च विवरीरं। भोजीका इरपुरिसो भडिले। असई करीनाजी(ऽरी) ॥३०
 - R. 1 कूल सेणा वत्थं 2 मुंडी पञ विय $(?)^{8}$ च विवरीरं । भोजिए काइर—पुरिसो भडिलो 4 असई करीनारी $^{5}(?)$ ॥
- Notes: 1. DN. 2 43 कुल = बलपच्छा = सैन्यस्य पश्चाद्भागः.
 - 2. DN 6, 133 मुंडी णिरंगी (cf. DN. 4, 31 com. णिरंगी तथा णीरंगी शिरोवगुण्डनम्). Here मुडी is given in the general sense of garment.
 - 3. पञ्ज वियं is likely to be a corruption of पल्ह स्थियं (or पल्ल ट्टियं, पल्ल ट्टियं) = Sk. पर्यस्तम् cf SH. 8-4-200: पर्यसः पलोट्ट-पल्ल ट्ट-पल्ह स्थाः. For विवरीर, see the illustration under SH 8-4-424.
 - 4. cf Sk. ਮਭਿਲ- 'a servant'; ਮਭਿਲ- is coupled with ਮੰਤ- 'a pimp' at 5-96 11 in the list of Deśi words given in the Prakrit chapter of Kramadiśvara's Samkṣiptasāra
 - The Desya item given here with the meaning of असती remains unidentified PL 91 gives अहिसारिआ (Sk अभिसारिका)=दुःशीला i.e. असती.

Items identified : 1. कुलं=सेणा 'army'.

- 2. मुंडी = वत्थं 'garment'.
- 3. भडिलो=काइर-पुरिसो 'coward'.

*

[२४. गुज्जर-भासा / गूर्जरी]

DB. छिंभु(च्छ) विभलइ गुजरभासाए माहर संगं। वालु कि ह(ब्भ)डियाजत संघासं खलं जुस्सं(सं)।।३१

- R. छिंछइ 1 मण्णइ असई गुज्जर-भासाए 2 नाहरं सिंघं । वाछंकी 6 चि॰भडिया जवसं 4 घासं खळं जुसं 5 (?) ॥
- Notes: 1. DN. 3, 16 छिंछओ देह-जारेसु; SH. 8-2-174 छिंछई=पुंश्रली; PSM. छिंछई=असती.
 - 2. cf Hindi, Rajasthani नाहर 'lion, tiger'; Gujarati नार 'wolf', 'a wolf-like animal'. Not attested in Prakrit or Apabhram'sa. It seems to be a very late word. In the text the accusative is irregularly used for the nominative.
 - 3. According to ABH. चिभिटी (or चिभेटी) and बालुङ्की are synonymous. बालुङ्क- is used in Hemacandra's Parisista-parvan (MW). In Prakrit बालुंकी is attested from Hāla's Sapatsataka (PSM.). For NIA. derivatives of चिभेट- etc. (in Lahanda, Panjabi, Sindhi, Konkani and Marathi) see IAL. 4826. There Guj. चीभड़, चीभडी also should be included. IAL. has not noted any derivatives from बालुङ्की.
 - 4. जवस- derives from Sk. यवस- (m.n.) and is a commonly used Prakrit word.
 - 5. This item and its gloss are doubtful.
- Items identified : 1. छि छड्=असई 'unchaste woman'.
 - 2. नाहर =सि घ 'lion'.
 - 3. वालु की=चिब्मडिया 'cucumber'
 - 4. जवसं=घासं 'grass', 'fodder'

[२५, रोमय-भासा / रोमकी]

- DB. रोमयभासा भणिओ पावी सघो सहारवो वडवो । वंग तह अकलंकं विसलं सङ्जं वियाणेहि ॥३२
 - R. रोमय-भासा-भणिए पानो 1 सप्पो सहारनो 2 (?) वडनो(?) । π गं 3 तह अकलं नं निस्क 6 (?) सज्जं नियाणेहि ॥
- Notes: 1. DN. 6, 38: पावी सप्पे.
- 2. सहारवो वडवो is unclear. The last word should be rather वडवा (unless वडवो stands for वडवाग्नि). Even if we take सहारवो as a corruption of महारवो (or महारवा) it is of no help, because neither महारवो is known in the sense of वडवाग्नि, nor महारवा in the sense of वडवा
 - 3. DN. 3, 1 : चंग चारुं.
- 4. विसल is otherwise unknown in the sense of सर्जा 'quickly', or 'ready'. Can it be वसणं मर्जा (i.e. न्यसन-

Items identified : 1. पावी=सप्पो 'snake'.

3. चंगं=अकलंक 'spotless'.

*

💛 [२६. मेय-भासा / मेद-संभवा]

- DB. गंदी मंगलत्रं जगरं कवचं मुणेयत्थ । परिघो परिवारों कलिवं कठंच मेयभासाए ॥३३
 - R. गंडी¹ मंगल-तूर^{ं 2}जगरं [तह] कवचं मुणेयव्वं।
 ⁸परिघो परिवारो किलिवं पंड^{ं 4} मेय-भासाए ॥
- Notes: 1. In Pali and Buddhist Hybrid Sanskrit गंडी means 'gong'.

- 2. जगर-=कवच- is common to Sanskrit and Prakrit. See Hemacandra's remarks under DN. 3, 41, Hence he has included जगर- in his ABH.
- 3. Pk. परिगाहो = परिवारो 'king's retinue'. Pk. परिगाहो, Ap. परिगाह has developed in Old Gujarati as परिघु and later it appears as परघु Occurrence of such a late word among the Desya words of the Gitālamkāra is quite significant.
- 4. In Prakrit and late Sanskrit ag- and vg- are known in the sense of eunuch. See IAL. 9124 and 7717.
- Items identified: 1. गंडी=म गलत्र 'trumpet etc. played on auspicious occasions'.
 - 2. जगर =कवच 'armour'.
 - 3. परिघो=परिवारो 'king's retinue'.
 - 4. पंड (or वंड, बंड)=िकिलिव 'eunuch'.

*

[२७. मारव-भासा / मारवी]

- DB. मारवभासा भणिओ धवलो सुरो अमंगलो अग्गी । चंपं तह विट्टु पुत्थं(च्छं) पुरिसो कलो मली धुसिउं(ओ) ॥३४
 - R. मारव-भासा-भाषिए धवलो पूरो अ म गलो अग्गी। छिप्प के तह वि हु पुच्छं पुरिसा कलोमली धुसिउ(?)।
- Notes: 1. घवल is otherwise not known in the sense of सूर-('sun' or brave'). DN. 5, 57 gives घवल- =यो यस्यां जातावुत्तमः. So with some stretching घवल- can mean शूर-.

- 2. PSM. has given अग्नि- as one of the meanings of मगल (n) According to the G hyasūtras मंगल (m.) is a name of Agni (MW.). The Rajasthant Sabad koś of Sitaram Lalas has noted मांगळ, मंगळा- मंगळि 'fire' from Old Rajasthani literature.
 - 3. DN. 3, 36: छिप्पं भिक्ला-पुच्छेसु.
 - 4. The last part of the second line is obsure. Possibly we should reconstruct as पुरिसो तह तोलणा भणिओ. cf. DN. 5, 17: पुरिसम्मि तहणो तोलणो अ.

Actually the DN form तोलणा is based on a questionable MS. tradition, It should be ढोल्लणा. cf. ढोल्लो in Apabhramsa, Rajasthani, Panjabi etc. and ढोलणो in Panjabi in the sense of नायक 'hero', 'lover' or later 'bridegroom'.

Items identified : 1. भवलो=सूरो 'brave'.

- 2. मंगलो=अग्गी 'fire'.
- 3. छिप्पं=पुच्छं 'tail'.

*

[२८. कानमूखी(?)]

- DB. इम्हो तह यवलहो हरिसो च दो अकाचपओ । साहीलं सुपउत्त म कं दिस(य)हं तु लावंदी ॥३५
 - R. ¹इब्भो तह य धणड़्दो² हरिसो(?) चंदो अ काचपओ(?)। साहीण हु ⁸पउत्तं(?) मंक (?) दियहं(?) तु लावंदी(?)।।
- Notes: 1. PL. 194. अडूढा इब्सा घणिणा; ABH. 357: इस्य आढयो धनीश्वर: In the specialized sense of विषक् only, Hemacandra has treated इब्स- as a Desya word (DN. 1, 79).

2. हरिसो is oherwise unknown in the sense of चंदो 'moon'

काचपओ is perhaps a corruption of काणमूहीए (or कण्णउज्जीए?). Metrically the end portion of the first line is short by three Matras.

- 3. पउत्त is otherwise unknown in the sense of साहीण (i.e. स्वाधीन-). DN. 6, 66 gives पउतथ with the meanings घर- and प्रविधान.
- 4 मंक दियह is obscure. मंक- is otherwise not known in the sense of दियह- 'day'. DN 8, 2 gives संखो with the meaning मागध- (Pk मागह-). तुलावदी is perhaps a corruption of तुणायंति.

Item identified: 1. इब्मो=धणङ्क्दो 'rich'.

[२९. देवकी]

1

- DB ह्यमीए x x x भा (ता) लच्छी फलो (फारो) कूओ सुहासिअं सेलं। उद्दासी संताओ चडेणअं लज्जियं भणियं।।३६
 - R. देवइए(१) सा¹ लच्छी ²फारो (१) कूओ सुहासिअं³ सेलं (१) । उड्डासो⁴ स ताओ वेलणअ ⁵ लज्जिय भणिय ॥
- Notes: On the basis of verse 4 ह्यमीए is to be taken as a corruption of देवहए, but the difference between the letters is such as does not inspire any confidence.
 If some letters are missing, the verse as it stands would have several Mātrās in excess.
 - 1. For सा=लच्छी see note 1 on verse no. 12. PSM. has noted मा also in the same sense.

- 2. 3. फारो कूओ and सुहासिअ सेल are obscure. Neither the Desya items nor their glosses can be definitely made out.
 - 4. DN. 1, 99 : उड्डासो तावे and in the commentary उड्डासो संताप:-
 - 5. DN. 7, 65 : लजाइ विलिअ-विदूणा वेदूणा तहेअ वेलूणा and in the commentary केचित् वेलणयं लज्जेत्याहु.

Items identified : 1. सा=लच्छी 'Goddess of wealth'.

- 4. उड्डासो=स ताओ 'heat'.
- 5. वेलणअ =लिज्जिय 'shame', 'being ashamed'.

[३०. पंचपट्टणी / पञ्चपत्तना]

- DB. आहच्चं अंसं x x x सीलं हससिअं च पंचपदृती मणिए । मंडलओ तह सुणओ ताही लिस्थणी सालिहा ।।३७
- R. ¹आहच्चं अच्चत्थं (१) ४सीलं(१) हसिअं(१) पंचपप्टणी-भणिए ।
 ⁸मंडलओ तह सुणहो ⁴ताहीलित्थणीसालिङ्टा(१) ॥
- Notes: 1. DN. 1, 62: आहच्च अञ्चत्थे. But what follows आहच्च in the text seems to be considerably different from अच्रथं.
 - 2. The second Desya item cannot be made out.
- 3. DN. 6, 114 : मंडलो साणे.
- 4. This part of the second line is completely obscure. Item identified; 3. मंडलओ=सुणहो 'dog'.

[३१. सिंधुय-भासा / सैंधवी]

- DB. सिंद्(द्ध) यभासा भणिए तहापवलो भूपियासिओ हेरो । देशलं व ओ महो सहउं(ओ) गवलं अवसेहिसं भलियं ॥३८
 - R. सिंधुय-भासा-भणिए तह पवणो ¹ट्(१) पिसायओ **ढयरे।² ।**⁵दोलंबओ(१) महोसहओ(१) गवलं अह सेहिर ⁴ भणियं ।
- Notes: 1. cf. 7, 24: ल्ञा मयतण्हाए: Hindi, Guj, लू 'hot wind'.
 - 2. DN. 4, 16 Com.: ढयरो पिशाचः ढयरो > ढेरो.
 - 3. Nothing can be made out of the first portion of the second line. Metrically too it is defective. Can it be रोल बओ भमरओ ! cf. DN, 7,2: भमरे रसाउ-रोल बा.
 - 4. DN. 8, 44 com.: सेरिभो महिषेऽपीस्थन्ये, Sk. सैरिभ-, Ap. सेरिह- 'wild butfalo'. See SMP. item no. 256, 257. सेहिर- is due to metathesis.

Items identified: 2. ढयरो = पिशाच. 'goblin'.

4. सेहिर (सेरिहं !) = गवल 'wild buffalo'.

*

[३२. कोसिया / कौशिका]

- DB. तहा कासिया भल्लइ दुहिया xxx स्सा । [सो]हि णवा पि डारो मउली थूणी पअमधारे (पओमज़्झे) ॥३९
 - R. तह कोसिया[ए] भण्णइ दुहिया¹.....स्सो²।
 [म]हिसीवा पिंडारो⁵ डिअली⁴ थूणा पआमङ्झे(?)।
- Notes: 1. The Desya item corresponding to the gloss दृहिता and possibly another Desya item and its gloss are lost.

- 3. cf. DN. 6, 58 com : पेंडारे। महिषीपाल इति देवराजः and DN 7, 41 com. : वच्छीवा गापः DN. 6, 130 माहिलो महिसिवालिम् also is worth considering.
- 4. DN. 4, 9 डिअली यूणा and PL. 360 यूणा दिअली.

Items identified: 3. पिंडारे।=महिसीवा (or माहिलओ) 'buffalo-herd'.
4. डिअली=थुणा 'post'.

*

[३३. भदा / भद्रा]

- DB. भ(स)इ भणाए तह(हं)...वि(चि)यगो रोगी × × सीसं । जलणं भल्लइ दीणं हत्थो साहापवो ईवा ॥४०
 - R. भद्दा-भणिए तह...वियगे।(?) 1 रोगी(?) \times ×सीसी 2 । 8 जयणं भण्णइ जीणं हत्थो साहा 4 य णायन्वा ॥
- Notes: Daniélou and Bhatt suppose that the first line of verse 40 illustrates the Bhadra dialect and the second line illustrates Bhadrabhojika in accordance with verse 4. But there is no mention of Bhadrabhojika or any other name in the second line of verse 40. so it seems that the whole of the verse 40 illustrates only Bhadra and the verse for Bhadrabhojika is missing.
 - 1-2. As the text has gaps here, no Desya items can be made out. Possibly the last two letters suggest that the second Desya item was समसीसं which according to the DN means सहदा- and निर्मर- and according to the PL. समसीसी means साहदय-.

- 3. DN. 3, 40 : जयणं हय-कवचिम्म; PSM. जीण- 'saddle'; Sk. जयन- 'armour for cavalry' (MW); जीन- 'leather bag, woolen cover' (MW) Hindi जीन, Guj. जीन (from Persian zin) 'saddle'.
- 4. One of the meanings of Sk. शाखा is 'arm'.

Items identified: 3. जीणं = जयणं 'horse's armour'.

4. साहा = हत्थो 'arm'.

*

[३४. भद्रभोजिका]

[The verse is possibly missing]

*

[३५. कुंतला / कुन्तला]

- DB. कु × × × × व इषहीरा लज्जा खलो कोणो । पासंड नि(मि) तुवेदन्व धीओ पहरो स इ सन्नी ॥४१
 - R. कु [तल]...¹वइख(१) हीरी³ लज्जा [तहा] ⁸खलो(१) कोणा।
 ⁴पासंड मितुवेद रे! ⁵वंधीआ(१) पहारो(१) मइ ⁶सन्ना।।
- Note: 1. The beginning portion of the first line is defective, so the Desya item and its meaning cannot be recovered.
 - 2. cf. DN. 8, 67 : हिस्य-हीरणा लज्जा and हिसी (Sk. ही)=लज्जा.
 - 3. खल- is otherwise unknown in the sense of कोण-'corner', or कोण- is also not known in the sense of 'rogue'.

- 4. The text is quite obscure. Possibly we should read पासंड मिच्छत्त i.e. पाषण्ड-=मिश्यात्व-.
- 5. व घोओ पहरो is metrically defective. Whether we have here ब दी=पहरी or घघओ य घरो (DN. 2, 105) nobody can say.
- 6. Pk. सण्णा (Sk. संज्ञा) has मति- as one of its meanings.

 Items identified: 2 हीरी=लज्जा 'bashfulness'.
 - 6. सन्ता=मृड 'intelligence'.

[३६. कोसला / कोशला]

- DB. तह कोस(म)लय भणिओ मुखो ठेरो असीविओ साही । गोला भणई नाई थेरा कसरो मओ न हरे। ॥४२
 - R. तह कोसलाए भणिओ बुङ्ढो(?) ठेरो 1 अ सीविआ 3 सूई ?)। गेला 5 भण्णह गाई थोरी(?) 4 कसरो मओ(?,नहरेा(?) 5 ॥
- Note: 1. ठेरो (< Sk. स्थिवरः) = बृद्ध: PSM) or थेरो=ब्रह्मा (DN. 5, 29). It is not known in the sense of मुक्ल-(i.e. मूर्ख-). Hence we may take मुखो as a corruption of either बुद्धहो or बम्हा.
 - 2. DN. 8, 29 has स्रूईइ सिन्नि-सिन्निणिआ. साही has the sense of रथ्या 'street' (DN 8 6: PSM.). There is a late Pk. word सेरी, Guj होरी 'street'. Its diminutive would be सेरिआ. Hence if सीनिआ is correct' साही is a corruption of स्र्ई, and if साही is correct सीनिआ is a corruption of सेरिआ-

- 3 DN. 2, 104 gives मेा as one of the meanings of माला.
- 4. According to DN. 2, 4 कसरो=अहम-बह्द्लो. It is not known in the sense of थेरा i.e. बृद्ध: or ब्रह्मा. But Sk. स्थीरिन् (ABH. 1263) or स्थूरिन् (MW.) means an ox. So थेरा may be a corruption of थोरी.
- 5. मओ नहरा is obscure. नहरा means 'nail' and मओ means 'deer', 'beast'. So it seems the text here is corrupt.

Items identified : 1. ठेरा=बुद्धहो 'old man'.

- 2. सीविआ=सूई 'needle'.
- 3. गोला=गाई 'cow'.
- 4. कसरा=धोरी 'ox', 'an ox of low breed'.

*

[३७. पारा]

- DB. टिघी भणइ विल्ञो पूरोकीलो पलेविञं सरिञं । मल्लाणियाय जणणी पाराए अट्किया बहिणा ॥ ४३
 - R. टिप्पी 1 भणाइ तिलओ पूसो 2 कीला पलेविअं सरिअं 1 मत्लाणिया 4 जणणी पाराए अक्टिया 5 बहिणी !!
- Notes: 1. DN. 4, 3: टिप्पी टिक तिलए cf. Guj. टीपकी in the same sense.
 - 2. DN. 6, 80 : पूसो हाल सुगेसुं कीला=कीरा (Sk. कीरः).
 - 3. DN. 6, 18 gives परेवयं=पादपतनम्. And as कीरा became कीला so परेवयं might have become पलेवयं. But the gloss सरिअं=सृतम् 'passed', 'gone'. Alternatively Pk. पलीविअं = प्रतीप्तम्, ज्वलितम्. Thus neither quite fits here.

- 4. cf. DN. 6, 112: मम्मी मल्लाणी मामा य मामीए. As the words माइ, माउआ 'mother', and मामी 'maternal uncle's wife' were secondarily used to mean friend' (see Dn. 6, 147 and SH 8-2-195), so मामी and its synonyms acquired the secodary sense of 'mother'.
 - 5. DN. 1, 6: अका बहिणी.
- Items identified : 1. टिप्पी=तिल्ञा 'ornamental forehead mark'.
 - 2. पूसो=कीला 'parrot'.
 - 4. मल्ला है। = जणणी 'mot 🖁 r'.
 - 5. अकिया = बहिणी 'sister'.

*

[३८. जावण-भासा / यावनी]

- DB. जारणभासा × × अो गोडुखिली तहा वेशा।

 ×िल्लिर भल्लई स सवे। कुहुणी रत्था[च्छा] महे। जत्ता ॥४४
 - R. जावण भासा[-भिण्ए पा]ओ गेाड्डो 1 केली 2 तहा वेसा [हिं]िंटलिं 8 भण्णइ मसओ कुहिंणी 4 रच्छा महें। 5 जत्ता |1
- Notes : 1. गांड-, गांडु- =पाद- (PSM). See also IAL. 4272.
 - 2. cf. Dn. 2, 44 : केली असई.
 - 3. Dn. 3, 62 : चीहि-मसएसु झिल्लिरिआ.
 - 4. Dn. 2, 62 : कुहिणी कुप्पर रच्छासु.
 - 5. মন্ত- meaning festival (religious or secular) is quite common in Prakrit. It can well signify খাসা 'religious festival or procession'.

Atems identified: 1. गेड्डो=पाओ 'foot'.

- 2. केली = वेसा 'prostitute'.
- 3. झिल्लिरि = मसओ 'mosquito'.
- 4. कुहिणी == रच्छा 'street'.
- 5. महो=जत्ता 'religious festival'.

[३९. कुक्कुरी / कुकुरी]

DB. ×× ×× सुणह वाकुरी एसेट्ठी...होतघो । अछ अंगा कलान्नो सवला णचला फरेक...॥४५

.Notes: The manuscript reads हरिल्हा ।)पु(4)रं (or रे) after सेट्ठी. कु नकुरीए and णायन्वा are obvious emendation But nothing can be made out of the Desya items or their glosses.

*

[४०. मज्झिम-भासा / मध्यदेशी]

- DB. × × भणइ द विरंरा(सां) मंशिमभासाए वारिअं पीअं। हंवासा + × ठ ठ ठ ८ (० ० ० ०) कुट्ठिलिद्देा लासर×××॥४६
 - R. मण्णइ वीसं(?) मिष्झम-भासाए वारिअं पिच्चं। लंबा सालवव × अट्टिलिहें।लासर(?) × × × ॥
- Notes: After ਲੰਗੇ in the second line the MS. reads सालवव. What is read by Daniélou and Bhatt as ਤਰਰਰ are only small circles.

Only the item at the end of the first line came be made out DN 6, 46 gives जले पिञ्च For पिञ्च Pischel has noted पिञ्च and पिञ्च as variant readings. That the correct form is पिञ्च and not पिञ्च or पिञ्च is established by the occurrence of that form in Puspadanta s Nāyakumāracāriya(5-10-21). See SMP. item no 1352. For कुट्छिलिहोला we may suggest that perhaps it is a corruption of कुट्गि होंहा. In Bhoja's Śrmngāramañjarikathā (Dhondhā occurs as the name of a bawd (Index of proper names p. 92).

Item identified : पिच = वारिअ water'.

[४१. कंबुजाई / काम्बोजी]

DB.भण इदं[दा] रे। ओक डोव कंबुजाईए ।
संखो वंदीह जीहा गावाकसले। मलेग्यीले(ले। ॥४०

R. ___ भण्गइ राओ क डो⁸ य कंबुजाईए ।
संखो य दीहजीहा⁸ गावा कसले। बलो पणि।(१) ॥

The first line is short by six Matras in the beginn-Notes: ing. One Desya item and its gloss were possibly contained in that portion Daniélou and Bhatt have wrongly assumed that the first line of this verse illustrates the Kamboji dialect and the second line illustrates the Malaya dialect. They interpret the following verse as the concluding statement or summing up of the whole chapter. But the whole of the verse under discussion illustrates only one dialect, viz, Kamboji, and the last verse illustrates the Audri dialect. The derivation of the form क बुजाई is unclear. It appears to stand for काम्बाजकी or काम्बाजिका.

- 1. The first item and its gloss are missing.
- 2. DN. 2, 51 gives 'weak', 'afflicted' and 'foam' asthe meanings of कड़ा The moaning 'disease' given here differs from them. Possibly we should read रोई.
- 3. Dn. 5, 41 : संखम्म दीहजीहा.
- 4. For the meaning 'ox' for कसल- i.e. कसर- see note no 4 under verse 42 above
- 5 For बला पीणा see note no. 5 under verse no. 27 above.

Items identified : 2. कड़ी=राओ 'disease'.

- 3. दीहजीहा = खंखा 'conchshell'.
- 4 कसलेा=गावे। 'ox'.
- 5. बला=पीणा 'fat'.

*

[४२. उड्डा / औड्री]

DB. x x x x उद्दाये गेय भल्ल (ल्ल) सुकलं तुली वीणा । तोला तह यपसारा सुत्थाणायला भणिअ(ओ) ॥४८

R. ×××× उड्डाए गेय भण्णइ² सुकलं तुणी⁵ वीणा । तोलो (!) तह य ⁴पसारें।(!) ⁵सुतथा(!) णयले।(!) भणिओ ।।

Notes: The first line is short by six Matras in the beginning.
सुकलं meaning गेय 'song', पसारे। meaning तेलिंग
(i.e. तीणी 'quiver') and the last item (represented by either सुत्था or णयले) are either obscure or otherwise unknown For तुणी=वीणा cf. Dn. 5, 16 com.:
तुणओ सु खाख्यत्येविशेष:

Item identified : 3. तुणी = वीणा.

3. Concluding Remarks

At the end of this article we have given an alphabetical index of all those Bhāṣā words from the Prakrit portion of the GT. which we could isolate and identify with reasonable certainty. Their number is about ninetysix. About three fourths of these are recorded as Deśi words, with the same form and meaning, in Hemacandra's Deśināmamālā. A few words are such as have made their earliest appearance in late Apabhramśa or in the early stage of New Indo-Aryan, and a few others are not Deśi words at all, but quite regular Tadbhavas, deriving from Sanskrit.

Many of these words are familiar to us from Prakrit and Apabhramsa literatures. They form a part of the common stock of the literary vocabulary and there is nothing regional or dialectal about them. अंडया, अत्ता, अरियल्ली, इन्मो, उडअं, करमरी, कसरी, कृहिणी, गंडी, घोसं, चंग, चेलं, छिंछई, जबसं, ठेरो, णिज्झाइअं, तुंगी, थेणो, थेरो, धवो, पिच्चं, पुछी, पुसी, भिहुओ, भसला, मही, मेकला, मेहणिआ, लंपिक्खा, बालुंकी, सत्यारा, सा, सुढिय'. सेहिर' are found in the Prakrit and Apabhrams'a works irrespective of the regions of their authors. Moreover, in a few cases the same word is said to be characteristic of more than one dialects (e.g. अरियल्ली or अलियल्ली, कूलं, दुल्लगां, बलं). It is true that in a few cases the regional affiliation of the word can be clearly supported. बेडो (सौराष्ट्री), मंगले। and perhaps ढोलणो (मारवी), परिचा (मेदी if we take it to be connected with मेदपाट or Mewar), नाहर (गूज री), मंगुसा (पाञ्चालिका) are a few examples, as shown by us by drawing attention to the correspondences from the NIA, languages, But against this we have several cases in which a word known to be peculiar to a particular NIA. language is here said to be peculiar to some altogether different dialect. For example, derivatives corresponding to मंजुअं (किराती), टिप्पी (पारा), मेहणिआ (पाञ्चालिका) are found characteristically in Kashmiri, Gujarati and Marathi respectively. Besides, quite usual Prakrit words are said to be characteristic of Dravidian dialects like चालकी and काञ्ची or foreign. dialects like तुषारी, रामकी and यावनी.

On the whole we are left with the strange impression that somebody arbitrarily selected two hundred and odd traditional Desya Prakrit words and arbitrarily distributed them among the dialect names based on an exhaustively compiled regional list. For there seems to be very slight connection between the particular dialects and the Bhasa-words given under them, though it should be conceded that the text being considerably defective, we have before us only a mutilated picture, and hence it would be hazardous to draw any definite conclusion in this matter. Moreover we know that there was a tradition of long standing to define colloquial regional speech-forms on the basis of very few (about two, three or so) phonological or lexical features popularly felt to be differential. Bharata's Nāṭvaśāstra tells us about the characteristic frequency of certain sounds in accordance with the particular regions. Uddyotana's Kuvalayamālā (779 A.D.) enumerates and illustrates eighteen regional dialects. Bhoja's Śrngāraprakāśa (11th cent. A.D.) illustrates several regional varieties of Apabhramsa. The Rāulavela, composed probably a century or so later, gives a glimpse of eight different forms of contemporary dialects and Markandeya enumerates after an earlier authority4 twenty one varieties of 'Apabhramsa', besides the three main types defined by him and others. Eastern grammarians also mention them.

Lastly, it is not unrewarding to make some speculation about the source utilized by the author of the Gitālankāra for his Bhā-sālakṣaṇa chapter. From our identifications it is quite clear that numerous Deśya words were known to Hemacandra and the author of the GT. in the same form and in the same meaning. However, in several cases the actual expressions used to gloss the Deśya items, though synonymous, are different in the two works. The difference is much more than what we can account for by assuming adjustments enforced by metrical necessity. Hence we have to rule out Hemacandra's Deśināmamālā as a direct source for the Bhāṣālakṣaṇas of the GT. This leaves us with the alternative that both the DN. and the GT. have used the same Deśya lexicon as one of their sources. Incidentally this provides a fresh and strong authentication also for the Deśināmamālā.

4. Index of the identified Bhasa words

अकिया ४३ बहिणी sister. अदया २९ असई unchaste woman. अता १५ साम् mother-in-law. अरियही २४ वग्धे tiger. अस्टियली ८ वरघा tiger. भारासे। १३ विसकीडेा poisonous worm. इंदवह २२ इंदोओ a rainy insect. इब्मो ३५ घण्डदे। rich. उद्दर्भ २५ उटज grass-hut. उझसे। ३६ संताओ heat. ভহ্মন্ত ৭৭ জিভ্ৰ dish of rice and pulse, khichri. क है। ४७ राओ disease. करमरी २७ व दी woman imprisoned in war. कसरो ४२ थे।री ox. कसले। ४७ गावे। ox. कुहिणी ४४ रच्छा street. कुल २५, ३० army. कृवं २८ घाहाविअ cry for help in distress. केली ४४ वेसा prostitute. गंडी ३३ मंगलत्रं trumpet played on auspicious occasions. गाहृडि १० गाहे। crocodile. ब्रोडो ४४ पाओ foot. गोला ४२ माई cow. चे।सं १७ गिरिपल्लिया mountain village.

चंगं ३२ अकलंकं spotless. चेलं २६ पृष्टं garment. छाइल्लो १३ जाइक्खा lamp. छिंछड ३१ असई unchaste woman. छिप्पं ३४ पु**न्छ**ं tail. जगरं ३३ कवचं armour. जवसं ३१ घास grass, fodder. जीण' ४० जयन' horse's armour. झिल्लिरि ४४ मसभा mosquito. टिप्पी ४३ तिल्भा ornamental or auspicious forehead mark. ठेरा ४२ बुड़ेरा old man. डिअली ३९ थूणा post. ढयरे। ३८ पिझाओ goblin णिज्झाइअं ९ दिटठं seen. णित्थामे। २,९ असमत्थे। weak, lacking strength तामरं ११ रूवडअं beautiful. त्रंगी १२ रयणी night तुंड' २४ स्वर-वयण hog's snout. तणी ४८ वीणा lute. थीणका १० यद्धो puffed up. श्रेणा २७ चारा thief. थेरा १३ विरि चे। God Brahma. दीहजीहे। ४७ संखा conch-shell. दुल्लगं १०, १२ अणजुत्तं improper धवे। १२ भत्ता husband. नाहरं ३१ सिंघं lion. पंड ३३ किलिब eunuch. पड सुवे। १३ सदो sound.

परिघा ३३ परिवारा king's retinue. पहरठा ९ गविवञ्जा arrogant, पावा ३२ सप्पा snake. पिंडरी २६ चेारी theft. पिंडारे। ३९ महिसीवे। buffalo-herd. पिच्यां ४६ वारिअं water. पुल्ली ८ सीहे। lion. पुल्ली १३ वग्घा tiger. पूरणा १४ सुच्या winnowing basket. पूसी ४३ कीलें। parrot. बल' २७ पीण' fat. बलो ४७ पीणा fat. बेडा १० तरी boat. भडिला ३० काइर-परिसा a coward. महिओ २१ Krishna. भसले। १७ सार'गा bee. भाइलओ २९ वरन्तुरओ a horse of good breed. मंगलो ३४ अग्गी fire. मंग्रसे। १६ नडले। mongoose, मंजुअं ९ मंजिइट bright red. मंडलओ ३७ सुणहे। dog. मल्लाणिया ४३ जणणी mother. महे। ४४ जत्ता religious festival.

मेयले। २५ विंझा the Vindhya

मेहणिआ १६ वह-भइणी wife's sister. रच्छामओ २५ सणहे। dog. ल'भिक्खे। २६ चोरेा thief. लड़ २७ मोसो booty. वसुआइदं २३ सुक् dried up. बालुं की ३१ चिन्महिया cucumber. विच्छेओ १४ विलासी dalliance, amorous sport. विरहं १२ क्रमुं भिअं वत्थं bright red cloth (dyed with the Indian madder). वेलणअं ३६ लजियं shame, being ashamed. संगा २९ वल्गा reins. सत्थारे। २१ सेजा bed. सना ४१ मइ intelligence. १२, ३६ लच्छी wealth, Goddess of wealth. सायं ३९ तिक्खं sharpened. साहा ४० हत्था am. सीविञा ४२ सुई needle. सुढिय' ९ रीण' exhausted. सेहिर ३८ गवल wild buffalo. हीरी ४१ लजा bashfulness. हीरा १५ हरा God Śiva. हेर'वा २७ पडहा drum.

mountain.

Notes

- 1 Le Gitālamkāra, by Alain Danielou and N. R. Bhatt, Pondichery, 1959.
- 2 S. M. Katre, 'Names of Prakrit dialects', A volume of Indian and Iranian studies presented to E. Denison Ross, edited by S. M. Katre and P. K. Gode, 1939, pp. 192-197.
- In the Inquiries into the spoken languages of India (=Census of India 1961, Vol, I, Part XI-C(i), R. A. Singh, while attempting a critical survey of Middle Indo-Aryan languages and dialects, has also made use of the fifteenth chapter of the Gitālamkāra. He has tried to locate the various Prakrit dialects listed there on the basis of their names and has reproduced the text after Danielou and Bhatt. But he too has not attempted its interpretation.
- 4 See PS., introduction, p. 104-105.

IMPORTANCE OF JAIN LITERATURE FOR THE STUDY OF DESYA PRAKRIT

[1]

The term deśi (alternatively, deśya, deśaja etc.) has been used in several distinct but interconnected meanings. Ancient Indian works on poetics defined Sanskrit and Prakrit as languages of literature, The latter comprised a cluster of literary idioms (Sanskrit-dependent, considerably 'artificial' and highly stylized) like Maharastri, Apabhramsa, Paisaci, Sauraseni, Magdhi etc. Sanskrit and Prakrit had to be learnt through formal instruction, and manuals of grammar and dictionaries were periodically composed by way of text books. Prakrit grammars provided a set of rules for Sanskrit poets for turning Sanskrit into Prakrit of different varieties. On the basis of phonological difference and derivability from Sanskrit, Prakrit words were traditionally divided into three categories: Tatsama, Tadbhava and Desya. Those words which had the same sounds and meaning as their corresponding words in Sanskrit were Tatsamas; those which had modified sounds but the same meaning as their Sanskrit correspondents were Tadbhavas; those which were not derivable from Sanskrit i.e. not accountable either as Tatsamas or as Tadbhavas and hence considered to be substitutes for Sanskrit words of correspondingly same meanings were Deśva words.

The Desya class of words, traditionally used in literary works, were listed with meanings in special lexicons, like Hemacandra's Rayaṇāvalī (also popularly known as Deśināmamālā), which iself refers to numerous earlier similar compilations. The term desya or deśī was usually and most frequently employed in this sense. It designated that stock of Prakrit words which was found in the works of standard Prakrit authors, but which, unlike the rest of Prakrit words, was not derivable (according to the then accepted grammatical canons) from Sanskrit.

Manuals of Prakrit grammars had started to be composed from about the second century A.D. as shown by Vararuci's Prākria-prakāsa. Dešya lexicography too seems to have its beginnings there-about. Among the earlier authorities on Dešya words cited by Hemacandra we find the name of Sālāhaṇa, the famous royal poet and compiler of an anthology of Prakrit lyrics, the Saptasataka, who is generally assigned to the period of the second century A.D. From Hemacandra we also know that a dozen or more Deśya lexicographers preceded him, but their works are lost to us: we are completely in dark about them, excepting a few citations and allusions in later works.

The importance of the Jain writings for studying Desya words is twofold. Some Jain writers have made direct contribution to Desya lexicography. But the indirect contribution of the Jain literature in this regards is even much greater. In Sanskrit and Prakrit there is vast amount of literature, religious, exegetical and narrative, composed by the Jainas. It comprises canonical texts and their commentaries (Cürnis, Bhāsyas, etc.), religious monographs (Prakaranas) and the enormous amount of narrative works legendary biographies, tales, parables, anecdotes etc. The language of these works is marked by casual or liberal use of Desya words. Hence they are an invaluable source for studying the character, function and history of the Desis. But so far very little work has been done in this regard. Hence, in the present short sketch, no precise or reliable account of the materials available from those sources can be given. We offer just a few observations and rather haphazard illustrations with a view to impress on the readers the importance of studying the Jain writings from this view-point.

[2]

We come across a considerable number of Desya words in the language of the Jain canonical texts. The following few words casually gleaned from only two or three texts may serve to illustrate¹:

अल्लिय to resort to अन्छभल्ल bear ईसत्थ archery उड्डाह censure उच्छि'प्य thief's accomplice उद्दे हिया termite ओमं थिय headlong कक्खड harsh, fat कड्य curtain कर with maimed hands खडर gum खड़ा pit खरंट to smear खाडहिला squirrel खिंस to censure खेल spittle खाड log of wood गंडी cart गंडो bad horse गोल्ल olibanum गोल्हा the Bimba plant घ'वसाल। mendicant's home चंडिकिक्य angry चडगर multitude, pomp चडवेला slap चम्मेंद्र whip चिक्खल्ल mud चिलिक्रिली(णी) curtain चिलिब्बिल wet and sticky चोच skin, bark छल्छी bark ন্তাগ cow-dung छिबक touched ञ्चकरण shooing

छिवाडिया sort of book क्रश्वर razor-case छोड to release श्राम to burn झोड to cause to shed झोसण search टिट्टियाव to rattle डगल slice डहर child, small ৱান্ত branch द्धिंक crane तप्पण groats to turn on sides. थक्क occasion थिगगल patch दवदवस्स quickly पहेकर multitude पाणालि slap पामिच्च borrow पाराई pickaxe पिरिपिरिया kind of musical instrument पिरिली पुल पुल continuous पेह्ण peacock's feather पोंड fruit पोक्क swollen and depressed पोग्गल flesh पोद्व belly पोलंड to cross over

पोल्ल hollow
पोत्ती loin-cloth, piece of cloth
फिटिफस lung
बप्प father
बरुड matmaker
बिलकोली deceptive change of
voice
बोंदि body
बोड shaven-headed
भंडी cart
भिलिंग to anoint
मंगुस mongoose
मककोडय large ant

मिसिमिस to flare up boundary रूअ cotton रोड rice-flour लं चा bribe ਲਵੇ beautiful लेच्छारिय smeared वग्घाडी hooting वर्घारिय hanging down वल्लर field वहिलग beast of burden सएिन्झ neighbour संयराह quickly हंड deformed

Similarly a much bigger list can be easily prepared from the huge commetarial literature. Not only words but new formative suffixes and postpositions are found which afterwards gained wider currency in New Indo-Aryan. Several past passive participles extended with -ella- (like gaellaya-, jāellaya-, laddhellaya- siddhellaya, kahiellaya are found in Haribhadra's commentaries. tanaina used with genetive to signify 'due to, on account of, mūla meaning 'near' and ccaya as a possessive suffix are also attested from the same source.

The proportion of Desya words in the Katha-literature is still greater. We may note some Desya words from the Vasudevahiindi and the Kuvalayamālā.

From the Vasudevahimdi:

अवारी shop आठ useless उम्मत्ति infatuation कडिल्ल jungle कुल्लरिय sweetmeat-seller खोद्दी servant girl गणियारी cow-elephant घत् to throw

माढि armour

िं हिय vagabond नहरण nailcutter पइरिकक lonely परियंदणय lullaby वेंटलिय bundle मयहरस headman, chief मेहुणिया maternal uncle's daughter

Past passive participles in -elliya-आणिएह्लिय, उद्दालियह्लिय, दिण्णेह्लिय, पडिहृत्थेह्लिय, हुएह्लिय।

From the Kuvalayamālā:

अलीढ untouched

आडियत्तिय agent

आयल्लय yearning

आल्पाल meaningless prattie

आलय niche

आন্ত'ৰে to touch

आहोड़ to strike, to beat

उक्कं दुरुख्य longing

उक्कुरुड garbage-heap

उक्खुड् to pluck

उत्तावल hurrying

उप्पित्थ frightened

उप्पील multitude

उप्पाल to tell

उरुपुरुख cake

ओइ earth-digger

ओरहिल roar

आहंप scraping

ओलग् to serve

ओलेहड fond of

ओहर् to dccrease

कंकेल्ली Aśoka tree

क देष्ट lotus

कडरप multitude, stack

कडित gambling board

कणिकका dough

कल्ल dumb

कालवह bow

किह dirt

कु'भीरय aquatic creature

कुडंग bower

ক্কুভিভ্ন্ত hole, opening

कुह्य magic trick

कुहाड axe

केांटी sort of weapon

केाल्हुय jackal

के।सल्लिय gift

खल oil-cake

खल्लइय contracted

बुद् to fall short

खेडय shield

खेडू sport

गृहस्म harsh noise

गेंदी cluster of blossoms

गास morning

गासग्ग morning

घेष्प to seize

चिच्चकक adorned

चष्ट pupil

चडण्कड् to be restless

चमढ़ to destroy

चिलीणय sticky dirt

चीरि cricket

चु पालय round window

चेांपालय ,,

छुप्पण्ण्य man of taste and culture

छिव to touch

चूढ thrown

छे छड्या unchaste woman

ज'पाण palanquin

जामइल्ल watchman

झेालिया bag

ठककुर village-chief

हिं भ, डिं भरूय child

डेांबिलय Domba

ढंढा drum

तंडविय spread

त्र≋विय

्तरवारि sword

तिल्लच्छ eager

ति गिच्छ pollen

थुडुंक्रिय sulky

दिल्लि दिलिय child

दुष्परियल्ल unfathomable

देाज्झ offense, treachery

द्रंग village

निद्धमण sewage

निलुक्क् to hide

निब्बं to result

नेडडालि head-ornament

पच्चल able

पच्चुिफडिय bounced back

पडियम्म to serve

पसह expert

पुञ'ड youthful

पुल्लि tiger

पाट्टलय bundle

बईल्छ ox

वलामाडिय forced

बाल्छ to speak

भल्खंकी vixen मेल्लिय attacked मंड'द musical instrument मंगुल bad, ugly मदह small मुंट having, bodily defect मम्भर chaff-fire मुसुमूर to found म्यल dumb मेढी supporting beam मेल्ल् to leave, to place ₹¶ to crawl रक्खवाल guard रम्माडळ beautiful शिक्रोलि 10म ₹g to hum रेह to appear beautiful ন্তল } speaking लल्लोश ∫indistinctly ਲੀਬ child वंफिय eaten वच्च ordure वस्त्रर to say बहुइ to be sure वणे possibly

वलग् to mount वलत्था horse's stable वब्वीसय musical instrument वारुआ quickly वाहियाली riding ground विरय rivulet विसद्घ bloomed विहडएफड agitated त्रण dejected वेगसर mule वेल्लहल tender वेाक्किल्ल boasting वादह youth वेाल्लाह kind of horse संबच्छर astrologer सिलिंका small stick, chip सिलिंब child सुद्धिय exhausted सेराह kind of horse मावणय bed-room हलबाल din हलहल agitation हल्ल to stir हल्लफल agitated haste हिरिमंथ gram

Past passive participales in -ell- :

कयल्लय, छाएल्लय, जायल्लय, जिमियल्लय, घरियल्लय, पयल्लिएल्लय, प्रकोल्लय, पूरिएल्लय, मापल्लय, मारिएल्लय, मिलिएल्लय, महेल्लय, वियत्तिएल्लय, वुर्वेल्लय.

New derivative suffixes:

Diminutive : -ल, -इ, -इल्ल

Possessive : -इल्ल Habitual : -इर

Postpositions : मग्ग, तणय, संतिय

Redublicatives : अलिय-मलिय, आलण्पाल, अंछवियं छ, उन्वत्त-

परत्तय

Vasudevahimā and Kuvalayamālā are primarily prose narratives. Tales in verses also contain a good amount of Deśya expressions. Pādalipta's Tarangavatī is lost, but its verse abridgement tells us that the original contained numerous Deśya words². Apabhramśa had a stronger tendency to use Deśīs. Svayambhū's Paumacariya has about five hundred words³ and Puṣpadanta's Mahāpurāna about thirteen hundred⁴, which can be classed as Deśya. The Puhaicamdacariya of Śantisūri, composed in 1105 A.D. contains about eight hundred Deśya words⁵. These three works which have been studied from the point of view of the use of Deśya words may help to give some idea of rich amount of Deśya words and expressions that lie scattered over hundreds of Prakrit and Apabhramśa works.

[3]

In the field of Prakrit lexicography the only extent work prior to Hemacandra's *Deśināmamālā* is Dhanapāla's *Pāialacchīnāmamālā*, composed in 973 A.D. The proportion of Deśīs coutained in it is quite small as compared to the Tadbhavas, and nowhere it can compare to Hemacandra's work. Even then it has its value as a pre-Hemacandra source.

Next we pass on to the most extensive and outstanding extent work of Desya lexicography, viz., Hemacandra's Rayanāvālī or Desināmamālā. Hemacandra aimed at preparing an up-to-date authentic lexicon of Desya words for Prakrit writers and readers on the basis of various previous works. It was a very difficult and taxing task

that time in the field of Desya lexicography owing to disagreement among authorites, immature writers, ignorant scribes and poor condition of preservation of old texts. It highly redounds to Hemacandra's credit that, owing to his scientific attitude and practical approach, he succeeded in introducing considerable measure of order where disorder reigned. As a consequence, the Deśināmamālā had such a success that it eclipsed almost all the earlier Deśi lexicons, which in course of time went out of use and eventually disappeared altogether. The success achieved by Hemacandra in this regard owes much to his adoption of some definite principles and methods in compiling his work.

He sets up five criteria for defining the character and scope of the Desya words:

- (i) Those words which were confined to the ordinary speech of the peoples in various regions like Mahārāṣṭra, etc (i.e. words of regional dialects) were to be ignored.
- (ii) Those Prakrit words only which were handed down through the tradition reaching back to a hoary past were to be noted.
- (iii) Of these words only those were Desya which were not analysable as complexes of root and suffix, and which could not be derived from Sanskrit through the grammatical processes of Loss, Intrusion, Modification etc.
- (iv) Certain Prakrit words inspite of being analysable and derivable from Sanskrit, were to be considered Desya, if in their Sanskrit form they were not found recorded in standard Sanskrit lexicons.
- (r) If the meaning of a Prakrit word could be explained through metaphorical transfer as compared with the meaning of the corresponding Sanskrit form of that word, that word was not be considered Desya.

Hemacandra introduced certain methodological innovations. in the arrangement and presentation of his lexical material. Thismade for greater orderliness and clarity and enhanced the referencevalue of his work. He adopted an alphabetical order for the items selected, and under each letter-head he arranged the words according to the number of syllables. Items with multiple meanings were separately grouped. He composed verses to illustrate the use of the recorded items: these also provided the necessary context to remove ambiguities where the glossing word (in Prakrit or Sanskrit) had several meanings. Against the earlier practice, he excluded the verbal substitutes (dhātvādešas) from the lexicon and assigned them to the Prakrit grammar because of their specialcharacteristic of combinability with derivative affixes of Sanskrit origin. But for the sake of convenience and to avert any suddenbreak with the tradition, he also noted them in his commentary. on the Desināmamālā.

This commentary also served the purpose of a clearing house. Hemacandra critically evaluated earlier words in Desya lexicography, distinguishing inaccurate and authentic ones from their opposites. In his work he incorporated the materials from the latter sources. In numerous cases of doubt or disagreement, he selected and rejected after properly weighing the available evidence, noted the alternatives where he found them equally authoritative and left the choice open where no decisive evidence was available. We can well imagine the enormous effort involved in this sort of task, and appreciate the high scholarly spirit which saved the Desya lexicography from utter confusion and threatened oblivion.

Hemacandra's Deśināmamālā gives the meanings of about four thousand words. If we count a word with multiple meanings as so many separate words, then the number may go up by a thousand. On the other hand the total would go down by a few hundred if we leave out those items which are mere orthographic or phonological variants⁶ of some other items, or are such as can be shown to be the result of some confusion or error.⁷

Even a superficial examination of the Desis recorded by Hemacandra makes obvious some of its striking characteristics. A majority of these words are such that they are not known so far from any other source. The *Pāiasaddamahannavo* (and other modern Prakrit dictionaries) do not cite for them any other authority. It is however a fact that a considerable amount of Prakrit and Apabhramsa literature has remained as yet unpublished. Our experience so far shows that newly published Prakrit works are found to contain Desya words which had remained so far unattested from the published literature.

A considerable number of words of the *Desīnāmamālā* are such that though technically considered Desya by Hemacandra's criteria, are quite good Tadbhavas—and Hemcandra himself is fully aware of this alternative opinion. The following are a few instances out of hundreds:

अइहारा	आचराभा	ाव युत्
अइरजुवइ	अचिरयुवति:	नववधू:
अगुज्झहरे।	अ-गुह्यधर:	रहस्य भेदी
अग्गक्खं घे।	अग्रस्कन्धः	रणमुखम्
अग्गवेञ्चा	अग्रवेगः	नदीपूरः
अग्गिओ।	आग्निक:	इन्द्रगा कीटः
अंकु सइ अ	अंकुशित	अंकुशाकारम्
अनुअलवण्णे।	अयुगलपर्णः	अ•िलकावृक्ष:
अज्जे।	अय :	जिन:
अणेकज्झे।	अनेक + ध्य:	चञ्चल:
अत्थग्धं	अस्ताघम्	अगाधम्
અં ધંધૂ	अन्धान्धुः	कूप:
अप्पज्झे।	आत्म + ^ह यः	आत्मवश:
अरिहइ	अर्हति	नू तम्
अव गा	अपाङ्ग:	कटाक्ष:

अभिषणपुष्टो	अभिन्नपुट:	रिक्तपुट::
अवरङ्जो	अपर + खुः	अतिकान्तं दिनम्
अविणयवरो	अविन यपर:	जारः
अहिहर •	अहिग्हम्	वहमीक:
आ डर ं	आतुरम्	सं ग्राम: .
आ उऌ ਂ	आ कुलम्	अरण्यम्
आलयणं	आलयनम्	बासगृह म्
आस्रासो	आरुगस्यः	वृ इ्चिक: -
आलीवणं	आदीपनम्	प्र दी ष्तम्
इंदग्गी	इन्द्राग्निः	तुहिनम्
इ दमहकामुओ	इन्द्रमहाकामुकः	इव ा
उण्होदयभं डा	उष्णादकभा ण डः	भ्रमरः
क आ	यूका	यूका
ए क् कघरिहलो	एक + गृह + 'इल्ल'	देवर:.
एककस।हिहलो	एक + शाखा + 'इल्ल'	एकस्थानवा सी
औरत्तो	अवहप्तः	गर्विषठ:
ओलुग्गा	अवहरण:	नि:स्थामा
ओ सी स ं	अपशीष :	जपवृत्तम्
•हमणी	क्रमणी	नि:श्रेणिः
कुट्टाओ	कुट्टाक:	चम ^९ कार:
् अट्टा ^{रा} ुक्क डीर	कुटीरम्	वृति विवरम्
्युग्डार कु डुलेवणी	कुड्यलेपनी	सुधा
कुरुफ सणो	कुलपांसन:	कुलक् रह ः
् कुल्फ स्या ् कोलो	क्रोड:	- मीवा
्र काला स्त्रोसलिय	कौशलिकम्	प्रा भृतम्
कासालय खडजोओ	खयोतः	नक्षत्रम्
	ध द्रम्	लघु
હા લું	छ×म् खेदाऌ:	निःसहः
ं खेआ <i>ऌ</i> ,	खदाख. गणयित्री	अक्षमाला
• गणेत्ती -•- ० -•	गणायत्र। गा ण्डीव म्	धतुः.
ग ੰਫੀ ਕੰ •		गृत म् ू मृत म् ू
गय •	गतम्	Su. W

111 m 12	गगनरति:	मेघ:
गयण र ह	गतस्वाद+'उल'	नि:स्नेहः
गयसाडला गामे णी	त्रामेणी	छागी
	गोसं ज्ञः	मूर्ख:
गोस ण ो	घनवाही	इन्द्र:
घणवाही 	गृह चण् ट:	चटकः
घरघंटों		आ दश[®]:
घरयंदो ८००	गृहचन्द्र:	सातवाहन:
चप्रचिधा	चतुरचि ह्न :	लक्जा
चक्खुरक्षणी	चक्षरक्षणी	भु खम्
चिंघारुं	चिह्न 'आल'	उ . र् स्कन्द:
उडक्खर ी	ष्डक्षर:	विदग् धः
छ्रद्वण्णो	षदप्रज्ञ:	प्रदीप:
छाइल्लो	छाया+'इल्ल'	_
छिचणोड्भव ा	छिन्नोद्भवा	दूर्वा ~
जु द हीरो	अदहीर:	विश्चः,वासी
बुरम ड़ी	धुरमदी^र	नाभित:
ब्रु रहत्थे:	क्षरह स्त:	नापित:
छेत्तसोवणय ं	क्षेत्रस्वपनम्	क्षेत्रे जागरणम्
जच्छ दशो	यच्छ दः	स्बन्छन्दः
ज पेडिछरम्पिगरो	यद + प्रेक्ष् + इर	यो यद् हब्ट तदेव
	+ मार्ग् + 'इर'	मृगयते
ज हण रोहा	जघनरोह:	ऊरु:
जहाजाओं	यथाजात:	जह:
जालघडिआ	जाल घ (टेता	चन्द्रशाला
जेमणय"	जेमनकम्	दक्षिणहस्त:
जोइ गणा	ज्ये ।तिरिक्रणः	इन्द्रगोप:
इ भि ओ	दास्भिक:	्यूतकार:
ज्ञानकः जं दिणी	न[न्दर्नी	गौ:
णक्खत्तणेमी	नक्षत्रने मिः	वि•णु:
णस् खतणमा णहमुहो	नभोमुख:	घूकः
	नभोवहकी	विधुत्
णहवर्ला	-2-26-25 Aug	3

णाहिदाम	नाभिदाम	उल् के ।चमध्यदाम
णाहि विच्छेओ	नामिविच्छेद:	ज धनम्
णिभ सण	निवसनम्	! व स्न म्
णि अडी	निकृ तिः	दग्भ:
णिम्मं सू	निःइमश्रुः	ं तहण:
णिब्बित्तो	निवृ ⁸ त्तः	मु प्ते।त्थितः
णिहुअ'	निभृतम्	तृष्णी कम्
णीसी मिओ	नि :सी मितः	निव ंसित:
तं व किमी	ताम्रकृमिः	्ड न्द्र गोपः
तं बकु सुमो	ताम्रकुसुमः	कुरब कः
तिव्वं	तीवम्	अत्यर्थम्
तोवडी	त्रपुपद्दिका	· · ·
थिवनो	स् त्यानः	हप्त:
थिर सी सो	स्थिरशीर्षाः	नि भी क ः
थूलघोणो	स्थूलघोण:	सुकर:
येणिल्लिअ'	स्तेन∔'इल्लिलअ'	्ह त म्
थेरासण ।	स् थं विरास नम्	पद्मम्
दहिउष्फ	दिधपुष्पम्	न्व नी तम्
दिअधुत्तो	द्विजधृतः	काक:
दिअहुत्तं 🖟	दिवाभुक्तम्	पूर्वाह्णभोजनम्
दि आहमो	द्विजाधमः	भासपक्षी
दिव्वासा	दिग्वासाः	चामुंडा
दु अक् खरो	द्वचक्षर:	् ष्णः
दु ह् मो	दु र् म:	देवर:
दुम् मु हो	दुमु ख:	मर्केट:
दुरा लोभो	दुरास्रोक:	ति मिर म
घवलस डणो	घवलशकुन:	ह सः
धारावासो	धारावाश:	- मे ड :
धाराबासो	धारा क्षें:	मेघ:
धु अ गाओ	ध्रुवगाय:	अम्रः
धूमंगो	धूमाङ्गः	भ्रम रः

धूम दार ं	घुमद्वार म्	गवाक्षः
धूमद्धओ	यू मध्व जः	तटाक:
घू मधय महि सी ओ	धूमध्वजहिष्य:	कृत्तिकाः
धूममहिं सी	घू ममहि र्षा	नीहारः
धूमसिहा	भू म(श ेखा	नीहारः
प्रकरगाहो	पक्वग्राह:	मकरः
पक्कसावओ	पक्वइवापदः	शरभः
पक्को	पक्व:	समर्थः
पं चंगु र्ला	पञ्चाङ्गुलि:	एरण्ड:
पंड रंगो	पाण्डुराङ्ग:	रुद्र:
पयलाय भ त्तां	प्रचलाक-भक्तः	मयूरः
पल्लदटजीहो	पयस्तजि ह्व:	रहस्यभेदी
पवरंग	प्रवरा ङ्गम्	शिर:
पाड लसउणो	पाटलशकुन:	ह ं स:
वायव्यहणे।	पादप्रहण:	कुबकुट:
पिअ माह वी	प्रियमाधर्वा	कोकिला
षिट्ढ ते	पृ ष ठान्तः	.गुदः
थिंग ं गो	<u> पिङ्गाङ्गः</u>	मर्कट:
पुडइअ*	पुटकितम्	पिण डी कृतम्
बप्फ ाउलं	वाष्पाकुलम्	अत्युष्णम्
बहुमुद्दे।	बहुमुखः	दुर्जनः
ब भहर	ब्रह्म युहम्	क मल म्
बहुरावा	बहुराबा	शिवा
भयवस्यामे।	भगवद्यामः	मे। ढेरकम्
भाउउजा	भ्र ातुर्जाया	
भिसि आ	बृसिका	·····
भुक्खा	बुभु क्षा	
भूअण्णो	भू + य श :	कृष्टे खरे यज्ञ:
भूमिपिसाओ	भूमिपिशाच:	ता ल :
मइमाहणी	मति मेा हिनी	- सुरा
मडअ*	मृदु कम्	दीनम्

_		
मंगलस ञ् श	मङ्गल साध्यम्	बीजवापशेषं क्षेत्रम्
मज्जा	मर्यादा	
मजिझमगंडं	मध्यमकाण्डम्	डदरम्
मड वो ज्झा	मृत + वाह्या	शिविका
मडे।	मृत:	Nagagaranga
मणिणायहर*	मणिनागगृहम्	समुद्र:
मणिरइआ	मणिरचिता	कटिसूत्रग्
म'धाओ	मान्घाता	आढ्य:
मयणिवा से।	मदनिवासः	कन्दप [°] :
मह'गा	महा <u>ङ</u> ्गः	उ च् ट्र:
मसिण ं	मसणम्	रम्यम्
माहा नडे ।	महानट:	रुद्र:
महाबिलं	महाबिलम्	ब्याम
महा छवक्खो	महालयपक्षः	भाद्रपदे शाद्वपक्षः
महावल्ली	महावल्ली	निलनी
महासउणो	महाशकुन:	उ ळ्क:
मह ।सद्दा	महाशब्दा	शिवा
महुमुहो	मधुमुख:	विशुन:
माउआ	मातृका	दुर्गा
मारिलगा	मारीलग्ना	कु त्सिता
माहं •	माघम्	कु न्दकु सु मम्
मुहरोमराई	मुखरे। म राजि	भ्रू:
मुह लं	मुख + 'ਲ'	मुखम्
मृअलो	मूक 🕂 'ल'	मूकः
मेग	मर्यादा	
मेहच्छीर'	मे च क्षीरम	जल्म
रइल∓खं	रति ल क्ष्य म्	जबन्म
रच्छामञ्जो	रथ्यामृराः	হ্ৰা
र त्त न्छो	रक्ताक्ष:	ह सः
रत्तयं	रक्तकः	बन्धूकम्
रयणिद्धयं	रजनीध्यज:	कुमुद्रम्
		-

रसाओ	रसाद:	भ्रमरः
रसा ला	रसारा	मार्जिता
रिच्छभल्लो	ऋक्ष + भद्रः	ऋक्षः
रिट्टो	अस्टिटः	काकः
रेवईओ	रेवस्य:	मात्तरः.
रामलयासयं	रामलताशयम	उदर् म
ला सयविह ओ	लासकविहगः	मयूरः
वइराअणे।	वराचन:	बुद्ध:
ग°के।	पङ्क:	कलङ्कम्
वंगच्छा	वकाक्षाः	प्रमधा:
ब च्छ	पक्षः	पार्श्वम्
बणसत्राई	वनइवपाकी	कलकण्ठी
ब त्थउडे।	वस्त्रकुट:	वस्त्राश्रयः
वाय ण	उ पायनम्	भोज्यापायनम्
वायाडा	वाचाटः	गुकः
वालवासो	वालपाशः	शिरआभरणम्
वास ंदी	वास-ती	कुन्दः
वासवालो	वासपाल:	३व ी
वाह गण ओ	बिवाहगणकः	मन्त्री
बि लुत्तहि अ ओ	विछुप्तहृदयः यः	काले काय [ः] कतु [®] न जानाति
विसमयं	विषमयम्	भहसातकम्
विसारओ	विशारदः	धृहट:
विद्वुं डुओ	विधुन्तुद:	राहुः
बेआलो	बेतालः	अ≓धकारः
बेणुणासो	वेणुनाशः	भ्रम रः
सइरवसहो	स्वैरवृषभः	धर्मार्थं त्यक्तो वृष्भः
सइलासभो	सदालासकः	मयूर:
् सइसिलिंबो	सती-शिशुः	स् क स्द ः
सत्तावीस जोअणा	सप्त विशतियोतनः	इन्दु:
सहारु	शब्द + 'आल'	न्पुरम्
समुद् णतभी क	समुद्रनवनीतम्	अमृतम्, चन्द्रः
434 . 1 11.		

सिंगि णी	ग्रु ङिग णी	गौ:
सिसिर	शिशिर म्	दधि
सिह*डइल्लो	शिखण्ड + 'इहल'	बालः, मयूर‡
सिहरिणी	शिख रिणी	मार्जिता
सिहरिल्ला	शिखर + 'इल्ला'	मार्जिता
सिहिणा	शिखिनौ	स्तनौ
सिंही	शि ख ी	कुक्कुट:
सी रे।वहासिआ	शिरउपहासिका	छउजा
सीहणही	सिहनर्खा	करमन्दिका
ं युरजे	सुरज्येष्ठः	वहण:
सु हसाणी	सुखस्वाना	मयू री
स्रद्धो	स्य ध्वजः	दिन:
सोलहावत्तओ	षोडशा वत कः	श ह ः
हरिच दण'	हरिच-दनम्	कुइकुमम्
हरी	हरित्	शुकः
हिज्जो	ह्य:	क्रह्यम्
A 111 4	_	

Allied to the above, and more or less distinguishable from it is another group of words, whose Sanskritic origin is not so obvious, but which can be made out with some effort. Note for example the following words:

उछहलिओ	उद्ग्खलिक:	नृष्तिरहित:
ઝ ાં	तत् म्	विस्तारित <u>म</u>
अअंखो	अकांक्ष:	नि:स्नेहः
अइगय'	अपिगतम् (Vedic)	प्रविष्ट म
भइरो राज्य अंगूल	अतिराजा	आयुक्तः
अइणिअं	अतिनीतम् (Vedic)	े आनीत्म <u>्</u>
ईसओ	ऋष्यकः	मृगविशेष:
निउक्कणो	नि + वुक्क् + अन	वायस:
So also arami-sia.	जनस्य जनस्याको और	चेतिकचेत -

So also बुक्कणो=काक:, उबुक्क = प्रलिप्तम्, बुक्कासारो=भीरः विकिल्ले। = अलीकश्र : contain बुक्क 'to boast', 'to babble'.

दबहुअ	द्वाभिमुखम्	्र <u>ीश्ममुख</u> म्
दु भ्<u>युट</u>ो	द्वि+घुदट=पिव्	हस्ती
देहणी	from दिह 'smear'	े पहु:
आसिअओ	=आअसिओ=आयसिक:	लोहमय:
ओह सा, ओहरिसा	अवघर्ष:	चन्दनघष'ण-शिला
धृत्थं	ध्वस्त <u>्</u> म	नष्टस
पाडवण*	=पावडण'	<u> </u>
पब्बङ्जो	पव ^९ ज:	नखः
वडहारी	= बहुआरी = बहुकारी	सम्माज नी
भसुआ	from भवू + टका	शिव⊦
भुक्कणो	from भुक्क	द वा
माभीसिअ	from मा मेषी:	अभ य-प्रदानम्
मग्गाचणरो	मार्ग + अनु + इ + इर	अनुगमनश्रील:
रव भ ो	खकः 'from रु, to ro	aw मन्थानः
राअणिआ	रोदनिका	डाकिनी
व छ.	वपु: Vedic	लावण्यम्
वम्म ीस रो	मसे श्वर:	कामः
वलयंगी	बलयाज्ञी	वृति मती
सिंघुओ	(from सिंह + उक)	राहुः
सिण् हा	(from स्नुह)	हिमम्

Past Passive participles like ৰাজ (ন্থার), অন্ত (ন্থারির), বির (মূর) etc. are to be explained as analogical formations.

A very large number of words from those recorded by Hemacandra have been inherited by the New Indo-Aryan languages. They are very valuable for the history of non-Aryan element of the NIA. vocabulary and convessely, some uncertainties about the proper form and meaning of the Des'ya words can be cleared with the help of the corresponding NIA. words. For example सिंहा and not रिस्टा is the correct form (DN. 8. 29: सिंहा=नासिकानाद:) as shown by Gujarati सीटी etc. अब is the correct form and

(DN. 6, 66 पहट्टो = ज्ञातरसः) in view of Gujarati पेघा: पहडुआ (6, 8 = चरणाघात:) पहुआ as shown by Gujarati पाटु. Besides this lexical importance, the Desya materials of the Desināmamālā prove to be a valuable source for data on Middle Indo-Aryan word-formation in view of several suffixes. like -छ, -लल, -इ, -उल, -आल, -इअ, -इर, -इलल, -क etc.

From quite a different angle the Desināmamālā proves further its great importance for us. Numerous items are useful for shedding light on the cultural condition prevalent in the later part of the first millenium. Names of severai popular festivals, customs and games are recorded by Hemacandra. We may draw attention to the explanations of words like अइराणी, अभिण्णपुढ़ा, आइण्पण, आण द-वहा, उड्डिआहरण, अता, गंदीणी, छिंछटरमण, णवलया, थेवरिअ, पाञलओ, महाल-वक्सा, फण्ण, वारल्ली, सइवसहा, स्विम्ह्ओ etc. We have here very rich materials for studying religious, sociological and economic aspects of the society of those times.

Trivikrama's Prakrit grammar is almost wholly dependent upon Hemacandra for its section on the Desya words, and it is quite obvious that Hemcandra standing at the dawn of New Indo-Aryan also symbolized the end of fresh lexicographical activity in Prakrit.

Before we close this brief account it is necessary to point out a third source of information about the Desya expressions, for which all the credit goes to the Jain writers. Since the period of the Cūrnis Jain writers practised a style of writing in which Prakrit was liberally interspersed with Sanskrit. From about the eighth century another style becomes current in which the Sanskrit is characterized by an undercurrent of Prakrit that becomes in course of time more and more pronounced and vigorous. The narratives found in the Bhāṣya, Carita, Dharmakathā, Kāvya and Prabandha literature of the Jainas are composed in a peculiar kind of Sanskrit, the so-called Jain Sanskrit, which contains numerous Prakrit (and later on, New Indo-Aryan) words, expressions and idioms

in a Sanskritic garb. Upamitibhavaprapancakatha of Siddharşi, the canonical commentaries of Abhayadeva and others, Hemcandra's Trişaştiśalākāpuruşacarita, Harişena's Bṛhatkathākoşa and the Prabandhas of Merutunga, Rājaśekhara and others are the typical examples.

Some of these texts have been already studied from this point of view,8 but the literature being vast much remains still to be done.

It is hoped that even this sketchy account would not fail to impress upon the reader the great value of Jain writings for the study of the Desya words and hence for the history of Middle and New Indo-Aryan. This field of study has unfortunately attracted very few scholars. So long as this area is not fully explored, we cannot hope to fill large gaps in the history of Indo-Aryan.

Notes

- 1. For two small efforts by way of making a beginning in this direction, see the following two articles of mine: तीन अर्घ मागधी शब्दें। की कथा (मुनि श्री हजारीमल स्मृति-ग्रंथ). जण देश्य आगमिक शब्दे। (माहनलालजी स्मारक-ग्रंथ)
- तो ऊच्चेऊणं गाहाओ पालित्तएण रइआओ ।
 देसी-पयाइं मेातुं संखित्तयरी कया एसा ॥
- 3. See the word-index to the three volumes of Svayambhū-deva's *Paumacariya* edited by H. C. Bhayani, 1953, 1960.
- 4. See R. N. Shriyan, A Critical study of the Desya and rare words from Puspadanta's Mahāpurāṇa, and other Apabhraṁsa works, 1969. The Paumasiri-cariya of Dhāhila (ed. by M. C. Modi and H. C. Bhayani), has numerous Desya words. The number for the Vilāsavaikahā of Sādhāraṇa (ed. R. M. Shah) has about one hundred and fifty.

The word-index given in other Apabhramsa works like the Karakanda-cariya, the Jambūsami-cariya of Vīra etc. also contain Desya words.

- 5. See the word-index (prepared by R. N. Shriyan) to Śāntīsūri's Puhaicamdacariya edited by Muni Ramnikvijaya, 1972. In the Index of Deśya words given in the third Appendix to Śīlānka's Caupannamahāpusisacariya (ed. by A. M. Bhojaka, 1961), composed in 869 A.D. some five hundred items are listed. Similarly from the Ākhyanakamanikośavrtti of Āmradeva (ed. by Muni Punyavijaya, 1962), composed in 1134 A.D. about four hundred Deśya words are noted in the third Appendix to that work. Actually both those works contain many more Deśya words.
- 6. See H. C. Bhayani, Studies in Hemcandra's Deśināmamālā, 1966.
- 7. See H. C. Bhayani, 'Origins of multiple meanings of Desya words', Vidya, 9. 1967, pp. 30-37.
- 8. For an account of the studies in Jain Sanskrit by M. Bloomfield, J. Hertel, M. D. Desai, Helen Johnson, A. N. Upadhye, B. J. Sandesara, J. P. Thakar and J. Deleu see H. C. Bhayani, see Introduction to *Prabandha-pancasati*, edited by Mrgendra Muni, 1968, Surat.

Postseript: In 1988 Jain Vishva Bharati of Lādnūn has published Desī Śabdakośa edited by Muni Dulahrāj which is a compilation of Deśya words from (1) Jain Āgamka literature and Hemacandra's Desīnāmamālā, (2) from the Pāiasaddamahannavo and the word-indexes given at the and of various Prakrit and Apabhramśa published works, and (3) from the list of Dhātvādeśas given in Prakrit grammars.

NOTES ON SOME DESYA WORDS

1 Some non-standard Sanskrit words in the Subhāṣitaratnakoṣa (1100 A.D.)

1. Ap. नालिअ, Sk. नालिक 'a fool'.

For various reasons, a number of stanzas of Vidyākara's Subhāṣitaratnakoṣa (edited by Kosambi and Gokhale, HOS. 42, 1957—here abbreviated as SRK.) presents difficulties of interpretation. One obvious source of these difficulties is Prakritisms or dialectal expressions. The present effort to clear up a few of the obscurities is chiefly based on Middle Indo-Aryan materials and it is intended to supplement Ingalls' discussions in the Notes to his translation of the Subhāṣitaratnakoṣa (= An Anthology of Sanskrit Court Poetry, HOS. 44, 1965—here abbreviated as SCP).

The opening verse of the श्रीष्मत्रज्या of the SRK. (verse 191) is as follows:

विश् लेषे। जिन्त: प्रियेरिप जनैरुज्जृम्भितं नालिकैर्
भित्रेणापि खरायितं तरुणया दीर्घायितं तृष्ण्या ।
गुर्वा वल्लभता जैरेरिधगता देश्वाकर: सेव्यते
हा काल: किमयं कलिनं हि न हि प्राप्तः स घमागमः ॥

It is a punning verse, and contains the trope Chekāpahnuti. The words are to be understood as applying ostensibly to the Kali-yuga, but really to the advent of summer. Ingalls translates ভুজুমিন নান্তিই: as 'What things do not burst forth, my friend? (or, lotuses have blossomed).' As applying to the Kali-yuga, Ingalls understands নান্তিই: as ন আভি ই:. But the resulting sense is far from satisfactory. Any acceptable interpretation of নাল্টি: should harmonize with the other unpleasant qualities enumerated in the verse: estrangement from the loved ones, roughness of friends, popularity of stupid persons, cultivation of vices, etc. The interpretation of নাল্টি: offered in the SCP violates this condition.

The fact is that नालिक here is a homonym. It means (1) 'a lotus', and (2) 'a fool'. In the latter meaning, it is the same as Apabhram's a नालिख. Under Siddhahema 8, 4, 422 (15) Hemacandra has given नालिख and वह as substitutes for मूढ in Apabhram's a, and has cited the following illustrative verse:

जो पुण सणि जि खसप्फसिहूअउ, चिंतइ देइ न दम्मु न स्अउ । रइवसभिस करम्गुल्छ।लिउ, घरहिं, जि कोंतु गुणइ से। नालिउ ॥

'He who ruffled by amorous feelings just keeps thinking and thinking without spending a dramma or a rupee, and who wanders hauntedly hither and thither is like a foolish fellow who goes on brandishing his lance just inside his home'.

Again Deśināmamālā 5, 9 gives नालिक (= मुग्ध, 'foolish') as the second meaning of the Desya word तलसारिअ.

So उज्ज्ञुम्भितं नालिकै: means 'Fools have flourished (or, lotuses have blossomed).'

2. Pk. णिस्सह, णीसह, Sk. निःसह 'languid'.

Verse No. 202 in the प्रीष्मत्रज्या of the SRK. is a pen-picture of the water-buffalo in summer. The fourth line with Ingalls' translation is an under:

मरने। वारिणि दूरनि:सहतया निदायते सैरिभ: ।

".. with all annoyance gone, he [= the water buffalo] sleeps."

In the Notes दूरनि:सहतया is similarly rendered as 'with annoyance far removed'. But नि:सह here is the same as Pk. जिस्सह, जीसह 'languid', 'sluggish', 'weak'. Generally it refers to the limbs of the body or general physical condition. For example in the illustration cited under Siddhahema 8, 1, 93 (निस्सहाई' अगाई) it qualifies अंग. In Lilāvai 1101 जीसह qualifies वयज 'face' (The eloquent langour apparent on the face of a lady waking up is said to arouse jealousy of the cowives) Hāla's Gāhākosa (or Gāthāsaptasatī) 1, 65 has जीसहें अंगेहि' 'with languid limbs.'

Monier Williams records it as occurring in the Sisupālavadha, Kathāsaritsāgara and Rājatarangiņī.

It is significant for the diction of the SRK. to note that some Desya lexicographers considered संश्य (with the meanings 'a carriage ox' and 'a buffalo') to be a Desya word.

3. Pk. जलदा, Sk. जलादा 'a wet towel'.

SRK. 212 starts its list of summer refrigerants with the জলহাs that are said to serve for an upper garment.

SCP. freely renders जलाई: संख्यान as 'A bodice soaked in cooling water.' Strictly speaking जलाइ (fem.) means 'a wet cloth' (used as a garment etc.). It conventionally occurs among the cooling remedies in swoon or for allying the burning caused by love-in separation. See for example Caupannamahāpurisacariya, p. 213, 1.3; Paumacariu 15, 11, 7; 18, 5, 4 (here uncommonly neuter); 22, 5, 5; 26, 8, 7; Svayambhūcchandis 1, 72 (6); Paumasiricariu 2, 67. Monier Williams has recorded जलाई। from the Bālarāmāyaṇa and the Vikramāṅkadevacarita, and जलाईका from the Kādambari. Hemacandta's Abhidhānacintāmaṇi records जलाई। in the sense of क्लिन्नासस, At Śiśupālavadha 1, 65 it has the specialized meaning 'a wet tan.'

4. Ap. ਜ਼ਲ (fem.), Sk. ਜ਼ਲਾ 'fierce heat'.

Ingalls translates ব্রবামুন্তানতস্থতাভ্রাতা (SRK 232) as 'the glittering flame of underwater fire' (SCP. 232). On স্থানা he remarks that it is unexampled and given by the native lexicons with the meaning 'sunlight', 'brilliance'.

It the form হাল (later হাল) the word was current in Prakrit, Apabhramsa and Old Gujarati-Rajasthani literatures. It occurs in Śilāńka's Caupannamahāpurisacariya (9th Cent.) on p. 12, 1.12: 'The rows of clouds allayed the burning that was caused by fierce

^{1.} See Hemacandra's Deśināmamālā 8, 44, commentary. Gāthā-saptaśati, 2, 72 uses सेरिह in the sense of a buffalo.

heat' (काल'विणीहि' समिश्रो झलस'ताचा). Compounded as विरहन्झल (metrically it should be विरहझल) it occurs at *Samdeśarāsaka* (possibly 13th cent.) 137 f:

उल्हवइ ण केणइ विरहज्झल...।

'None allays the fierce heat of separation.' 2

As झळ, it occurs in st. 113 (थां दिस झळ रहियाह ।) of the Old Rajasthāni ballad *Dholā-Māru*. On the other hand in the Old Gujarati verse-tale *Mādhavānala-Kāmakandalā* composed by Gaṇapati in 1528 A.D., झळ is used in a description of the mounting heat of the month of Vaiśākha: वैशाखई झळ वाधती (8, 35).

Hindi श्र. श्र. means 'intense burning, flame'. For a few other NIA. derivatives see Turner's A Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages (= IAL.), entry no. 5354.

These occurrences leave no doubt about the meaning of স্থানত (স্থান). The meaning 'sun-heat' noted in Monier Williams on the basis of native lexicons comes fairly near to what we found from the actual usage. But 'brightness' is wide.

The স্থাতা with the meaning 'mirage' (মৃগন্ত্ৰা) recorded at *Deśināmamālā* 3, 53 seems to be a semantic development from the metaphorical meaning (বাহ্ > নূল্যা).

5. Pk. Sk. कਲਜ਼ਰ 'aversion, loathing'.

The line कलमले। त्किलित न तु मे मन: (SRK. 381) is translated by Ingalls as 'But my heart was never restless'. About कलमल, he remarks that it is a Prakritism and points to Hindi कलमल 'restless, trembling' in support. The Pāiasaddamahannavo (=PSM.) gives

^{2.} The rendering বিংहাণিবভৰাতা in the Sanskrit commentary seems to be based on the fancied derivation of স্থান্ত from ভৰাতা.

^{3.} Properly speaking Hindi কতমত as also কিত্ৰিত, কুত্ৰুত means 'wriggling'.

'pangs of love' and 'trembling, disgust' as the meanings of কতনত. The meaning 'disgust' fits better in the passage it cites.

In Svayambhū's *Paumacariu* (9th Cent.), the word occurs in a passage (12, 12, 7-8) describing the state following frustration in love:

'दससयगइहे वि विरहम्गि सुरु ।

पजलइ उपायइ कलमलउ, उण्हउ ण सुहाइ ण सीयलउ'।

'And Sahasragati's fire of Viraha flared up. It produced in him an intense loathing—nothing cool or hot could comfort him.'

The gloss on कलनल at 36, 2, 6 in the Apabhramsa Mahāpurāṇa of Puspadanta (972 A.D.) explains it as ईंड्य जिनतिखेद: '(mental) depression born of jealousy'.

Accordingly the line from the SRK, can be precisely rendered as 'But my heart was never filled with restless aversion'.

হল্কতির literally means 'boiled', hence 'utterly restless'. Compare Pk. ভক্ষ র, Gujarati ভাষতন্ত্র 'to boil'. Compare the New Indo-Aryan materials under *Utkalati* (1716) in IAL.

6. Pk. Sk. ਗ਼ਰਤਜ਼ਰਾ 'sudden heaving', 'flush'.

In SRK. 532 (= Amarusataka 12), the words of the young lady that delayed her love's departure are described as ম্বাচণ্যান্ততথ্যতা. Here প্রত্যপ্রতা is usually taken to mean 'the sound of falling drops'. Monier Williams records also another shade of meaning for the word, namely, 'the sound of flapping' (of elephant's ears, etc.).

In the Caupannamahāpurisacariya, झहरुझलू occurs twice as a verb. In both the places it signifies the heaving or throbbing caused in the cloud-mass by violent winds. Once the cloud-mass is compared to a drove of buffaloes driven by a cowherd girl খি' ভাৰোলিখাহৱ' ব সক্ততভ্ৰান্তই সিहিখ महिउल महिसव'द' व । p. 12, 1.14)- Else-

^{4.} The printed text (Prakrit Text Society Series No. 3) has पि डास्चालियाइद्ध. But obviously it should be corrected as पि डास्चालियाइद्ध.

where the clouds are said to thunder due to the heaving arising from the oscillation caused by the wind (পৰত दोलणझहलज्झलं तघणमुक्करन । p. 139, 1.17).

'Sudden heaving, flushing' seems to be the basic meaning of স্থান্ত (or স্থান্ত প্ৰতিষ্ঠান্ত). Associated with ৰাচ্ব, it probably signifies the tremulous flush of tears in the eyes, as we find in the Gujarati word স্থান্ত (neut. pl.). Compare also Hindi স্থান্ত 'shimmering', স্থানা 'to move a fan to and fro', etc., as given under IAL. 5351.

At SRK. 917 b, the rising moon is described as destroying darkness by means of झलज्झला of the mass of light ज्यात्स्नाजाल-झलज्झलाभिरभिता छुम्प-तमन्धं तयः।). Here also the rising moon-light is coceived as some streaming liquid with flushing movements.

7. विङ्ख 'to step, to walk'.

विङ्खन्ति कमदेखितामयभुजम् (SRK. 522b) is translated as 'they should walk with successive swinging of each arm' (SCP. 522), and Ingalls considers the word विङ्खन्ति heres uspect.

बीङ्ख 'to toss to and fro, to swing' is attested in the Panca-vimsa-Brāhmaṇa (Monier Williams). Besides this वीङ्खा and वीखा in the sense of a particular mode of moving is recorded from some late works and lexicons. But Hemacandra's Abhidhānacintāmaṇi (st. 1500) notes वीङ्खा among the words meaning 'walking' (the other words of the group are गित, विहार, ईया, परिसर्प and परिक्रम).

Further Old Rajasthani has the word वीख (fem.) 'a foot-step', 'a foot-print'. It occurs in the *Dholā-Māru* (st. 384, 498; diminutive वीखडिया at 366, 367). These occurrences authenticate विङ्खन्ति in the SRK. They also show that by about the tenth century वीङ्ख had developed the sense of walking.

8 Pk. गंज्, Sk. गञ्ज 'to overpower, to subdue, to conquer'.

The word अगिकत in the phrase साम्राज्यमगिकतम् (SRK. 564 b) is understood by Ingalls in the sense of 'Uncontemned, unquestioned' on the basis of गज्ञ 'contempt'.

But गंज is common in Late Prakrit and Apabhramsa literatures in the sense of 'subdue, overpower, conquer.' Compare for example त्रगरिसगंजिओ इव 'as if overpowered by his greatness' (cited in the PSM, under गंजिअ) and अवरोप्पर जोअंताह सामिउ गंजिउ जाह 'whose master was overpowered even while they were looking at one another' (Siddhahema 8, 4, 409). Gujarati गांज्या जच्च 'to be overpowered, to yield' also preserves the original meaning to a degree, Hence साम्राज्यमगञ्जितम् would mean 'an unconquered or invincible kingdom'.

The meanings 'to disregard, to despise, to prove superior'; etc. attached to गंज are secondary.

9. Pk. अच्छोडिअ, अवस्वोडिअ, Sk. आच्छोटित 'abraded, scraped, rubbed'.

In the forms आच्छोटित and आचोटित the word occurs four times in the SRK.

नखैराचोटिता पार्श्व यो: (677 a) हलाग्रात्कीण यां परिसरभुवि ग्रामचटका लुठन्ति स्वच्छं दं नखरशिखराच्छोटितमृदः । (1162 ab) चरणाचे।टितमृखाः । (scil. बके।टाः) (1185 b) खरपुटेनाचे।टयन् भूतलम् । (scil. उक्षा) (1186 b)

Ingalls suggests the meaning 'struck' besides 'torn' given by Schmidt.

Prakrit অভ্নতাই and its derivatives have two different meanings, viz. (1) 'dash', and (2) 'draw or pull with violent rubbing'. In the latter sense it is attested in st. 160 of the Gāthāsaptasati (অভ্নতা ভিন্ন বিশেষ্ট্র বিশ্বিষ্ট্). The alternative form अक्खोइ seems to have mostly

the second meaning, if we judge from the instances recorded in the PSM.

In the four passages cited above the meaning 'abraded, scraped forcefully' suits all the contexts. The first passage refers to the nail scratches on the sides; the second, to the sparrows scraping with their clawtips the soil in the furrows and rolling thereon; the third, to the herons rubbing their mouths against their feet; and the last, to the charging bull grazing the ground with his hoof. For NIA, derivatives, see IAL, 1033 (*āksotavati).

10. Pk. परिमलण, Sk. परिमलन 'rubbing all over'.

In the verse from Śriharsa's Ratnāvalī (2, 12 = SRK. 709), परिमलन is a Prakritism, having the same meaning as Sk. परिमह न. परिमलन and परिमलन occur respectively at Gāthāsaptasatī 5, 28 (परिमलन and 7, 37 (परिमलिआ गोवेग) besides elsewhere. मल्⁵ is given as synonymous with मह (= Sk. मृद्-मक्) in the Prakrit verblist of the Siddhahema (8, 4, 126) and its numerous occurrences are noted in the PSM. Sk. परिमल 'fragrance' (lit. 'that which results from rubbing, crushing or trituration') has the same source as परिमलन.

11. Deśya karani, Sk. karani 'form, shape'.

In the first line of SRK. 878 (=Viddhasālabhanjīkā, 2.22) the sun's orb is described as निय⁸द्वासरजीविषण्डकरणि विश्रत्, which is translated by Ingalls as 'bearing the rolled-up life of the departing day'. In the Notes he has given 'accumulation', 'globulation' as the meaning of piṇḍakaraṇi.

But karani means 'form', as correctly noted in MW. The word appears to have been adopted from Prakrit by later Sanskrit writers. At PL. 239 (Item 786) it is noted with the meaning rāva 'form'. At DN 2, 7 also it is recorded in the same meaning, but with Hemacandra's significant remark in the Commentary that the

^{5.} For its NIA. derivatives see IAL. 9870 (*marati).

word was to be counted as Desya only if it was not seen used in Sanskrit. PSM. has noted the word In the senses of 'form' and 'resemblance' from several sources. It is found in Hāla's Sattasaī. In Gāthā no. 300, the moon reflected on the beloved's cheek bearing the lover's tooth marks is said to carry अंतासिंद्रिअसंख्वतकरणि i.e. the form (or resemblance) of a conch vessel tinged inside with red-lead. The commentators have rendered karaṇi variously with Sk. rūpasādṛṣya- and ākṛti- In the Gāthā no. 498 of Jineśvarasūri's Gāhārayaṇakoṣa (edited by Bhojak and Shah, 1975) the bracelet slipped down from the wrist of a Virahiṇī is described as पिम्म-महीहहिवियहास्त्रास्त्रिश समुज्बहइ i.e. 'bearing resemblance to the impressive basin of the tree of love'. Thus karaṇi served the same purpose as sanābhi, chala, viḍambin etc. used to imply Utprekṣā.

In the verse under discussion নিয় বুরামনে নির্থিত কর্ণী is equivalent to প্রতিত্ব তি On account of its fading warmth the orb of the setting sun appeared as if it were the lump of Day's soul on the point of departing from its body. The image is that of a dying person in his last moments, his hands getting colder and colder. There is the usual pun on kara. niryat goes with jivapinda—and not with divasa—.

Rājasekhara has similarly used karaṇī- at Balarāmāyaṇa VII 69d, where golden chaplets dropped from the sky are said to resemble hatchets raining on the battle ground: स्वर्णापीडे: खमुक्तद्रु - घणकरणिभिन्तिनो युद्धमार्ग: scil. (स्त्रित:). In the twelfth century Malayagiri while defining the technical term sthāpanā 'representation' has quoted the following Sanskrit verse:

यतु तदथ^६वियुक्तं तदभिप्रायेण यच्च तत्करणि । लेप्यादि कर्मे तत्स्थापनेति क्रियतेऽहाकालम् ॥

In the discussion on the subject he has used ākāra- and akṛti-synonymously with karaṇi- The first line in the above citation is just Sanskrit rendering of the following first line from Jinabhadra's definition of sthāpanā: ज' पुण तयत्थसुन्न' तयभिष्पाएण तारिसागार'। Here Pk. āgāra- is translated with Sk. karaṇi-

12. Sk. pratisadṛśa- 'matching', 'quite similar.'

Ingalls thinks pratisadyśa occurring at SRK. 866d to be strange. It is evidently a Sanskritization of Pk. padisariccha or padisārikkha. Immediately I cannot give citation, but other similar Prakrit formations hardly leave any doubt about this matter. Compare Pk. tulla- and paditulla 'similar', tulla- and samatulla- 'equal', sarisa- and samasarisa- 'alike'. padi (and sama in specific cases) started as emphatic prefixes, but in later usage they tended to be redundant or pleonastic, as can be seen from Pk. padithira-(=thira), padithaddha-(=thaddha-) padibhagga-(=bhagg-), padiruddha-(=ruddh'a) padisammuha- (=sammuha.) etc.

13. Sk. dhyāma- 'charred', 'blackish'.

dhyāma- in भूमध्यामपुराणचित्रस्त्रता (SRK. 878 d) is a wrong Sanskritization of Pk jhāma-'burnt'. jhāma is quite productive in Prakrit as can be seen from jhām- 'to burn', jhāmia- 'burnt', 'darkened', jhāmaṇa- 'burning', jhāmala- 'dark', jhāmalia 'darkened' etc. Sanskrit dhy- being the most usual source of Prakrit jh-, Pk- jhāma- and jhāmala. were Sanskritized as dhyāma and dhyāmala-. Jain Sanskrit it especially noted for such Sanskritizations. MW. has recorded dhyāmalikṛ- from the Dharmasarmābhyudaya. a Jain work of the thirteenth century, besides dhyāmikaraṇa- and dhyāmikṛta- from the traditional lexicons. dhyāma-, dhyāmikaraṇa-, dhyāmikṛtya- and dhyāmikṛta- occur in Buddhist Hybrid Sanskrit. Vide Edgerton's Dictionary of BHS.

Actually Pk. jhāma— derives from Sk. kṣāma— 'charring, scorched' (from kṣai— 'to ourn'). For the NIA. derivatives see IAL. under *jhāma— (entry no. 5366). Turner has not noted dhyāma—.

14. Pk. uvvasa-, Sk. udvasa- 'deserted'.

In SRK. 964c the moon at the dawn is described as ভর্মান্য ন্যুভন্তস্বভন্তি 'pale as an empty honeycomb'.

According to Ingalls chatra- means 'honeycomb' (compare Hindi chattā 'ditto') and its qualification udvasamadhu means 'dried

of honey'. He has also noted that udvasa- meaning 'exiled, gone' is unrecorded.

In Pk. uvvasa- means 'deserted'. We find in the Puhavicam-dacariya of Śāntisūri (composed in 1105 A.D., edited by Muni-Ramnikvijaya, 1972) the expression uvvasa-desa 'a deserted country'. Udvasa appears to be a Sanskritization of Pk. uvvasa-. Probably udvasamadhucchatra- is made up of the two constituents uvvasa- 'deserted' and madhucchatra. 'honeycomb'. Like madhukośa-. madhujāla- and madhupaṭala, madhucchatra- means 'honeycomb'. The Hindi derivative comes possibly from its abbreviated form.

15. Sk. kārpaţika-, Pk. kappadia- 'ragged beggar'.

In Prakrit, Apabhramsa and Sanskrit usage the word mostly means 'a beggar in rags (karpata)'. 'Pilgrim' if at all can be only a contextual sense. NIA. derivatives too have preserved this meaning. Vide IAL. no. 3071. Ingalls has taken rathyākārpaṭika at SRK. 980a to mean a pilgrim in the street, but it is better to render it as 'a street beggar'.

Abbreviation: SRK = Subhāṣitaratnakoṣa of Vidyākara edited by Kosmbi and Gokhale, 1957. SCP = An anthology of Sanskrit Court poetry by D. H. H. Ingalls, 1965, PSM = Pāiasaddamahaṇṇava. MW=Monier-Williams' Sanskrit Dictionary. IAL = A comparative dictionary of Indo-Aryan languages by R. L. Turner. PL=Dhanapāla's Pāialacchīnāmamālā. DN=Hemacandra's Deśināmamālā.

H. From Mūlasuddhi-prakaraņa-vrtti of Devendra-sūri (1090 A.D.)*

The Prakrit of the Mūlasuddhi-vṛṭti has numerous words, constructions and idioms which are significant for the study of Apabhramsa and Early Gujarati. The following few words and forms, picked up in a casual reading of the first thirtyfive pages only, would suffice to illustrate the point (Abbreviation: DN. = Desināmamālā of Hemacandra. SH. = Siddahema of Hemacandra). छिछड्टेया (3, 56) पुंश्रली (cf. DN. 3, 39; SH. 8, 2, 174; PC. 5, 13, 9 etc.)

डिंडिय (3, 65) 'wayward rascal' (cf. the Dimidins of Lata described in the Pādatāditaka Bhāṇa.)

इंदायग (20, 3) ईन्द्रगोपक (cf. इंदोअ at Samdesarāsaka, 143).

- ब्राइ (5, 6, 7) 'tree'. (cf. ज्ञाइ 'thicket' DN. 3, 57; Guj. 'tree'.) खोला or कोला (fem.) (5, 15; 17) 'front portion of the upper garment covering the lap'. (cf. खेलो (masc.) 'ibid' DN. 2, 80; Guj. खे।ळो 'ibid', 'lap'.).
- वाहारण (5, 7) 'act of sweeping' (cf. बहुकर 'sweeper', बहुकरी 'broom'.

 Abhidhānacintāmaṇi, 363, 1016; बडहारी, बाहारी 'broom' DN.

 6, 97; Hindi बुहारना, बुहारी.)
- भनुल्लग (5, 11, 5, 6, 25) 'some sweetmeat etc. sent as present to one's kin living afar', from Pk. भत्त, Sk. भक्त and the diminutive suffix= उल्लग.). cf. Guj. भात लूँ 'home-made lunch taken outside'.
- ৰকভন্তী (?) (5, 19) The verse-line in which this word occurs is as follows:

वज्झांति तस्वरेसुं चंचलतुरयाण वरवलच्छीओ ।

The corresponding passage in the Ārāmašobhā in the Samya-ktvasaptati commentary of Samghatilaka, written in 1365 A.D.. reads

तरलतरंगवलच्छा वज्झंति समंतआ तहमूले ।

(Here तर'ग is an obvious mistake for तुर'ग). The word is the same as चलत्थ (v.l. बलच्छ) which occurs at Samdeśarāsaka, 169 (in the compound form तुर'गचलिथिहि), and which the Sanskrit commentary renders as নুৰ্স্থানানা . The word also occurs in the form of चलत्था (compounded as সম্ব্ৰলংখা) in the Jain Sanskrit of Pūrņabhadra's

^{*} Ed. by A. M. Bhojak, Prakrit Text Society Series No 15, 1971.

Pancākhyānaka¹ (composed in 1199). See the glossary in the Harvard Oriental Series edition No. 11 (p. 276, l. 15). For the present, the period of currency of the word can be fixed as from 11th to 14th century.

We may also note here a few interesting forms and constructions from the MC.

The possessive suffix -च्चय-2 is found in the form अण्णच्चयाण (Mūlasuddhi, Gāthā 26) and तुन्भच्चएहि (3, 41).

धिसि धिसि (3, 120) deriving from धिगसि विगसि, and meaning धिग् धिग् occurs several times in Haribhadra's Apabhram's epic Nemināhacariu composed in 1160 A.D. It occurs in other Prakrit works also composed in or about the twelfth century.

The possessive suffix –त्तह् (SH. 8, 2, 159; Pischel's Comparative Grammar of Prakrit Languages, § 600) is found in मजयता (v. 1. सजहता) (20, 18) 'those having wine' and मंसहता (20, 19) 'those having meat'. Its connotation here is nearer to Hindi 'vālā', Gujarati 'vālā'.

लुयाओ वाय ति (6, 13) 'the hot summer gusts blow'. cf. Guj. लू बाय छे in the same sense.

III. From Puhaicamidacariya of Santisūri (1105 A.D.)3

Puhaicaindacariya is linguistically noteworthy because of its liberal use of Desya words. Some of these words were known to

- 1. This has been already noted by me on p. 104 of my introduction to the Samdeśarāsaka.
- 2. See H. C. Bhayani, 'Three Old Marathi Suffixes', Vidya, 12, 2, 1969, 4-10. To the forms with the possesive -ত্য- collected there from Early Prakrit literature, প্ৰকিত্বা 'belonging to the hostile forces' occuring in the Nisitha Cūrņi of Jinadāsa is to be added.
- 3. Ed. by Ramnikvijaya Muni, Prakrit Text Society Series no. 16, 1972.

us exclusively from Hemacandra's Desināmamālā (or similar colle ctions). Their occurrence in a literary work about fifty years prior to the latter has several interesting implications. It authenticates some of the items of the Desināmamālā which were unknown otherwise. It suggests a source, probably one or more earlier Desi lexicons, which was commonly available to Śāntisūri and Hemacandra. It also helps to clarify doubts about the precise form and meaning of certain words. A number of words reveal the influence of the contemporary popular dialects and indicate the emergent trends in the literary diction. उप्पर्वह, उच्चत्ता, कत्ताच्चय, जाउंड, टंका, ट्रमालिय, नाणावह, पत्ताल, बहिया can be cited as instances.

These Desya words have been collected by Prof. R. Shriyan in the word-index given at the end of the work, giving meanings and refrences to relevant literature. Still a few words require special comments.

At 63, 8 occurs पायमूल which is explained by the Tippana as नत कजातिविशेष. Now onwards from the eighth century we find in several Prakrit or Old Gujarati works a word पायमूल, पामल, पाउल in the sense of 'a dancing girl performing at a darbar or a festive occasion'. पायमूल seems to be the earlier form of पाउल, but the etyomology remains obscure.

The root of प्रहुसण (86, 9), 'slipping' is preserved with metathesis in Gujarati रुपसञ्च' 'to slip'.

In वल्लरे कल्लरे (83, 9), कहकरे seems to be a jingling reduplication of बल्लरे, comparable to Gujarati formations वासण-कूसण, आचर-

^{2.} Cf. पविस्त त्याडलगण (7, 23, p. 25) and पविस्त ति पाडलाइ (26, 100, p. 231) (in a description of celebrations at the birth of prince) in the आज्यानकमणिकोशवृत्ति of Amradevasūri (1133 A.D.). For Old Gujarati see Svādhyāya 5, 1, 1967 p. 30- Pāiasaddamahaṇṇavo has recorded several occurrences from the Samarāiccakahā.

কুলা etc. In that case the rise of this reduplicative pattern of jingling word-formation can be dated prior to the eleventh century. We have already evidence of early occurrence of another reduplicative type from a poem inscribed on a stone slab from Dhar in Malwa, which offers two instances of the jingle-formation: one with v- (i.e.b-), কন্তবা-ৰন্তবা: and another with s-, মাওলা-ৰন্তবা). Compare also আংপাই occurring at p. 172, st. 596 of the Doghatti.

At 128, 16 कोइझर is perhaps a corruption of कोइर 'a cavern, a hollow', as can be seen from the following Apabhram's a version of the Gatha at 6, 67, occurring at Siddhahema 8, 4, 422:

जिवँ सुपुरिस तिवँ घंघलईं, जिवँ नइ तिवँ वलणाईँ । जिवँ डुंगर तिवँ कोहरईं, हिआ विस्रहि काईँ ॥

Incidentally the context in which the Gatha referred to above, occurs fully bears out my contention that घंघल means संकट and not झक्ट 'quarrel,' which is but a corruption. The Gatha is meant to corroborate the remarks that it is the distinguished persons who are specially subject to calamaties (गरूयाण' चिय विवयाओ हुं ति).

विङ्क्य at 84, 30 and वेड्कय in the compound सुत्तवेड्कय⁵ at 116.20 seem to mean 'simulation' (क्वटचेछा).

For a discussion of ভতিৰম্ভ 'felt distasteful or disgusting' (underlying ভতিৰম্ভা, the correct form for ভতিৰম্ভা at 49, 13) and the interpretation of the relevant Apabhrams's verse see further in the present collection.

^{3.} See Bharatiya Vidya, 17, 3-4, 1957, p. 135, v. 47; p. 136, v. 52.

^{4.} Svādhyāya, 5, 1, 1967, p. 32-33.

^{5.} The same expression occurs in Ratnaprabha's *Doghattī* Commentary on the *Upadeśamāla* (composed in 1182) on p. 165, 1. 11.

तीन अर्धमागधी शब्द

जैनधर्म और दर्शन के मूल-लोत होने के कारण तो जैंज आगम-ग्रंथ अमूल्य हैं ही। इसके अतिरिक्त केवल ऐतिहासिक दृष्टि से भी आगमगत सामग्री का अनेक-वित्र महत्त्व सर्व-विदित है। भारतीय आय भाषाओं के क्रम विकास के अध्ययन के लिए आगमिक भाषा एक रत-भण्डार सी है। इस दृष्टि से अध मार्गधी को लेकर बहुत-से विद्वानों ने विवरणा मक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक अनुसन्धान किया है. मगर बहुत कुल कार्य अब भी अनुसंधान ों की प्रतीक्षा कर रहा है। विशेष करके अनेक आगमिक शब्दों के स्थम अर्थ-लेश के विषय में और उनके आंग्चीन हिन्दी गुजराती आदि भाषाओं के शब्दों के विषय में गवेषणा के लिए विस्तृत अवकाण है। इस विषय का महत्त्व जितना अर्थाचीन भाषाओं के इतिहास की दृष्टे से है उतना ही अधमागवी को रिसक और परिचित बनाने की दृष्टि से भी है। यहाँ पर तीन अर्धनागधी शब्द की इस तौर पर चर्चा की है. ये शब्द हैं —िव्दु डी — 'आटे की लोई,' उत्तृष्टिय 'चुपड़ा हुआ, 'चिकना' ओर परणा — 'कड़ाही।

१ विद्दुंडी

'नायाध मकहा' अङ्ग के तीसरे अध्ययन अण्डक में मारनी के अंडों के वर्णन में अंडों को पुष्ट. नि पन्न जगरहित, अक्षत और 'पिद्रुंडी हुं ' कहा गया है. इस विशेषण में 'पिद्रुंडी' का अर्थ अभय वस् र ने इस प्रकार किया है— 'पिष्टस्य-शालिलोहस्य दी पिण्डा,' फहस्व प उक्त विशेषण का अर्थ होगा चावल क आटे 'चावल के आटे क पिण्ड जैसा दवेत'।

'पिदठुंडी' शब्द िदठ + उडी से बना है. पिदठ = संठ 'पिष्ट' पिष्ट का मूल अर्थ है 'पीसा हुआ,' बाद में उस ना अर्थ हुआ चूण' और फिर अल का चूग'। 'मराठी 'पीठ' 'आटा, हिन्ही 'पीठी, गुजराती 'पीठी' आदि का सम्बन्ध इस 'पिष्ट'—'पिदठ के साथ है 'नाज के चूण' इस अर्थ वाले 'आटा' 'लोट' (गुजराती) और 'पीठ' इन तीनों शब्दों का मूल अर्थ केवल चूणे' था. इनके प्राइत रूप थे-'अटू,' 'लोइट' और पिट्ठ'।

दोष 'उंडी' का अर्थ है, 'विण्डिका' या 'छोटा विण्ड'. जैसे यहाँ पर 'विट्र्युंड' में 'उंड' का प्रयोग 'विट्रयुं के साथ हुआ है वैसे ओघनियुँ कित-भाष्य में 'उंड'का विस्तारित रूप 'उंडग, 'मंस के साथ (मसउंडग) विशाकश्रृत में हियय (हृदय) के साथ हियय उंडय हुआ है। 'पिण्डिन युंक्ति' में मंसुंडगं रूप मिलता है। इसके अतिरिक्त 'नायाधम्मकहा' के पंद्रहवें अध्ययन में भिच्छुंड राब्द 'भिलारी' अर्थ में प्रयुक्त है। इस में भिक्षा — उंड ऐसे अवयव हैं और इनसे 'भिक्षा-पिण्ड पर निर्वाह करनेवाला' ऐसा अर्थ प्रतीत होता है। भिच्छुंड के स्थान पर भिक्खुंड और भिक्खोंड भी मिलते हैं। संस्कृत में उण्डुक 'शरीर का एक अवयव' और उण्डेरक 'पिष्टपिण्ड' के प्रयोग मिलने हैं।

अर्वाचीन भाषाओं में मराठी उंडा 'लोड' और उंडी 'भात का पिण्ड', गुजराती ऊंडल 'गुल्म-रेग' तथा सिंहली उण्डिय 'गेंद' में एवं हिन्दी मसूडा सं. मांस्रोण्डक, प्रा. मंस्रुंडय में उंड शब्द सुरक्षित हैं। टर्नर के अनुसार उंड मूल में हाबिड़ी शब्द है। तमिळ में उण्डे, मलायालम में उण्डो, और कन्नड में उण्डे थे शब्द 'गेंद' या 'गोल भिण्ड' के अर्थ में प्रचलित हैं. इन सब से पिट्ठूंडी का '(चावल के) आटे की लोई' यह अर्थ समर्थित होता है।

२. उत्तुष्पिय

'प्रश्तन्याकरणसूत्र' में तीसरे अधर्मद्वार में चौरिका के फलवर्णन में वश्स्थान की ओर जाते समय चौरों की भयभीत दशा चित्रित करते वहा गया है:

मर्ण-भडद्यपण-सेद-आयत-लेहुतु व्यय-किल्लिन-गत्ता ।

'जिन के गात्र मरण-भय से उत्पन्न स्वेद के सहजात स्नेह से हिप्त और भीगे हुए हैं।'

यहाँ पर उत्तिष्पिय शब्द 'स्नेह-लिप्त,' 'चिकना' इस अर्थ में आया है । 'त्रिवाकथुत' में भी इसका प्रयोग हुआ है । 'ज्ञातार्धम-कथा' में, 'कल्पस्त्र' में, 'गाथा-सप्तश्ती' में 'ज्ञुपहा हुआ', 'लिप्त' इस अर्थ' में, 'ओषनिर्युक्ति-भाष्य' में 'स्निग्ध' इस अर्थ में तथा 'सेतुबन्ध' आदि में 'शे' इस अर्थ में तुप्प शब्द प्रयुक्त है । हमचन्द्राचार्य ने 'देशीनाममाला' में तुप्प के 'म्रक्षित' 'स्निग्ध' और 'कुतुप' अर्थ दिए हैं । 'अभिधानगकेन्द्रकोष' में तुप्पग्ग 'जिसका अग्रभाग मक्षित है' । और तुप्पोदठ 'जिसका ओष्ठ म्रक्षित हैं' दिए हैं । अपभ्रंश साहित्य में तुष्प के कई प्रयोग मिलते हैं ।

तुष्प से नामधातु **उत्तृष्प** बना और इसके कर्मणि भूत**कृ**दंत उ**ष्ट्रिप्यिय** का अर्थ है 'स्निम्य पदार्थ से लिप्त'। ऐसे **उद्**रस्थाकर नाम से क्रियापद बनाने की प्रिक्तिया प्राकृत उद्धृतिय 'उद्घृतित', 'धूलिलिप्त', उद्घृतिय 'उद्धृपित' इत्यादि में है। तुष्प से इसी अर्थ में तुष्पित्य 'वृतिलिप्त', 'चिकना' बना है, और 'गाथा-सप्तराती' में इसका प्रयोग है। तुष्प से सिद्ध मराठी तूप राब्द 'धी' अर्थ में अभी प्रचलित है। कन्नड में भी इसी अर्थ में तुष्प राब्द व्यवहत होता है। मूल मुक्षण—वाचक तुष्प, चाष्वाड और मक्खण (सं. म्रक्षण) तीनों राब्द बाद में 'वी' 'तेल' 'मक्खन' जैसे स्निद्ध पदार्थी के वाचक बन गए हैं।

३. ्यण

'नायाधम्मकहा' के 'शैलक' अध्ययन में अग्रुचि वस्त्र की ग्रुद्धि-क्रिया के वर्णन में कहा गया है कि.....वस्त्र को 'पयण आरुहेह' । वृत्तिकार ने अर्थ किया है 'पाकस्थाने च्रूट्यादौ वाऽऽरेपयिति'। यह ता भावार्थ हुआ क्योंकि वस्त्र को पाकस्थान में अथ्या च्रूट्टे पर चढ़ाने से पचल का सामान्य अर्थ समझा जाता है । चढ़ाने की क्रिया पर बल देने से लगता है कि यहाँ पयण या पचन शब्द प्रिक्रिया के अर्थ में नहीं, पर साधन के अर्थ में लेना उचित है—पचन 'पकाने का पात्र'। च्रूट्टे पर कड़ाही में गरम पानी में मलिन वस्त्र को उबालने से उसकी स्वच्छता सिद्ध होती है । 'सूत्रकृताङ्गिर्मुचित' में तथा 'जीवाजीवामिगमस्त्र' में प्रयण या प्रयणम का 'पचन-पात्र' के अर्थ में प्रयाग है ही । अर्वाचीन वाघाओं में गुजराती पेणी 'कड़ाही', पेणो 'कड़ाहा' एवं नेपाली पैनी 'मद्य निथारने का बरतन' मूलतः प्राकृत के प्रयण, सं. पचन से निष्यन्त हुए हैं । अर्वाचीन प्रयोग के आधार पर किसी ने संस्कृत में मी' पचनिका शब्द बना !दया है । इस तरह आगम-' थों के अनेक शब्दों के इतिहास की श्रुखला प्रवर्तमान

भाषाओं पयन्त अविच्छिन्न रूप में चली आई जान पडती है।

त्रण देश्य आगमिक शब्द

प्रास्ताविक

प्राकृत भाषाओमां प्रचुर प्रमाणमां वपरायेला देश्य शब्दोना शास्त्रीय अने व्यवस्थित रीते बहु ओछे। अभ्यास थयो छे । हेमचंद्राचाय अने धनपालना देश्य कोशो, प्राकृत व्याकरणे(मां संग्रहीत देश्य सामग्री अने अर्वाचीन विद्वानाना प्राकृत काशोमां देश्य शब्दो अंगे केटल क कार्य थयुं छे लहें। पण समग्र रीते देश्य शब्दोना उद्गम, प्रकार, प्रयोग अने मूल स्रोतीनी व्यवस्थित विचारणा बाकी छे। एटल ज नहीं, एवी विचारणा हाथ धराय ते पहेलां देश्य सामग्रीनी दृष्टिए महत्त्वना प्राकृत थोनी आलोचना थनी जोई ए । ते दिशामां पण घणु औछु थयुं छे।

प्राकृत साहित्यमां प्राचीनता, प्रमाण अने समृद्धिनी दृष्टिए जैन आगमेानुं स्थान अद्वितीय छे । देश्य शब्दोना अभ्यास माटे ते अनेक रीते अमृद्य छे । तेमना पर भाष्यात्मक पुष्कळ सामश्री उपलब्ध छे, जेमां शब्दोना अर्थनिण य माटेनां प्राचीन परंपरागत साधनसामश्री जळवायां छे ।

अहीं छष्टा अंग 'ज्ञाताधर्म कथा'मां प्रयुक्त त्रण देश्य शब्दो अंगे थोडोक ऊहा-पोह कर्यो छे । आ शब्दो आगम-साहित्यमां अन्यत्र पण मळे छे । अहीं 'देश्य' संज्ञा विशाळ अर्थमां— 'संस्कृतेतर, अज्ञात, अल्पज्ञात के अस्पष्ट मूलना शब्दो' ए अर्थमां समजवी ।

१. धणि 'तृप्ति'

उद्यान के वनषंडना वर्णकमां वृक्षोनुं वर्णन करतां, अथवा ते। पुष्पोनुं वर्णन करतां जे एक विशेषण वपरायुं छे, ते छे :

महया गध्रद्धिण मुयंतं (ज्ञाता न आठमा अध्ययन 'मिल्लि'मां सिरिदामगड (= श्रीदामकाण्ड 'शोभीती पुष्पमाळाओ गूर्था बनावेलो लटकते। गजरो' एना वर्णनमां आ विशेषण वपरायुं छे । अन्यत्र पण शरूमां जणावेला संदर्भीमां 'उत्तराध्ययन', (सूत्र ३ वगेरेमां तेना प्रयोग छे ।)

अभयदेवसूरिए गंधद्धणिनी संस्कृत छाया गन्धश्राणि आपी छे, अने अर्थ 'गंधतृप्ति' 'एटले के 'तृष्तिकारक सुगंध'' एवो कर्यो छे । 'पाइअसद्महण्णवो' मां आ अर्थं स्वीकारायो छे. अने स्वतंत्र रीते तेमां धिणिना अर्थं 'तृप्ति' 'संतोष' पण आप्यो छे । रत्नच द्रजीना अर्धमागधी-कोशमां गंधद्धणि ना अर्थं 'गंधना जध्यो, समृह्' एवा कर्यो छे।

अभयदेवस्रिनी न्याख्यामां येग्य रीते ज गंधश्राणि नुं विवरण सुरिभगं-धगुण तृष्टितहेतु पुदुगलसमूह कर्यो छे। तेमांथी कोशे 'गंधसमूह' शब्दो लई लीधा. 'अभिधान राजेन्द्र' मां धणि रूपे एक शब्द 'उत्तराध्ययन' (सूत्र ३)मां एवा निदेश साथे सुभिक्ष', 'विभव' ऐवा अर्थमां आप्यो छे ते पण शंका नेतिरे तेम छे। ते ज कोशमां घाणि (छाया प्राणि) तृष्ति'ना अर्थमां, अने 'राजप्रशीय', 'जीवाभिगम'मांथी गधाद्याणि (छाया गंधाद्याणि) शब्द 'प्राणेद्रियनी निवृत्ति करनार गंधद्रव्य' एवा अर्थमां नेांध्या छे. तेमां 'ार्घाण ए' धणिने बदले अपपाठ के प्रमादथी अपायुं ज्ञणाय छे। प्रामाणिक शब्दस्वरूप धणि ज छे.

प्राकृत कोशोमां भ्रणि शन्दने। एक प्रथाग 'तृष्ति उत्पन्न करवानी शक्ति' ए अर्थमां विशेषावश्यक्रभाष्य मांथी प्रण नोंषायों छे ।

भ्रति, अति भ्रयति पाणिनीय भावत्याठ (२२,११)मां 'तृष्ति' अर्थमां आप्या छे. प्रण तेता संस्कृत साहित्यमांथी कोई प्रयोग नथी नोंभाया । 'नैयडक' (२,१४)मां आप्या शापेला शताधिक गत्यर्थक भावओमां जे भ्राति, भ्रति, भ्रयति आप्या छे, ते भावत्याना तृष्ति—अर्थक भावश्ये छुदा जणाता नथी.

आ ब्रा के ब्रै उपरथी ब्राणि नाम (हा उपरथी हानि वगेरेनी जैम) थाय, तेम ब्रित रूप जातां ब्रिणि पण थयुं होय। ते उपरथी प्राकृत घणि। संस्कृतमां भ्रे, ब्राणि के ब्रिणिना प्रयोग नथी मळ्यो, पण अपभ्रं शमांथी अने अवाँचीन भाषा-ओमांथी तेमना के साधित शब्दोना प्रयोग टांकी खकाय तेम छें।

पुष्पदंत कविना अपभ्रंश काव्य 'ब्रह्महरचरिउ' मां श्वाद 'घराय, तृष्त याय' ने श्वणि 'तृष्ति, घरव' वपराया छे ।

अण्णिक जिमियिक्म अण्णो कहं धाहू (३, १३, ८) 'एक जण जमे तेथी बीजा कई रीते धराय ?'

मिनि भुक्तिवय दुक्तिवय सुक्त-थणि थणु जीवद्द सिदमि ण स्टब्सि धणि (२, ३६,७) '(माता) हरणी भूखी-दुःखी हती । तेनां आंचळ सुकायेलां हतां. हुं आंचळ जीभथी चाटता, पण मने घरायाना भाव न थता ।'

स्मयंभू कविना अपभ्रंश महाकाव्य 'पडमचिन्ड' मां घर अने धव वपराया छेः
पत्थ वनंतहं णाहि घर (७५, ९, १०)
अहीं वसनाराओने (कशो) सुखसंतोष नथी।'
चहुकारूं पायड घड कियड (७५, १३, ३)
'धणे वस्तते कृतान्त तृष्ति पामशे-कृतान्तने घरव थशे.'
जह पर होसह अज्ञ घच (५७, १३, १०)
'थशे तो आजे घरव थशे।'

अहीं घउ उपर प्राचीन टिप्पण तृष्ति मळे छे घउना मूळमां संस्कृत प्रयः तमजाय छे. धर (स्त्री.) क्रियानाम धा उपरथी थयो जणाय छे. धव के धय अपभ्रं श दाय ने दावनी जेम क्वचित् मळती 'यू' 'ब्'ना विनिमयनी प्रक्रियाने आभारी होय.

धर हेमचंद्रमा अवभ्रंश व्याकरणमां आपेल उदाहरणमां पण मळे छे :
महं जाणिउ पिय-विरिद्धिः
कवि घर होइ वियास्ति (८, ४, ३७७)

'में जाण्युं के प्रियजनथी निरहित लोकोने रात्रे ते। कशीक शांति थती हशे।
गुजरातीमां धर (स्त्री.) 'संतोष, घरपत' अने 'घराबुं' शब्दो संस्कृत प्राति,
प्राकृत धाइ उपरथी आव्या छे। मूळना शब्दारं भी संयुक्त व्यं जनोनी रकार जाळवी राखवानुं गुजरातीनुं वलण छे। धराबुं उपरांत धरख के ध्रव अने धरपत पण गुजवातीमां नाम तरीके वपराय छे। धरचनुं घडतर प्रेरक धरच खुं उपरथी कियानाम तरीके
ययु मानी शकायः चनाष्युं उपरथी चनाच वगेरेनी जेम । गुजराती धपखुं,
राजस्थानी धरपणोना मूळमां कमिण प्रेरक अंग धरप् होय। ते उपरथी नाम धरपत।
विजाबी धरापनाना संबंध पण आ शब्दो साथ ज छे। अने नेपाली धर 'शांति,
क्या, संतीष ' पण, टम'र स्चवे छे तेम सं धृतिमांथी नहीं, पण धामांथी छे.

२. पोडचड- प्रोचुं ' ३ चेष्पड- 'स्निग्ब, खरडेलुं '

'मस्लि' ज्ञातमां अरहन्नगने जे तालपिशाच बिवराववा आव्या तेना वर्ण'कमां एक नीचेनुं विशेषण छे :

वस-रहिर-पूय-मंस-मल-मलिण-पोच्चड-तम्

अहीं 'वसा, रुधिर, परु, मांस अने मळथी मिलन तनु (ऐटले शरीर) एटलुं तो बरोबर छे पण जे पोच्चड एवो पाठ छे, ते शुद्ध पाठ जणाता नथी। अभयदेव-सूरि अहीं पोच्चडना अर्थ विलीन पीगळेलुं करे छे। पण तेने माटे कशो आधार नथी। पांच्च, पोच्चड आगमसाहित्यमांथी तेम ज अन्यत्र प्राकृत साहित्यमांथी जाणीता छे। तीजा 'कूमं' ज्ञातमां ज पोच्चड वपराया छे। ढेलना हैं डाने वारंवार हलाव्यु -लखडाव्यु तेथी ते पांच्चड थई गयु. अहीं अभयदेवसूरि तेना अर्थ असार करे छे। पण ते भावार्थ छे। हेमचंद्रे 'देशीनाममाला'(६,६०) मां पोच्च शब्द 'सुकुमार' अर्थमां नोंध्यो छे। गुजराती पोचु शब्द आमांथी ज सधाया छे। एटले पोच्च, पोच्चड एटले 'पोचु', 'नरम', कूणु' ई डुं। वार वार हलाव्याथी पोचु पडी गयुं, परिणामे असार थई गयुं। पोच्चडनो आ ज अर्थ छे। प्राकृत कोशमां पोच्चडना बीजा वे अर्थ 'मिलन' अने 'अतिनिविड' नोंधाया छे। तेना आगळ विचार करीशुं।

हवे आरंभमां आपेला 'ज्ञाताधर्मकथा'ना टांचणमां पोच्च होना अर्थ 'पाचु' लेतां ए विशेषण-समासना कशो संतोषकर अर्थ थता नथी. विचार करतां लागे छे के अहीं पाठ पोच्च ह नहीं पण चे। पाउं जोईए. पोच्च होना व्यत्यय थई कोई कारणे प्रमादथी अहीं चे। प्युं थई गयुं छे। चे। प्युं धातु हेमचंद्राचार्थ प्रक्ष लीप वं 'चे। पड़े अर्थ मां ने। ध्यो छे ('सिद्ध हेम'—८, ४, १९१, तथा 'देशीनाम माला' ३, १९ उपरनी बृत्तिमां)। प्राकृत काशोए पण चे। पिहुं अर्थ अने चे। पड़े अहीं पोच्च हने बदले 'चे। पड़े अर्थ मां ने। पड़िं प्रयोगों ने। ध्या छे. एटले अहीं पोच्च हने बदले 'चे। पड़ पाठनी अटकळ करतां अर्थ नीचे प्रमाणे थशे:

चरबी लेही, परु, मांसना गंदवाडथी मलिन अने खरडायेला शरीरवाळा. ।' आनुं औचित्य उघाडुं छे ।

आवी ज परिस्थिति 'प्रश्रव्याकरण'ना एक संदभ मां छे। प्राकृत कोशोमां पोच्चडना एक अर्थ 'अतिनिबिड' आपेटो छे। आना आधार छे 'प्रश्र-व्याकरण'मांनो एक प्रयोग अने अभयदेवस्रिए करेटो तेनो अर्थ। संदर्भ प्राणिवध करनाराओ जे नरकमां पीडा भोगवे छे, ते नरकना वर्ण नेनो छे। ए नरकोना एक विशेष्णमां नीचेना शब्दो छे:

१. अथवा जुगुप्सित । जुओ आगळ 'प्रश्रन्याकरण'मांना संदर्भनी चर्चा

मेय-वसा-मंसपङ्ख-पोच्चड-पूथ-रुहिरुक्किण-चित्रीण-चिक्कण--रसिय.....

अहीं अभयदेवस्रिनी वृत्तिमां पोच्चडना अर्थ 'अतिनिबिड' 'उक्किण्ण' ने। अर्थ 'मिश्रित' अने 'बिलीणना अर्थ 'जुगुम्सित' आपेलो छे । आर्थी समग्रनो अर्थ संतोषकारक नथी थतो । अहीं पण पोच्चडने बदले चाप्पड समजीए अने उक्किण्णना अर्थ उत्कृतिन 'मीनुं, लदबदतुं अने विलीण (के चिलीण) ने। अर्थ 'पचपचतुं' लहुए तो समासनो अर्थ नीचे प्रमाणे थहो :

'मेद' वसा ने मांसना थरथी खरडायेलां, परु ने लोहीथी लदबदतां, पचपचतां ने चीकणा रसवाळां.....'

आमां वर्णनेनी सुश्लिष्टता तरत ज जणाई आवरो।

पोच्नडने। चोथा अर्थ 'मिलिन' कोशमां 'निशीयचुर्णि' ११ उ)मांथी नोंधायों छे। आ संदर्भ हुं जोई शक्यों नथीं। पण बाकीना प्रयोगों जातां, अने 'ज्ञाताधर्म' वाळा संदर्भमां मिलिण ने पोच्चड साथे छे ते जोतां, त्यां पण चेष्पड मूळपाठ होवानी घणी शक्यता छे।

पछीनी प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन गुजराती अने अर्वाचीन भाषाओमां चे।प्पड के साधित शब्दोना बहोळा प्रयोग थयेलो छे।

'सुपासणाहचरिय' (१२मी शतान्दी)मां कणयोष्पडाइय 'दाणा, घी, तेल वगेरे' प्रयोग मळे छे. अपभ्रश कान्य 'जसहरचरिउ'मां डड्ड चेष्पड पुणु मइ डह६ (२, २४, ३) 'वळी बळयुं ची-तेल बाळे छे.। एवो प्रयोग छे.

स्वयंभूना अपभ्रंश महाकाव्य पडमचरिउमां चेरिपह बीना अर्थमां वपरायो छे. रणसंग्रामने भोजननुं रूपक आपतां चक्रने बीनी धार कहीं छेः

मुक्केक्क चक्क चेाप्पडय धारु (५८, ६, ४)

जेमां एक चक्ररूपी घीनी धार छे।डवामां आवे छे।'

'योगप्रदीप'नी प्राचीन गुजराती टीकामां घी जेवा स्निग्घ पदार्थों'ना अर्थामां चेषाड वपरायो छे ।

अनेइ तेह चे।पड आनंदरूपीउं अमृत, तेणइं करी नइ चे।पड पूरीइ (श्लोक ४३ उपरनी टीका)। दीवामां घी पूरवानी अहीं वात छे । गुजरातीमां चे।पहसुं, चोपड - घी, लाकडा विगेरेने लगाडवाना रोगान अने चोपंडु चीकणुं छे। हिंदी चीकनी-चुपडी बातें जाणीषुं छे। ने।पाळीमां चुपानुं, पंजाबीमां चुपडाउणा, मराठीमां चोपड स्निग्ध पदार्थं वगेरे अर्वाचीन भाषाना प्रयोगो छे. जुओ टन रेनो नेपाळी कोश, चुपांनु अने चे।प शब्द परनां टिप्पण। चे।प्यडना मूळमां चुप्प (देशीनाममाला, ३०१५), 'सस्नेहं एटले के 'स्निग्धं' छे. नेपाली 'चे।प'-'गुंदर,' ''लाई आमांथी आब्यो छे। 'देशीनाममाला' (३, १७)मां नोंधेला चुप्पांत्रआ 'नतु रंगेलु वस्त्र' ए शब्दने आ 'चुप्प' के चे।प्यड साथ कशो संबंध हशे के केम ए चोक्कस कही शकातुं नथी। चुप्प जेवा ज अर्थमां तुप्प शब्द (दे. ना. ५, २२) परथी तुप्पारिआ 'घृत्तिल्व' थयुं छे ते समान्तर बडतरना उदाहरण तरीके टांकी शकाय तेम छे।

SOME STRAY-WORDS

(1) APABHRAMSA UVVITTHA- 'lost taste', 'became insipid'

Below I have collected from Apabhramsa and post-Apabhramsa literatures, about ten passages, attesting the word uvvittha-'lost taste', 'became insipid' or forms allied to it. The word has remained so far unknown or obscure because it was easily and mostly confused with MIA. uccittha- (i.e. ucchittha-= Sk. ucchişta-'left over', 'leavings'), on account of several factors like (1) frequent scribal confusion between -vv- and -cc-, (2) the greater familiarity of ucchittha-| ucchişta- and (3) the environments being non-characteristic for the meaning of either uvvittha- or uccittha-.

The passages follow. The references with critical comments on the passages cited will be found at the end of the paper.*

1. From the Svayambhūcchandas of Svayambhū¹ (about close of ninth cent. A.D.).

gorī amgaņe suppantī diţihā candaho appaņī jonha-vi uvviiţthā (6, 42/1)

'The fair girl was seen sleeping in the courtyard, and the moon lost all taste even for his own moonlight.'

2. From the Sarasvatikanthābharana of Bhoja² (tenth century A.D.):

pamkaa pamki vahelia, kuvalaa khitta dahi vadihi bimba-vi ghallia, ghittau candu nahi kara-naanahara-vaanahi, tahi lilavaihi nia-sitthi-vi uvvitthi, nai paavaihi (4, 211)

Lotuses were discarded in mud; blue lotuses were cast away in the puddle; the Bimba fruits were thrown to the hedge and the

^{* &#}x27;m' is used here to indicate vowel nasalization in non-English material, 'mv' indicates nasalized 'v'.

moon was dismissed to the skies: in view of the hands, eyes, lips and face of that sportive damsel, even his own creation became disgusting to the Creator'.

3. From the Chandonuśāsana of Hemacandra (twelfth cent.: A.D.)3

tuha puhaisara-sehara kitti akittima surahia-disimuha jāmvahi saggi paiṭṭhia tāmvahi takkhaṇi surasundari-loahu surataru-kusuma-māla-dhruvu hua maṇa-ubbiṭṭhia (7, 57/1)

'O best of lords, as your true fame having perfumed the quarters entered the heaven, that very moment the minds of the heavenly damsels certainly lost all taste for the wreaths of Mandara flowers'.

4. From the Purātanaprabandhasangraha4 (before lifteenth cent. A.D.):

pamke pankajam uijhitam kuvalayam cā'pāranīre hrade bimbī cā'pi vṛter bahih prakaṭitā kṣiptaḥ śaśī cā'mbare yasyāḥ pāṇi-vilocanādhara-mukhān vīkṣya sva-sṛṣṭir vidher uddviṣṭe'va purātanī samabhavad daivād vidhayehā tām (p. 15, st. 40)

This is a near-literal Sanskrit translation of the passage cited in 2 above, with s slight variation towards the end.

- 5. From the Vasantavilāsa⁵ (c. fourteenth cent. A.D.) māi mū dūkha anīthaum, dīthaum gamai na cīru bhojanu āja ūbīthaum, mīthaum svadai na nīru (st. 41)
- 'O friend, there is no end to my grief. I cannot bear to look at the fine sari. Food has lost now all taste. (Even) water has become devoid of its (natural) taste.
 - 6. From the Cihungaticaupai of Vastiga⁶ (before fifteenth cent.):

māthaum dhavalaum deha jājarī, vāmkau vāmsau jhūmbai lālarī ghara-humtau navi kyāhaim jāi, saghara kuṭamba ūbiṭhau thāi (st. 58).

The head has become white and the body decrepit; the back is bent and the saliva drips. He does not move out at all from the house. He is becoming disgusting to the whole of the family'.

7. From the Virahadesāuri Phāga⁷ (before sixteenth cent.); hasi hasī pūchaum vātadī, priya sejadī baītha sarvasu anti samosamyaum, visariu dukkha ūbitha (st. 50)

Sitting in the bed, all smiles, I enquire from my beloved about this and that. Now, my all and everything lie with him (?). I forgot clean about the (earstwhile) disgusting grief?

8. From Sūradāsa⁸ (sixteenth cent. A.D.) süthi moti-lādū mithe, vai khāta na kabahum *ubithe* t (10/183).

The $moti-lad\bar{u}s$ are quite tasty. But you do not eat them. Since when have they lost taste (for you)?

- 9. From Tulasīdāsa⁹ (sixteenth cent. A.D.):
 yaha jānatahu hydaya apane sapane na aghāi ubithe 1
- 16. From an inscription from Dhār¹⁰ (c. thirteenth cent. A.D.) [kaṁ]yyū-viṁyyahiṁ je thaṇa dīsahīṁ te nihāli sava vathu uvīsahiṁ (st. 50)

'For one who has looked at the breasts that appear through the choli, everything else becomes tasteless'.

These passages clearly show that Ap. uvvittha-ubbittha-, Sk. uddvista-, Old Guj. ubtiha-, Old Braj-Awadhi, ubttha- meant 'lost taste', 'became tasteless', 'disgusting', 'loathsome', 'odious', 'aroused strong aversion' etc. The verbal base in NIA. was uvis-/ ubis- derivable from Sk. ud-+dvis-. Ap. uvvis-, 11 uvvittha- are paralleled by Ap pais-, paittha- and vais-, vaittha- (Guj. pes-, peth-; bes-, beth-).

Notes

- 1. Ed. by H. D. Velankar in Rājasthān Purātana Granthamālā,. No. 37 (1963). The edited text reads viucchiṭṭhā in the passage-cited here and translates it with Sk. vyucchiṣṭa. The idea 'the Moon felt disgust for his beloved Moonlight' is more attractive than 'the Moon felt, his beloved Moonlight was undesirable like leavings'.
- 2. The text given in the Kāvyamālā edition (No. 94) of the Sarasvatīkanthābharana is considerably corrupt. Pischel tried to improve upon it in his Materialien zur Kenntnis des Apabhramsa (1902), p. 55 st. XIX. Alsdorf in his Apabhramsa-Studien (1937), p. 93 reconsidered Pischel's suggestions and interpretations and offered his own emendations and interpretations. Alsdorf's view that the stanza is in the Rāsāvalya metre (ie. 12+9=21 morae-per Pāda, with three light syllables for the last three mora) is quite sound, but the text adopted here differs in several points from either Pischel's or Alsdorf's. I give them below:

Printed reading	Pischel's	Alsdorf's	here adopted
paṁkaa	paṁkaā	paṁkaa	paṁkaa
khittau	khittaa	khitta	khitta
dahahim	dahahī	dahi	dahi
vālihim	vallihim	vallihim	vāḍıhim
vivillio	vivillia	vivillia	vi ghallia
ghattio	pattio	ghattio	ghattiu
ṇahahi	ņahahi	ņahi	ņahi
°vaaṇahim	°vaaņehim	°vaanehim	°vaanahim
tahī līlāvaihim -siţţi vi ucciţţhiņā im paāvaihim	tem iha līlāvaihī -siddhī vi uvviṭṭhī ṇāvai paāvaihim	tahi līlāvaihi -siṭṭhi viucciṭṭhī ṇāi paāvaihim	tahi līlāvaihi -siṭṭhi-vi uvviṭṭhī ṇāī paāvaihiṁ

In the light of Bhoja's rendering vitau (according to the MSS. G. Gh) 'in the hedge', vādi-. 'hedge' seems to be the original reading for the printed vāli-. So also instead of taking the printed vivillia as connected with Pk. vellai 'goads', 'spreads',

or as vivellia 'spread', it is better to take it as standing for vi ghallia 'also thrown', in harmony with the synonymous vahelia, khitta and ghattia of the other lines. uvittha- is confused as elsewhere with uccittha-. Pischel's suggestion for deriving it from vi- + ud- + vis- too has nothing to support it.

The Sanskrit version of this stanza given further in the paper under 4 has vrti and udviştā, which go to support our view, though the interpretation prakīrna by Bhoja and the prakaṭūā of the Sk. version, for the printed vivillia are quite different from the suggested reading 'vi ghallia'. To say that Prajāpati, disgusted with his own creation, wildly threw everything away is more charming than to say that he found it like something ucchista.

- 3 Ed. by H. D. Velankar in the Singhi Jain Series, No. 49 (1961). The editor has properly accepted here the reading *ubbitthia* for the variant *ucchitthia*. This *ubbitthia* is in a way precursor of the Early Hindi *ubitha*. The commentator has significantly translated it with a priva and avallabha.
- 4. Ed. by Muni Jinavijaya in the Singhi Jain Series No. 2 (1936). See the discussion in note 2 above. In the printed text we have svasṛṣṭim orudviṣṭā and dvidhā yehatām. That the original reading in the Prakrit version was not ucchiṭṭha is supported by the udviṣṭa (i.e. uddviṣṭa) of the Sk. version.
- 5. Consequent upon our discussion, Prof. K. B. Vyas has accepted in his Gujarati edition (1957) of the Vasanta-vilāsa the reading ubithau for the uchithau of his earlier edition and has cited the Sarasvatīkanthābharana occurrence in support. M. C. Modi (Rājasthān Purātana Granthamālā, No. 1963, p. 97) takes uvīthau as standing for ucīthau = ucchiṣta. N. Brown too (American Oriental Series No. 46, 1962) has accepted ūahīthau in the Shorter Recension and uchīthau in the Longer Recension, though he has recorded the variants uvithau, ūbīthaum and abīthaum. In the word-index too he has given the meaning ucchiṣta. But obviously there is no point here in saying that the 'food' has become 'defiled' i.e. unacceptable to the Virahinī. The actual

meaning is that in the condition of separation everything including water and food looses its taste—becomes insipid.

- 6. Published in the Gurjararāsāvalī. ed. by Thakore, Desai and Modi in the Gaekwad's Oriental Series No. 118 (1956), pp. 77-87. The printed text has ūbhīthau, which is but a corruption of ūbithau. In the glossary given at the end of the Gurjararāsāvali, Modi has tentatively suggested 'thrown out' as its meaning and derived it from Pk. udbhatṭā, Sk. udbhraṣṭā, though on the otherhand quite correctly he compares the word with Hindi ubithnā, ubithnā.
 - 7. Published in *Prācin Phāgu Samgrah* edited by B. J. Sandesara and S. D. Parekh in Prācīn Gurjara Granthamālā No. 3. Second Impression 1960, pp. 223-230. In the glossary given at the end ūbitha is tentatively interpreted to mean nibida, gādh.
 - 8. The lines are cited from Braj-bhāṣa Sūr Kośa by Dindayal Gupta and Premnarayan Tandan (1962), s. v. ubiṭhnā. These very citations (will some variants) are given in the Hindi-Sabdasāgar (1914), S. V. ubīṭhnā.
 - 9. Cited under ubițhnā in the Hindi Sabdasāgar (1914).
- 10. H. C, Bhayani, 'Prince of Wales Museum Stone Inscription from Dhar' (Bharatiya vidya, 17, 3-4, 1957, pp. 130-146; 19, 1-4, 1959, pp. 116-128). See the word-index s. v. uvis-.
- 11. As uvviitha- was confused with ucchittha-, so uvvis- was likely to be confused with uvvasa- 'deserted'. Kuntaka's Vak-roktijīvita has the following illustration (1, 20):

lilāi kuvaiaam kuvalaam-va sīse samuvvahanteņa seseņa sesapurisāņa purisaāro samuvvasio.

Here if we take samuvvasio 'made desolate', 'deprived of field of action' as a corruption of samuvvisio 'made odious', 'deprived of all interest', the poetic import of the stanza is enriched. The translation then would be 'The serpent king Sesa, in carrying on his head the orb of the earth as playfully as if he were carrying just a blue lotus, deprived the manly effort of all the rest of men of its zest'—i.e. made it pale into insignificance'.

2. Pk. USURUSUMBHIA- 'CHOKED WEEPING'

Desināmamālā (=DN.) I 142 gives ūsumbhia— and ūsurusumbhiain the sense of 'choked or restrained weeping' (Sk.ruddhagalam rodanam). The Pāiasaddamahannavo (=PSM.) has not recorded any other source for these words. We can now point out two occurrences of ūsurusumbhia- from literary works. Once it occurs in an Apabhramsa verse cited in a tenth century Sanskrit work on Alamkāra. Another occurrence is in a twelfth century Prakrit work.

In the Locana on the Dhvanyāloka II 3, Abhinavagupta has cited an Apabhramsa verse which in the printed editions appears in a corrupt form. The text given in R. S. Tripathi's edition is as follows:

osuru sumțhi āim muhu cumbui jeņa l amiarasa ghonțānam padijāniu tena ll

This is to be restored as follows:

osurusumbhiāe, muhu cumbiu jeņa 1 amia-rasa-ghomṭāṇa, padijāṇiu teṇa 11

The Sanskrit chāyā and translation are given below:

ruddha-galam ruditāyā mukham cumbitam yena l amīta-rasa-nigaranāni pratijnātāni tena ll

'He who has kissed the mouth of a girl weeping with a choked throat, has known indeed how the gulps of nectar taste'.

^{1.} On the basis of the pratika of the cited verse given in the Kalpalatāviveka (early twelfth century), V. M. Kulkarni also has attempted to restore the verse. See none Prakrit Verses in Sanskrit works on Poetics, Vol. I, 1988, p. 9.

The metre of the verse can be identified as Vidyullata, an Antarasama Catuspadi with the scheme 11+10 Matras (i.e. 10+9 Matras in actual practice) for each half, See Chandonusasana, VI 20-28.

ghomta- is the same as Hindi. Gujarati ghūt, Ap. ghumta- (See Siddhahema, 8, 4, 423) and is connected with Pk. ghott- 'drink' (See Siddhahema, 8' 4, 10, Turner. Indo-Aryan Languages, 4481 *ghutt-).

Abhinavapupta paraphrases the first word of the citation as kopa-kaṣāya-gadgada-manda-ruditayāh i.e. 'of a lady weeping in a subdued and convulsive manner under the emotion of anger born of injured pride.' The rendering in the Kalpalatāviveka is irṣyāṣrukṣo-bhitāyāh. It seems that the meaning-element of anger due to jealousy or injured pride accrues from the context and may not be inherent, if we are to rely on the gloss given in the DN.

Corresponding to the from *ūsurusumbhia*- in DN, we have here osurusumbhia. But in numerous Prakrit words a prefixal *ū*-derived from Sk. ud-, upa- or ava- often alternates with o-, either orthographically or phonologically.

The morphological difference, however, is more notable. Hemacandra knows the word as a substantive, referring to the act of weeping, while in the *Locana* citation it refers to the agent. This difference can be explained on the assumption that *ūsurusumbhia*is a past passive participle like say *rudita*- which can have both these functions.

Hemacandra's meaning finds support from a Prakrit narrative work which preceded DN. by some fifteen years. In Nemicandra's Akhyānaka-maṇi-kośa-vṛtti composed in 1133 the following verse occurs as a part of the Dūti's description of the heroine's plight as she conveys it to the hero:

ruirie ruyāviya-pariyaṇāe tuha suhaya pesavijjamto l na samappai osarasumbhiehi lahuo vi samdeso ll (Ākhyānaka-maṇi-kośa-vṛtti, VII 63).

It means: 'Dear Sir, weeping and making her friends weep, she began giving a message for you, which although quite short

could be hardly finished by her due to convulsive feats of weeping'. Here the word osarasumbhia— is a substantive. The spelling here supports the initial o of the form in the Locana passage, but it differs from the latter and from the DN. form in having -sara— for -suru—.

An interesting fact to be noted is that the second line of the improvised verse in the DN. commentary on I 141, which illustrates the use of <u>usumbhia</u>, <u>usurusumbhia</u>— etc. seems to eche the initial part of the above-cited verse from the <u>Akhyānaka</u>—mani-kośa commentary.

Compare the following portions:

ruirie ruyāviya-pariyaṇāe \u00e4 ūsumbhiena tie kayamūsurusumbhiam sahiṇam pi \u00e4

The identical wording suggests that either Hemacandra borrowed for this purpose from Nemicandra or, alternatively, both of them used a common earlier source. In all probability the verse in question is borrowed by Nemicandra from some earlier work because the preceding two verses of the three-verse message are taken from Gāthāsaptasati of Hāla (they are the same as IV 89 and IV 67) and the passage is sinificantly prefaced by the remark 'annam ca'. Elsewhere too in the work there are several such borrowings.

In Vardhamāna-sūri's Jugāijiņimdacariya (1104 A.D.) too usumbhiya occurs with the variant usurasumbhiya in the following passage (p. 35): paiņo guņe saramti usumbhiya-palāva-gabbhīņam rovium pavattā 'Recalling the virtues of her husband, she started to weep with choking and bewailings'.

One more occurrence is to be noted from the Madhyma-Khamda of the Vasudevahimdi (c. 7th cent. A.D.) in the following passage on p. 58: Somasirie saira-parudidāe amsu-salila-dhārāhim sitto ūsumbhida-saddeṇam padibuddho ham 'Being drenched with the streams of tears of Somasrī weeping unrestrained, I was awakened by her choked gurgling sounds'.

The origin of \bar{u} surusumbhia— is obscure. The initial \bar{u} (here as also in the synonymous ūsumbhia-) seems to be an upasarga as has been already suggested. Pk. ūsumbh- = Sk. ullas- (Siddhahema. 8, 4, 202) obviously derives from Sk. ud- + sumbh- 'to shine forth'. Another Pk. osumbh- (PSM.) is equivalent to Sk. ava + patay-(and Pk. nisumbh=Sk. ni- + pātay-). These verbal roots seem to be quite different from the basis of usumbhia- meaning 'choked weeping'. If our analysis of \bar{u} surusumbhia- as \bar{u} - + surusumbh- + -iais correct, then surusumbh- can be interpreted as an intensive form of sumbh-. Compare the structure of some other more or less obscure Prakrit verbal bases like dhurudhull-, țiritill-, bhuruhumd (and a few others like uluumd-, uluhul-, runurunt-, musumur-, gulugumch-, nirinijj-, tividikk-, galagajj-, etc.). As dhurudhull- is clearly a reduplicative of dhull- the same relation-ship can be assumed between surusuiibh and suiibh-. Another possibility is that surusumbh- is onomatopoetic.

Our enquiry has shown that the Desya word under discussion was known in the following forms and meanings:

ūsurusumbhiaosurusumbhiaosarasumbhiaūsumbhia-

- (1) 'choked weeping' (subst.)
 - (2) 'weeping (adj.) with a choked throat' (usually due to jealous anger).



PK. THUDUMKIA-'SULKY AND SILENT'

There is a degree of uncertainty about the precise form, meaning and derivation of the Prakrit word thudumkiya. From Dhanapala's Pāialacchīnāmamālā! (973 A.D.) and Hemacandra's Desīnāmamālā (1045-1050 A.D.) we have the following information:

thudamkiayam = rosenam unhikkam vayanam (Pāialacchīnāmāmālā, y. 214).

- thudumkiam = (i) dara-kuvia-vayana-samkoanam (rendered in the commentary as 'dara-kupita-vadana-samkocanam'),
 - (ii) moṇam (Com.: maunam). (Deśināmamālā, V, 31).

Buhler, Doshi and Sheth² understand Pk. vayaṇam in Dhanapāla's gloss as equivalent to Sk. vacanam and hence they take 'scolding', 'angry words' as the meaning of thuḍamkiaya- according to Dhanapāla. Doshi obviously equates unhikkam in the gloss with Sk. uṣṇam, and accordingly translates the meaning-phrase as 'roṣ se niklā huā garam garam vacan' (i.e. 'hot words due to anger'). PSM. does not record unhikka-.

The Sanskrit rendering, however, in Hemacandra's commentary, noted above indicates that vayanam in Dhanapala's gloss means vadanam and not vacanam. Further, Hemacandra's maunam leads us to believe that the doubtful unhikkam in Dhanapala's gloss is but a corrupt reading for the original tunhikkam, and accordingly Dhanapala's gloss on thudamkiaya-means 'face silent through anger'. This

I have used here the 1960 edition prepared by Bechardas Doshi. It incorporates English equivalents from Bühler's edition.

² In the *Pāiasaddamahannavo* (abbreviated henceforth as PSM.).

closely matches Hemacandra's meanings 'contraction of facial features due to sulkiness,' and 'silence'. Probably both of them have commonly used here some earlier source which recorded thudumkia- with the meaning 'sulky and silent face'. PSM. has not noted any occurrence of thudumkia- from Prakrit literature. We can now point out at least two works, one in Prakrit and one in Apabhramsa, wherein our word is attested. In Silānka's Cauppanna-mahāpurisa-cariya, written in 869 A.D., we find it in verse no. 185 on p. 196. The text and the meaning of the Gāthā are as under:

takkhana-mettakarana-rosa-thudukkia-kaubbhada-viasa (? am) l sahai anunnavamtie jie suya-cumbiyam vayanam³ ll

'(Happy is the woman) whose face lights up as, conciliatingly she kisses her young son, sulky, silent and puffed up under instantaneous and groundless anger.'

For the thudukkiya of the edited text in the cited passage. one of the Mss. reads thudumkiya. The Deśināmamālā Mss. also have variants with -da- or -dukk-.

Another occurrence of thudumkiya- is in the Apabhramsa epic Ritthanemicariya of Svayambhū written towards the end of the ninth century A.D. Therein at 5, 11, 4 we find the following half-verse:

mahurāhiu tahim kāle thudukkiu

'At that time the lord of Mathura wore a sullen and silent expression.'

Here thudukkiya- is used as a preterite verb derived from thudukk- 'to become sullen and uncommunicative', 'to scowl.'

From these two occurrences it becomes clear that though usually thudumkiya-referred to facial expression, 'face' was no part

^{3.} The syntax and meaning of the Gāthā are not quite clear. But that does not come in the way of making out the general context and thrust of the meaning of thudukkia.

of its meaning. Grammatically, the word is past passive participle, and as such it can function as an adjective, and secondarily as a substantive.

According to old commentators and modern interpreters the word khudakka- (v. l. khudukka-, etc.) in the following Gāthā (= Gāthā-saptaśatī, III, 26; cited also in Bhoja's Śrngāraprakāśa and Dhanika's Dasarūpāvaloka)⁴ means roṣamūka- 'sulkily silent'.

diaham khudukkiae tie kauna gehavavaram t garue vi mannudukkhe bharimo paamtasuttassa ti

i.e. 'I yearningly recall her, doing the household work sullenly and silently for the whole day and then, inspite of intense resentful pain, lying down close to my feet.'

Now in its numerous occurrences khudukk- always means to rankle, to cause piercing pain. For example, khudukkai occurring at Siddhahema 8.4. 359 (4) is equated with Sk. śalyāyate by the commentator. And exactly in this sense it is used in the \$\bar{\Lambda}khyānakā-manikośa-vṛtti}\$ (written in 1134) at p. 19 v. 42; p. 64, v. 87; p. 208; v. 505; in the Puhavīcanda-cariya (written in 1105) at p. 20, 1.21; p. 48. 1.18; and in several other Prakrit works. This leads us to believe that the original reading in the above-cited Gāthā is likely to have been thudukkiāe instead of khudukkiāe.

The variation in the form between -ukk- and -umk- is wide-spread in Prakrit in the case of the onomatopoetic formations in -kk- (deriving from Sk.-t+-kr-). We have chikkia-|chimkia, dhikkia-|dhemkia, jhulukkia-| jhulumkia- etc. The fact that in numerous cases the NIA. forms are nasalized as against the corresponding non-nasalized forms of literary Prakrit for example (Gujarati thumk-, phumk-, bhumk-, etc., against Pk. thukk-, phukk-, bhukk-, etc.) suggest a dialectical status for the nasalized MIA. forms.

⁴ See, V. M. kulkarni, Prakrit Verses in Sanskrit Works on Poetics, Vol. I, 1988, p. 155.

For the change thudumkia- > thudamkia- we find support from several other words wherein the second of two u-s in consecutive syllables, is changed to a-. Compare for example kurula-: kurala-muramda-: muramda-, musumdhi-: musamdhi, cuduli-: cudali-kudumba-: kudamba-, muggusa-: muggasa-, kukkusa-: kukkasa-, tumburu-: tumbaru, etc.

LATE SANSKRIT DVIRATIKA

The word dvirațikā occurs twice in Jambhaladatta's VetāJapañea-vimsati of unknown date, but most probably anterior
to the 16th century A.D.¹ Emeneau's note on the word reads as
follows: 'It occurs in the phrase kṛpāṇena dviraṭikām kartayitvā.
I have hazarded the translation: 'dealt a sharp blow with his
sword' which is admittedly merely a guess. Conceivably the word
is based on vrat, 'to make a noise, crash (as an axe)'. In that
case the words may mean 'giving an echoing stroke with his sword."

Now, karatyivā usually means 'having cut', and this weakens whatever meagre value Emeneau's guess has As these are the only known ocurrences of the word under discussion, we have to fall back upon the consideration of the Vetālapañcavimsati passages wherein it occurs. I reproduce below from Emeneau's edition the original sentences containing the word dviraţikā along with translations and the relevant context:

"..... the king in just that way went there to the river-bank and saw the Corpse as it had been described. And, when it saw the king it felt great fear. Then, when the king had gone to it and stretched out his hand to draw it towards him, the Corpse which was inhabited by a goblin went to the topmost branch of that tree and hung there. Then the king laughed and said to the Corpse: 'Listen, you Corpse! Why are you trying to escape far

^{1.} M. B. Emeneau, Jambhaladatta's Version of the Vetālapan-cavimsati, American Oriental Series No. 4, 1934, p. xi.

^{2.} Ibid., p. xxi.

^{3.} Emeneau continues: "But it should be observed that the word is not textually sound. The reason for the observation is obviously the fact that two Mss. read dvivāṭikām and vivaṭikāyām in the place of dviraṭikām at Vetal, 12, 7 and one reads dvivāṭikam at 12, 20"

^{4.} Emeneau, op. cit., pp. 11-13.

away? See! I shall climb this noble tree and bring you down.' Then the Corpse through fear of him fled from that limb to-another. As it moved, however, Vikramaditya caught it on a single branch."

tato rājā svairam svairam taruvaram āruhya kṛpāṇena dviraṭikām kartayitvā taror adhahsthānān mṛtakam ādāt.

"Then the king, when he had climbed the great tree very cautiously, dealt a sharp blow with his sword and carried off the Corpse from below the tree.....

"While the king, having said this, got down from the tree and put forth his hand to seize the Corpse again, the Corpse fled and went to the topmost branch of the tree and hung there. That Corpse in this way troubled him five or six times."

tadā rājā vimīšya tarum āruhya tadagrašākhāyām dviraṭikām kartayitvā mītakam pātayitvā tadupari jhampām dattvā patitah.

"Then the king after reflecting climbed the tree and when he had dealt its topmost branch a sharp blow and had made the Corpse fall, he jumped and fell upon it."

In Somadeva's verison of the Vetālapancavimsati, in the corresponding context, King Trivikramasena's first attempt to locate and catch hold of the Corpse is described as under:⁵

tasya skandhe citādhūmadagdhasya kravyagandhinaḥ l so pasyal lāmbamānam tām bhūtasy eva savam taroḥ ll āruhya cā 'tra bhūmau tam chinnarajjum apātayat l patitas cā'tra so 'kasmāc cakranda vyathito yathā ll

"The (simsapā) tree was scorched with the smoke of funeral pyres and smelt of raw flesh...... and he saw the Corpse hanging on its trunk, as it were on the shoulder of a demon. So he climbed up, and cutting the string which held it, flung it to the grounds.

^{5.} Durgaprasad and Parab, The Kathāsaritsāgara of Somadeva-bhatta, third edition, N. S. Press. Bombay, 1915; 75, 51-52.

And the moment it was flung down, it cried out, as if in pain."6

Here the king is said to remove the Corpse by cutting the string by means of which it hung from the tree. The corresponding passage in Sivadāsa's version of Vetālapancavimsatikā is as follows: simsapāvikṣasyopari samāruhya churikayā pāsam ācchidya mitakam skandhe kṛtvā....,climbing up the simsapā tree, cutting the bonds with a knife, placing the Corpse on the shoulder....

Later Gujarati versions have also the same detail of bringing down the Corpse by cutting the strings that held it hanging from a branch of the tree.⁸

Accordingly, dviraţikām kartayitvā can mean only 'cutting the chords'. And now, if we remember that Gujarati dordī means 'a thin chord or string', we can easily see that dviraţikā is nothing but a Sanskrit back-formation from dordī, or more exactly its earlier reflex. The Early Gujarati form would be doradī or doradīya. dowas Sanskritzed as dvi- (on the basis of literary Gujarati do=Sanskrit dvi, 'two'.) and -radiya as -raţikā. Actually doradiya derives from Sanskrit dora-, 'string', plus diminutive-pleonastic suffix, diyā. Pkthas doro-, dorī and doriyā, and doraka- along with the hyper-form dayaraka- are noted for Late Sanskrit. 10

Of the numerous derivatives of dora- in Modern Gujarati, dor (m), doro (m.), dori (f.) and doriyo have correspondences in

^{6.} C. H. Tawney, *The Ocean of Story* (edited by N. M. Penzer), vol. 6, London, 1926, p. 167.

^{7.} H. Uhle, Die Vetālapancavimsātikā des Sivadāsa nach einer Handschrift von 1487, Leipzig, 1914, p. 24, dt. 17-18.

^{8.} See Devasila's Vetāla Pacavīsī (1562), st. 51; the anonymous prose version, p. 91, 11.6.8 (both edited in Vaitāl Pamcavīsī by J. G, Modí, Baroda, 1916); Śāmal Bhat's Vetāl Pacīsī (ed. A. S. Patel, Bombay, 1962), 1, 463.

^{9.} Hemacandra's Siddhahema, 8, 4, 429-32.

^{10.} For NIA. derivatives vide R. L. Turner, Dictionary of the Nepali Language, London, 1931, s. v. doro.

one or more of the NIA. languages. But the forms with the suffix -d.-, viz. dordum (n.), dordi (f.) are peculiar to Gujarati. This would lead us to infer that the language of the source-work of Jambhaladatta's Vetālapancavimsati contained some Gujaratisms. This surmise would be in keeping with the fact that Old Gujarati influence is observed also in the language of Sivadāsa's version, in Pūrņabhadra's Pancākhyāna¹² and in other similar collections of popular tales in Sanskrit.

^{11.} J. Hertel. 'Sivadasa's Vetālapancavimsatikā', Festgabe Streitberg, 135 ff. (referred to by A. B. Keith (A History of Sanskrit Literature, 1953, Preface, p. xii).

^{12.} Ed. Hertel, *HOS* 11-13, 1908-12. Vide also Keith, op.cit., p. 261.

LINGUISTC PECULIARITIES OF LILAVATI – SARA¹ OF JINARATNA

Jinaratna's scholarly knowledge of Sanskrit classics, lexicons and grammars is revealed in his free choice of words, farms, and expressions irrespective of their being standard, substandard, obsolete, in vogue, rare or customary. As has been pointed out further bellow, a strong undercurrent of the spoken dialect of the day can be detected in the numerous idioms, proverbs, and lexical usages of the Lilāvatī-kathā-sāra (LS.) which are frequently non—Sanskritic and which have Late Middle Indo-Aryan or Early New-Indo-Aryan parallels.

LINGUISTIC PECULIARITIES

The Sanskrit of LS. is not the Standard Classical Sanskrit, but a type of Mixed Sanskrit usually called Jain Sanskrit. Several scholars including Bloomfield, Upadhye and Sandesara have so far offered their studies of Jain Sanskrit with regard to a particular text or group of texts.² Great linguistic diviersity has been a patent characteristic of India since the earliest time. Due to development of regional dialects during the Middle Indo-Aryan and New Indo-Aryan periods on the one hand, and concurrent literary use of Sanskrit, Prakrits and Apabhramsa on the other, a highly complicated picture of linguistic contacts and convergences has characterized the middle and modern stages of Indo-Aryan.

¹ Edited by H. C. Bhayani, 1983.

² For a brief account of the work so far done and some important references see Bhayani H. C., Introduction (in Gujarati) to Pancasati Prabandha-sambandha (also called Prabandha-Pancasati), ed. by Mrgendra Muni, 1968, pp. 7-9.

The resulting mixed Sanskrits were of various types, depending upon the proportion and intimateness of the admixture. It now seems quite evident that taking into account the inscriptional Sanskrit, the Mani-pravala type of language mixtures, Persianized Sanskrit³ of some later works and the language of many modern Sanskrit writings and discourses, the categorizations like Buddhist Sanskrit and Jain Sanskrit appear simplistic and superficial. Proper understanding of mixed literary languages during various periods of Indo-Aryan demands a much more sophisticated model of classification which takes into account the kind and amount of influence on the phonology, morphology, syntax, lexicon and semantics of the Standard Classical Sanskrit. This is however no place to consider these issues, and in the following note on some noteworthy features of the Sanskrit of LS. I will go by Bloomfield's classification.

(1) One large group of words and expressions of LR. derive directly from the Sanskrit grammatical and lexicographical literature. Jinaratna freely uses forms of various types of aorists, perfect (including the periphrastic variety), desiderative, freequentative, various types of denominatives⁵ and Cvi-formation, and in the case of the last four, occarrence of the forms of various tenses is remarkable, because it is unusual. Forms with suffixes like namul and itac, compounds and nominal and verbal derivatives for which Sanskrit grammars give special rules and lists, monosyllabic nominal bases ending in a consonant, and unu-

³ See for example Sukumar Sen (ed.), Sekasubhodaya, Bibliotheca Indica no. 256, 1963.

⁴ See in this connection M. W. Sugathapal de Silva, 'Convergence and diglossia' in Southworth and Apte (eds.) Contact and Convergence in South Asian Languages, 1974, pp 60-91.

⁵ Kalpa-latāslista-pārijāta-līlāyita (XI 263) is an instance of the past passive participle of a denominative formed from a long compound.

sual pronominal forms like asmi, asi, asakau are freely used. Two features of the vocabulary of LS. are noteworthy in this connection. Firstly there is a remarkable proliferation of descriptive synonyms. To cite only one example out of scores, LS has इमाप, इमाशक, अवनिनायक, भूषव, क्षितिषव, भूपुरन्दर, महीमेषवाहन, पृथ्वीपाकशासन, वसुधानुषांग्र and many more similar expressions for 'king'. Secondly, for some of the rare usages of words and grammatical forms in LS.. we find parallels from either wellknown classical works like the Harşacarita, Mālatīmādhava, Sīrupālavadha, Bhatṭikāvya, Naiṣadhīya, Pancatantra, Kathāsaritsāgara, works of Rājasekhara etc., or from Jain works like the Parisiṣtaparvan. Jinaratna belonged to the great tradition of Jain monks who were well-versed in Sanskrit Kāvya and Sāstric literatures and many of whom were keen to give evidence of this in their writings.

- (2) Use of technical terms of Jain philosophy, mythology and dogmatics is another customary feature of the Jain Kāvya and Kathā literatures in Sanskrit, and this characterizes the language of LS. also. Some of these terms are Sanskrizations of originally Prakrit terms.
- (3) Use of words and expressions deriving from Prakrit, Apabhramsa or Old Gujarati is another feature of LS., which it shares with numerous other Jain works in Sanskrit. In the Glossary references have been given to Turner's dictionary of Indo-Aryan languages in the case of the words of New Indo-Aryan source, and parallels from Gujarati have been also pointed out. Many of the idioms and proverbs also found in LR. derive from Apabhramsa or Old Gujarati. Several proper names (e.g. Jasaravi, Jasāditya, Devadinna, Devada, Vaggada, Dehada, Somadī, Rannadī, and several names in the list given at IV 57-64) are Prakritic. Of course most of such material of Prakritic or New

⁶ LS. has numerous passages indicative of its author's knowledge of Arthasastra, Nimitta-sastra, Sakuna, Nīti, Darsanas etc.

Indo-Aryan origin appears in a Sanskrit garb. This is true also of the un-Sanskritic causals like $v\bar{a}c\bar{a}pay$ - XIV 312), $vand\bar{a}pay$ - (XXI 25), $vardh\bar{a}pay$ -, $sulk\bar{a}pay$ - (VI 93), $siks\bar{a}pay$ - etc. which are backformations from MIA. causals in $\bar{a}v$ -. There are numerous cases of translation-loans or calques from Old Gujarati. It should be observed however, that on the scale of using vernacularized Sanskrit LR. is considerably lower than say, the Jain Sanskrit Prabhandhas or the Sanskrit works of the authors like Subhasilaganin.

GLOSSARY

(The numbers refer to chapter and verse.)

अक्तनिहुडुवकी 9.78 A kind of medical herb.

अक्षत्र 2.79 (N). An injustice, tyrrany or maltreatment. Incorrect for अक्षात्र, Old Guj असत्र. See रत्नचूडरास 1.53.

DS. refers from Jain texts] अचिरप्रभा 15.319 विद्युत्

अच्छोट् 10.143 To unwind the binding string [Pk. उच्छोड्)

अह 6.415; 7.186; 10.132 हृह, shop (Pk.).

मंहडण (n.) 3.63, 12.239 shield (Pk.).

अञ्चुपंपन्न 10.126 अत्यासक्त (Pk. अञ्चलवण्ण)

अनात्मनीन 7.236 आत्महीन

अपट्ट 4.380 sick

भन्नद्दा 5.27; 29 अन्नह्मचर्य (Pk. अन्नस्म)

अमिमर 6.20 वध, मारण

अभिमर 12.8 killer (Pk. अहिमर)

अभिसन्धि 9.141 अभिप्राय

अमारि 17.9 royal order of not killing animals.

अमारि-घेषणा-दान 1,56 हिंसानिवारण-घेषणाकरण (Pk. अमारि = हिंसानिवारण)

अम्बुवास 10 133 fragrant power for perfuming water.

अपवरक 4.380; 6.488; 11.133 A room, inner appartment (Pk. आअरय; Guj. ओरडी; IAL 4.450).

अपहरितत 19.50 driven out (Pk. अवहरियय)

अय:पुत्री 12.337 iron doll अरिहन्त 19.7 तीर्थ इकर

अर्घ चन्द्रप्रदान 7.48 seizing by neck

अर्वाक् 7.126 on this side (of the river)

अह तू 19.6 तीथ इकर

अलिक 1.66 भाल

अवचूल 8.31 a pendent crest

अवलग् 2.144 to serve (Pk. ओलग् DMP. 744. cf. IAL 822)

अवतर 1.139 descent (occurs also in शिञ्जपालवध 1.43)

अवदान 16.87 glorious act

अवसर दा- 11.293 to give an audience

अवहार 7.229 suspension of arms अवहित्था 6.478, 14.248 dissimulation

अवारपार 14.407 endless (Pk. अवार)

असकौ 14.101; 17.2-3; 9.138 असौ

असनाधि 11.246 mental unrest (Pk. असनाहि) असात 15.46 पीडा (Pk. असाय) असिपुत्री 2.217 kinfe

अस्ताघ 6.73; 7.124 गमीर, very deep (Pk. अत्थाह; cf. IAL 980)

अश्वीय 7.131 A troop of horseman (अध्दा । IV 2.48)

अङ्क्ट 8.62 hook

अङ्कुल 5.197 अङ्कोट (Pk. अंको-ल्ल; IAL 133)

अङ्गावहोलिका 4.181; 14.479 स्तान, bath (Pk. अंगोहलि Guj. अंघोळ IAL 142)

आयाम 21.50-51 gruel of ricewater

आचम् 13.142 to be clean (Pk. आयम्-)

आचामाम्ल 18.67 a religious austerity called आयम्बिल (IAL 1070)

आभाषक 5.147; 10.136 a proverb (IAL 1228)

आरक्ष 3.96 guard (Pk. आरक्ख; DN. 1.15)

आरटित 3.192 bawling (Pk. आरडिय, Guj. आरड to bawl)

आरत: 3.30 before (Pk. आरओ)

आरांडि 2.121 shrick (DN, 1.75 आरांटि)

आर्चा 9.37 पार्व ती (Pk. अजा) आर्जी 7.182 श्रेणी

आवेष्ट 2.95 strangle (IAL 1447)

आशातना 12.351 desecration

आसडक 4.63 name of a man

ईरितुम् रा 4.116 to allow to move or act

ईषा in पर्य केषा 5.135 side-piece of a bed (Guj. ईस; IAL 1620)

उच्चण्ड् 3.244 to throw up, to shoot upward. (Pk. उच्च डिय 'raised up')

उच्चाट्य 9.41 to ruin by magic

उच्छोटच 11.329 having untied or set free

उड्जघंटे 8.134 opened

उत्तारण 1.129 materials used to remove or ward-off the effects of evil eye or black magic (Guj. उतार, उतारण; IAL 1791-92)

उ_{न्-} 6.371 अवतृ- (Guj. ऊतर**्ड**)

उतृप 8.18 in रसोत्तृप: (१)

उद्ग्रहण 6.122 raising, lifting up

उद्घूलन 1.76 besmear (with powder)

उद्वसित 5.193 गृह

डदब्रत 4.18; 5.206 5.27; 15.29-30 one who has left one kind of existence to be born in another; rose to higher birth-scale (Pk. डव्विटिय)

उद्धव 17.11 उत्सव

उद्भारक दा- 6.258 to give on credit (IAL 2018) उद्गल 9.205 to snach (Pk.)

उद्यानिका 20.145 going to picnic in a park (Pk. उन्जाणिया)

उन्मिण्ठ 9.164 हस्तिपक-रहित (Pk. मिंठ = हस्तिपक)

इत्पाट् 3.49 to cause to carry (Pk. उष्पाड्; Guj. उपाड; cf. IAL 1809)

डत्पाट 5.290 rooting-up (Pk. डुम्पाट; IAL 1820)

डत्पाट्य 7.267,14.526 to carry (Guj. डपाइबु')

उत्पुच्छन 1.48 raising of the tail (उत्पुच्छ from कारिका; अष्टा • VI 2.196)

ਤਰ**%**ਲ 12.215 to jump (IAL 1837)

उपदा 7.136; 234 respectful present to the king

उपि 18.19 उपकरण (Pk. उनिह)

डपपद 12.113 to be born in the class of gods

डपस्कर 4.344 small things of merchandise (IAL 2264)

বঙ্কুন্ত 8.164 to jump বজ্জীৰ 2.279 canopy

एक-साथेन 6.230 together, in a company (Guj. एक साथे)

एषक 2.59; 6.521 एष (अन्टा॰ VII 3.47)

एषिक। 9.41 एषा (अष्टा॰ VII. 3.47) कथानक 4.236 talk (Pk. कहाणय

IAL 20705)

क्रिपिकी 11.124, 125 small pinnacle ornamenting the fortwall (IAL 2157)

कम्बिका 11.135 लीलायष्टि

करका 2.184 hail-stone (Guj. करा; IAL 2782)

कप⁸र 4.213 skull (Pk. कप्पर) कप⁸टिन् 6.280 wearer of rags कल्ये 4.328 yesterday कषकपट्टिका 3.233 touch-stone कण्टिका 3.78 thorny hedge

किटका-चृति 2.80 hedge of thorny bush (IAL 2679)

कलान्तर 4.30 interest

काचिष्च्य 4.103; 4 286 useless, bothersome discussion, prattling (Guj. कचपच)

कामल 5.27 jaundice (Guj. कमळो)

कामहेला 1.152 amarous dalliance of woman

काल्हण 4.63 name of a male काषायी 7.14 काषायवस्त्र

कालपृष्ठ 7.253 धनुष (Pk. कालवरू)

कामेण 2.64 sorcery, magic (IAL 3075, 3.189 (?) magiccharm

किराट 7.13; 6.439 वणिज् (pejoratively) किराटक 4.44 vile-merchant (IAL 3173)

किरी 12.236 शुकर

कि-प्रभु 7.239 क-प्रभु

कीकट 2 143 penniless (abusively)

कुटुम्बिन् 8.168, 178 farmer (IAL 3235)

कुण्डलय् 17.15 to encircle i.e. to cancel (as in an accountbook) or destroy

कूपिका 6.163, 174 कूप pit, small well (IAL 3400)

कुहक 4.170 deception, fraud 8.144

केलि 1.66 कदली (Pk. केली, Old Guj. केलि (IAL 2712)

कोटीर 11.27 मुकुट (पार्श्व नाथचरित 11.1.52)

कोट्सप्रण 3.163 filling a square (a literary game)

कोड 8.13-16 शुकर

कौशलिका 1.66 उपहार

क्रम 3.184, 4.231 foot चरण (Pk. क्म)

क्वथित, कुथित 6.36, 8.53 become purtrid (Pk. कृहिय Guj.कोहबु IAL 3282)

भ्रूण 3.61 offence (Pk. ख्ण)

क्षत्रिय 7.238 incurable disease क्षीरपाण 14.219 drinking of milk खटखटारच 7.146 empty noise खण्डल 15.2 खण्ड खातिका 7.23 ditch (IAL 3862) खानि 2.131 mine (Pk. Old Guj. खाणि; IAL 3873)

खानी 6.415 खनि

खिल 3.70 desert, barren

खिस् 15.16 निन्द् (Pk.)

खेटक 17.17 shield

खेळ 5.18 to play (Pk; IAL 3918)

खेलय 1.32 कीडय् "

खोटिक 4.38-43 a counterfeit coin alloyed with base metal (cf. IAL 3931, Guj. खोद्द alloyed, Panj. खोट alloy)

गन्त्रि 2.125 cart (Sanskritized form of गड्डी, IAL 4116)

गन्त्रिखेटन 7.17 driving a cart (Pk. गङ्डी cart, खेडू to drive)

गब्दिका 7.3; 14.214 a cushioned seat (Pk. गहिआ; Guj. गाही; cf. IAL 4053)

गर्जन 5.72 city of Gazna (Pk. गउजण)

गर्जनिक 5.86, 15.95 name of a city

गर्जि 1.304; 6.515 (मेघ)गर्जैन (IAL 4046)

गलगर्जि 12.297 grunting (Pk. गलगिज)

गलि 5.308 lazy bullock (Pk. गलि; Guj. गलियो; IAL 3975)

गुरुवन्दन: याति 3.86 comes to pay homage to a guru (A Prakritism) गूहक 2.113 bale, bundle गूजरता 15.2 Gujarat

ग्रथपृष्ठविधान 8.139 mode of penance by offering body as a prey to vultures (Pk. गिद्धपिटठ; see PSM)

यहिलित 5.29 11.466 crazy; possessed or maddened (Pk. गहिलिय)

महिलीकृत्य 6.199 having made crazy

गृहोलिका 2.212 house-lizard (Pk. घरोलिया; Guj. घरोळी IAL 4431)

गोनस 2.201 a kind of large snake (Pk. गोणस; IAL 4288)

गोमयोज्झिका 6.261 woman engaged in removing cowdung

गोरब्ब 8.167, गोव^रर 3.121 name of a village (Pk. गोव्बर IAL 4316)

गोष्टिक 4.7 priest of Jain temple (Guj. गोठी)

गौरव 1.150 dinner given by bride's party (Guj. गारव)

गौरव्य 14.221 worthy of being honoured

মানকুঃ 3.140 village head-man (Pk. নামজঃ; DN 21.89; Kan. गाउड, गावडा)

घट् 1.149 to shape, hammer (Pk. घट्ट; IAL 4407)

ঘন 1.29, 3.75, 14.482 much, many बहु (Pk. ঘল, Guj. ঘণ্ড, IAL 4424)

घनाघन 5.323 वर्षामेध

घर्घर 1.82 न पुर (cf. Pk. घाघर, Sk. घर्घरा, घर्घरिका girdle of tinkling bells)

घातुक 11.506 घातक वुस्रण 9.8 saffron (Pk. वृसिण)

घोटक 7.197 horse चन्चरी 19.193 चर्चरी (Pk.)

चञ्चा 11.86, 13.32 scare-crow;

चञ्चुर 1.289, 10.20 चपल (Pk; कपूरिसञ्जरी III 23)

चरटक 13.74 चौर

चतुह[°]ट्ट 12.55 market at cross road (IAL 4626)

चतुष्किका 4.45 a set of four पुञ्चतुष्किका (probably) a group of four guards (Guj. चोकी keeping watch, watch post; cf. IAL 2629)

चन्द्र 2.63 कपूर (cf. I 76)

चन्द्रक 15.50 sore (Guj. चांदु') चन्द्रमौलि 3.64 a turban marked with brilliant spots (Pk.

मडलि; Guj. मेाळियुं turban) चपेटां द।– 11.415 to slap

चरण 5.339 संयम, चरित (Pk.)

चरण 2.279 तपश्चरण

चरिका 3.87-90; 7.48 भिक्षुकी, परिवाजिका चर्मिन् 7.247 armed with shield चस्तरि 6.502 विनाद-वार्ता (DN. 3. 2 चत्थरि=हास)

चान्द्र 1.76 कपूर (Pk. चंद)

चारण्य 9.220 (for चारण्य) चारणमुनि-योग्य

चौरिका 6.201 strip of cloth, rag चुड्ड 14.387-88 to squeak (IAL 4843)

चूला 1.85; 4.185 चूडा (Pk.)

चैत्य 3.52 temple

चेक्षाचेक्षज्यवहार 11.10 conduct observing the distinction of religiously clean and unclean (things)

चौरिका 2.36 चौर्य (Pk. चोरिआ)

छगणिका 3.106 dried cake of caw-dung (Sk. Pk. छगण, Pk. छाणी; IAL 4952, 5007

छगण-हारिका 6.276 woman engaged in removing cowdung

छन्न 3.157 secretly (Guj. छानु)

छुरित 4.63, 11.342 escaped

द्धुप्ति 11.193 defiling touch or conduct (Pk. द्युति, IAL 5057)

हुरि 5.199, 14.475 dagger (IAL 3727)

छेद 6.87 हानि (Pk. छेह) जनङ्गम 8.8 चाण्डाल जािङ्कि 3.94 courier जादर 12.383 वस्त्रविशेष

जाल्हण 4.63 name of a male जिष्णु 7.227 जिगीषु

जीवन्मृतिका 1.34 जीवनमृता dead though alive

ज्यातकृत्य 6.260, 9.65 5.285 नमस्कृत्य (cf. Pk. जे।कार =नमस्कार)

झरुकित 11.512 दग्ध (Pk. झरु-ें क्किय)

झलज्झलंती 1.83 shining (IAL 5352)

झलत्कार 8.33 flashing brightness (cf. Guj. झळक्चु' to glitter)

टगमग (with ईक्ष) 3.45 to stare (Guj. टगमग with जी- to see)

হন্ধ 4.336; 6.249, 11.217 a cheat (Guj. ডগ, ঘূর[°]; IAL 5489)

ठिकत 6.212, 11 218-290 cheated विज्ञ्ज्ञ (Guj. ठग्ये।)

टक्कुर 6.260, 10.110 a Rajput village-chief, साम-त (IAL 5488)

डिण्डीर 12.383 फेन

हिम्भक 2.97, 6.202 child. young boy (DMP. 539; IAL 5553)

डिम्भरूप 2.54 child (Pk. डिंभरूप cf. (IAL 5553

डुम्ब 4.110 a man of low, untouchable caste. डोक 14.252 to present तकम् 21.58 तद् तके 17.19 ते तङगङ 7.184 oil mart (?) तरी 4.183 सरित् (Ap. तडी) तर्णक 1. 239 वत्स तत्पार्श्वेडभ्यस्य 10.128 having studied under him तलवर्गिक 4. 286 feudatory तलबर 4.38-40 city-guard (Pk.) तलवर्ग 7.200 रक्षक (१) त्रलिक 1.66 (in भास्वत्ते।रणतापनीय-तिलकम्) तिलक ते।रण was a type of festoon (Guj. तलियां तारण) तायिन 19.29 त्रायिन् , रक्षक नारामेन्री 1.132 affectionate exchange of glance, love at first sight, (Pk. तारामेत्ती at कप्रमञ्जरी 28.3; Guj. ्र तारामैत्री, तारामैत्रक) तालकं दा- 4.328 to lock (cf. Guj. ताळु देवुं) तिलिमा 12.170 वाद्यविशेष (Pk.) नीथि क 1.248 follower religious sect (Pk. तित्थिय) तीत 3.34 अतीत (Pk. तीअ) तीणि 7.222 crossing

तुष्णी 5.295 मौन (Pk. तुण्हि)

ਰੂਹਵ 2.109 mouth (pejoratively)

(DMP. 112, 117; IAL. 5853)

तुम्ब, तुम्बक 6.170, 171 hollowed gourd used as vessel for holding liquid (Guj. त्ंबडुं, IAL 5668)

तुवरी 4.32 alum

त्र्लिका 7.32 mattress (Pk. त्रुलिआ)

त्ष्णिका 1.264 मीन

त्रयस्त्रिशि 8.117 thirtythree

तेमन 1.149 sauce, secondary dish (See तिम्मण DMP. 110; IAL 1843)

त ध्रुती वादिते 11.42 your ears themselves produced haluciation of noise

त्वच् 9.4 cinnamon

तव जिन्हा विले: क्रिये 3.218 'I offer myself as victim for well being of your tongue'; an idiomatic expression of extreme praise (Ap. बिलिक्जिट सिद्ध VIII 433.8)

यह 1.152; 2.269; 7.188; 8.158; 12.206; row, group, troop श्रेणि (Pk.)

थूत्कृत 19.38 spat out, discarded

दविडका 12.285 (?)

दिण्ड 6.54, दिण्डल (6.38 a garment made by sewing two rags (cf. Pk. ड डि, Guj. डांडियु)

दन्तकलह 15-18 wrangle दन्तपवन 5.141 small piece of wood to clean teeth (IAL 6157)दम्भ (N) 3.153 a burn (Old Gui. डंभ. Mod. Guj. डाम; डांभ to burn) दलिका 11.30 काष्ठ (Pk. दलिअ) दीनार 4.143 a gold coin दुष्टु कृतम् 14.82 दुष्कृतम् देवकुलिका 2.106 small shrine (IAL 6526) देवड 463 name of a male देशना 1.202 धर्मीपदेश देशहिण्डिन 2.137 wandering from place to place देशिन 4.337 preaching (देशना preaching sermon' in Sk. Jain literature (Pk. देसणा) देशिन 6.42 a foreign traveller (बैदेशिक) देष्टार: 6.242 उपदेष्टार: देहड 4.63 name of a male दौषिक • ज्यिक 6.117; 7.180 cloth merchant (Guj. दोश्री) द्रुत 5.192 ran away द्रोणमेघ 3.201 a rain cloud

धनायत् 4.203 being desirous of wealth'

(Pk. दोणमेह)

making heavy downpour

धादिवाहक 14.267 सार्थवाहजन (१) धान्यकीर 3.7 insect found in corn (Guj. धनेड ; IAL.6779) धन्यिका 5.288 धन्या धारी 6.333 dacoity धारा 6.304; 14.253 अश्वगति-विशेष: pace of horse धाविका (f.) 4.87 a washer धूली-भक्त 1.150 विवाहविधिविद्योष धारणी 5.318 continuous volley (Pk. धे।रणी) घ्यामल 5.25 dark, dirty (Sanskritization of Pk. झामल, IAL 5369) निटत ध.44, 48 आकुलित न पश्चानाम्रतः पश्यति 10.32 he was blind to everything else around (cf. Guj. কয়; आगळ-पाछळ जाता नथी) न पूर्य ते 5.53, 6.59 is not enough (Ap. पुज्जइ, Guj. पूर्ग) नरेन्द्र 4.199 बैदा नस्ता (नस्या १) 10.122 नासारज्जु nose string नाङ्गरित 6.70 anchored (Pk. नंगर, Guj. ल'गर) नारीकुञ्जर 10.20 elephant-figure composed of the figures of

women निकार 7.199 अपमान

निाचेल 7.31 'upper garment

निस्ब्छियत् 10.146 नीराजयत् (cf. कुमारसं भव XIII 18 निस्ब्छन)

निरुब्छित 12.216 नीराजित (metaphorical)

निराप 6.266 आज्ञा; निरापित 3.67 ordered (Guj. निराप)

निधं मन 16.34 drain, gutter (Pk. णिद्धमण)

निर्धाट् 9.121 निष्कास्

निर्धाटित 3.270; 7.218; 11.423 driven out (Pk. निद्धाडिय) निर्भे र 12.13 निमयाद (Pk. मेर= मर्यादा)

निर्म नतु 7.232 निरपराध

नि:प्रतिकर्मता 12.8 संस्कार-प्रसाधना-भाव (cf. Pk परिकम्म, पडिकम्म)

निथा 12.350 आश्रय (Pk. णिस्सा)

निष्ठाप् 3.30 to destory (Pk. णिहुब्-)

निश्कता 4.124, 125 mercilessness निःसामान्य 14.38 असामान्य (Pk. णीसामन्न)

निस्वान् 7.170 भेरि (Pk. णिस्साण Old. Guj. निसाण)

नि:स्वानेष्ववस्त् घाता: 3.263, 7.205 sounding strokes fell on kettle drums (cf. Old. Guj idiom वल्डि नीसाणे घाउ) पञ्चालिका 15.5 doll

पटवास 10.133 fragrant powder for perfuming clothes

पंदु 5.153 स्वस्थ physically well

पष्ट 9.174 सिंहासन (Pk.)

पहराज्ञी 2.165 chief queen (Guj. पटराणी)

पहरााला 6.487 main hall

पहिका 3.192 wooden slab for writing (Guj. पाटी)

पद्या 10.35, 12.28 मार्ग, से।पानप कि steps (of a ladder)

पराप्त 6.164 प्राप्त (cf. Pk. प्राच to obtain)

परिप'थन 1.197 obstruction

परिपाटी 4.230 visiting holy places one by one on a round (cf. चैत्य-परिपाटी; (Old. Guj. चैत्यप्रवाडी)

पळळ 8.23 मांस

পন্তৰ 3.169 hem of garment (Guj. পাতৰ)

पाटक 4.352 residential area in a town (Guj. पाडेा)

पात्र 12.169, 6.126 गणिका

पाद: (अवधाय ताम् etc.) 1-214, 242 गम्यताम् etc. (used respectfully in a formal discourse (cf. Guj. पधारा which ultimately derives from this usage) पादापगम 18.20 अनशनविधि (cf. Pk. पाञ्जागम, पाञ्जावगमण)

पादाऽनद्यास्य 5.299 to take a step to go 4.166; 202, to go to express respect.

पान 11.292, 7.188 चाण्डाल (Pk. पाण) पानीयहारिका 2.183 woman fetching water Pk. पाणियहारी, H. पनिहारी, Guj. पाणियारी (IAL 8088)

पानीयं न सहते 5.96 the water does not suit your health (Guj. तने पाणी सहेतुं नथी)

पापिर्द 8.44 मृगया पादमूले 5.339 from, at the hands of (Pk. पायमूले) पारापत 5.110 पारावत

पारी 1.152 tablet, cake (of camphor)

पार्श्वे 3.86 near 4.266; 5.168, 14.79 (Pk. Guj. पासे)

पाली 4,179, 182, bank (Pk.) (IAL. 8041)

पाल्हण 4.63 name of a male पाष्ण्ड 11.231, 2.36 a false hypocritical religious practice (Guj. पास ड) पिच्छिल 1.41 अतिस्निग्ध (cf. JAL 8152, 8253)

भि^{ट्ट} 15.16 to beat

पुटी 10.141, 43, 46 small packet (Guj. पडी IAL 8253)

पुण्डरीक 17.12 श्वेतछत्र

पुत्रभाण्ड 2.106 children and grand children (Pk. पुत्तह ड, **DM**P. 1017)

पुत्रिका 10.19 doll

पुरुषा भूया: 16.37 be a man, show your manliness or bravery (Guj. भायडे। थजे)

पृति 7.48 stinking

पुल्क- 2.79 to cry out as complaint (Pk. पुक्र , IAL. 8246)

पूर्व ते 6.505 is sufficient

पृष्ठे छम् 7.283 to follow

पुष्टक 12.139 board used as Ms. cover

पेटक 11.292; 12.230, 236 troups of singer actors

पात 2.95 short dhoti (Guj. पातिय'; IAL. 8400)

पात, पातक 6.182, 183 shoot (IAL. 8399)

प्रक्वण 1.82 to tinkle

प्रखेल 13.2 to play प्रमुण 6.69; 9.69 ready प्रगुणम् 14.187, 9.69 restore to health, cure

प्रगे 1.65, 2.278, 7.123 on the morning of the next day

प्रति 7.288 copy

प्रतिप्राह 6.263 military service

प्रतिच् 5.157 to look after a patient (Pk. पडिअर्)

प्रतिचारिका 5.310 परिचारिका (Pk. पडिचारिया)

प्रतिचारिन् 18.23 परिचर

प्रत्यनीक 4.255 प्रतिपक्षिन् , विरुद्ध(Pk. पडिणीय)

प्रतिलाभन 1.162 return present

प्रतिलाभना 1.55 giving alms or present to monks & others (cf. Pk. पडिलाह, पडिलाहण),

प्रतिलाभित 14.402 was given as alms

प्रतीच्छा 5.119 स्वीकृति (Pk. पहिच्छा)

प्रदीपन 2.124 setting on fire, imflammation (Pk. पलीवण, Guj. पलेवण IAL 8665)

प्रपादापक 5.106 donor of road side water—reservoir for travellers (for प्रपा see IAL 8681)

प्रबोधम् 5.133 दीप् to light प्रस् 5.285 जननी प्रस्तर 4.200 stone (Pk. Guj. पत्थर; IAL 8857)

प्रस्फारित 6.408 made to swell प्रहरक दा— 2.56, 4.2 to keep watch (Guj. पहेरा देवा)

प्रहीणक 1.150 sending gifts of eats as a part of marriage ceremony (Pk. पहेणय)

प्रातिवेशिक 10.66 neighbouring (Pk. पाडिबेसिय)

प्राभृत 1.142, 4.334 उपहार (Pk. पाहुड)

ਸ਼ੇਲ੍ 5.285 to push away (Pk. ਪੈਲਲ IAL 9002)

प्रेलित 9.166 प्रेरित (Pk. पेल्ड्-)

দান্ত 14.476, 501 jump (IAL 13834)

फेटा 6.351 (?)

फेर 10.72, 12.252 jacakal वब्बूल 11.504 Acacia Arabica बलाहिका 14.246 बलाका

बाह्यिका 7.23 residential area outside defensive moat surrounding a city (Pk. बाहिरिया)

विम्व 12.315; 14.293 image or idol of a god

बोहित्थ 6.96; 12.40 ship (Pk. बहित्र IAL 11461)

भन्न 6.269 ran-away (Pk. भग)

अङ्गानक 17.16 stampede in a battle (Ap. भंगाणडं, Guj. भंगाण)

भटबाद 12.225 bravery (Old Guj. भडवाड)

মাহ 2.117, 7.188 a member of মাহ community, a petty panegyrist in search of patronage, bard (Pk. Guj. মাহ, IAL 9366)

भाषण 2.57 भाषक, श्रृत् (Pk. भारण) भाटक 4.30 fare (Pk. भाडय, Guj. भाड़ें)

भाटी 6.333 charge to be given to a prostitute भाण्डशाला 2.15 warehouse (IAL 7441)

भाणित 14.90 told through agency

भाक्त्रिक 6.261 town-crier (cf. Rajasthani, Guj. भांभी)

भावसार 4.7 a devout Jain-layman भिक्षाक 8.74, 9.107 भिक्षुक (अब्दा॰ III 2.155)

भिण्ड 8.181 flax, hemp (H. G. भींडी; IAL 9492)

भिदा 14.467 भेदन भीरू 14.432 सुन्दरी, अप्सरा (१)

भुक्ति 4.239, 245 enjoyment or ownership (in देशभुक्ति, राज्य- भुक्ति) (Pk. भुत्ति, IAL 9521)

मुजि 6.369 भोजन

भुण्ड 2.55; 6.341 शुकर hog (DN. VI 106; Guj. भूंड)

भूरि 10.126 gold भोगिनी 9.40 king's concubine मगध 17.13 मागध

मe्ख 15.15 picture-scroll displayer

मणी 1.84-125; 6.418, 2.279 (f.) मणि (Pk. मणि; H. मनि, मणि (f); IAL 9731)

सत्क 7.238 मदीय

मत्सी 15.43 a female fish

मनित 14.101 promised

मन्त्रिन् 9.145 a snake charmer

मन्द 5.95, 96 sick (Guj. मांदु')

मन्द्रुहित 6.212 struck by saturn (inauspicious planet)

मन्दाक्ष 1.42 (in मन्दाक्षमन्दाक्षी) लज्जा
(MW. refers to हव चिरित
for this sense; DN. VI.
141 gives म तक्ख as देश्य
word with the meanings
लक्जा/दु:ख)

मन्मनम् 1.32 अव्यक्तं वचनम् (Pk. सम्मणम् ; Hem. considers मन्मन to be Sanskrit)

मरे 11.263 possibly an exclamation of curse, 'Death to it.' 'Let it be' (Guj. मरे)

मलविका 4.350 loft

मस्तके पात्य 3.139 to dash on the head, to suffer the bad consequences (Prakritism)

महस् 2.253; 12.157; 4.372 उत्सव festival

महन 7.166 पूजन

महाढक्का 7.76 मेरि

महानट 5.46 शिव

महार्घ 10.136 precious (Guj. मो वु ; IAL 9954)

महेला 11.11 महिला

मात्रा 1.17 शक्तिवर्धक—रसायन-मात्रा (Guj. मात्रा)

मारि 1.204; 2.178 प्राणिवध (Pk.) मारि 8.180 मारी goddess of pestilence

मार्ग 4.42 to ask for (Pk. मन्ग Guj, माग्)

माल्हण 4.63 name of a male मासिकभक्त 12.111 one month's fast

मृगधूर्त क 8.159 शृगाल (Pk. मयधुत्त DN. VI. 125)

मुद्गलशैल 3.201 an impenetrrably hard mountain (Pk. मुगमेल) मुण्ड 3.79 head

मूर्च्छा 4.257, 15.105 गृद्धि, आसंक्ति (Pk. मुन्छा)

मूली 6.244 roots having magic power

मेदिनी 5.182-83 a Meda-woman (Medas were at times identified as चाण्डाल; IAL 10320)

मेल 14.175 समागम

मेलनी 15.73 meeting, gathering

मेहला 1.152 महिला

मोहायित 5.115 silent expression of return of love

यका 14.24 या

यववारक 11.138 यवाङकुर (cf. Pk. जवारय, Guj. जवारा)

यानपात्र 4.30 नौका (Pk. जाणवत्त)

रणरणक 5.110 longing due to seperation from loved one

रमा 1.79 लक्ष्मी, श्री, शोभा रलिकाकृती 5.229 in humouring(?)

रसवती 13.74-76 cooked dish, prepared meal

যাসকুন্ত 14.496 your excellency (IAL 10650, Guj. যাবন্ত)

राजन 3.217 चन्द्र

राजपादी 1. 131-132, 2.184, 6.304-406, 12.206 king.s routine round of the city along with royal entourage (Pk. रायवाडी; रायवाडिया, MW. meaning is to be corrected)

राध 11.132 वैशाख

रावणहस्तक 11.9 तन्त्रीवायविशेष (Guj. रावणहत्था)

, रिड्ब् 1.75 to crawl (IAL 10735-36)

रीण 1.37, 8.137 (in रीणभाग्यिका) क्षीण, नष्ट, श्रान्त (Pk.)

ছের 5.72-73; 6.226 cotton (Pk. ছেল Sanskritized; IAL 10798)

रैष्ट 12.139-140 made of रिष्ट a kind of jewel

रोमाञ्चचञ्चुर 14.446 रोमाञ्चचञ्चल

रोर 4.223 दरिद्र (Pk.)

रोल 9.108 केालाहल (Pk.)

ন্তভ্ৰ 10.125 acrobat (Pk.)

ক্তৰা 4.37, 14.51, 10.111 bribe (Pk. ত'ৰা; Guj. তাৰ; IAL 10914)

ं लित 3.29; 7.95 kicked (Pk. लता; Guj. लात, IAL 10931)

ন্তন্তিকা 1.83 a long pendulous necklace (IAL 10916)

ਲਲਿੰਗ 5.110 love-play (Pk. ਲਲਿਅ) ਲਾ– 2.216, 4.135, 14.301 गृह− to take (Pk. ਲੇ–) তামন 1.162 present especially of eats (Pk. লাहण; DN. VI 73, VII 21, Guj. তहाणु)

लीलावज्या 11.28 लीलागति

छुम्बि 1.79, 10.226 hanging bunch of fruit (Pk.छ बी; IAL 11089)

छुण्ट् 13.74 to plunder (IAL 11078)

लेखशालाकरण 3.189 schooling (Guj. निशाळगरणु')

लेाच 14.504 shave by plucking hair

बकुश: 11.261 शिथिलाचारी श्रमण: (Pk. बडसो)

वग्गड 4.373 a personal name वण्ठ 8.122 दास

वण्ठकलि 7.180 मृत्यकलह

वणिज्या 4.30 वाणिज्य (Pk. वाणिज्ञा, Guj. वणज)

वधूटी 15.19 daughter-in-law वन्दनमालिका 1.66 festoon of green leaves etc.

वरण 11.125 प्राकार

वरवरिका 7.247 इप्सित-दान-घेषणा (Pk. वरवरिया)

वराटा 14.37 name of a country वर्ष स् 6.373 पुरीबात्सर्ग वर्षागृह 6.373 latrine

- चर्णिका 12.347 sample (IAL 12338)
- वर्ष्य 1.62 to congratulate some one (Pk. वद्ध्य)
- वर्धापन 2.170 celebration (Pk. बद्धावण, Guj. वधामणु')
- वर्धाप् 1.288 (Pk. वद्धाव)
- वर्षेपल 9.7 पक्वान्नविशेष (Pk. वरिसालग)
- ৰন্থ 5.141 to turn back, return (Guj. বজৰু, IAL 11405)
- ·बहित्रक 14.285, 287 ship
- बाबाप्य 14.362 to cause to be read
- ·बाणिज्यपुत्रकः 6.17 a merchant's apprentice (cf. वणिकपुत्र in कथासरित्सागर, Guj. वाणोतर; IAL 11486)
- चाणिज्यापुत्र 2.14 trader (cf. Guj. वाणातर, वणजारा; IAL 11486, 11234)
- ৰানুত 6.61, 14.368 effected by the derangement of the Vata element, crazy, mad. (IAL 11504)
- बादिते श्रुती 6.187 ears sounded i.e. a hallucination of spoken words was produced by the ears.

- वानमन्तर 11.127 व्यन्तर (Pk. वाणवंतर, वाणमंतर)
- वारक 4.152, 5.201, 6.52-53 one's turn (H. वारी, Guj. वारी)
- वारिवन्ध 7.283 an arrangement for catching elephant
- बार्डल 13.62 दुर्दिन (Pk. बह्ल, IAL 11567)
- वाह्याली 14.252 horse-riding track
- विकाल 11.54 evening
- विक्रव णा 1.168 creating by magic powers (Pk. विडब्बणा)
- विক্ত- 6.119. 11.162, 13.62 to create (Pk. বিক্তন্ৰ)
- विगुष् 3.104, 5.204 to revile, censure (Pk. विगेष)
 - विगुप 9.55, 205 to make victim of public insults; 3.104 ridicule (Pk. विगाप, Guj. वगाववु")
 - विगुप्त 4.105, 6.372 अवमानित cofused.
 - विच्छद् 12.209, 14.74 आटेाप pomp (Pk. विच्छइ)
 - विड्वर 2.21, 195, 2.25, 10.86, 11.408, 455, 13.37 डमर mutiny, revolt (the expression is अकाण्डविड्वर 'a sudden mutiny'; PSM. notes अकंड-

ৰিছুৰ, but it gives 'extent', 'pomposity' and 'terrible' as the meanings of বিহুৰ)

विध्याप्य 1.189, 2.102, 40.480 to be extinguished (Pk. विज्झाव) (IAL 11703)

विनट् 4.319, 6.520, 11.332 to harass, to give trouble (Pk. विण²)

विनष्ट 2.148, 6.267 spoiled (Old Guj. व'उन्नु', IAL 11771)

विभङ्गज्ञान 6.117 मिथ्यात्वयुक्तावधि-ज्ञान (Pk. विभंग)

विराध 14.384 to violate a religious vow

विलक्ष 4.97 crest-fallen (Pk. विलक्ष)

विलग् 4.346 hang on to (Pk. विलग्, Guj.वळग्, IAL 11881)

विसंस्थुल 9.11 विह्वल (Pk. विसंथुल)

वीतं स 8.15 a cage for catching animal

वेगसर 3.84 mule

वेध्य 8.42 target

वेलाकूल 5.69 sea-port

वेला लग् 11.54 to take time (Gujaeun लग्)

च्यपरापय 6.282 to destroy

च्यवह- 4.37; 10.133 to trade, to sell (IAL 12173)

व्याघुट् 5.165 to return (Pk. वाहुड्)

ब्यापार्य 6.36 to trade in

ब्यास 14.394 पौराणिक a reciter of Paurāṇika narratives (Guj. ब्यास)

वज्या 14.471 मार्ग

शकुनि 8.88 kite (Pk. सडणि)

য়াতঃ 3.205 a bull set at liberty (Pk. सड, Guj. सांड, IAL 13331)

शटित 6.36, 15.86 rotten (Pk. सडिय, Guj. सड्यु, IAL 12268)

शरीरचिन्ता 2.209, 4.326, 348 natural bodily function, call of nature

शल्यहस्त 4.86 armed body-guard (Old Guj. सेलहथ; cf. Guj. शेलत, a surname)

शस्त्री 3.203 dagger

शालिन् 14.386 शाखिन्, वृक्ष

शिक्षापना 2.177 हितशिक्षाप्रदान (Guj. शिखामण)

शिष्टवान् 4.390 कथित (Pk. सिद्ध = कथित)

शीतिलिका 3.70 small-pox (Guj. शीळी, IAL 12490) ग्रुव 1.159 to find out

श्कावत् 15.61 nauseating (Guj. स्ग disgust)

शोधित 2.124 searched (Guj. शोधवुं)

श्च्योतत् 7.30 oozing

श्राद्ध 1.87, 4.8, 229 a Jain believer or layman (Pk-सड्द, सद्ध)

প্লীক্ষ্য 2.79-87 department of justice, law-court

श्रेष्ठि 3.65 merchant

श्राद्धर 5.99 father-in-law's household (Pk. सासुरय', Guj. सासर')

सक: 17.3 स:

सत्यंकार 5.314 earnest money

सकर्ण: 1.263, 12.94 विद्वस् (Pk. सकर्ण)

सङ्घा 8.13 पक्षिविशेष (cf. MW. सदवा)

समय 1.291 Jain Agama

समवस्ति 11.103 समवसरण

समनसर् 1.293 to halt to preach (Pk.)

समारच 6.267 to improve, to put in good shape

समिताचूर्ण 5.202 गोधूमपिष्ट

संटंक 1.289 संपर्क (occurs also in नलचम्पू)

संधा 1.171 union

सम्मान् 6.154 to partake (food etc.) (Pk.समाण्)

संमूर्छिम 15.33 a being born without inter-course between male and female

संधान 7.17 उपदंश

संलिख् 12.108 to practice सं लेखना

संवाह 10.108 दुग[°] (Pk.)

संस्तार 20.17 grass-bed

साधारित 6.344 प्राप्तावलम्बन

सामग्री 4.142 means or materials

सार: 1.15 डत्तम: (IAL 13355)

सारङ्गिका 11.9 तंत्रीवाद्यविशेष (Guj* सार[ं]गी)

साराविण 2.228 uproar (occurs also in मालतीमाधव and नैषधीय)

साबहित्थम् 5.127 with dissimu-

सिण 2.125 शण (Pk; IAL 12272)

सितापिण्ड 1.17 white lump-sugar

सीमाल 8.144 सीमान्तवर्तिन् (Sk. सीमापाल) (Pk.)

सुखवाहन 5.84 सुखासन palanquin

चत मम 3.211 I have nothing to do with it; I have no use of it (cf. Guj. idiom संयु[°])

सयु`)
सोमाल 10.56 सुकुमार (Pk.)
सोस्थ्य 5.106 सुस्थता welfare
स्थानक 4.279 The construction
तस्य स्थानकेन अहं तेन गणितः
seems to be a Gujaratism;
cf. Mod. Gui. तेने स्थाने

मने तेणे गण्या.

स्थेम 8.139 स्थैय[°]
स्नात्र 11.207 स्नान
स्नात्रकार 1.78 स्नापक
स्फेरित 4.103 flashed
स्वक 4.335 kinsman, relative (Pk.
सग, Guj. सगो, IAL 13894)

स्वादिम 19.32 betelleaf, areca nut etc. to be chewed after meals, (Pk. साइम) स्नस्तर 7.42 आच्छादन 15.107, 7.247 हक्का आहवान threatening shout or call (Pk.; IAL 13938) हिट्टिका 6.415 विपणि हलखेटन 7.17 tilling with plough (Pk. खेड to plough) हस्तलेख 7.39 blue-print, plan हं सरूत 7.32 हं स-तूलिका; हं सरोमन् हिण्डिन 2.137 wandering हील 3.159 to insult (Pk.) हरू— 12.283 to roar terrifying sound -हेबाक 11.310, 425 fondness. (for), devotion (to)

'प्रबन्धपंचशती'नी भाषा-सामग्री

बारमी शताब्दी पछीथी रचावा मांडेला संस्कृत प्रबन्धो ए मीटे मागे तो गुजरात-राजस्थानना विशिष्ठपणे जैन रचनाप्रकार छे । 'प्रबन्धिचतामणि' 'चतुर्विशति-प्रबन्ध' वगेरे संप्रहेाना प्रबन्धा उपरथी जोई शकाय छे के तेमां एवी व्यक्तिओना इत्तांत गूथाता, जे व्यक्तिओ परंपराथी विख्यात हाय अने जेमणे जैनधर्मना दृद्धि—विकास अने रक्षण—पालनमां स्मरणीय फाळा आप्यो हाय । आमां जैन आचार्यो राजनीओ, मंत्रीओ, श्रेष्ठीओ वगेरे जेवी इतिहास, पुराण के दन्तकथामां जाणीती व्यक्तिओना समावेश थता अने ए प्रभावक व्यक्तिओना चरित्रनी मुख्य विगता अने सालवारी अथवा तो तेमना जीवननी कोई विशिष्ठ घटनाओ, रसिक प्रसंगा अने उचकाओ कवित्र आलंकारिक भाषा अने श्रेष्ठीना पुट आपीने रजू करवामां आवतां। प्रयोजन इतिहास आपवानुं नहीं पण प्रभावकृता दर्शावत्रानुं होवाथी भार कथाना के दृष्टांतना तत्त्व पर रहेता अने समय जतां. जेम 'प्रबंध पंचशती'मां बन्युं छे तेम, लेकि—प्रचलित के साहित्य—प्रचलित दृष्टांतकथाओं अने परंपरागत लोककथाओने पण प्रबन्धोमां स्थान मळतुं गयुं।

धार्मिक व्याख्यान प्रसंगे उपयोगमा रुई शकाय ते दृष्टिए जाणे के तैयार थया है।य तेवा आ संग्रहेगमां भूतकाळनी अनेक शक्तिशाळी महान व्यक्तिओए जैन धर्मनी महत्ता अने गौरव वधारवा माटे करेलां कार्योनी वातो. उपरांत जीवननी सामान्य नीतिरीति माटे बोधपद हाय तेवी धणीये लेकप्रिय कथा-वार्ताओ, प्रसंगा अने दुचकाओ पण अपायां छे।

आ प्रबन्धसाहित्यनी संस्कृत भाषा पातानी आगवी विशिष्टता घरावे छे। प्रबन्धानुं संस्कृत ए व्याकरणनी शिष्टपरंपराने मान्य एवं विश्वद्ध प्रशिष्ट संस्कृत नथी। ए संस्कृत एक प्रकारनुं लोकिक संस्कृत छे। तेमां तत्कालीन लोकभाषाना, तेना उच्चारण, व्याकरण, शब्दमंडोळ अने रूढिप्रयोगोनो गाढ प्रभाव पडेलो छे। जेम जेम पाछलना समयमां आवता जईए छीए तेम तेम आ प्रभावनुं प्रमाण वधदुं जाय छे. बीद अने जैन ए बन्ने परंपरामां पंडितमान्य रूढ संस्कृतने बदले बेलिचालना प्रयोगोना पासवालुं लोकिक संस्कृत वापरवानुं बलण हतुं। विश्वाळ मध्यम वर्गने दे समजवुं सरळ पडे, व्यवहारभाषा अने उपदेशभाषा वच्चेनुं अंतर ओहुं थाय

अने छतां उपदेशभाषाना ऊँचा मोभो जळवाई रहे एवा हेतुओ आ प्रकारनी 'सबकीः संस्कृत' द्वारा सिद्ध थता ।

प्रशिष्ट संस्कृतथी आ संस्कृत जुदी शैलीनुं होवाने कारणे, तेम ज मध्यम मारतीय आर्य तथा अर्वाचीन भारतीय आर्य लोक - भाषाओनां तत्त्वो धरावतुं होवाने कारणे तेणे अनेक अर्वाचीन विद्वानीनुं ध्यान खें च्युं छे । अने ते अनेक अध्ययन संशोधनने। विषय बनदुं रह्युं छे । संस्कृतना प्रकाण्ड विद्वान् अने येहल युनिवर्सिटीना संस्कृतना अध्यापक सद्गत फेन्कलिन एजर्टने वीश वर्षना अभ्यासने परिणामे १९५३ मां 'बुद्धिस्ट हाय्बिड संस्कृतं विशेना व्याकरण अने शब्द हेश प्रसिद्ध कर्या । जैन संस्कृत आवा कोई प्रखर बिद्वानना सतत अनुशीलनेना लाम मेळववा हजी सुधी माग्यशाळी नथी बन्युं । छतां तेनां असुक असुक पासांओनुं अथवा तो व्यक्तिगत कृतिओना प्रयोगोनुं अध्ययन समय समय पर अनेक अभ्यासीओने हाथे थतुं रह्यं छे ।

जैन संस्कृतना महत्त्व तरफ विद्वानोनुं लक्ष्य खेंची तेनां जुदां जुदां पासांओ तारवीने एक विशिष्ट अध्ययन पहेलवहेलां प्रस्तुत करवानो यश अमेरिकाना महान संस्कृत विद्वान सद्गत मोरिस ब्लूम्फिब्डने फाळे जाय छे। तेमणे सन् १९२४गां जर्मन विद्वान वाकर्नागेलने समर्पित सन्मोनग्रन्थ Antidoron मां प्रकाशित Some aspects of Jain Sanskrit— ए लेखमां नीचेना जैन कथाग्रंथामांथी विशिष्ट भाषासामग्री तारवी आपीने तेनी विचारणा करेली:

'अघटकुमारकथा', 'मरटकद्वात्रिंशिका', 'शालिभद्रचरित्र', 'अंबडचरित्र', 'धर्मपरीक्षा' हेमविजयकृत 'कथारताकर', 'कथाकाश्च', 'पालगापालकथानक', 'पंचदंडछत्रप्रबन्ध', 'परिशिष्टपर्वन् ', भाव रेवस्रिकृत 'मिल्लिनाथचरित', 'प्रबन्धचिन्तामणि', 'प्रभावकचरित' हेम चन्द्रकृत 'महावीरचित', विनयचन्द्रकृत 'पार्श्वनाथचरित', 'रौहिणेयचरित', 'समरादित्य-कथा संक्षेप', 'सिंहासनद्वात्रिंशिका', 'उत्तमकुमारचरित'।

जैन संस्कृतनी केटलीक विशिष्टताओं अने लक्षणो पांच वर्ग नीचे तेमणे गाठवीते। मुक्यां छे । ते पांच वर्गो आ प्रमाणे छे :

- (१) गुजराती क्गेरे स्थानिक बालीओनो प्रभाव दर्शावता प्रयोगो ।
- (२) प्राकृत राब्दसामग्री अने व्याकरणप्रयोगोनो स्वीकार अने तेमनुं संस्कृतीकरण।
- (३) ग्रद्ध संस्कृत शब्दोनो ण क्वचित अतिसंस्कार
- (४) संस्कृत व्याकरणसाहिंत्य अने केश्यसाहिंत्यमांथी सीधी ज केटहीक सामग्रीनोः स्वीकार ।

(५) केटलीक एवी पण सामग्री जावा मळे छे, जेने माटे प्रशिष्ट भाषामां के स्थानिक बोलीओमां कशो आधार नथी, जे विशिष्टपणे जैन अंश छे।

ब्लूमफिल्डना आ दृष्टिपूर्ण ब्यवस्थित लेखथी जैन संस्कृतना शास्त्रीय अभ्यासनी दिशा स्पष्ट थई अने पछीना प्रयासो माटे ते घणा प्रेरक बन्या । ते पूर्वे पण 'उपिमितिभवप्रपञ्चाकथा'ना संपादनमां पिटर्सन अने याकाबीए विशिष्ट संस्कृत शब्दो अने प्रयोगोनी एक यादी भूमिकामां आपेली ।

पूर्णभद्रकृत 'पंचाख्यानक'ना तेमना संपादनमां हेर्टले, 'जैन गुर्जरकविओ'नी भूमिकामां मो. द देशाईए, हेमचन्द्राचार्यना 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित'ना अंग्रेजी भाषान्तरना जुदा खुदा खंडेामां हेलन जीन्सने असाधारण के विरल संस्कृत शब्दा अने प्रयोगा तारवीने अर्थ साथै आप्या छे । प्राकृत अने जैन साहित्यना मूर्घन्य विद्वान स्व. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्येए सिंघी जैन ग्रन्थमालामां प्रकाशित हरिषेणकृत 'बृहत्कथाके। रा नी तेमनी भूमिकामां (१९४३) जैन संस्कृत विरोना पूर्ववर्ती अध्ययनाना ख्याल आपीने 'बृहद्कथाके। श'मांथी तारवेला नोंचपात्र प्रयोगोनी एक विस्तृत सार्थ यादी रजू करी छे । पण अमुक कृतिओ लईने तेमांना अमुक अमुक दृष्टिओं नोंघपात्र बधा शब्दे। अने प्रयोगोनी पद्धतिसरनी यादी अर्थ अने अर्वाचीन समान्तर प्रयोगो सहित रज् करवाना विस्तृत प्रयास भागीलाल जे. सांडेसरा अने जे पी ठाकरना Lexicographical Studies in Jain Sanskrit (१९६२)मां थये। । तेमां 'प्रबन्धचिन्तामणि', 'प्रबन्धकेारा' अने 'पुरातनप्रबन्धसंग्रहं मांथी लगभग अढी सा पृष्ठ भरीने सामग्री आपी छे। अनेक स्थळे मूळमांथी उद्धरणे।, समान्तर प्रयोगस्थानो, न्युत्पत्तिनोंघ के अर्वाचीन भाषाओमांथी तुलनात्मक सामग्री पण प्रस्तुत करी छे। तेमना अध्ययननो पछीनो खंड पण तेमणे 'जर्नल ओव घ ओरिएन्टल इन्स्टिटयूट-बरे।डा'ना गोविंदलाल भट्ट स्मारक अंक (पृ० ४०६-४५६)मां प्रकाशित कर्यी छे। तेमां लगभग एकावन प्रंथोमांथी सामग्री तारवीने आपी छे. प्रबन्धानी तथा इतर जैन संस्कृत कथाग्रं<mark>य</mark>ोनी भाषा लेाकभाषाना प्रयोगाथी एटली भरचक होय छे के एक ज ग्रंथमांथी सेंकडेा प्रयोगा तारवीए ता पण घणा प्रयोगो वणनांध्या रही जाय । आ हिष्टिए सांडेसरा अने ठाकरे 'प्रबन्धकारा'मांथी तारवेली सामग्री साथे Jozef' Deleue तेमना Lexicographical Addenda from Rajasekharasūri's Prabandha Kośa (Indian Lingutstics, Turner Jubilee Volume II. १९५९, पृ० १८०-२१९)। ए लेखमां तारवेळी सामग्री सरखाबना जेवी छे । जासेफ डेलेउनो लेख वधु पद्धतिसर, झीणनटवाळा अतेः

समग्रीना वर्गीकरण परत्वे बधु माहिती आपतो छे। ते। गुजराती वगेरे भारतीय भाषाओनो अने जैन साहित्यनी परंपराना जे लाम सांडेसरा अने ठाकरना कार्यने मळये। छे तेथी डेलेउने वंचित रहेवुं पड्युं छे। उपरांत बन्नेनी पसंदगीनी दृष्टिमां पण सारे। एवा फरक छे। बन्ने प्रयासने एकबीजाना पूरक गणवाना रहे छे।

ग्रुमशीलगणिइत 'प्रबन्धपंचराती' (इ. स. १४६५)मांथी अहीं आपेली सामग्री पण निःशेषकथननी दृष्टिए तारववानो प्रयास नथी क्यों, तेम करवा जता एक स्वतन्त्र प्रन्थ ज तैयार करवा पडे । अहीं नमूना रूपे ज केटलाक राव्दा अने प्रयोगो आप्या छे । आमां केटलाक प्रयोगोा सीधा करा। फेरफार विना गूजरातीमांथी संस्कृतमां लई लीधेला छे, ते। बीजा केटलाक स्पष्टपणे तत्कालीन गुजराती शब्दा अने प्रयोगोने संस्कृतस्य आपीने घडी काढेला छे । संस्कृतमांथी प्राकृतमां आवता राब्दाना ध्वनिपरिवर्तननां जे व्याक वलणे। प्रतीत थाय छे, तेमने यांत्रिकपणे लागू पाडीने प्रचलित गूजराती शब्दनुं पूर्वरूप कृत्रिम रीते घडी काढवामां आव्युं छे । तेमां खरेखरा मूळनी कशी चिंता नथी करी, तेम संस्कृत अने गूजराती विभक्तिसम्बन्धा वब्चेना मेदने अने बदलायेली अर्थछायाओ अने रूढिप्रयोगोने पण अवगण्यां छे. आ दृष्टिए ख्याल आवा माटे 'प्रबन्धपंचराती'मांथी विशिष्ट शब्दोनी यादी आपवा साथे अहीं केटलाक गुजरातीमूलक रूढिप्रयोगो (तेम ज केाईक अन्य विशिष्ट प्रयोगे।) नोंध्या छे ।

आमां मुस्लिम राजवीओ साथेना प्रसंगानी वातमां फारसी शब्दोना प्रयोगा छे। जेम के— 'कलन्दर', 'कागद', 'खरशान', 'गोहरि', 'बीबी', 'भूत', 'मसीत', 'मीर', 'मुद्गल', 'मुलाण', 'मुशलमान', 'सुरशाण', 'हज', 'हरीमज', इत्यादि।

'प्रबन्धपं चराती'मां आपणने एवा अनेक शब्द मळे छे, जेमनो अर्थ अस्पष्ट के अज्ञात रहे छे । आनां विविध कारणो छे । संस्कृतीकरणने लीधे पायानु गुजराती रूप कळवुं मुश्केल बने; तत्कालीन गूजराती शब्द अत्यारे वपराशमांथी छत थया होय के बेालीओमां ज प्रचलित हेाय; प्रयोग पूर्वना प्रबन्धोनी भाषामांथी लीधो होय पण पछीनी लेाकभाषामां ते अप्रचलित हेाय; लहियाओनी भूलथी मूळ शब्दरूप विकृत यईने जळवाई रह्यं होय वगेरे ।

'प्रबन्धपंचराती'मांथी मने जेमनो अर्थ बेठा नथी तेवा राब्देानी एक यादी खुदी तारवीने आपी छे । ब्युत्वित्त के अर्थचर्चानी दृष्टिए करो। विस्तार कयों नथी । सुनि जिनविजयजी संपादित 'उक्तिब्यक्तिप्रकरण' के 'औक्तिकसंग्रह'मां आपेली यादीओमां गुजराती-राजस्थानी राब्दे। अने प्रयोगानुं जे विशाळ पाया र संस्कृतीकरण थयुं है। बानुं जावा मळे छे ते उपरथी कही राकाय के आ जातनी भाषा अने शैलीनी

घणी लांबी परंपरा हती अने वर्णन माटे जेम वर्णकामांथी, तेम भाषा माटे औक्तिकामांथी केटलीक तैयार सामग्री मळी रहेती. अने 'प्रबन्धपंचराती'ने तो, जेम बस्तुनी बाबतमां तेम भाषानी बाबतमां पुरेगगामी प्रबन्धसाहित्यमांथी सारे। एको लाभ मळेला छे। अनेक प्रयोगी आगला साहित्यमांथी पण तुलना माटे टांकी शकाय तेम छे।

जैन संस्कृत प्रबन्धा अने कथाग्रंथा तथा टीकाग्रंथोना संस्कृतनुं सर्वांगीण अने व्यवस्थित अध्ययन एक बृहत् प्रयास मागी ले छे । तेमां केशा अने व्याकरण ए बन्ने पासांओना समावेश थवा जरूरी छे । केशामां नवा शब्दा अने नया अर्थो नोंधाय अने व्याकरणमां उच्चारण, जोडणी, समास, शब्दसाधक प्रत्ययो नामिक अने आख्यातिक विभिन्तप्रयोगा, वाक्यरचना, रूढिप्रयोगा अने विशिष्ट कहेवतीनी नोंध भाय। आमां सातमी-आठमी सदीथी लईने सेाळमी-सत्तरमीं सदी सुधीना साहित्यमांथी काळकम अने पायानी बोलीओना भेदने लक्षमां राखीने सामग्रीसंच्य थवो जोईए।

गमे तेम पण प्राकृतकेअपभ्रंशना अने विशेषे तो प्राचीन अने मध्यकालीन गूजराती—राजस्थानी (अने हिन्दी)ना अभ्यास माटे प्रबन्धामां अने कथाग्रन्थामां, वृत्तिग्रंथा अने औक्तिकामां अदळक सामग्री भरी पडी छे अने ए दृष्टिए ते साहित्य अमूल्य खजाना जेवुं छे।

उपरांत मध्यकालीन लेकिकथाना अध्ययननी दृष्टिए पण आ प्रबन्धामांथी घणी सामग्री प्राप्त थाय छे । पंचतंत्रादि लेकिप्रिय कथाग्रन्थामांथी घणीं कथाओ 'प्रबन्ध-पंचर्राती'मां लीधेली छे । अन्य लेकिप्रचलित के जैन परंपरामां प्रचलित कथाओ पण थाडाक फेरफार साथे अहीं स्थान पामी छे । कथाघ्टकानी परंपरानी तपास करनार माटे प्रबन्धसाहित्य जांचुं पण अनिवार्य गणाय ।

आम बैन रंपरानी दृष्टिए तथा इतिहास अने दन्तकथानी दृष्टिए 'प्रबन्धपंचराती'नुं महत्त्व होवा उपरांत, गूजराती भाषा अने लेककथाओना अध्ययननी दृष्टिए पण तेनुं घणुं महत्त्व छे ।

जेमनो उपर निर्देश कर्यो ते (१) शब्दसूचि, (२) संदिग्ध अर्थवाळा शब्दो, अने (३) केटलाक नोषपात्र प्रयोगा नीचे आप्यां छे :

अग्रे २-१७, १८, ३-२, ४-९

·अङ्गरक्षिका २५७-१, २ अंगरखी, एक प्रकारनुं बखतर

·अङ्गीष्टक ६−१६, १७ अंगीठुं, तापणुं ·अह १६६−३१ हाट (१)

अडागर पत्र ३७-१० अडागर पान (नागरवेलीन्)

[्]अणक्षक १५२−२ सरखावेा गुज्ञ० 'अणख'. अणक्ख = 'अदेखाई' एना उपरथी बनावेछं व्यक्तिनाम (जुओ १५२-१०मां अणक्ख)

अधक्त्ये ५५-५ **आजका**ल अनस्ति (स्त्री०) ३१४-२९ अणाथ, अछत, अभाव, खोट

ंअंघल २४-१३ आंघळा (प्रा. अंघल)

अपभ्राजना ३३-१६ अवहेलना अपलप् ७७-१८, २५ ओळव

अपवरक **१३७-१७**, ३४८-१०

ओरहो

अबोटिकाः २७२-१ अबोटिया

अमत्र ८७-३० प्याला

अयोगोबरह ३४७-१ (१)

अरि २९८-८ बारणानुं पाटियुं, फळी अलवडी महिषी २०४-११ अलवाई:

एक-बे मासना बचा वाळी भेंस

अवदु **२७३**-२४ ओड

अवरक २५४-२२ ओरडी

अवहीलना १००-८, ९ अयहेलना अबाह २४२-२९ हवाडा, आवाह अहिफीण २४५-१४ अफीण आ+कार् ४-२७ बोलाववुं आमछिटी (?)२३५-१० आभड्छेट आयाति १०३-४ आबडे छे आलम् :कूटम् आलम्) ३३-१५,२१ (क्डुं) आळ

इङ्गिष्टकम् २८-१६ अंगीठुं, तापणुं इलिका १७ ५ ईयळ इध्टिका ३-९ ईंट उकेराज्ञाति ४-१६ उपकेशशाति.

पारवाड शाति

उच्चाट ३०-१६, २०६-३५, २२९--२१ उचाट

उच्चैः कृ--२५३-१० अंचुं करखं उच्छ्यसित ५-२ अंदरथी हवा

नीकर्ळी (?)

उच्छाळ् २-१२ उछाळवुं

उजागरित ३२१-१३ जाग्युं

उष्वालित ४८-१८ उजाळी, घसीने उजळीं करी

उड्डाह ३४-४,२५०-२८, २७२-१५ निंदा (प्रा०)

उत्करटक ११०−१९, १२५-८ उ**क**रडे ।

उत्खिद्ध २४८-४, ३१०-१६ उखेळवुं उत्तर् १-१९, ६-२८, ५-२३ ऊतरवुं उत्तरक ५४-२४ उतारा उत्पाद ४६-२७, ९५-११, २००-८ उपाड

उत्पत् २-२८ ऊपडवु -उत्सूर १४-२२, ७५-२८, १२९-९ २१४-२६, २३०-१३ मेाडुं, असूरू: उद्गर १०१-२४ ऊगरवुं उदाल् ३४०-३ आंचकी लेवुं उद्धार २४३−७ उधार उद्राणक ६९-५ ('अड्डाणक'ने बद -खद्बहिता २,६−२० ऊगरी (सरखावो हिं० उनरी, सं० उद्+वृ०, प्रा० उन्ब उद्वस ३२-५ उज्जङ उन्दिर ३०५-२३, २४ ऊंदर उपलक्ष् ३०-२२,**२६३-९** ओळखवुं उपवरक २१५-१० ओरडे। उल्लाचन ३४८-२७ उल्लाच, चंदरवा,

छत ऊर्ध्वस्थितः १०-३ ऊमा ऊमा ओलगा २३४-२४ चाकरी कच्च ११-२४ काचुं कच्चेश्क १४७-१० क्रकोलुं कच्चेश्क २९१-२५ ,, कछडक २१२-२४ काछडो कच्छडक २५६-१० ,, कणवीर २५३-१० कणेर, करेण कण्ठ ३०९-१३, ३३०-१२ कांठो कण्डक २४३-१, ३, ५ तावीज, माद्रियुं (प्रा० कंडय)

कपिशीर्ष ९६-२ कणसळु कपिशीर्ष ३१२-२७ कांगरो, केाशीशुं कम्बा २५३-१० कांब, कामडी, सोटी करणवार, करणवारकारक २१३-७, २१६-३, न्याय, न्यायाधीश कर्कर २-२१ कांकरो कर्त् १४४-२, २०८-३० कांत बु कर्बाधक २४१-३, ४ देवळना चणतरनुं काम (?) कर्ष् २५-३, ९४-१७,१६८-२१, १८९-१०, २३२-७ कादबुं लंदर ३४६-२९-३०फकीर(अरबी) कल्ये ४-९,१७०-२३ आवती कव्हरी ८४-१२,१७९-१८कालरी, घासनी गंजी काका ५५-४, १०१-३०,१९२ -१९ काका कागद २७-६,९, १९४-२, ३१२ -७ कागळ (फारसी) काछिक १२९-१७ काछिया काणक १२९-१७ काणे।

कापाती १३६-१६ कावड

कामुक कार्मुक ?) १६०-२८, १६१

─१ काम करनार नोकर :

कार्पटिक ३८-२६ रखडते। मिक्षक, कापडी कार्मण ७८-२, ३१५-२ कामण कार्वाटिक १९६-६, १०, १२ कबाडी, कठियारी काविड १३६-१२, १५ कावड कावडिका १६-४ काहलिक ६८-३ (१) कांबिक १०७-६ (?) कांसाराः १९०-१ कंसारा (सं. कांस्यकार, प्रा. कंसार) कांस्यताल ५२-२१ कंसाल, कांसाजोड किरतार ३४७-३ करतार, सृष्टिकर्ता कुङ्कुमपत्रिका १९१-१७ कंकात्री कुतप १२—८ कूडलुं कुद्दाली २३६-१५ के।दाळी कुरुकुल्ला ४५-२६ ए नामनी एक देवी कुहाडिका २३६-१५ कहाडी कुर्कुट ११-११ क्∓डो क्विन्द १३७-५, ७, ८ साळवी कुहेडा ५४-३० केायडा क्ट ४-९, १०६-१२, २४६-२, ३२३-११ कूड़, खोटुं कूप १९२-२ (तेलना) कूंपा, कूडलुं कृषिका ३५-५ कुंपी कृषिक १४-- २२ कृड्छ ऊ चकनार(?) कृपबाहक ३७-१९ क्वामांथी पाणी काढी खेली करनार (१) केलग् ५४-३२ केळबबुं

के किल २९८-५, ६ एक के ळीनु विशेष नाम (केळीनी एक जात) कोत्थलक २७८-८ के।थळा काेथल २०८-२९, २०९-१ कोथळेा कोरउद्दिका (१) कुट्टिका १) (सूत्र कोर-उद्यक्ता ३१०-१५) कोकडी (सूतरनी कोकडी) केारकवस्त्र ३१६-१८ केारुं कपडुं केारणिकार २४०-१८ केारणी केारवावाळा केाल २५-२ कोळ, जबराऊ दर कोलिक ५६-१५ वणकर कोष्टिका २०६-१४ कोठी कोद्धंबिक ३०-५, १६६-२१ कणवी कौसुं भिका २३६-१२ कसुंबी वस्त्रना दुकडो (१) (बळदने शींगडे बांघवाना) क्रम १७१-८ पालुं क्रमेलक २२८-२८ ३२९-४ ऊंट क्रयाणक ९६-१३ वेचवामी वस्तु ंक्षारा १२-६ खारी क्षिप्रचट २५८-२७ खीच हो · क्षिप्रचटिका ३०-१० खी**च**डी क्षीरपूपिका १६६-३ दूधनी पूरी (?) खग ८२-२५, २७ विद्याधर खन्त् ९८-१७ खजबाळव खटिका २५१ -६ खडी लड लड शब्द ९४-२ खडखडाट खड़ी १२९-१ खडी

खनिः ३५-११ खाण खरण्ट ३९-१३, १०७**-९ खरड**बुं खरशाण ४०-२८ | खरशान ४०-२७, | खुरासान (फारसी) खरसाणी वणिक ४-१६,२२,२३(१) वलक्लम् ८३-२२ वळवळ अवाब साये खिल ३९-१३ वळ खा- ७०-३,६ खाबुं (सं०खाद्, प्रा. खाए) खातिका ३४९-१८ खोड खाल (पु०) २८३-२२ खाळ (नगरलाल ५-२३,२४ नगरनी खाळ) **खासरक ३१६**–२२ खासडुं खिङ्ग ५०-२७ विट, भडवा खिराहिं लिक (थिराहलिक) २७१-२५ कीलसा (? खिलिका २०२-६ खीली खुक्कारक २९८-१० खोंखारो खुण्टक ८५-० लबाह (१) (नट,विट अने खुं ८क एवा संदर्भमां) खेद ३०-५, ९१-७, २०-६७ खेडवुं (खेतर), हांकवुं (गाडुं) खेल २५४-२२ खेलवुं, रमबुं गजवेली ५५-१० गजवेल गडुरिका ७३-१३ गांडर गदीयानक १३०-१९, १६१-६ गदियाणा गलदुम्पक १६१-१७ गळाटू पा बाह्यश्री २०४-१७, १८ गलामा पहेरवानी सेर के माळा

गछ ३४१-७ गारु गाञ्छिक ९-८,९ गांछो, वांसफाडेर गाञ्चिका ১७-२७ गांछण गादह २०४, १०-१५ मधेडो (सं. गर्दभ, प्रा. गदह) गिरिनार ४-५गिरनार (सं गिरिनगर) गुञ्छनक ३१४-१९ गू छळुं गुप्तिग्रह २७–२२ काराग्रह (सर०ज्० गुज० गोतिहर) गुफा १५५-५२ गुफा गूडर ४९-१ तंबू (उपजावेछं संस्कृत 'गुरूदर' पण अन्यत्र मळे छे) गृहली १८२-९, ३५१-४; गूहलका १८४-१७, ३५१-३० गहंळी सुशोभन माटे फूल, लिंपण वगेरेथी पाडेली भात, रंगाळी गृहे।लिक ३१७–२१, २४ गृहोलिका १४१-१४, १५, गरोली १४७-११, १७७-१० गोमाणि २०६-१३, ३२ गोमाणिका २०६-१५ गेाहानदी १८५-१० गादावरी न**दी**ं (प्रा. गोला) गोहरि ३४७-५ घोर, कबर (फारसी)

गौरव १७०-२३ भोजन कोरेथी करातुं स्वागत, गोरव प्रथिल २१-१७, ५४-३, ७७-२५, २०९-२ घेलुं प्रन्थि ५७-१२ गांठडी, पैसानी गांठडी: प्रहणके मुक्तम् ३९-२७, ४०-८ घराणे मूक्युं

श्रास ६२-२४ गरास ग्रैयिल्यं ७८-१ घेलापणु घद ८८-१३ घडवु षटन २४१-४ घडवुं ते घटक २४१-५ घडनार घन २८-२२ घणुं बरिटका २१४-२७ घंटी वर्षर २३६-११ घूषरो घसमसाट ८९-४ घसमसाट भाञ्चिक १३९−१६, १९२−३ घांची षाञ्चिका ९६--२९, ९७-४, १६९-४ घांचण चाणिका १३९-१७ घाणी घींघणी २५६-१० ए नामना एक छंद खृतवर^{े १}६६ - ३ घेवर घोटक ५३-८ घोडे। धोटिका १९७--१३, १४, १७०-९ घोडी '**घोलवटक१४१-२१** एक प्रकारनां वडां चद ६-१० चडवुं चिट्तः ४४-२९ हाथे चड्यो, हाथ आब्यो चट उत्तर १६३-२ चड (अने) ऊतर (आज्ञार्थ) ३३∙-२२, २३ चकलो,चकली चटी १५९-१३ चक्री चटक २१८-५ चटका चंद्रक ३२२-८ चाटवो चट्ड १२१-६, २२ चट्टुक ३२२-२१

चतुरिका २७८-८ चारी (लग्ननी) चन्दिका ८१-८, ३२४-१,२, ५; चिन्द्रका ३३८-१९. २१-२३ चौदी माथामां के शरीरे पडतुं नानुं चांदुं चन्द्रोदय ३४८-२३ चंदरवा, वितान चमत्-क्र- २-२९, २१ चमत्कार पामवो. चोंकवुं चम्प् २७-१५, १०२-४ चांपबुं चर्मटिक ३१-१५ चर्भट चवल २०६, १ ५ चोळा चाखडिका ३९-२६,४०-४ चांखडी चाडिका १०२-१७ चाडी चारि ७६-१२, १३०-५,२०८-१३ चार (ढोरनी) चालनी ३४-५, चाहिनी २२०-९ चाळणी चिक्कचिकाय् २६२--२ चक्क्चकवु चिक्क्लिल्ल २८३-२३ कीचड, चीख्ल चित्रकर २०-२१, २२ चितारा (सर• हिन्दी 'चितेरा') चिर्मट ६१-५, ३२३-९ बुओ 'चर्भटिक' जुकिता १६१-१९ चूकी नुकसंबा २३३-४, ५,६ बाकळण, बे मेाढा वाळा आंधळा तर्प चुदृक १४१-**२४ चोट, मुका बढे**ं **महार (!)** चुणि ८२-१६, ३३१-२७ चण चुण्ट् १५२-६ चूंडखं

-चिणचिणिका ३४६-८ चणचणाट

खुल्हक १२-२५ चूला खुल्हक ९२-६,७ चूला चृरिम ३२१-५, १७ च्रमु ंचेळ्क ४–२, ५२७१–२१ चेलो चेल्लक≕पल्लुं (तुलाचेल्लक १२२-१७ 🥟 भाजवानुं पल्छं) चोक्ष १६५-२१ चोक्खुं चोषड १४२-१ चोपडवु चैत्रयडि ३२०, १२-१४-१५ मूरख, गमार छाण १५८-१२, २११-२४ छाप; १६९-३ छाणु छत्रिका २२८-१४ छत्री कन्नम् ६-२०, १२-३, १६९-३, २०७-१, ३२१-१४छानुं छानुं **छड**न ६२-७,२९०-२, ३२८**-**२ छाव कार १४५-९ राख छारपुज १०१,१३-१४ राखना दगलो ভিন্ধা ११४-२ ভিন্না ६৩-१५ ভান क्रिम्पिका ४९, २१-२३ छीपण (कपडा पर छापकाम करनारी स्त्री) बुद २७-११, २९-१४,१६६-२३ ३५१-३१ छ्टबु छे।तरुं, (आम्रहे।त्तरकं १७१-२३ केरीनुं छोतरुं) **डो**ति ५५–३७ **ड्**ताछूत, आभडछेट जडं वस्त्रं ३१६--२०-२२, जाडु कपह

जिंडिन २०२-७ जडेेेेें जनमपत्री २७४-२९ जनमातरी चम्पाण ९६-२७ ठांठडी बालि ३५-२५ पीछुडोनु जाळु जिम् २-१; ३-१२, २०६-१० जमवुं जी-जी कु- १०२-५ 'जी जी' कर<u>व</u>ु बुहार १०२-१९ जुहार वंदन जेमन २०४-१७ जमवुं ते जेमनवार ११६-२९ जमणवार बोत्कार २०६, ६−१४ नमस्कार, अथ जय बोत्कार क ३-२२ नमस्कार करवाः **ब्योतिष्कक १७१–३०, १७२–१** जोशी नगमगाय १५८-९ झगमगतुः इसगटक ४-२१ झगडे। **ज्ञम्पा १३९**⊸२५ कूदको श्राद् ३--१६ झरखं इनल १७१-२४ जळ खं, दाह थवा इत् २०२-९ झ्रवुं ज्ञोलिका १४-७ ज्ञोळी टक्कक ४, ६-११ सिक्को (सरखावे) गुन (टका', नं. 'डाका', हं. टंकशाला) टाहा १०७, २–३-८ टाहा टीड १६-२९ तीड (देश्य 'तेड्रू') इम्बक १६१-१७ (गळा)द्वेपा

टेाकरक=टेापलेा (हिन्दी 'टोकरा') (वंशटोकरक १३८-२४ वांसना टापला) टाडर ४५-२५. ३५०-२३ तोडा टोप २५७, १-२ एक प्रकारनु शिरस्त्राण, टाप टोपिका २, १२-१४ टोपी टोइन ११०-१ टोव ते, पक्षीओने टोया करीने उद्घादवा ठीकरी २३०-२२ ठीकरी दुण्डक=ठू दु (बृक्षदुण्डक ७०-१० झाडनुं ठूंठु) डाकिन २०६ -२२ डाकणे। दल् १४५, १९-२५ दळव ढाल् ७७-१२ ढाळवं दालन१५८-८, २३६-११ढाळबुं ते दंकन ४-८ ढांकवुं ते ढंकनिका ३५०-४ ढांकणी **दी**ली २-२२ दिल्ली ढेढ १५–२६, १०९,२८–२९, १६५-१९, २५०-२८ हेट होल् १०१-१ होळवं तटी २८-१ तोफानी नदी, दुस्तटी, तडफडायमान २७१-४ तडफडत् तनुगमनिका २३३-२९ जभीन पर वहेता वरसादना पाणीना नाना प्रवाह तप्ति २९९-२ चिंता, पंचात (प्रा. तत्ति, जू. गुज. ताति) । 'तमंग' के 'तवंग' तमलंगक (?) **ह गक** (१) नामना किल्लाना ब्रज जेवा भाग (१)

तम्बोल २९-२३ तं बोल (सं. ताम्बूक)
तणक ३६-१७ वाछडा
तलहिका १९०-२ तळेटी
तलिकातोरणबन्धन २००-१७ तळियां
तोरण बांधवां = ते
ताजनक ३४६-४ ताजणा, चाबुक
वक्षटिका ११२-८ तंगोटी (नाना तंथू)
तुरी २२४-४ वणकरनुं वणवानुं
एक साधन (देश्य 'थ्री', 'त्री')
तुल्ली ११६, ८-९-१३-१५-१६
वल्ली

त्रपु १३०-१९ कलाई त्रपुसी १०७-४ काकडी दण्डक २१०-२७केडा, मार्ग, पगदंडा दबरक १६२-१४, २९५-४ दोसे दबरिका ९६-२ देशि दारिद्रत्व १८६-३१दळदर, दळदरीपणुं दीनार ३-२१ एक सिक्का दीपवर्तिक ८८-७ दीवेटिया दुर्गा १७२, १४-१६, २००-२५, ३१२-३ समळी देवगृह र-२८ दहेरं द्रह ७०-२६ घरो (सं. ह्रद) घटी ३१२-१६ घडी, वजननुं एक माप घाटी ७३-२३, ८३-३ घाड धीरा ६७-१०, २१३-१८ (स्त्री.), धीरज धुरि ४४-२६, **१**६५-२६ सींची आगळ, सौथी पहेलां (सर. गुज़. धरथी) धृहिधावक २३९-७ धृळघेाये। धेरणी १००-१० सतत धारा

ंबोतक १९२**−२**२ १ ं बौतिक १७, १५-१६, ११९-४, ३४६-१ धातियां ध्रुबक २९८-१५ ध्रुबको, ध्रुबाका नक १५२-८ नाक ्नबडाकारेण १०-१४ नवडाना आकारे नाटक ५३-२४ नृत्य नाणावटी १९१, ९-१० नाणावटी नात्रक २२-७,१३४-७, (३५-१४ नातरं, सगाई-सम्बन्ध निन्दन ३०-५ नींदण करवी ते (सं. निर + दो) निर्घाद ७०-२ काढी मूकवुं निः**श्रे**णी २४६-८ नीसरणी निःसरणी २४६-९ ्नौवित्त २४३, १७-२९ वहाणवटी पक्वान्न ८-११ पकवान, मिष्टान्न पटकुटी ४९-१ तंबु पटह ३४-६ पड़ा, घाषणा करवाना षष्टकः ५३-२२, १६७-२३ पाटा **पट्टकू**ल ३५-१४, ५५-२१ पटेाळु पट्टयल्ल २१६-५ पटेल ्षण २४६—४ पण, प्रतिज्ञा पतद्रमह २-१ पात्र, वासण परिणेत २००-५ परणेतर परिधाप ४-२४ पहेरामणी करवी परिवारित २१-२७ परबारव **मालण्डी ३३−१४ पाल**ण्डी, दोंगी. धर्मथी छेतरनारे।

पानीयहारिका २-१७, १६८, १०-**१२**, पानीयहारी २१०, २६-२७ पाणियारी. पनीहारी पापर्धि २९-२०, २१९-८ शिकार पार्थे १−१२, ३−१८, ४, ११≔१९ एकस्मिन् पार्श्वे २-२४ एक बाजु पालनक १६९-१५ पारणुं (बाळकने सुबाडवान्) पित्तल १५८, ४-६ पीतळ पिष्पल. १६६, ७-८-९ पीपळा पीठक ४९२-२ पीठु पूजारक ३४६-२० पुजारे। पूलक १४७-१८, २९९-५ पूळा पृष्टि ८६ -५, १●०-१४, २१५ -१६ पीठ पृष्ठि ४२-२ ., पृष्ठवाह ९३-८ बळव पेटा ८४, २३-२४, १३४-९ पेटी पेटिका ५५-१९ पेटी पातिका ३३९-२० पातडी पेासि पेासि ९१ ७-१३ हांकवाना शब्द (सर.पाइस पाइस.) पेलिख ७८-५ पेलि पोटलिक १४-२२ पाटल उपाडनारा,

पाटलियो

पेष्टिलक ३४३-९ पेष्टिल

पौषधशाला१८४-२४ पेशाळ (उपाश्रय)

प्रगे ४७-६ वहेली सवारे, पहा फाटतां (जू॰ गुज॰ 'प्रहि') प्रति (स्त्री) १९३, २५-२६, २•३, - २१ हस्तिलिखित प्रत प्रतिकार ५५-१० पडियार, म्यान प्रमाडि-भूव ५५ १६--२० परमदी राजा प्रस्तर ५-२४, ३४०-२ पथरो प्राघ्णक ३२२-८ परेगो, अतिथि प्रातिवेशिक १२९-१० पाडोशी प्राध्वरमार्ग २१४-१३ पाधरो रस्ते। पालक=आंटी (सूत्रपालक २००-१८ सूतरनी आंटी) (सर०गुज. 'फाळको') फुल्लक २६, १९-२०-२३-२४ फुलु फेरकार ६१-१० फुंफवाटे। फेर २५३-१० फेरववुं बजेरिका १•९-२८ बाजरी बजेरी १०९-२९, ११०-१ बाजरी बाउलक ५३, १४-३० बावळ बांठ १८६-३ बांठियो, वामन बाहिरलो ११४ ३०-३१ बहारना बाह्याली २४७-२० घोडाने खेलाय-वाना मार्ग (जू॰ गुज. 'वाह्याली.' 'वाहियाली' पण मळे छे) बिलाडिका १३९ १८-१९ बिलाडी बीटक ४८, २६-२७-२९ (पाननुं) वीड् बीबी १८२-१३ बीबी (फारसी) बुस २७४-२० भूसं, फोतरां

बोत्कट १४७, १८-१९-२०-३३१ वोकडेा मुण्ट २७१-३ ठूंठुं, ठोंहुं ब्रह् २८८-१९ बूडवुं में ह ५०-२७, १६६-२१ भाट भइ ६८-२६ भडवुं, युद्धमां एक-बीजा साथे भइवं भण २५ २०, २०३-१८ भणवुं भण्डन ६८-२२ भांडण, युद्ध (प्राकृत) भरटक १७८, २५-२७, २५९-४, ३५१-२१, भरडक १७८-२६ भरडेा (शैव साधु के पुजारी माटे कुत्सावाचक सज्जा) मलायित २६४-३ मळान्युं मस्रक्षधरं २३४-ं५ मिस्ती मिस्त्रका ८३, १०-१३ धमण भाण्डागार = ग्रंथमंडार भामी २०८-४ भाभी भाग्मिक १६५-१८ २७ 'ढोली' एटले के 'ढेढ', 'चांडाल' (सं. भम्भा) भारपट्ट २७९-३, ३५१-३• भारवटियो, पाटडेा. भारिका ३१४-२५ भारी मिल्लघाटी ८९-२१ लुटाइ मीलान् धाडुं भूतः २-२५ बुत, मूर्ति (फारसी) भूतस्थानक २-२७ देवस्थान भातृज १०२-१९ भत्रीजो मञ्चिका ८३-५ मांची मञ्जरी ३०६ १५-१६ (कृकडानी)ः मांबर

बेडी २३३-३० होडी

्मठवासनिका १६५-२२ मठवासिनी मठवासिका १६५-२८ मठी २६७-१५ मढी मद् २६२-११ मढवुं मिंद २५१-१० मही मढी ७१, १६-१७ (सं मठिका) मण्ड् ३-५ ६-८ मांडबुं, गाठबबुं ∙मत्त २११, १२-/३ मातो मत्स्यबन्धक १०९, २-४ मत्स्यबन्धक ३३०-७ मदन ६, ९-११-१२-१३, १७६ -१५ मीण (पा. मयण, सं.म्रदन) ०मध्ये ३-१९, ६-२० ०मां मन्द १०२-१४ मांदो, रुण मर्कोटक ३१८-२५ मकोडो २-२३, ३४६-२८ मशीद मसीत मसीतिका २, २३--२४ (अरबी) महानुभाग ११-१३ महानुभाव माछिक ३०५, १३-१६ माछी मात्रिका २०३-२८ वर्णमाला. मात्रका मात्सिक १४०-६, ३०४, १९-२० माक्री मान् १३२-१ मानता राखवी मानक ३१-४, ८५-१२,२९८-२८ माण् माम, मामक २०६-६ मामो ·माग्^{*} १७−१७ मागवुं मालक ३२७-३०, ३३०-२३ माळो **मालिक ६६, १२−१३ माळी** मालिका ६६-१२-१३ माळण माहिलओ ११४-३० मांह्यला,अंदरना सिल १२-६ (ने मळवुं ('प्राप्त

थवु'' एवा अर्थमां) मिष्ट २३९-१३ मीटु मीणाकाराः १८९-३१ मीनाकारी करनारा मीर १४३-१५ सरदार (फारसी) मुकुटवर्षनतृपाः २७९-७ मोडवंघा राजा (जू. गुज. 'मउडाधा') मुक्त ४२-११ मूके छं मुत्कल ५-१०, ८२-२७ १६३-१४, २१८-२१ मोकळुं, छुडुं मुद्राल ४०-२७ मोगल (वुर्की) मुलाण | २,१७-१८-२०, ३४६-१५ मुलाणक | ३४७-६ २-१२मुल्ला(अरबी) मुशलमान ३४९—३ मुसलमान(फारसी) मुष्टि ५५, ८-३० मूठ मूटक ४५-९ मूटक ६,३१-३३-५४, १९०-२३ मूडो, सो मण मृष्टा ३-१४ मीठी मेल ११३-६ मेळ मोचिक १६६, १४-३० मोबी माद १५२-८ मरोडवुं(हिं. माडना) मेरिम १५२-२ मेराइ, मेरिम युगन्धरी २८−३०, २९−१,३१८-१९ जुवार युगान्धरी २००-२५ धूसरी रश्चू ३-१२०, ४१-३ राह्मबु

रक्षपाल २२३-३ रखवाळ रक्षा १०७. १२-१३ राख रह ४२-२३, १३४-१६ रडवु रन्धनी १२-३ रांधनारी, रांधण रवारिक ९२-१२ रवारी, ऊंटना रखवाळ रब्बा १४५,१७-१८ २७१,२१-२२राब रलू १५१-२६, २१२-९ रळवुं,कमाबुं रसवती ८-१२, १६६-४-५-१८-१९ रसोई राउल ५४-२९ राजकुल, राजदरबार राजपाटिका ७१-२४, २८०-८ राजा फरवा नीकळे ते. रयवाडी गिटि ३२४-२० राड, बूम राटि २९८, २३-२८ झगडो, कलह राणिमा २३४-२६ राजत्व, राजपद राव ८५-३० राव रिंख् १६९-१५ रींखबुं रिन्छ २३, १- - 3 रींछ (सं.ऋक्ष) रत ७४-२८, २०८, २९-३० २०९-१, २४३-२७,२७८-८ कपास रेक्य २४३-६ राकडुं रेाक्यद्रव्य ७२-२६ रे।कडुं द्रव्य, रे।कड लक्ष्मी ४, ११-१५ धन स्म ३४४-२३, ३४८, २३-२६ आग लागवी, सळगवुं हान ३४८, २३-२६ आग हागी, सळग्यु लगाव् १०७–१२ लगाववुं लघुनीति २०९-७ लघुशंका

ह्रपनभी १८६-१७ लप्पनश्री २०६, १४-२०-२२ लापसी लह्न २४६-८ लेण लहनक १२९-२६, १६९-२५ लहेखुं लिप्सय २८३-२३ लपसबुं लिम्ब ६-१३ लीमडो (सं. निम्ब) लिलासुः ५०-५ लेवानी इच्छावाळा ('ला'='लेबुं'नुं इच्छादश क वि०) **ड्रट् १**३३-३ ल्रट्ट्र **ॡष् १६४**–५ ॡछवुं लेऊआ कौद्धम्बिकाः १९०-१ लेउआ कणबी लेखशाला ६६ ५ निशाळ लेखशालिक ६५-५ निशाळियो लाइक ४४-२८ लाटे। **कामातक ३३६, १-६**-८ लाम**डो**, लेंकडीना नर लौहिंडक १६४-१५ लांडाना सिक्का (१); ओछामां ओछी किम्मतना सिक्का वउणि ४-७ वण (देश्य 'वबणी' =कपास; दे० ना० ६-८२. **७−३**₹) वणन ९६-२ वणवुं ते वधूटी ३४-११, २०६-२६ पुत्रवधू **वनक १२०-**१३ वणकर वनकपुष्प ७४-२७ वणनुं फूल वन्ते। हु ३४६ २९ वंटे। ळिये। वर् ७-३०-८८-३, १६४ १२ १२ वाटबु वरम भंग २४३–२३ वाट(मार्ग) पाडवी ते वधयू ३-१९,३-२६,४-६ बधाववु ते, (दीवा) ओलववो ते

वय् २-१३, २ २०, २-२९ शरुं, उत्तम, सरस वल् ५-७ पाछ् वळवु बल्ल ९७-२७ वल्लक ९७-२८ वसहिका २६९--२२ उंगश्रय (सं वसति, प्रा वसहि) वस्करिका ५, २२-२३-२४ वखर (सं. उपस्कर) वहिका ५४, २-७, २४३-५, २८१-५० वही वाटक २२०, ११, १३ वाडो बाटी १०७, ४, ५ वाडी. बगीचेा वारक ८-१२ वारो वारके ५४-२९ वारीमां, वखतमां वाधं ७०-९ वाधर वालीनाह ३५१ ६-७ एक ब्यंतर वासनिका १४-७, २३-४,९८-९-१०**-११**-१२, १६९**-२२**, १९६-१८, २३० १५-१७. ३२६-१० बांसळी(पैक्षा राखवानी) वाह् २८-२६, ९६-१६ १७२-२७, २४४ २० छेतरव वाहन ७३-२० वहाण वाह्रनिका ६१-२५, ६२, २-३-६-१३-१६ मोजडी जू गुज. 'वाहणी.' सं. उपानह + इका, प्रा. वाहणाओं) वाहरा ८५-७, २०९-२३ वार, मदद, कुमक विगोप् १२७-१७, २४५-१९, ३२६-२१ वगे।बबु विचट् २१५–३० उखडवुं, छूटुं थवं (हिं. बिछडना) विचाले ८४-२८, १७७-१

बचाळ अधवच विटाल् १६५-२८ वटाळ करवा, वटलावबु विण्टनक ५५-२१ वींटणुं, वेष्टन, वीटेखं वस्त्र विध्याप् ५१-६, ३४८-२६ बुझावबु विलक्ष ८५-२९ विलखुं, छामीलुं विलगित २१५-४ वळग्यु विशुष्का २००—२१ वसूकी गयेली विश्वलिपय २१५, २४ २६ – २७-२९-३१ वीमलप्रिय नामना द्रम्म विस्तर ८४-८ भपको, आटोप (प्राकृत विछड्) विहर् ६,-२३, १०४-२७,३१४-**१०**, ३१६, १८-२२ वहारवु विंशोपक ५०-१ ए नामना नाना सिको (जू गुज.वीसा.सर,अवाचीन प्रयोग वीश वसा" "सो वसा") इद्ध ४ १-३-४-७ वहुं, मोटुं (हिं. बढिया) वेलाकुल ५∹२₹, १४८ ५ बंदर (तेमांथी गुज वेरावळ) व्यक्त्या १६३-२३ वीगते र्व्यापार २३८, ७-८ वेपार शकुनिका ४५-२४, ३५०-२२ समडी, समळी शण्ड ५८-१ १४१-२ सांड, सांढ. (सं. षण्ड) श्चाण्ड १ ६-१० शब २९७-४ शब (सं. शव.) शाइवल ९४-४, १०७-२६ लोला (सं. शाद्वल) शालापति १३६-२८ साळवी शिक्षय् ३१३, ५-७ शीखववं शिलाकुद्दक १५५-१५ सलाट

शिलापट्टकः ५१-२३ सलाट ञ्चंडक ३१२-१ स्ंडलें। ञुण्डलक १३९–१६ स्ंबला भूगा**रः श्रे**ष्ठी ४४-१७सगा**ळवा ले** शेर ३०-४ शेर शोषि १३८-१५ बुद्धि (प्रा साही) भाद्ध ५-६ श्रद्धालु, जेन शा**वफ्र** आदी ३१४-१५ आविका श्रीकरी २३५-१३ एक जातनी प्राप्ती षष्टितन्दुल ११–१५ साठः चेाखा षुषद्रम २८ १६-२४ गळीरंग्या शियाळनुं घरेखुं प्रभावक नाम सकालम् ३२ २३ सकाले ४-२२ संकुल २१७−१२ सांक्**ट**ं सर्जीक ३३−२ , ४ = ३५०-८ श्रजुं करवुं संडक २०-२९ अंगुठा अने पदेकी आंगली सत्क १०८-११ •तुं (प्रा. संतिय) सन्द्रिक सर्घे ३५० १९-५० सीं (रियो साप सन्धः (स्त्री.) ३५०−१ संधि समलिका ८०-२५, ८१, १५-१६-१७ बाजनी मादा, खेनिका (सर०-गुन• समळी) समा (स्त्री.) ४-२२ सम, सागन समेति १०३-३ आवडे छे सम्भाल् १७-२४, २७३-२३ संभाळवुं संमुखं २−१३, ६−१८ सामुँ ६८, १५-२२-२५-२८ सरहा, काकीहा तरहः

सर्वावसर ५५-४ दिवाने आम सद्देलक ३४५, १०-११ १२ दोळा **बा**केतनपुर ४७-**२ वाके**तपुर सात्आ १८५-११ सामवा बाधु ४-९ बाबकार सारा ६९-२६, ९२-२२, १०८, २०-२२, १००-८ सार, सारस भाळ, मदद सिंदर १९५, ९-१० सींदर्श सिन्द्रिकः सर्व४५-२१ सींदूरियो साप सिमिसिमायमान २७१ ४ समसमतुं (अप० सिमिसिम्) सीमाल भूप २५७-१२ हीमाहियो राजा, सीमापाल राजा सुकुमारिका १०४-८ सुंवाळी सुखासन ५४-४ पालली सुरङ्गा ५३-१३ सुरंग **सु**रत्राण २, ११–१५, ३, १–३ मुक्तान (अरबी स्मरी १५९-१३ सूचरी सूचिक १९२-३ सइ, दरबी सेबवाल १८२–२१, २३६–१२ एक प्रकारनी पाछखी सेतिनका ८५-११ सेतिका, एक माप सेर ८७-२३ शेर सेरिका ६५-११ शेरी सेस्ब्रहस्त ९६-१९ सेस्यहरतं ९६-२१ (सं ० शस्यहरूत, प्रा०-सेस्कइस्य, गुज•-शेलत) सोनी १९१-६ सोनी (सं शीवर्णिक, प्रा ० से। बिक्रअ) रुकन्धिक ९६ -२७ खां वियो स्त्यानवृत २५५-८ बीतुं बी

स्थग् ४४-५ ढांकवुं स्थगी २६६, २५-२७,२६७, ₹∙७ पानना वाटवा उंचकनार सेवक= तांबूलवाहक (जू गुज थइयाइत) ('स्थगी' वाटवा'ना अर्थमां होय छे-जेम के'तांबूलस्थगीधर'. अहीं एवा सेवक माटे वपराया लागे छे) स्यर्धक (न) २३,४-६-७,८५-१२-११४ -२६, १६८-१७ २४०, २४-२५ फदियुं के बीजा काई सिक्हो (?) रूफेद १३-८, ८३-४ फेडवु स्वक ३२२-७ सगुं इक्क् ५-१४, ६-१४ हाक मारीने, धमकावीने काढवुं

इज २४३ १७, २८, २९ हन, मकानी जात्रा (अरबी) इडि (हिडि) २०१–२५, २०२, १—३ हेड, पगमां जडाती लाक-डानी एक जातनी बेडी (शुंखला) इद् ३२३-८ हगबुं हरीमजद्वीप ५-२२ होरमजने। टापु (फारसी) हल्लू मन्लू ३००-१८ हालबुं मालबुं हल्ला (स्त्री०) ३००-१७ हळ हाडि हाडि २०२-१४ हड हड हिण्ड् १३८-८ हींडवुं, भमवुं हिण्डेाला-खदवा २१५-९ हींडेाळाखाट इदित १६८-८ हम्या, मलत्याग कर्यो (सं. हदित)

(२) सदिग्ध अर्थवाळा शब्दो

कपरिक २५२-१८ बेवडु - त्रेवडु लपेटेलुं पूंदुं, जेमां कागळ वगेरे रखाय. राजस्थानी 'कॅवली', अतिचार वगेरेमां ते ज्ञाने।पकरण तरीके गणावेल छे (राजरोखरना 'प्रबन्धकाश'मां १०, २७-२८मां 'कपरिका' अने २४, १९-२०, २५-२६, २५, १-२मां 'कपलिका' छे.) ग्रंथिं कु २०५-२५ शोक्य उपर ते नडे नहीं ते माटे नवी पत्नी तरफथी गांठ बांधवी (सरलावा 'प्रबन्धचिन्तामणि' १०४–२९, १०५-४) ग्रामहट्टकः १७, २३-२४ गामना मुखी (?)

चुरडक-मोरिया तक-चुरडक २१४-१७

छाशना घडो के मोरियो (राज. 'चर्डा')

छलि ५०**−१३='**छल्लि', छाल (**?)** ('छलिछन्नद्रम इव')

छीत्कार्य् २७४—१० अडकाववुः, स्पर्श कराववा (सर 'छिक्क' = स्पृष्ट)

जिह्नयाब्लिक (?) २२१-२० (सर्पने मारवा माटेना औषधिप्रयोगना संबंधमां 'जिह्नयाल्लिक' उपायनी बात छे)

टुषरिका २३३-२९ टोपी (१) (वरसादना जलप्रवाहमां नाना बाळक कागळ वगेरेनी जे होडी तरावे ते माटे 'दुपरिका' प्रवा-हमां बहेती मूकवानी बात छे.)

त्राहिक १७७, २०-२१-२४-२५ रोपो (१)(मञ्जिष्ठत्राहिकानि=मजीठना रोपा १) दण्डालक ५९, 28-20-28 से। नीनी एक जात (१) दशार्धपूजा ३८, ७-८ प्रहार करवा के थंकीने अपमान करवुं (?) (अपमान करवा माटे माथा उपर ''दशाधपूजा'' वात छे.) निछारक १३७-२६ निर्गमन-द्वार. राज 'नछारे दिया' एटले घरने बारणेरा खेला दीवा.(कुशील स्त्री घरमां 'निछारक'मां जतां पण बीए. ज्यारे नदीना खूणाखांचरा पण जाणे एवी वात छे) पतीयानकाः ४४०, २३-२५ पतीआनकाः २७२, १–७ जेमना जमीनमां भाग छे के जमीन के मन्दिर उपर पर परा गत भोगवटाना हक छे तेओ (एक सदर्भमां जमीन उपरना हकनी वात छे, बीजामां मंदिर उपरना हकनी). पदक २४७-२५ (?) लाकडीने 'पन्क ब्रता' कही छे. पर्यवसाप् के 'पर्यवसाय्') २८-११, ११२-७ जेम तेम करीने समजावद्यं. (एक संदर्भमां विताने पराणे समजावी चंदनकाष्ठनुं गाहुं भरीने वेपार माटे परहेश जवानी बात ,छे अन्यत्र पति, ससरा अने मात-पिताने गमे तेम सनजावीने पतिनी साथे परदेश जवानी वात छे. 'पुरातन प्रबन्ध संग्रह ८२, २०-२१

मां पण जेनुं घर बळी गयुं छे तेने छाकाए समजावी छीधानी वात छे. सांडेसरा अने 'पयंवस्था','होवानुं सूचवे छेः ते मूळनी दृष्टिए कदाच विचा-रवा जेवं, पण जे।डणी अहीं पण 'प्यवसायु छे) परुलयन १४५, १०-११ बारदान पल्ययन (१) (सानुं भरेली गुण खाली करीने बाकीना बारदानने 'स्वर्णपल्लयन' कुछ छे) पादशीर्षिका २७४-१० ३४६-१ पगना मोजां के पगे पहेरवानु^{*} केाइ वस्त्रविशेष 😲 (एक स्थळे पराजितने 'पादशीर्षिका थी स्पर्श करीने मान्भग कर्यानी वात छे. पगरखां माग्या 'पादशीर्षिका' माग्यानी वात छे) प्रक्षालन ३४२-१६ (नख) कापवा (१) (नापित शेठाणीना 'नख-प्रक्षालन माटे आव्यानी बात छे.) प्रथमालिका १०४-९ पहेलुं भोजन के सवारना नास्ता (१) विवाहमां बाळकाने सवारमां सुवाळीनी 'प्रथमालिका' आप्यानी बात छे) प्रशक्तिका १७८-२ | जैनसाधनु शिकिका १७८-६। एक उपकरण (प्रतिलेखना करती वेळा 'प्रशः क्रिका' उतारवानी अने 'शिक्तिका' खाई जवानी वात छे) बालि १६७-१५ बालिका (१) (योगिए 'बालि' स्त्री स्थाप्यानी वात छे.) बूची २०४, १०-१५ अडवुं, मूर्ख (पोताना गरीब भाईओथी लाजती श्रीमांत बहेन

'गादह' = गधेडो अने 'बूची' एवा नामें ओळखावे जे.)

भूतेल ३४६-२९, ३४७-१ भूतिओ वंटोळ. राज॰ भन्तिओ वंटोळ. राज॰ भन्तिओ छे। (व टोळने भूतेल कह्यो छे) महिणिम पर्व १६९, १३-१४

महिणिकाह्व पर्व २५५, १६-७४ महिणिकाह्व पर्व २७२-२ देवी-पूजा माटेनुं आसा सुद नोम सुधीनुं पर्व, नवरात्र

रउलाणी ५४, १२-१६, ५५, १२-१४ 'राउळ' नुंस्त्रीलंग. 'राजराणी' (यागीनी सिद्धि बुद्धि नामनी शिष्याओन 'रउलाणी' कही छे)

लोष्टिक २४२.२७ एक नानो सिक्को (प्र० को०९७-२६ मां पण आ शब्द अने बात छे सांडेसरा अने ठाकर ते 'लाहडिया' नुं संस्कृती कृत रूप होवानुं सूचवे छे)

वर्तुं त्रक ४४,५-७, ८७-६, वर्तुं त्रक १२५-२६ वर्तुं त

वटलाई (८७-६मां कानमां पाणी भरेलुं वर्तुं लक' मूकवानी वात छे १२५-१६मां तेल भरेलुं वर्तुं लके मूकवानी वात छे. भरेलुं वर्तुं ले लई जतां तेमांथी तेलना टीपां पड्यानी वात छे. ४४-५मां सेपारी जेवडा आकारनी उपर 'वर्तुं लक' ढांकवानी वात छे. आ उपरांत प्र० के। मो सरेला 'वर्तुं लके'ना निर्देश छे।

वलयमुख १०९, ९-१०-२० नेतर के बांसना नाना घडो जेमां माछलीओ रखाय छे. (माछली माटे 'वलयमुख' मांड्यानी अने तेने तोडीने ते बहार नीकळी गयानी बात छे.)

विचणी २४७-२५ (१) (लाकडीने 'पदकवृता' अने 'विचणीमया' कही छे)

रार्वरी ३४२.२५ साधुने वहोराववानी कोई खाद्य वस्तु (१)

शिक्तिका १७८-६ जुओ० 'प्रशक्तिका'

शुंगारिकोटिशाटी ४९-८ करोडनी किंमतनी शणगारेली साडी (प्र० चिं०८११२-१३, पुरा० प्र० ४०-२ ४६-२८)

संचारक २३३-१० संडास गंदुं नाळु (गुस्से थईने पुत्रने 'अशुचि संचारक'मां नाख्यानी अने तेमांथी काढीने पाणीथी नवराव्यानी वात छे प० चिं. ३४, २०-२१मां माघ प डितनी समृद्धि वर्णवतां तेना 'संचारक'नु भूमि-तल काचनु होवानु जणाव्युं छे.)

समारित १६६-१० खसी करेलो ('असमारित' बळदने खेतरमां खेडवा माटे हांकवानी वात छे)

सहोलिक (पुं) १६९,४-८ (तेलना) क्पी राज० 'सहोलिया ' 'झावलिया'

हफरक १३२-१ (?) छूंटाराओ स्त्रीने उपाडी गया तेने छोडाववा चार सार्'सफरक'वाणियाए मान्यानी वात छे. 'स्पर्धक'ने बदले हशे)

(३) केटलाक नेांधपात्र प्रयोगो

व्याकरणदृष्टिए प्रबन्धोनी भाषानी केटलीक लढणो अत्यन्त सुविदित छे. परोश्व भूतकाळना रूपोनो प्रचुर प्रयोग; 'कह्युं' विगेरे माटे 'जगौ' वगेरे; 'बोस्यो' माटे 'अवग्', 'बेलि छे' वगेरे माटे 'जल्प'ना रूपो; 'लेवुं' माटे 'ला'; 'विचारवुं' माटे 'ध्यै', 'लागवुं' माटे 'लग्', 'मूकवुं' माटे 'सुच्'; 'काढवुं' माटे 'कमं', प्रेरणार्थें प्रत्यय 'आप्'नो व्यापक वपराश ('प्रबन्ध-पञ्चशती मां 'कथाप्' 'कशप्' 'चटाप्' 'छोटाप्' एकवार तो सीधुं गुजराती 'छोडवू' 'मंडाप्', 'मुस्कलाप्' वगेरे)

गुजराती वगेरेना संयुक्त क्रियारूपोन् प्रतिबिंब, जेम के 'गच्छन्नरिम' १७८-२७ 'जाउं छुं', 'जल्पन्नस्मि' १७४–२९ 'बोर्खुं छुं' 'गच्छन्नस्ति' **११६–२८. 'नयन्नसि'** ४२०-७ 'कियमाणोऽस्ति' ९७-१०, 'प्रोच्यमानमस्ति' १६६-२६, 'स्थाप्यमानास्ति' १६७-११, 'वमन्तभृत' ८१-२८, 'नमन्तभृत' १०२-२ वरोरे, क्रियारूपो प**रत्ये** आवी केंटलीक उपरउपरनी विगतो नोंधी शकाय. नामिक विभक्तिना प्रयोगीमां पण गत्यर्थ सप्तमी ('समीपे गतः', 'ग्रामे गतः' वगेरे); चतुर्थी माटे षष्टी ('सुरत्राणस्य प्रोक्त' वगेरे). पंचमीने बदले सप्तमी ('किस्मिन् पुरद्वारे निस्सरामि') ३०-६-७, 'मध्ये', पार्श्वे', 'पश्चात्', 'अम्रे', 'उपरि', 'स्थित' वगेरेना अनुग तरीके प्रयोगः, 'बहिंग'मनाद् अनु' 'देवतापार्श्वात स्थापयामास' जेवामां गुजरातीना विभक्तिसम्बन्धोतुः प्रतिबिंब-वगेरेनो निर्देश करी शकाय. सार्वनामिक रूपने लघुतावाचक 'क' प्रत्यय लागीने थयेलुं 'मयका' (=मया: ३-२३) जुता समयता आवा अनेक रूपोनुं एकमात्र अव-शेष छे. आ बधा करतां वधु नेांघपात्र छे केटलाक गुजरातीमांथी ऊचकेलारू दिपयोगी. तेमां 'पडवुं', 'लागवुं', 'काढवुं', 'चढवुं', 'मांडवुं' वगेरेनी जे अनेक लाक्षणामूलक अर्थछायाओं गुजरातीमां विकसेली छे, तेनो संस्कृत 'पत्', 'लग्', 'कप्', 'चद', 'मण्ड्', वगेरे उपर आरोप करी देवामां आव्या छे. अने केटलाक तो आखाने आखा वाक्या भ्वनिफेरे गुजराती वाक्यरचना रजू करतां देखाय छे. अहीं नीचे एक नमूना रूपे यादी आपीं छे

- र पादौ अवधार ३५१-१ पधारतुं
- २ उत्सूरं क २१४-२६ मोडु करवुं, असुठ करवुं
- ३ उच्चैः कु १०-२ ऊंचुं करवुं
- ४ बहिः कर्षयू ५-२४ बहार काढवुं
- ५ भूमध्यस्थां कर्षय् १८९--१० मामांथी काढवी
- ६ हस्ते चट् १२-१२, ८६-४ हाथ चडवुं
 - ७ ज्वरः चट ८४-२८,१७८-३ ताब चढवे।

- ८ मुत्कलं जातं ५-६० माक्छं थयुं
 - ९ उत्तारका दापितः ५४-२४ उतारो देवराग्या
 - १० धीरांदा ६७-१०धीर आपवी
 - ११ शिक्षां दा ३९-**१९शी**ख आपवी
 - १२ पृष्टिं दा १४२--१३ पीठ देवी.
 - १३ द्वारं दत्तवान् ३४८-७ बारणं दीधं
 - १४ खात्र पातयू २०८-१७ खातर पाडवुं

- १५ दुष्कास्रोऽपतत् ३१-२८ दुकाळ पड्यो
- १६ संध्या पतिता ६३-६ सांज पडी
- १७ टालिः पतिता १०७-२ टाल बर्ज
- १८ पट्टकं बन्ध् ५३, २२, १६७-२३ पाटा बांधवा
- १९ कञ्चडकं बन्ध् २११–२४ काछडो बांघवा
- २० त्रामः भग्नः २-२२ गाम भांग्धुं
- २१ कुहेडा भग्नाः ५४-३३ कायडा भाग्नाः ५४-३३ कायडा भाग्या
- २२ गणितुं मं डितानि २१४-१६ गणवा मांडचा
- २३ शकुने मान् ३**१२**-४ शुक्रन मानवा
- २४ वरं मार्गय् ३५-१० वरदान मागवुं
- २५ ग्रहणके मुच् ३३५-१९ घराणे मूक्तुं
- **२६** शून्यां मुच् २००-५ सृती मृकवी
- २७ उद्घाटं माचयू १९३, ४.५ उघाडुं मुकाववुं
- २८ मुत्कले मुच् २१८-२१ मोकळा मुकवा
- २९ पठितुं मुच् २०७-२५ भणवा मूकवेा
- ३० नंष्टवा या ९-२४ नासी जबुं
- ३१ करो योज्य ४८-२८
- ३२ हस्ती याजय १९१-१६ हाथ जाडवा
- ३३ रक्षां लगाप् १०७-१२ राख लगाडवी
- ३४ हस्तं लगय २-२८ हाथ लगाडवा

- ३५ केतिः + लग् ५५, ३०-३१ भाभडकेट लगवी
- ३६ गालिः + लग् १२२-१९ नाळ छागवी
- ३७ **बुमुक्षा** सम् १९०-७, ३३८ २, ७६-३ भूख सागवी
- ३८ तृषा लग् ४६-१९, तृद **ग**ृ६३-६ तरस स्नागवी
- ३९ पापं स्टग्-६-१४,**१६६-७८** षाप स्टागनुं
- ४**० द्विप**हरी लग् **१**८३—४ **बपार** थवी
- ४१ बेहा लग्६४-१२ वार लागवी
- ४२ कर्तु लग् ५-२३ करवा लाग**तुं**
- ४३ कारयितुं छग् १२३-११ कराववा लागबुं
- ४४ छहनकं ला १६९--२७ छहेणुं लेबुं
- ४५ पश्चात् वल २३५[,] २४ पार्छुं बळवुः
- ४६ चुल्हक संधुक्षय ९२,६-७ चूलो संधुकवा
- ४७ जिह्नां संभालय २७३-२३ चीभ संभालवी
- ४८ उर्ध्व स्था १०-२,४०-३१ ऊमा थवुं
- ४९ चामरदालन ७१-१२ चामर दाळवा ते
- ४ गल्डुम्पकदान १६१-१७ गळा हं पा देवा ते
- ५१ चंदिकरुजन ३४४-२५ चांदी रूबावी ते

- ५२ चुल्हीसंधुक्षण २०८-२ चुलो संधुकवा ते
- ५३ नालिकेरस्फोटन २७३—५ नाळियेर फाडवुं ते
- ५४ स्वं मस्तकं ख^डजयू ९८-१७ पातानुं माधुं खजवाळबुं
- ५५ उपरि या १-१४ उपर जबुं
- ५६ पश्चाद् या ७-४ पाछा जबुं
- ५७ सार्घम <mark>आया ३ २, ३</mark>-३ साथे आवर्षु
- ५८ संमुखं विलोकय ६-१८ साम[°] जे।बं
- ५९ वरम बिलोकम् ३३७,२५--२६ बाट जोवी
- ६० मौनी भू २-२१ मूंगा थ**ई चतुं** ६१ मार्गे चलन् १-२० रस्ते चालतां
- ६२ वर्ष बतम् १७०-२३सादं कर्यु
- ६३ मस्तकं भद्रीकृ १२४-५ मार्थं भद्रावद्यं
- ६४ बाहरा धाविता ८६-६ बाहर धाई
- ६५ सकाले विकाले ३२०-२७ वहेलु –मोडु
- ६६ दीपो वर्ध्यताम् १७२-२७ दीवा वर्धरो
- ६७ घटिकायोजनाष्ट्री २६७-५ घडियाजाजन सांढणी

- ६८ किं अद्यक्ते नाऽऽगम्यते ५५, ४-५ आजकाल केम आववातुं यतुं नथी ?
- ६९ गेाष्ठीं कुर्वाणा उपविष्टाः २-११ वात करतां बेठा हता
- ज्वलितं सन्ति ज्वलिसा वा २०९,
 ३-४ सळग्या के सळगशे
- श्रे त्वादशा मत्फ्रकृतेन उड्डीयन्ते
 २०४२८ तारा जेवा मारी फूके
 ऊडी जाय
- ७३ पृच्छनेन स्तम् १६९-१९ पृछवाथी सयु
- ७४ त्वया कि स्यात् २०५-२ ताराथी इं थाय तेम छे ?
- ७५ अद्य किमिप रद्धुं न शकितं मया १७० - २३ आज माराथी कांईपण रांधी नथी शकायुं
- ७६ न शीतं लगग् भावी ३७-२२ क्यांक ठडी न लागी जाय
- ७७ ढोडस्य पोहत्वम् ७८-५ ढोलनी पोहत्वम्७८-५ ढोहनी पाह
- ७८ जीवन्नरेा मद्राणि लभते १७३ २ जीवता नर भद्र पामे
- ७९ कीटकोपरि कटकार मः २५२-

९, २९८-१२ कीडी उपर कट^क

आ यादी सारा प्रणाणमां लंबावी शकाय तेम छे. वाक्योनी समग्र वाक्यरचना, तेमना ढाळा अने शैली मोटे भागे गुजरातीना होवानुं लाया करे छे. संस्कृतना वेशमां गुजराती भाषा होवानुं अनेक स्थळे प्रतीत थाय छे. शताब्दीओ सुधी (अने बनारू हिंदीनी जेम) विविधमाणी प्रदेशोमां राष्ट्रभाषा तरीके संस्कृत अखिल भारतीय व्यवहारमां रहेतां, ते केटली बधी बाळी बळे तेवी बनी शकती ते वस्तु प्रबन्धोनी भाषा स्पष्टपणे बतावी आपे छे. आम मोन्य-भाषाना उद्भव अने षडतरनी व्यापक हिएए पण जैन प्रबन्धोनी भाषा धणी रसप्रद चणाशे.

WORD INDEX

भइराणी 26	भवयज्झ् 32
अइराहा 51	अब्भायत्तो 45
भइरिंपा 23	अ म्माइआ <i>5</i> 7
भइहारा 51	अयतं चिअंस् 24
· अउ राउर [*] 55	अयं छ् 53
अक्खोडिअ 183	अरविंदर 28
अग्याहे। 28	अरिअल्ली 39
अचर े 55	अरियल्ली 130
अन्छिघरुलेला 29	अलसं 58
গ ভিত্তবি <mark>সভিত 24, 55</mark>	अला क 53
भच्छिहरिल्ले। 29	अलिअल्ली 39 , 118
अन्छिहरूले। 29, 54	अहिब् 81
अच्छोहिअ 183	अक्र त्थ ं 58
अङ्जे। 55	শ ন্ত 29
अण्डो। लिआ 56	अवअक्ख् 40
अडखिमसअ' 56	अवअक् खभ ं 40
अ डया 133	अवअ ञ्चिअ 24
अणकडे। 120	अ वअच्छिअ [*] 40
अणरामओ 56	अवज्झसं 58
भणहारओ 56	अवड्ओ 58
अणुव ज्जिअ * 56	अवडिकिकओ 58
अण्णाण 56	अ व डिअ · 58
भत्ता 123	अवणे। 58
अत्थुड' 57	अवत्तयं 59
अ त्थुवड [•] 47	भवयच्छ् 32
अद्धणे। 45	अवयाणें 59
अवेसी 47	अवयारी 59
भिब्भिड् 81	अवयासि णी 59
अवडओ 75	अवराहे। 59

अवरे।हे। 59	
अवलुआ 81	
अवसमिआ 47, 57	
अविअ' 28	
अवेसी 47	
अवंगा 58	
असराल 90	
अहेरण" 47, 81	
अंकेल्ली 28	
अंगलिअ 49	
अंच् 44	·
અં છિએં 24, 44	•
अंबम सी 52 , 57	
अंबसमी 47, 52, 5 7	
अंबेट्टी 57	
अंबेसी 47, 57	
भाभल्ली 59	
आइप्पणं 60	
अ ाउस [:] 60	
भाडुआली 60	
आणाई 60	
आमलयं 61	-
आयामा 81	
आयासलवा 61	
आराइ 90	
आरंदरं 61	
भालासा 121	
आलीलं 61	-
आळीबणं 61	
आवंग 53	
आवग्ग 90	
आवड्ड 90	

भाहच्च' 140
आहु [•] हुरे _। 61
इब्मे। 138
इ रिया 28
इल्ली 62
इल्लीर 62
इल्ले। 62
इंगाली 49
इंघिअं 29
इ देगाव 128
इंदड्ढलओ 62
इंदवहू 128
इ देश 188
इ देाव 128
ईस ं 62
उअहारी 62
टक्कोला 62
उ क्क ती 31
उक्त दी 31
उक्कुडा 28
उ क्कुरडा 28
उ क्खंडिअं 20, 63
डिक्खण्णं 20
उक्ख ंडा 63
उग्गाल 100
उग्गु छ छिआ 63
उग्धाओ 63
उच्चि डिमा 12
उच्चेह्लर 20
उच्चेालि 82
टच्चेाले। 63

उच्छ _{ट्ट} ो 20	उररी 28
ব च्छलि अ' 63	उद्दपुल्ले। 123
उच्छिल्लं 28	ંક लિઅં 64
उच्छुल्लो 63	उछह ते। 101
ৰ ড্যৰ 63	उह्नम् 52
उ ष्ड ं 125	ਤੜੀ 28
उज्झमण [*] 20	उल्लु∓क् 82
उण्झरिअं 20	डल्के ाच 13, 96
उद् ठद 90	उल्लेख 97
इंडअ ं 130	डल्हसिअं 64
उड्ड 90	ड ब्बस 186
ब् ड्डासे। 140	उन्बरे। 62
उद्दे। 23	डब्बा 62, 65
उ त्थह्लप त्थह्ला 2 3	डब्बाढं 98
उत्तलहुका 20	उब्बाहा 62
उत्तिरिविडि 63	उब्बाहुरुं 65
उत्तृष्पिय 193	उव्विडिमा 12
उद्दाल 21	डब्बिह 191, 2 0 1
उद्दामा 63	उ न्तुण ं 65
उद्देही 64	उ मु ओ 65
उदाओ 63	ऊ आ 28
उ ट्पाल 45	ऊस ण 65
डप्पीलें। 63, 82	ऊस ल् 52
उप्पेहड 64	कसारो 29
बण्फाल् 45, 82	ऊसुरुसुंभिअ 207
इ प्फुंकिआ 24	ऊसु भिअ 207
उब्बुक 21	एकसिंबली 65
उच्चूरे। 64	एराणी 26
डम्भारुण 20	ओअंटा 71
उ म्मंड 64	भाक् ख डिअ 63
उम्मच्छवि अं 64	ओआल 100

ंभोग्गारु 100	कडइओ 67
भोच्छत्तं 65	कडतला 67
भोन्छिअं 66	कड सी 38
ओज्झायं 66	क डेवर 53
ओ्ड्ढणं 21, 82	कड़े। 149
भोड्डिगा 21	कणय ंदी 39
भोत्यओ 66	कणिआरिअं 67
भोत्यरिओ 22, 82	कणिकका 57
ओइविअं 66, 99	कण्णस्सरिअं 67
भोद्दाल 21	कण्णास्सरिअं 67
લો રંપિસં 66, 99	कण्णाच्छडिआ 68
भोरिह्ले। 66	कण्णाेहत्ती 68
ओरंज 66	कप्पडिअ 187
ओल्ड्अं 47	कष्परिञ्ज 83
ओर्लिमा 67	करघायले। 25, 48
ओलुग्गे। 82	करणि 184
ओलुह त 101	करमरी 132
ओल पंत्रों 67, 102	करयरी 38
ओवडी 98	कर सी 38
ओवड्ढी 96, 98	क रिय दी 3 9
ओसरसुंभिअ 210	कलमल 180
ओसरिअ 100	कलंबू 53
ओसीअ 100	क्रिंजं 31, 50
ओसुरुसु भिञ्ज 210	कलेरे। 53
ओहट्रिअं 67	कल्लं 29
ओहरिस 100	कल्लेाले। 84
ओह स 100	कवासाे 68
किंकडो 50	कविड' 49, 68
काधाडा 25, 28, 48	कविसा 68
कम्थायले। 48 कम्थायले। 48	कब्बार्लं 13
·	कसरे। 145
कच्छु 12	कसले। 149

क केल्ली 28, 120
क ठच्छिद् 113
क ठदीणारे। 113
क बरे। 68
काणत् ये वा 68
काणच्छी 67
कार्सिजुले। 31
कायंचुला ३१
कार्य चुला उर कार्लिबे। 38
कार्लबा ३६ कावी 68
कावा ०४ कासार 69
किंपओ 69
किलिंच 31, 50
किंहिंचिअं 31
किविडी 49, 68
कुक्क् 21
कुक्कुडे। 28
कुक्कुरडा 28
कुच्छिल्लं 28
कुट्टयरी 69
कुद्दा 69
कुडिआ 113
কু ভু चिचअं 13, 15
कुडुंबीअं 13
कुड़डं 20
कुमारी 69
कुम्मण 101
कुररी 28
कुरकुरिअं 70
कुरंडा 37
कुरुसाण 101
कुरले। 37, 7 0

कुल्ला ४६
कुल्हा 21
कुहिणी 70, 146
कुंडिअपेसणं 69
कुंडिओ 21
कु ंदी र [:] 41
कूओ 140
कुढा 69
कूल' 130, 134
कूवार 133
कूवे। 69
कूसारा 29
काडआ 127
काक्क् 21
के।ज्झर 191
कार्टिबा 70
काट्डम् 83
कात्थर 14, 20, 68, 70
के।ला 188
काला 37, 46
केाल्हाहल 30
केाल्हुओ 21
के।सट्टइरिआ 70
कासुंभ 121
काहल्ली 70
कोंडिओ 21
खंडर 50
खच्चल्छा 75
অ তি ল অ' 49
खडक्क 90
खड 85
खडहडी 70

वाष्परे। 50	गु'जे।ल्लु 51
य ण्युरे। 50	गोड 146
स्यान 90	गाइ 146
- स ल्लं 56	गार कि डी 50
्व हिलरी 5 0	गाल्हा 30
अ चे। 46	गोला 145
· स ब्वेा 46	घष्टिओ 204
· बार फिडी 50	घरोली 72
चि र्विखड 50	घारि 72
হি ন্তির अ ं 49	घुग्धरी 49
खु न्लरी 50	घुरुघुरी 49
खुल्ल 23	धुसिरमारं 72
खु ंडय ं 2 4	घुंघरुडे। 28
स्तेरि 91	घाटट 208
स्त्रोडफ्ड जाली 70	ं घोसे 125
च् रोले। 54	घांट 208
क्षा हरू 91	चवखुडूजः 73
जाणणाइआ 71	ব ন্ <mark>ত্</mark> 43
मणियारि 91	च डुलो J 3
गताडी 71	चडुलातिलयं 7
गहक <i>⊋</i> लेले 84	ਚ ਼फਰ ਂ 45
ग ज् 183	चविअं 28
ग जो लि भ 71, 84	चंग 136
गंडी 133	चंदवडाया 73
माणी 71	चालवासा 10
गाहुडी 119	चिच्च 13, 73
गुटप् 84	चिच्चर 13
गु≂ गु`छ ् 50	चिच्यरे। 84
गुङ्गुं छ 51	चिद्दविआ 10
- યુહ્લ-છે 24	चिमिणा 17, 7
्गुं जुरूळ 51	चिर डी 13
••	

ंश्विरिचिरा 11
निरिडिडिस्स 30
विरिया 28
विरिचिरा 11
দি ভিভিন্ত 11
चिलिञ्चील 11
बिलिबिबल 11
विलिन्बील 11
बिल्लि रुरि 53
विल्ली 21
जिन्स १६ विन्स १६
चिन्दर 96
चौद्दि 146
3
सुनकुडी 12, 53
कु€ज' 20
बुहुकी 38
युग्बङ्को 74
ब्रु प्पाल ओ 21, 24
शुक्रपेर 43
बुद्धण्ये। 53
∰रली 28
चुंचुणिया 74
g'sì 24, 43
बेल' 131
देांस 43
चाप्पड 197
चे।रनियह 105
चै।रलिया 12
चारली 12
चारला 12 छ ंड ई 49, 52
ਚ ਰਾ ਲ੍ਹ ਜ ਤ, ਹੁਣ

डंड्ई 49 **डा**री 74 बुं बुं मुसयं 75, 31 छाइल्ला 121 छिण्णोब्भवा 43 छिप्प 14, 44, 138 छिपालो 14, 44 खिप्पाल**अ** 14 **छि**प्वीरं 25, 44 छिल्लरं 84 छिह डओ 30, 44 छिहिहिमिहल 30, 44 ভিভঃ 135 छिछइया 187 छिछभो 22, 83 छिंदी 22 इटहीरो 40 द्वरी 132 छेत्तर 22 केष्य 14, 44 कें छड़ 22 हें भी 22 क्रोब्मत्थं 20 जगर 137 जगहिं के। 84 जरदे। 16 जरंदो 16 जलहा 179 जबसं 135 जाही 44 जिणोण्डसवा 43

র্জিঘিস 29	ਫ⁵ਂਛ⁺ 50
जीण 143	ਫ਼ ਾਮ ਰ 25, 41
जुरुमिल्लं 46, 75	ਭਿ अਲੀ 41, 142
जूरुमिल्लय 75	हिंडिय 188
जाडिओ 44	હિં કિ હ્જિ ઝ 106
जोण्णिस्था 75	डिं डी 50, 54
जोवारी 75	डिं _फ 32
झर के। 53, 75	डुंडुओ 106
झर ते। 53, 75	डुंबा 22
স্থান্ত 179	डेाह 91
झरुक् 91	होहिअ 91
झळज्झला 181	ढक्करि 83
झंटलिआ 15	ढयरा 141
ੜਾਂਫਰੀ 51	डंकुणे। 51
ਜ਼ ੰਫ਼ੁਲੀ 15, 51	ਫ ਫ਼ਿਰ੍ਲ 51
झाड 44, 188	ढंढसिआ 107
झाम 180	डंढाल 46
झिल्ळिरि 147	ढि कक् 2 2
झिल्लिरिआ 53	ढिंकणे। 57
शुमु झुमुसय 31	द्धम् 18
झुं झुमुसय 31, 75	द्धस् 18
झ्सरिअ 106	द्धंदुल्ल् 46
झोही 75	ढें कुणे। 57
झे।डिओ 44	ढार 91
झेांडलिआ 15, 51	ढेाल्लणे। 138
टहइआ 40	णडुली 48
टिप्पी 145	णड्डली 48
ঠিৰচ্ 42	ण्डडुली ४६
ठेरी 144	णमसिअं 35
ब्ह्दाडी 37	णब्वा 57
डहलं 76	ण ह री 52

į.

गहहरी 52. : ; ;	णीसह 178 - 🚟	तुंबुरु 42
ण'डुली 46	णेस्डेडा 54	तेड्हे। 22
ण'दिअ' 24	णेडाली 46	ते डुअं 42
णाउ ड्डो 54	णेड्डाली 46	तोलणा 138
णिज्झाइअं 119	णेवच्छण 54	ते।वड्डो 26
णिट्ठहें। 53	गोल्ल 20	तेांतड 51
'णिड्डरिय 91	णोब्वे। 57	খ র্ड ड ं 47
णित्थामा 130	तउवहिआ 26	थसलो 17
णिरकके। 53	तही 41	थसे। 17
णिरच्ये। 53	तड़, तड़ड़ 46	थिण्णे। 119
णिर ंगी 53	तड्डब् 85	थिप्पइ 108
णिरास्डि 83	तलं 46	थिरणामा 18
णिवच्छणं 54	तह्लं 46	थिरणासे। 18
णिवह 92	तलसारिअं 108	थिरसीसे। 109
णिवाओ 53	त'त दी 51	थीणओ 120
णिवित्तो 53	तंतुक्खुडिआ 108	थुडु किअ 109, 211
णिकिंदी 53, 107	त तुक्खे। डी 108	थ्णो 54
णिव्वह 92	तंबिरा 76	थूरी 17
णिव्वदे। 53	तं वार 92	थेरे। 121
णिव्वृदे। 53, 75	तामर' 120	थे।ले। 54
णिववेदे। 53	तियमइ 92	दड्ढाली 37
णिसुट 53	तियमइया 92	दरविंदरं 28
णिसुद् 85	तीरिय 92	दलबह् 92
णिसुद्ध' 53	নুভক্ত 24, 43	दवित 26
णिस्स ह 178	तुणी 149	दवरा 26
णिहाओ 53	तुष्पे। 43	दं दी 41
णिहुअ 53	तुंगी 121	दाअलिखं 25
णिहुओं 53	तु गा 122	दालिंअ 41
णिल'के। 46	ਰੁ ੱ ਫ 1 3 0	दिअली 41
णिहल के। 46	तु ंदी रं 42	पीविआ 76
णी रंगी 53	तुं इंशो 106	दीहजीहे। 149

₹अ ल्रुं 27	पइरिक्क् 8 5	परिहच्छिम 86
दुक्सं 54	पउढ 54	परिहट्टी 111
बुग्ग 54	पड दे । 75	परिहत्य 86
दुग्घुट्टी 22	षडत्थं 54	परिहारिणी 111
बुत्ति 26	पराव 54, 139	परेवयं 145
वु त्य 54	पएरा 112	परुस 40
दुदोली 37	परगेज्जा 33	पलही 33, 40, 4 4
बुद्धोली 37	पच्चिह्लिउ ∃86	पलीविञं 145
बु ली 48	पच्चबरं 85	पल्छवायं 33
दु ल्लं 27	पडहच्छ 86	पल्हुसण 190
दु ल्लम्म [*] 121, 119	पड सुवो 122	पव्वइसेल् रुं 77
दुणे। 54	पडासी 33	9सं डि 50
द्स ले 39	पहिञ्जरे। 33	पसारी 149
बृह ले। 39	पडिच्छिआ 112	पसिंडि 50
वे। दिओ 76	पडिसरिच्छ 186	पह्टेश 119
देरि। 27	पहिद्वारी 111	प ंड ं 137
दोसाणिअं 17	पहुआ 15	વ પુત્ર 24, 45
दे।हणहारी 76	पहुनइअं 5्4	प थुच् बुहणी 5 4
ঘ্णি 195	पडे।हर 76	पाउअ 33
घर 197	पड्डत् शी 77, 111	पाक 33
घव 92, 121	पत्तण 77	नाणान्त्री 86
धवल 137	पत्तत्था 33	पाडवण 25, 52
घव्वो 29	पष्पीओ 34	भामदा 25
ध सली 17	पटपुत्रभः 24, 45	पायमूल 190
घारायर 92	प्रमहली 33 💮 💮	पाराउद्वय 93
धुअगाओ 85	पयह्ढणी 111	पारिहन्छि 86 🚟
धुवगाय 85	प्यण 194	पारिहर्द्धी 111
धूणा 54	प्रयलाओं 105	षावडण 52
नालिअ 177	परिगद्दी 137	पाना 136
नाहर 135 💮 ्रा	परिमल्या 1841 🧬	पासं है 144
া अवि अ 134	पश्हिमछं ४६ 📋	ਖਿਟਲੂ ੱਫੀ 192

पिडच्छा 17	फरभो 77	ब्दीरो 45
पिरदी 50	फसुले। 24	बेडी 119
पिलव 34	फंसले। 24	वसक्खिजं 35
पि च्च 98, 148	फारो 140	बाक्टो 12, 21
पिव्व 96, 98, 148	फिद्रदे। 29	वारनिवह 104
पिहुङ 139	फुक्की 24	बेाहारण 188
पिछोली 44	Ъ ң 18, 30	बोहारी 26
षिंदरी 131	कुल्लं घय 86	वाहित्था 77
पिडारो 142	फ़्लंधुय 86	मडिले। <u>13</u> 4
পিপ্তৰী 39, 44	कुञ्जंबय 86	भनुद्धग 188
पुजाइणि ७४	हस 18, 45	महाकरी 78
पुषणालि ८६	कुं कुमा 37	नहिओ 127
पु रुपुरिआ 54	हुआ 29, 37	भम् इ 46
पुरुषसिओ 54	कांफा 23	भक्रमुंड 46
नुहों 118, 121	व रहारी 26, 52	मसल 124
वंस् ।?	क्ष्मीह 34	ਜੰਸਲ 87
पुरणो ४२३	ਭਰ 132, 149	भाइलक्षेत्र 133
पूरी 17	बहुआरिआ 105	र्मिगारी 87
पुरो। 145	વેં કે 137	भुत्तमा 20
वेडह्का 34	ब भे। 15	भुम् 30
वे हुआ । १०७	विदेश 88	अर्थः । मु ंडी रा ४२, ४५
पे डमनो । 133	बिदवे।अणे 13, 24	मु हे। 45
वंड 109	विब्बास 13, 24	मङ्यवद् 93
वं बर्ग 22, 142	बिसी 35	मइहरो 26
वें हा 34	बिह्य 79	म् डही 26
वाअइया 27	बिबीवणय 13, 24	मडली 78
पोइया 27	बुक्क 88	मओ 145
नोचआ 37	चुक्का 12	मक्दबंध 36
पेल्चड 197	जुककासार 21, 46	सङ्जो क 18
नामान् ९३	वि रो 42	मज्झाओ 18
कम्फाव(य) 93	नुवी 36, 45	मण्याञ्चाः 10 मङ्क्तिअ 15
	and the second of the second o	न्द्रे।ऍका । ⊃

मडओं 52	मुक्कलिओ 22	मुक्कलं 22
मडक्क 93	मुक्कुरहो 28	रिक्खा 40
मङप्प 93	मुग्घडे। 28	रिच्छे। 40
मडप्फरो 29, 87	मु द्दी 36	रिंडि 54
मडहरो 29	मुब्भाे 21	रुअरुइआ 54
मडुवइय 54	मुर् 18	रुहुओं 54
मङ्घा 87	मुहमुरिअं 54 , 78	रुंचणी 21 .
मत्तवाले। 87	मुलासिओ 54	रेल्ल् 93
मत्तवाले। 87	मुसुमूर् 88	रेवलिआ 79
मत्तालंबा 78	मुंडी 134	रेसिअ 39
मयहा 36, 52	मंडंभो 26	रहि अ ं 39
मयहरो 52	मेयले। 130	रें किअं 21, 39
मयाहिओ 128	मेहरा 26	रोक्क 93
मरङ्गो 88	मेहुणओ 88	रोलंबक्षा 141
मलहरो 48	मेहुणिआ 88, 124	रोसाण् 17
मह 146	में ठी 31	रोंच 21
महअरे। 52	में ढी 31	ल इ अं 47
महहरो 29	मोडा 26	ਲ ਬ ਧ 12
मंगल 138	मेव्यो 21	लंपिक्खे। 131
मंगुमा 124	रच्छामञ्जा 130	ভিকি अ 21, 39
मंजीरं 43	रष्फडिआ 50	लिंके। 24, 39
मंजुआ 118	रल्ला 25	छ ंके। 20
मंडले। 140	रसाउ 141	छ ह े 132
म दीर 43	रसेाइ 93	ଲ୍ ଖା 141
म भीस 87	र खाल 88	लेडुक्का 16
माणंसी 78	र जण 47	लेहहो 47
माभाई 87	र प् 45	वडलिअं 33
माभीसिअं 87	र फ़ 45	वक्कडबंध 36
माय ंदी 78	राभला 25	वक्कड 53
मिरिया 28	राला 25	वरगेजो 33
मीसालइ 36	रिकक 24, 39	वज्जा 79
मुआइणि 54	रिक्खण 20	बट्टइ 93

बङ्ग्पं 53
बडाली 33'
वडिसर 33
बत्तद्भा 16, 33
वप्पीओ 34
वणीओ 34 वणीहा 34 वम्हल 33
बम्हल 33
वयडे। 36
वयली 26
वलच्छी 188
वलमथ 35 🖔
बलही 33, 40
वलिम ३ 94
वलिवंड 94
बह्नवायः 33
बल्लरी 50
वहरे कहरे 190
वसलं 17
वसुआइद 129
बहुआरिआ 105
वंकच्छा 30
वंगच्छा 30
बंगेवडु 31
वंगा 34
व'ठे। 14
वाउत्तो 25
वाड तस् 113
वाणस्माल 93
वामणिओः 79
वायउत्तो 25
वायण 47

वालवासा 10
વાજી જાતા 184
वावणी 113
वावणी 113
वाहगणा 48, 79
leater IX/
विच्छेओ 123
विड्डय 191
ਕਿਟਟਾ 01
विडेडिर 91
विदर्णा 38, 40
विष्य [4
विष्फाडिअ 32
विब्भवण 36
विमलहरो 48
विरक्षा 11
विरल्ल 89
विरहं 121
विर चिरा 11
विरिल्छ 89
विरेहिलअ 89
विलइअं 36
विलमा 36
विलिब्बिलं 11
विलिब्बिली 79
वਿ ल्ल 54
विल्हं 54
विविह्लिओ 204
विसलं 136
त्रिसिणे। 17
विसी 35

faescuse 94
विहण 79
विहण 79 विहलंघल 94
विहुं डुओ 31, 43
वीलणं 34
चीसालइ 36
बुक्यण 21
बुक्दण 21 वेअडिअ 27
वेआरिअं 89
वेआले। 89 🔒
चेत्रम ०४
वेडइओ 34
वेडिओ 27
विडिक्सिल्लं 79
वेणिअं 26
बेतालए 89
वेदूणा 38, 46
वेष्पुअं 54
वेयार् 89
वेहलिअं 39, 52
वेलणय 38, 140
वेल बे। 37
<mark>ਕੇ</mark> ਕੁਰਿਅ 39, 5 2
वेळ्णा 38, 46
वेळ्रिअं 39, 52
वेटलहला 89
वेहविञा 89
वेहाविक्षा 89
वहाविद्ध 89
वे इसुरा 34
बोकिल्ला 35,36, 41

वोरल्ली 12	साह जणे। 80	हडप्प ३७
वोसट्टं 80	साहा 143	हत्यच्छुहणी 54
सज्जिओ 18	साहाला 120	हत्पल्ली ४०
सज्जाकक 18	साहुलिआ 89	हित्यहरिल्ला 59
सक्या 144	सिगिरि 94	हरिमिखी 36
सत्यइअं ८०	सिज्जुर 43	हरूपे। 37
स त्थारो 127	सिट्ट 123	हल्मे ४०
सन्धासंगत्त्रध ८०	सिष्यं 25, 44	हव्य ं ७५
समग्री सं 142	सिव्यिर 44	हिडीलमयं 25
समसीबी 142	सिप्पीर 24, 44	हिंडीलम 25, 25
समुञ्ज्ञणी 🐠	सिसिर 89	हित्थ 14:
समुद्द ९∓	सिह ं ड्स्टर 44	हिस्से १५
समोद्ध 94	सिंटा १६	हि रक्ष 50
समा ्ड्ड 9ः	सिंहा 9%	IRON A.
सराहुआ 105	सिंबुरय 43, 116	हिल्ला ४०
सरिवः 145	सिंदूर 43	हिल्लोडण 59
सञ्बला 80	सिंपुञ ५४	हिचिअ 12
सं गा 133	सिबीर 24	हि डोल्ण 25, 52
संथार 127	सिंगाडी 🔞	हिबिअ 12
संधणा ४६	सी रिअ 95	हींसे 143
संपर्णा 4	सी वि भ ा 144	होरो 123
संपासंगं ८९	सुहियं ।।।	581 23
सा 139	सूर 18	हुलि <u>9</u> 5
साइय 94	सेरिआ 144	हुछ 95
साणह्अः ३०	सेरिह: 141	हुमे। 29
साय 133	सेहिर 141	हुलाहुसि 95
साह जभे: 80	से वाड्या 21	हेंस्ट्राइक 38

CORRIGENDA

				_	
P	L	Correction .	p.	l.	Correction
9	27	immediate	47	2 7	रेहडे।; the
10	26	वारु वासे। -	47	28	ओ ०
15	16	कोट्टमिश	48	5	मरुहरो 💮
17	15	વિરુજ્ 8ા	50	19	गार फिडी
17	24	रिक्खणं	50	23	275 स्वय्वरा
20	20	उक् खंडि ं	50	28	गुलगु छ
2 5	1	छिप्पीर	51	1	ગુ જુગુ ં છ
29	6	इं घियां	51	3	गुलगुंछः, गुखगुं 🗨
29	27	अन ्छिहरू ले	52	1	अ'बमसी
36	17	वु ंदी	53	11	अलाबू
37	4	फुं फुआ	53	15	झिल्छरिक्षा
37	14	ड ब्हा डी	53	26	णिदठहे।
38	6	विद्दुणा	55	16.	
3 8	6	वेङ्णा	56	19	खल्लकोला
38	6	वेल्णय •	57	5	
39	6	कलय ंदी	57	14	अं बेही
41	27	कु:दीर	57	23	अंबेसी, अबेसी, गृह
4 3	2 2	छिण्णे[ब्भव]	63	1	उदसं'िअ
44	8	शेव्या	6 3	3	उप्पीले।, उब्बूरो
45	4	अन्भायत्थे।	63	18	ड च्चाला
45	7	उष्फाल	64	5	उद्दामा, उक्खंडा
45	9	पष्कुअं	64	18	उम्मच्छविअं
45	11	ब प्फरु [*]	64	19	ਰਸ਼ਜ' ਫ਼ੇ
4 6	18	विद्दुणा	69	16	कासट्टइरिया
4 7	6	अंबसमी	73	20	चंदवडाया
47	10	र जण	74	11	चिमिणे।
47	26	आं छेह डे।	74	14	रोमःिचत
					-

p.	l. Correction	p. 1. Correction
78	16 माणंसी	177 17 दी र्घायित
84	17 गुष्प् ।	177 19 धमागम:
89	1 'stretch'	179 10 जलाई
96	30 complete	187 18 Abbreviations
106	14 डुंडुओं 💛	191 23 उब्बिट्ठी
108	5 तंतुक्खे।डिओ	203 22 ūbiṭha
109	18 प डे	205 29 ūchithau
112	16etc. कण्ड	207 Title (2) Pk. 211 ,, (3) Pk.
128	8 इंदगाव, इंदाव	215 ,, (4) Late
128	17 मयाहिओ	219 4 forms
135	24 वालुंकी	220 21 occurrence
146	10 मल्लाणिया	225 (Column II) कार्मण
148	2 पिड्व [°]	227 (Column I) गे।व्यर
149	3 meaning	230 (Column II) निचे।छ
164	18 works	264 13 (Column I) विलेक्य
164	19 unauthentic	264 57 (,,) कृतम्
173	last and not पड्ट	264 19 (,,) भद्राववु
174	1-2 पट्टुआ not पड्डुआ (DN	264 1 (Column II) अद्य क त्ये
	6, 8 पड्डुआ=चरणाघात:)	264 23 (,,) delit
	as shown	' द्वे।लनी ['] पे।लत्वम् <i>७८</i> –५

The Author

Dr. H. C. Bhayani (b. 1917) worked in the post-graduate and research departments of the Bharatiya Vidya Bhavan (Bombay), Gujarat University (Ahmedabad) and L. D. Institute of Indology (Ahmedabad). He has copiously published in the research fields of Early, Middle and Modern Indian languages and literatures—especially Prakrit, Apabhramsa and Old Gujarati texts and studies and Gujarati folk-literature in a historicalcomparative perspective. His Gujarātī Bhāṣānu Aitihāsik Vyākaran (Historical Grammar of the Gujarati Language: in Gujarati, 1988) is a recent important publication.

Hemacandrācārya's Trisastisalākāpurusacarita-mahākāvya

Revised edition of the text by Muni Shilchandravijay

Vol 1: Parvan 1, Vol. II Parvan 2 and 3

This is a revised edition of the Trīsastisalākāpurusacarita, Hemacandra's classic epic in Sanskrit narrating poetically the traditional Jain Universal History. The first edition, prepared by Muni Chaturavijay was published by the Atmananda Jain Sabha, Bhavnagar in 1936. For the present revised edition palm-leaf Mss. from the collections at Khambhat, Patan and L. D. Institute (Ahmedabad), besides several old paper Mss. have been consulted. Several indices (e. g. index of verses, Subhāsitas, proper names etc.) add to the value of this edition. The volumes containing the remaining Parvans and the Parisista-parvan alias Sthavirāvali-carita will shortly follow.

Published by:

Kalikālasarvajna Shri Hemcandrācārya Navam Janma Śatābdī Smṛti Śikhṣaṇa Samskārnidhi—Ahmedabad.

Orders to be placed with Sarasvati Pustak Bhandar, Hathikhana, Ratanpole, Ahmedabad-380 001